CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"वैदिक काल से लेकर हर्ष कालीन उत्तर प्रदेश की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था का अनुशीलन"

कानपुर विश्वविद्यालय की पी- एच० डी० उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

१९८२-८३

निर्देशक :—
डा० राजेन्द्र कुमार पाँल अध्यक्ष इतिहास विभाग
क्राइस्ट चर्च डिग्री कालेज
कानपुर

प्रस्तुतकर्ता
विजयलक्ष्मी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रो० डी एन० पुरी संग्रह
लखनऊ

State Museum Library Lucknow
722

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजेन्द्र कुमार पॉल
एम ए. इतिहास (आगरा)
एम. ए. प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व (सागर), पी-एच-डी.
अध्यक्ष, इतिहास विभाग :
क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर.

फोन : ६३६२०
निवास :-
के० पी० ११८/१४ गुम्टी नं० ५
कानपुर-२०८०१२

दिनांक 04-10-1982

State Museum Library Lucknow 7227

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कानपुर विश्वविद्यालय की पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध " वैदिक काल से लेकर हर्ष कालीन उत्तर प्रदेश की सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था का अनुशीलन" पूर्णतः -

प्रस्तुत कर्त्री श्रीमती विजय लक्ष्मी की अपनी ही कृति है। मेरे निर्देशन मे कार्य किया है और मुझे इनके कार्य से पूर्ण सन्तोष है।

दिनांक:-

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय
प्रो० वी एन० पुरी
सद्र.
लखनऊ

डा० राजेन्द्र कुमार पाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"वैदिक काल से लेकर हर्ष कालीन उत्तर प्रदेश की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था का अनुशीलन"

कानपुर विश्वविद्यालय की पी० एच० डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

State Museum Library

१९८२-८३

निर्देशक –

डा० राजेन्द्र कुमार पॉल, अध्यक्ष इतिहास विभाग,

क्राइस्ट चर्च डिग्री कालेज

कानपुर

प्रस्तुतकर्ता

विजयलक्ष्मी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"वैदिक काल से लेकर हर्ष कालीन उत्तर प्रदेश की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था का अनुशीलन"

कानपुर विश्वविद्यालय की पी- एच० डी० उपाधि

हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध

State Museum Library Lucknow

१९८२-८३

Forwarded
05/xi/82

निर्देशक :—
डा० राजेन्द्र कुमार पॉल, अध्यक्ष इतिहास विभाग,
क्राइस्ट चर्च डिग्री कालेज
कानपुर

प्रस्तुतकर्ता
विजयलक्ष्मी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुल सचिव, कानपुर विश्वविद्यालय, कानपुर
को आवश्यक कार्यवाही के लिये
अग्रेषित

डा० राजेन्द्र कुमार पाल
क्राइस्ट चर्च डिग्री कालेज
कानपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रमाण - पत्र

मैं प्रमाणित करती हूँ कि अपने निर्देशक डा० राजेन्द्र कुमार पाल के मार्गदर्शन एवं परामर्श प्राप्त करने के अतिरिक्त, यह शोध प्रबन्ध मेरा स्वयं किया हुआ कार्य है जिसे मैंने कानपुर, लखनऊ, देहली के पुस्तकालय एवं दिल्ली के पुरातत्व विभाग के पुस्तकालय की सहायता से पूर्ण किया है ।

विजयलक्ष्मी
विजय लक्ष्मी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राक्कथन

उत्तर प्रदेश के भू भाग पर प्राचीन काल में सभ्यता अनेक रूपों में फूली फली। इसकी पुष्टि उपलब्ध पुरातात्विक तथा साहित्यिक साक्ष्यों से होती है। सांस्कृतिक विरासत की प्रचुरता तथा विविधता की दृष्टि से उत्तर प्रदेश अन्य राज्यों की तुलना में अत्यधिक सम्पन्न रहा । इस प्रदेश के प्राचीन स्मारकों, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं कला केन्द्रों ने मुझे सबसे अधिक आकृष्ट किया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध '' वैदिक काल से लेकर हर्ष कालीन उत्तर प्रदेश की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था का अनुशीलन'' डा0 राजेन्द्र कुमार पाल के निर्देशन में तैयार हुआ है।

उत्तर प्रदेश के प्राचीन कला केन्द्रों में मथुरा,, कौशाम्बी, अयोध्या, काशी, कुशीनगर, सारनाथ, श्रावस्ती, कन्नौज, संकिसा, कम्पिल, अंतरंजीखेड़ा आदि स्थलों की पुरातात्विक सामग्री का मैने विधिवत अध्ययन किया। स्मारकों के अतिरिक्त मूर्तियों, सिक्कों अभिलेखों के द्वारा इस क्षेत्र की संस्कृति पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मै अपने आचार्य डा0 राजेन्द्र कुमार पाल के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिनके मार्ग दर्शन एवं सहयोग के बिना यह शोध कार्य सम्भव न होगा। शोध प्रबन्ध से सम्बन्धित सभी समस्याओं को उन्होंने अपने व्यस्त कार्य-क्रमों में से समय निकाल कर सुलझाया ।

मै आदरणीय डा0 के0 डी0 बाजपेयी अवकाश प्राप्त सागर विश्वविद्यालय के प्रति अत्यधिक कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मेरे शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में अकथनीय सहयोग दिया तथा वैज्ञानिक एवं विधिवत अध्ययन को प्रोत्साहन देकर नवीन मार्ग का दिग्दर्शन किया । मै डा0 सन्त शरण अवस्थी (एस0डी0 कालेज) की भी आभारी हूँ साथ ही श्री प्रेमचन्द्र अग्निहोत्री (प्रबन्धक एवं महामंत्री शहर कांग्रेस कमेटी श्री रामआसरे अवस्थी लखनऊ विश्वविद्यालय, डा0 ललित कुमार चौधरी(एस0डी0 कालेज) एवं डा0 राम सेवक वात्सायन(क्राइस्ट चर्च कालेज) के भी प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने समय समय पर प्रोत्साहन देकर नवीन मार्ग का दिग्दर्शन कराया

मै लखनऊ, दिल्ली, मथुरा, इलाहाबाद संग्रहालय के निदेशकों, क्राइस्ट चर्च एवं एस0 डी0 कालेज के पुस्तकालय अध्यक्षों, दिल्ली पुरातात्विक पुस्तकालय के निर्देशक एवं प्रबन्धकों के प्रति भी अपना आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने शोध कार्य को पूर्ण करने में अत्यधिक सहायता दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंत में मैं अपने पति श्री प्रेमचन्द्र सक्सेना की अत्यधिक आभारी हूँ साथ ही बहिनों एवं भाइयों के प्रति अत्यधिक आभारी हूँ जिन्होंने प्रोत्साहन एवं उत्साह वर्धन कर शोध प्रबन्ध के शीघ्र पूर्ण करने में सहायता प्रदान की ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारतीय इतिहास के इस महत्वपूर्ण काल की सांस्कृतिक प्रगति के बिखरे हुए साक्ष्यों के एकीकरण, विश्लेषण, व्याख्या एवं निष्कर्ष में यह शोध प्रबन्ध सफल हुआ है और इस विषय के गवेषणात्मक समवेत अध्ययन के अभाव की पूर्ति करेगा ।

विजयलक्ष्मी
विजय लक्ष्मी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संक्षेपण

1- जे० बी० ओ० आर० एस०	:	जरनल आफ द बिहार ब्रांच आफ द रायल ऐशियाटिक सोसाइटी पूना
2- जे० ए० एस० बी०	:	जनरल आफ ऐशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल कलकत्ता
3- जे० ओ० आई० बी०	:	जनरल आफ ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट बड़ौदा ।
4- वी० जे०	:	विश्व ज्योति होशियारपुर हिन्दी
5- बी० एच० ए०	:	भारतीय बनारस
6- आर० एम०	:	रतन जनरल आफ अखिल भारतीय संस्कृत परिषद
7- पी० यू० आर०	:	पुराण बनारस
8- जे० यू० पी०	:	जनरल आफ यूनिवर्सिटी आफ पूना
9- एम० आई०	:	मैन इन इण्डिया राँची
10- ए० बी० ओ० आर० आई०	:	एनल्स आफ द भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट पूना
11- जे० आर० ए० एस०	:	जनरल रायल ऐसियाटिक सोसाइटी
12- जे० आई० एस० ओ० ऐ०	:	जनरल इंडियन सोसाइटी आफ ओरियन्टल आर्टस 1840
13- जे० यू० पी० एच० एस०	:	जनरल आफ यू० पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी
14- डी० ए० के०	:	डायनास्टिक आर्ट आफ दी कुषानस कैलीफोर्निया 1967
15- ए० एच० आई० ए० आर०	:	आरकोलाजी सर्वे आफ इण्डिया एनुअल रिपोर्टस
16- एच० डी० एस०	:	हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र
17- ए० एन० ई०	:	अक्रान्त देहली
18- जे० एन० एस० आई०	:	जनरल आफ न्यूमिस्टिक सोसाइटी आफ इण्डिया, बनारस बनारस (अंग्रेजी)
19- जे० जी० जे० के० एस० पी०	:	जनरल आफ गंगा नाथ झा विद्यापीठ इलाहाबाद
20- वी० आई० जे०	:	विश्वेश्वरानन्द इन्डोलाजिकल जनरल होशियारपुर (अंग्रेजी)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

21- बी० यू०पी०एच० एस०	:	बुलेटिन आफ यू०पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी
22- आई० ए०	:	इण्डियन एन्टीकवरी
23- बी० वी०	:	भारतीय विद्या, बाम्बे
	:	1911-12
24- बी० एम० ए० यू०पी०	:	बुलेटिन आफ म्युजियम आर्कलाजी उत्तर प्रदेश
25- के० एस० वी० पी०	:	कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्व विद्यालय पत्रिका (दरभंगा) संस्कृत
26- डी० एच० आई०	:	डेवलपमेन्ट आफ हिन्दू इकोनोग्राफी
27- एस० ओ० डी०	:	शोध पत्रिका उदयपुर (हिन्दी)
28- ई० एच० आई०	:	अर्ली हिस्ट्री आफ इण्डिया स्मिथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय - सूची

पृष्ठ

प्राक्कथन 2-3

विषय सूची 6-7

चित्र सूची 8-9

प्रथम अध्याय :- विषय का महत्व तथा अध्ययन के स्रोत - पृ० 1-10

शोध विषय, शोध परिभाषा तथा परिसीमन, शोध के उद्देश्य, शोध विधि, प्राथमिक स्रोत, गौणस्रोत प्रबन्ध योजना

द्वितीय अध्याय :- भौगोलिक विवरण एवं क्षेत्र की विशिष्टता - पृ० 11 से 21

क्षेत्रफल, उत्तर प्रदेश के प्रमुख चार भाग - गंगा यमुना का विशाल मैदान, दक्षिण का पठारी भाग, जलवायु, उपज, खनिज पदार्थ, पशुधन, यातायात के साधन ।

तृतीय अध्याय :- राजनैतिक इतिहास :- वैदिक काल महाजनपद युग, मौर्य एवं शुंग वंश, कुषाण वंश, नागवंश, वाकाटक, गुप्त एवं मौखरी वंश । पृ० 22- 43

चतुर्थ अध्याय :- वैदिक युग की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था - पृ० 44 से 77

सामाजिक संरचना, वर्णों का विभाजन, आश्रम व्यवस्था, परिवार, संस्कार, विवाह, समाज में नारी (वेश्यावृत्ति, विधवा विवाह, तलाक), खान-पान, वेश भूषा, आमोद-प्रमोद, अलंकार एवं प्रसाधन ललित कलाएं, आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा एवं साहित्य, धार्मिक अवस्था, लोकधर्म तथा दर्शन ।

पंचम अध्याय :- महाजनपद युग की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था - पृ० 78 से 116

सामाजिक संरचना, वर्णों का विभाजन, आश्रम व्यवस्था, परिवार, संस्कार, विवाह समाज में नारी(वेश्यावृत्ति, विधवा विवाह, तलाक) खान पान, वेषभूषा, आमोद प्रमोद, अलंकार एवं प्रसाधन ललित कलाए), आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा एवं साहित्य, धार्मिक अवस्था, लोक धर्म तथा दर्शन ।

षष्ठम अध्याय :- मौर्य तथा शुंग युगीन की सामाजिक तथा धार्मिक अवस्था - पृ० 117 से 146

सामाजिक संरचना, वर्णों का विभाजन, आश्रम व्यवस्था, परिवार, संस्कार, विवाह, समाज में नारी(वेश्यावृत्ति, विधवा विवाह, तलाक) खान पान, वेषभूषा, आमोद-प्रमोद अलंकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एवं प्रसाधन, ललित कलाएं, आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा एवं साहित्य, धार्मिक अवस्था, लोकधर्म तथा दर्शन ।

सप्तम अध्याय :- कुषाण काल की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था - पृ० 147 से 181

सामाजिक संरचना, वर्णों का विभाजन, आश्रम व्यवस्था, परिवार, संस्कार, विवाह, समाज में नारी(वेश्यावृत्ति, विधवा विवाह, तलाक) खानपान, वेशभूषा, आमोद-प्रमोद अलंकार एवं प्रसाधन, ललित कलाएं, आर्थिक अवस्था, शिक्षा एवं साहित्य, धार्मिक अवस्था, लोकधर्म् तथा दर्शन ।

अष्टम् अध्याय :- गुप्त काल तथा हर्ष काल की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था - पृ० १८२ से २२५

सामाजिक संरचना, वर्णों का विभाजन, आश्रम व्यवस्था, परिवार, संस्कार, विवाह, समाज में नारी(वेश्या वृत्ति, विधवा विवाह, तलाक) खान-पान, वेशभूषा, आमोद-प्रमोद, अलंकार एवं प्रसाधन, ललित कलाएं, आर्थिक व्यवस्था, शिक्षा एवं साहित्य, धार्मिक अवस्था लोक धर्म तथा दर्शन ।

नवम् अध्याय :- निष्कर्ष पृ० २२६ से २३५

सहायक ग्रन्थ सूची - - २३६ - से - २५२ पृष्ठ

फलक १ से १२ - २६३ - से - - - - - पृष्ठ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र - सूची

फलक
1- 1- अ मानचित्र — आर प्रदेश के प्राचीन सांस्कृतिक स्थल

फलक 1-ब - शुंग कालीन वेश भूषा - चि० सं० 1-मनुष्य मूर्ति (भीटा), चि०-2 अलंकार यक्षिणी चन्द्रा, चि०-3 वाद्य स्त्री

फलक-2- कुषाण युग वेशभूषा - चि०-4 (मथुरा), चि०-5 (मथुरा), चि०-6 चि०-7 (मथुरा) चि०-8, (मथुरा) विदेशी प्रभाव, चि० 9 (मथुरा) ढिली वाद्य पगड़ी नुमा टोपी

फलक - 3 - गुप्त कालीन वेषभूषा- चित्र 10 अ (मथुरा) जूड़े सहित मस्तक, चित्र- 10 ब-(अहिच्छत्रा) पदाति युवक, चि०-10 स-कटुला, चि० 10-द- मकरमुखी टोंटी (भारत कला भवन), चित्र 11-अ भंगुर उत्तरीय (अहिच्छत्रा), चित्र 11-ब विष्णु (मथुरा), चि० 11-स- मोरनी राजछत्र (मथुरा)

फलक-4- कुषाण युग वेषभूषा- तथा अलंकार- चि० 13, कमरबंद (मथुरा) चि०-14- अलंकार मथुरा, चि०-15-पटका (मथुरा) चि०-12 बैलगाड़ी शुंगकाल मथुरा)

फलक -5- कुषाण युग नृत्यों की हस्तमुद्रायें- (मथुरा) चि०-16, चि०-17, चि०- 18, चि०- 19, चि०-20, चि०-21, चि०-22, चि०- 23

फलक- 6- नृत्यों की पाद मुद्रायें- चि०-24, चि०-25, चि०-26, चि०-27 चि०-28-अ, चि०-28 ब, नृत्यों की हस्तमुद्रायें-चि०-29, 30 31, 32 अ

फलक-7- वेषभूषा गुप्तकाल- चित्र 32 ब, 33 अ, 33 ब, 33 स 33-द गुप्त युग (जहाज पर लक्ष्मी) वैशाली, चित्र-34, घोड़ा गाड़ी शुंग काल (मथुरा), चित्र- 35 विकरम गाड़ी शुंगकाल (मथुरा) चित्र-36 बैलगाड़ी दूसरी सदी शुंगकाल (मथुरा)

फलक-8- गुप्तकाल (अलंकार) चित्र-~~३~~, 37, 38 हार अहिच्छत्रा, चित्र चित्र- 39 (मथुरा), चित्र 40 (मथुरा), चित्र-41 (कुंडल (मथुरा) मष्ट मंगलक माला, चि०- 42 (मथुरा)

फलक- 9- गुप्तकाल वेषभूषा-चित्र 43, (मथुरा), चि०-44 अहिच्छत्रा, चि० 45 (अहिच्छत्रा), चि० 46 (अहिच्छत्रा), चि०-47 मथुरा विष्णु, चि० 48 देवगढ़ चि० 49 (मथुरा) हरिहर मस्तक, चि०-50 चुनरी कला-भवन ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फलक -10-	धर्मकाल वेशभूषा- चि0 51-देवगढ़-चि0-52, देवगढ़-53 (मथुरा), चि0-54, -अहिच्छत्रा-चि0 55अहिच्छत्रा, चि0 56, नृत्य अहिच्छत्रा, चि0-57 अहिच्छत्रा चि0 58
फलक- 11-	धर्मकाल- वेशभूषा -चि0 59-देवगढ़, चि0-60, ब्रम्हा चि0 61, चि0-62, केश आभूषण (मथुरा), चि0-63, (मथुरा), चि0 64 योगपट्ट (मथुरा), चि0- 65 देवगढ़ चि0- 66, देवगढ़, चि0 67- सारनाथ
फलक-12-	गुप्त धर्म कला कृतियां - चि0-68, कादि रंग की ढाले, चि0 69, श्रृंगमूर्ति अहिच्छत्रा, चि0-70 हाथी से लड़ने वाला पट्टा, चि0 71, कटहल के फल जैसी गबरी हस्तिनापुर चि0 -72 कर्करी अहिच्छत्रा
फलक- 13-	कुषाण काल चि0-73, चतुर्भुज शिव, चि0 74, सरस्वती गुप्तकाल, चि0 - 75 स्कन्द (गुप्तकाल) चि0 76 शिव पार्वती (कोशाम्बी) चि0 -77, 78, 79 कार्तिकेय (केश रचना),
फलक- 14-	मौर्यकाल धार्मिक मूर्तियां-चि0 80 चतुर्भुज यक्ष, चित्र- 81, 82 चतुर्मुखी शिव (कोशाम्बी), चि0-83, अघोर मुख, चि0-84 गदाधारी शिव, चि0 85, शिव मूसानगर, चि0 86, शिव त्रिमूर्ति
फलक-15-	गुप्तकाल- चि0 87 अहिच्छत्रा, चि0 88 शिवलिंग(भीटा) चि0 -89 पार्वती अहिच्छत्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय का महत्व तथा अध्ययन

अध्याय -प्रथम:

विवेच्य क्षेत्र भारत के उत्तर में स्थित है । देश की प्रमुख राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक परिस्थितियों से यह क्षेत्र सदा प्रभावित रहा है । इस क्षेत्र में संस्कृति के अनेक मौलिक तत्वों का भी सृजन एवं विकास हुआ जिन्होंने भारतीय इतिहास को अनेक रूपों में प्रभावित किया है ।

भारत के अन्य राज्यों की तुलना में उत्तर प्रदेश ऐतिहासिक सम्पदा में अत्यधिक सम्पन्न है । प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के अनेक अवशेष प्राप्त हुये है । इन अवशेषों से न केवल भारत के राजनैतिक इतिहास की अनेक समस्याओं के समाधान में सहायता मिली है अपितु धर्म, दर्शन, भाषा, साहित्य एवं कलाओं के सम्बन्ध में नये तथ्य प्राप्त हुये है ।

भारतीय सभ्यता का महत्वपूर्ण केन्द्र विवेच्य क्षेत्र ही रहा है तथा भारतीय संस्कृति को समग्र रूप से प्रभावित किया है । ज्ञान विज्ञान के अनेकों साधन इस क्षेत्र में उपलब्ध है । गगनचुम्बी हिमालय, अठखेलियाँ करती नदियाँ तथा विविध वन उपवन जीवन को नवीन चेतना प्रदान करते हैं । इन्हीं सम्पदाओं का लाभ उठाकर विवेच्य क्षेत्र में भ्रातत्व प्रेम का सन्देश दिया । भारतीय संस्कृति के प्रारम्भिक विकास का केन्द्र उत्तर प्रदेश ही रहा है (1)

इस क्षेत्र के पुरातात्विक अवशेषों से भारतीय इतिहास की अनेक कड़ियों को जोड़ने में सफलता मिली है । गंगा, यमुना, सरयू, सरस्वती, घाघरा, गोमती आदि नदियों से सिंचित इस प्रदेश की मिट्टी अत्यन्त उपजाऊ रही है । इस क्षेत्र में विदेशों के अनेक राजवंशों को अपनी ओर आकर्षित किया है (2)

1- चटर्जी नन्दलाल (ग्लोरीज आफ उत्तर प्रदेश), पृ0 1

2- जैन बलभद्र (भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ) पृ0-8

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश में मेरा जन्म होने के कारण इस प्रदेश के प्रति मेरी रुचि होना स्वाभाविक ही है । यहाँ की प्रचुर कलानिधि ने मुझे अत्यधिक आकृष्ट किया एवं मैंने शोध प्रबन्ध लिखने का निश्चय किया । अयोध्या, काशी, कौशाम्बी, संकिसा, कम्पिल, अहिच्छत्रा, कन्नौज, सारनाथ, हस्तिनापुर एवं मथुरा आदि राजनैतिक एवं सांस्कृतिक केन्द्रों ने अपनी कलाओं से मुझे विमोहित कर लिया, शोध का अवसर मिलने पर मैंने उत्तर प्रदेश के प्राचीन सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास के सम्बन्ध में विस्तृत अध्ययन करने का निश्चय किया अतः मेरे शोध का प्रबन्ध का निम्नांकित विषय है :-

शोध का विषय :- ''वैदिक युग से लेकर हर्ष कालीन उत्तर प्रदेश की सामाजिक तथा धार्मिक अवस्था का अनुशीलन'' ।

उत्तर प्रदेश :- पृथ्वी पर सौन्दर्य सृष्टि करने वाला भारतवर्ष (जम्बू द्वीप) (1) का उल्लेखनीय स्थान रहा है । भारत को 5 प्राकृतिक भागों में बांटा गया है :
(1) उत्तरापथ (उत्तर), (2) दक्षिणापथ (दक्षिण), (3) अपरान्त (पश्चिम), (4) प्राचीन (पूर्व), (5) मध्यदेश । इस विभाजन का उल्लेख अथर्ववेद (2) सतपथ ब्राह्मण, (3), ऐतरेय ब्राह्मण (4), रामायण (5), महाभारत (6), पुराण (7), पाली साहित्य (8) तथा काव्य मीमांसा (9) में मिलता है । ह्वेनसांग (10) में भी उत्तरी, पश्चिमी, पूर्वी, दक्षिणी और मध्य भारत को पांच विभागों में विभाजित किया है । मध्य देश को ही पाली साहित्य में मज्झिम देश बताया है जिसका विस्तार 600 योजन था (11)

1- ''भीष्म पर्व'' 7/19-26, ''विनयपिटक'' पृष्ट 92, ''सुतनिपात'', ''अट्ठ कथा'' जिल्द 1। पृ0 443, अंगुत्तर निकाय जिल्द 1, पृष्ठ 227, दीर्घनिकाय 3 पृष्ट 59 राजशेखर ''काव्यमीमांसा'' 91/4-7 ''वाटरस थामस'' आफ ह्वेनसांग ट्रेवलस इन अण्डिया'' जिल्द 1, बील बुध्दिस्ट रिकार्डस आफ द वेस्ट्न वर्ड जिल्द 1 पृ0 70 ।
2- 3/27, 4/10, 12/3, 19/17
3- 1/7, 3/8, 11/4, 1/1
4- 8/14
5- ''रामायण'' अयोध्या काण्ड 3/25, 82/8 किष्किन्धा काण्ड 40/19, 41/16
6- ''आदिपर्व'' 120/12, भीष्म पर्व'' 120/12
7- वायुपुराण 33/61, मत्स्य पुराण अध्याय 114
8- ''कनिंघम एंशिएन्ट ज्योग्राफी आफ इण्डिया'' पृ0 11-14
9- राजशेखर वही पृ0 94/15
10- बील वही पृ0 70 वाटर वही पृ0 140 ।
11- समान्तपासादिका जिल्द 1 पृष्ठ 197

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर प्रदेश में [illegible] के अन्तर्गत [illegible]

[illegible] रहा है । यहाँ की प्रमुख नदियों में [illegible]

नदियों का विकास किया । [illegible], सहारनपुर, मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर,

गाजियाबाद, अलीगढ़ एवं मथुरा आदि [illegible]

[illegible]

[illegible] :-

[illegible] :- '' [illegible]

[illegible] '' ।

[illegible] :- [illegible] (1) [illegible]

[illegible] :

(1) [illegible], (2) [illegible], (3) [illegible], (4) [illegible]

[illegible], (5) [illegible] । [illegible] (2) [illegible], (3), [illegible]

[illegible] (4), [illegible] (5), [illegible] (6), [illegible] (7), [illegible] (8) [illegible]

[illegible] (9) [illegible] । [illegible] (10) [illegible]

[illegible]

[illegible] 800 [illegible] (11)

1- '' [illegible] '' 7/18-28, '' [illegible] '' [illegible] 82, '' [illegible] '', '' [illegible] '' [illegible] 11

443, [illegible] 1, पृष्ठ 227, [illegible] 3 पृष्ठ 58 [illegible] '' [illegible] ''

91/14-7 '' [illegible] '' [illegible] '' [illegible] 1, [illegible]

[illegible] 2 पृ 70 ।

2- 3/27, 4/70, 12/3, 18/17

3- 1/7, 3/8, 11/9, 1/1

4- 58/14

5- '' [illegible] '' [illegible] 3/25, 82/8 [illegible] 41/18, 4/4 [illegible]

6- '' [illegible] '' 130/12, [illegible] '' 128/12

7- [illegible] 23/81, [illegible] 114

8- '' [illegible] '' पृ 11-14

9- [illegible] पृ 94/13

10- [illegible] पृ 73 [illegible] पृ 140 ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैन शास्त्रों में भी उत्तर प्रदेश भारतवर्ष के हृदय के रूप में तथा मध्यदेश के नाम से सम्बोधित किया गया है (1) अथर्व वेद में रेर्वा (नर्मदा) के उत्तर का भूभाग का उल्लेख एक इकाई के रूप में मिलता है। नर्मदा के उत्तर का क्षेत्र आर्यावर्त के नाम से विख्यात था। हिमालय तथा विन्ध्यापर्वत के बीच के भाग को आर्यावृत कहा गया है। पाली साहित्य के अनुसार मध्यदेश की पूर्व दिशा में कजंगल नामक कस्बा है, उसके बाद शाल के वन हैं। पूर्व दक्षिण में सललवती नामक नदी है। उसके बाद सीमान्त देश उत्तर दिशा में उसीरध्वज नामक पर्व है (2)।

मनु (3) का उत्तर दक्षिण के बीच का भूखण्ड था। पतंजलि ने अन्तर्वेदी का (4) उल्लेख किया है। राजशेखर (5) ने हिमालय तथा विन्ध्य पर्वत के मध्य में विनशन के पूर्व और प्रयाग से पश्चिम भूखण्ड को मध्य देश कहा है। पुराणों (6) में मध्यदेश को कुरुपांचाल कहा गया है। मनु (7) के अनुसार कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पंचाल और सूरसेन मिलकर ब्राह्मर्षि देश का निर्माण करते है तथा उसके उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में विन्ध्य पर्वत है पश्चिम में इसकी सीमा विनशन तक तथा पूर्व में प्रयाग तक है। फाहियान ने बताया है कि मथुरा के दक्षिण में मध्यदेश प्रारम्भ होता है। ह्वेनसांग ने भी मध्यदेश के मथुरा, अयोध्या, वाराणसी एवं कन्नौज आदि नगरों का वर्णन किया है।

ब्राह्मण धर्मावलम्बियों बोध्दों तथा जैनियों ने अपनी सम्पूर्ण लीला मध्यदेश के आश्रम स्थल पर अभिनित की है। हिमालय तथा विन्ध्य पर्वतों के बीच में स्थित भूखण्ड को आर्यावर्त कहा गया है। विभिन्न समय में इस प्रदेश को अन्तर्वेदी, आर्यावर्त एवं उत्तरापथ आदि नामों से अभिहित किया गया (8)

1- जैनवलभद्र पृ0 6

2- जातक 1/64

3- मनुस्मृति 2/1

4- ''महाभाष्य'', 12/4/1 पृ0 244

5- ''काव्यमीमांसा'' 92/17-18

6- ''विष्णुपुराण'' 2/3/15 गरुड़ पुराण 55/10, मत्स्य पुराण 114/34

7- मनस्मृति 2/18-21

8- जैन ज्योति /प्रसाद भगवान महावीर स्वामी स्मृति ग्रन्थ पृ0 1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2- समाज एवम् धर्म :- समाज एवं धर्म संस्कृतिक के ही दो पहलू है । संस्कृति सीखे हुये व्यवहारों एवं व्यवहार के परिणामों की वह व्यवस्था है जिसके निर्माणकारी तत्व किसी विशिष्ट समाज के सदस्यों द्वारा संचारित या समग्रहीत होते है । समाज केवल व्यवहारों का समूह मात्र नहीं है वरन् वे परस्पर सम्बन्धित एवं अन्योन्याश्रित होकर एक सुदृढ़ व्यवस्था में ढ़ल जाते हैं । इसमें मानव कल्याण एवं प्रगति मे सहायक हुये सम्पूर्ण ज्ञानात्मक विचारात्मक और क्रियात्मक अनुभव जो किसी जनसमुदाय मे लगातार प्रयोग द्वारा संस्कारों का किसी जनसमुदाय में रुप ले लेते हैं, उनकी संस्कृति कहलाते है । यह अर्जित होती है और जाति समुदाय के जीवन, चिन्तन तथा व्यवहारों को प्रदर्शित करती है इसके अन्तर्गत भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा धार्मिक व्यवस्थायें, रीति रिवाज, ललित कलायें, शिक्षा साहित्य रुचि एवं धार्मिक तथा लौकिक विश्वास सभी आ जाते है । धर्म से समाज में चेतना एवं समग्रता आती है । धार्मिक विश्वास ही आशा का दीप जलाकर समाज के प्राणियों को नई दिशा देते है ।

विवेच्य काल में वैदिक एवं महाकाव्यकाल, महाजनपदकाल मौर्य तथा शुंग, कुषाण, गुप्त तथा मौखरी - वर्द्धन वंश आते हैं इन युगों के शासकों के शासनकाल की प्राचीन संस्कृतिक का विकास हुआ । इस समय का विस्तृत सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था का अध्ययन अभी तक प्रस्तुत नहीं हुआ है ।

शोध का उद्देश्य :

(1) शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत विवेच्य क्षेत्र की सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्थाओं का विवेचन करना ।

(2) ऐसी व्यवस्था में विकसित सामाजिक एवं धार्मिक विश्वास का अध्ययन करना है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शोध विधि :- शोध प्रबन्ध में ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है इसमें अतीत के इतिहास का किसी विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है और प्रदत्त सामग्री की व्याख्या एवम् विवेचना करके एक सम्बद्ध तर्कसंगत प्रबन्ध तैयार किया जाता है । प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में उल्लिखित काल के सामाजिक एवं धार्मिक विकास का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है । ऐतिहासिक शोध के लिये प्रायः दो प्रकार के स्रोत उपलब्ध होते हैं । (1) प्राथमिक स्रोत (2) गौण स्रोत

प्राथमिक स्रोत :- ऐसी मूल दस्तावेज या अवशेष जो उस समय के हो जिस पर खोज की जा रही हो । प्राथमिक श्रोत कहलाते है । यह 2 उप वर्गों में बांटे जाते है :-

(1) अचेतन श्रोत :- जिनका जानबूझकर भविष्य के लिये सूचना देना या या अभिलेख छोड़ना अभिप्राय नहीं रखता जैसे :- पत्र, हथियार, वर्तन, वस्त्र, भवन, सिक्के, चित्र, चित्रकला या अन्य कला कृतियां ।

(2) चेतन श्रोत :- जो मौलिक या लिखित प्रमाण के रूप में होते है और उन व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत किये जाते है जो उस दृष्टि से लिखे जाते है कि भविष्य में सूचना संचरण कर सकें जैसे :- संविधान, नियम, शासकीय प्रतिवेदन या अभिलेख, आत्मकथा पत्र एवं देवनन्दनी घोषणायें, आज्ञापत्र पुस्तकें, पत्रिकायें, समाचार पत्र एवं चित्र आदि ।

गौण शोध :- ऐसे व्यक्तियों द्वारा संचारित योजनायें जिन्होंने न उस काल की घटनाओं में भाग लिया है और न उसके प्रत्यक्षदर्शी ही रहे हैं परन्तु कहीं से सुन पढ़कर वर्णन किया है । प्राथमिक शोध इनसे कहीं अधिक प्रमाणित समझी जाते है ।

शोध विषय के अध्ययन श्रोतों को 3 प्रमुख वर्गों में विभाजित किया जा सकता है :-

1- साहित्यिक (क) प्राथमिक, (ख) गौण श्रोत

2- विदेशी यात्रियों के यात्रा विवरण - प्राथमिक श्रोत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3- ''पुरातात्विक सामग्री ।

-: साहित्यिक :-

साहित्य समाज का दर्पण है इस क्षेत्र के अन्तर्गत वेद पुराण, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों के अतिरिक्त जैन तथा बौद्ध ग्रन्थ भी हैं जिनसे इस प्रदेश के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है। पाणिनी, पतंजलि, कालिदास, वाण, एवं राजशेखर आदि की रचनाओं में उस भूभाग के इतिहास से रोचक एवं बहुमूल्य सामग्री उपलब्ध होती है ।

दूसरा प्रमुख श्रोत विदेशी यात्रियों के विवरण हैं । मिलेटिस वासी हिकेटियस (ई0पू0 486) प्रथम यूनानी भूगोल शास्त्री था जो पारसिक साम्राज्य की सीमा से परिचित नहीं था किन्तु वह भारतीय जनों के नाम से अवगत था । (1) हेरोडोटस (484-431ई0पू0) में भारत की बड़ी जनसंख्या के विषय में लिखा था (2) उसने भारत के लघु राज्यों के विषयों में सूचना दी है । (3) टेसियस (398 ई0 पू0) ने भारत पर पुस्तक लिखने की सामग्री एकत्र की थी सिकन्दर के कई ग्रीक साथियों में निआकर्स (4) आनेसिकाइटस, आरिस्टोबुल्स हैं जिनके लेख उपलब्ध नहीं हैं किन्तु सारांश स्ट्रैबो (5), प्लिनी एरियन की कृतियाँ प्राप्त होती हैं । डायोडोरस, स्ट्रैवों, करटियस और सिकन्दर के इतिहासकारों ने एरियन और जस्टिन का उल्लेख किया जा सकता है । चन्द्र गुप्त मौर्य के दरबार में पधारे हुये यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने भारतीय संस्थाओं, भूगोल कृषि, हल एवं परम्पराओं आदि का वर्णन ''इण्डिका'' में किया है। प्लिनी की (नेचूरल हिस्ट्री) तथा ईजिप्ट के मंत्रधारी कासमस इंडिको प्लूस्टस की क्रिश्चियन टोपोग्राफी आफ द यूनीवर्स एवं टालमी का भूगोल महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में फाहियान तथा हर्ष के समकालीन में हेनसांग भारत आये । इतसंग ने भी भारत के समाज एवं आचार व्यवहार पर भी प्रकाश डाला है ।

---

(1) रेप्सन-कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया भाग । पृ0 394 (2) वही पृ0 395
(3) लाहा विमलचरण ''इन्डोलाजिकल इस्टडीज भाग-2
(4) रैप्सन वही पृ0 395 (5) ज्योग्राफी बुक 15 अनु0 माक्रिन्डल इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिटरेचर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

-: पुरातत्व :-

पुरातात्विक साक्ष्यों के अन्तर्गत अभिलेख, सिक्के, मोहरे स्थापत्य कृतियां प्रतिमायें आदि है । उत्खनन द्वारा जो सामग्री प्रकाश में आयी है वह अत्यधिक महत्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालती है । कनिंघम, फ्यूहर, स्मिथ, थामस आदि ने भगनावशेषों का अध्ययन किया । डा० हर्ट ने सोंख(1) (मथुरा) में, श्री आर०बी० नारायण ने मसान (2) गाजीपुर जिला में) हीरानन्द शास्त्री ने सैंकिसा में (3) के० एन० दीक्षित ने केसरी तथा अल्लाहपुर (4) में शोध कार्य करके उत्खनन क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । अहिच्छत्रा, भीटा, हस्तिनापुर, कन्नौज, कौशाम्बी, श्रावस्ती, कुशीनगर, मथुरा, बनारस, सारनाथ, देवगढ़, अतरंजीखेड़ा, कम्पिल, कहांव, विलसढ़, बिठूर, भीतरगांव, सोरो, मडावर, पिप्रावा, मसानडीह, कैरबल, केदार, कुतपुर, आलवी, अयोमुख, झूसी, मीरठ, भट्टग्राम, देवेरिया, आवंला, कांप्रियाग एवं पावा आदि स्थानों से महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध हुई है ।

प्राचीन अभिलेखों से न केवल राजनैतिक इतिहास का ज्ञान होता है वरन् उनसे लिपि साहित्य एवं संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है । अशोक का कालसी (देहरादून) शिलालेख (5), देहली मेरठ स्तम्भ (6), कौसंम अभिलेख (7), लुम्बनी स्तम्भ लेख (8) सारनाथ मूल स्तम्भ लेख (9) शुंगकालीन वैदिक स्तम्भ (10) (सारनाथ) शुंगकालीन अभिलेख (11) सैंकिसा (अयोध्या से प्राप्त शुंगकालीन अभिलेख) (12)

1- हर्ट ''एस्कवेशन आफ सोंख वी०एम०ए०यू०पी० 1968 पृ० 3 से 8
2- नारायण के०वी० एस्कवेशन आफ मसाने वही भाग 1968
3- शास्त्री हीरानन्द ''ऐस्कवेशन आफ सैंकिसा वही भाग-2 पृ० 99-118
4- दीक्षित के०एन० ऐस्कवेशन आफ कसेरी वही भाग-7 पृ० 55-59
6- इलियट जानसन हिस्ट्री आफ इंडिया भाग-3 पृ० 353
7- कनिंघम सर्वे रिपोर्ट भाग-1 पृ० 277 पुष्ट नोट
8- हुल्श ई० ''इंसक्रिपसन आफ अशोक भाग पृ० 164-65(9) वही पृ० 161-64
10- शर्मा आर० सी० ''शुंग इसक्रिपसन फ्राम सैंकिसा ''वी०एम०ए०यू०पी० भाग-2 1967-68
11- वही पृ० भाग-3 188 पृ० 51-52
12- बाजपेयी के० डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ० 41
5 कनिंघम आर्कियोलोजिकल सर्वे रिपोर्ट भाग-1 पृ० 247

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पिप्रावा (बस्ती) से शक अभिलेख (1) मथुरा से सिंह शीर्ष (2), चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का मथुरा से रंगेश्वर महादेव के समीप चडूल मडूल वगीची से प्राप्त अभिलेख (3) कटरा (मथुरा) से दो अभिलेख (4), मेहरोली (दिल्ली) (5) अभिलेख, कहाव (देवरिया) का स्कन्द गुप्त का अभिलेख (6), मानकुंवर (इलाहाबाद) का बुद्ध मूर्ति पर कुमार गुप्त अभिलेख (7) भीतरगांव (जिला-गाजीपुर) का स्कन्दगुप्त अभिलेख (8) विलसड़ (एटा) का कुमार गुप्त अभिलेख (9), हर्ष का बासखेड़ा (10) जिला-(शाहजहाँपुर) तथा मधुवन अभिलेख (11), विवेच्य युग की सामाजिक तथा धार्मिक अवस्था पर उल्लेखनीय प्रकाश डालते हैं।

सिक्कों का भी कम महत्वपूर्ण स्थान नहीं है विवेच्य क्षेत्र के मेरठ (12) अयोध्या (13) मथुरा (14), बाराबंकी (15), अहिच्छत्रा (16) जौनपुर (17), उन्नाव (18), कौशाम्बी (19), फर्रुखाबाद (20), पुरानपुर (पीलीभीत) (21) सीतापुर (22), हाथीपारा (जिला-गोरखपुर), झांसी (23), विडवाल (24), (जिला आजमगढ़)

1- बाजपेयी के०डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ० 4

2- बाजपेयी के०डी० मथुरा भाग-2 पृ० 17

3- वही पृ० 20 (4) वही पृ० 21

5- उपाध्याय भगवतशरण गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास पृ० 157-158

6- बाजपेयी के०डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ० 12

7- श्रीवास्तव वी०एन० बुद्धा पेडिस्टल इनसक्रिप्सन आफ कुमार गुप्त वी०एम०ए०यू०पी० भाग-1 1988 पृ० 16-17

8- उपाध्याय भगवत शरण वही पृ० 158

9- बाजपेयी के०डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ० 27

10- वैद्द चिन्तामणि विनायक एथिक इण्डिया भाग-4 पृ० 208-11

11- वही भाग-1 पृ० 67-75

12- श्रीवास्तव सी०एस० कुषाण होडर्स आफ ट्रेजर ट्रेव केन्स फ्रोम उत्तर प्रदेश वी०एम०ए०यू०पी० भाग-3 पृ० 48

13- बाजपेयी के०डी० इण्डियन न्यू मेस्टिक स्टडीज अध्याय 22

14- श्रीवास्तव सी०एस० वही भाग-3 पृ० 48 (15) वही पृ० 48-67

16- बाजपेयी के०डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ० 34-35

17- श्रीवास्तव ए०के०ए० होड आफ क्वाइन्स फ्रोम जौनपुर वी०एम०ए०यू०पी० भाग -4

18- श्रीवास्तव ए०के० कुषाण गोल्डन क्वाइन्स फ्राम उन्नाव वही भाग 5-6 पृ० 31-33

19- बाजपेयी के०डी० इण्डियन न्यू मैटिक स्टडीज अध्याय -12

20- वही अध्याय-37 (21) जे०एन०एस०आई० भाग-17 पृ० 42-45

22- श्रीवास्तव सी०एस० वी भाग पृ० 66 (23) बाजपेयी के०डी० इन्डियन न्यूमैस्टिक स्टडीज अध्याय-29

24- श्रीवास्तव सी०एस० वही भाग - पृ० 50

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शहावर (1) जिला बाराबंकी, देल्हापुर (2) (जिला- जौनपुर), कुशीनगर (3), वाराणसी(4), श्रवस्ती (5), मंडावर (6) आदि स्थानों से तत्कालीन सम्राटों की सोने चाँदी एवं ताँबे की अनेकों मुद्रायें प्राप्त हुई हैं जो विविध क्षेत्र के सामाजिक एवं धार्मिक विकास पर प्रचुर प्रकाश डालती है ।

स्थापत्य और मूर्तिकला के बहुसंख्यक अवशेष विवेच्य क्षेत्र के विभिन्न प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों से मिले है जिनसे सामाजिक एवं धार्मिक अध्ययन पर विशेष प्रकाश पड़ता है । कन्नौज, कम्पिल, देवगढ़, सारनाथ, प्रयाग, वाराणसी, अयोध्या, अतरंजी खेड़ा, कुशीनगर, संकाश्य, मथुरा, लाखामण्डल, भीटा, हरिद्वार, हस्तिनापुर, श्रावस्ती, भीतरगांव मन्डावर, अहिच्छत्रा एवं कहाव आदि स्थानों से स्थापत्य एवं मूर्तिकला के सुन्दर नमूने उपलब्ध हुये है ।

प्रबन्ध योजना - प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में कुल 9 अध्याय हैं द्वितीय अध्याय में उत्तर प्रदेश का भौगोलिक विवरण दिया गया है । समय समय पर यह क्षेत्र अपना प्रतिभशाली अभिनय भारतीय रंगमंच पर करता रहा ।

तृतीय अध्याय में विवेच्य क्षेत्र के राजनैतिक विकास का वैदिक युग से हर्ष के समय तक का संक्षिप्त विवरण दिया गया है । इस अवधि में मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त मौखरी वर्द्धन, राजवंशों के शक्तिशाली सम्राटों ने इस भू-भाग के सामाजिक एवं धार्मिक इतिहास के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित की है ।

चतुर्थ से अष्ठम अध्यायों में सामाजिक एवं धामिक व्यवस्था का वर्णन क्रमशः वैदिक काल महाजनपदकाल, मौर्य तथा शुंगकाल कुषाणकाल, एवं गुप्तवर्द्धनकाल का किया गया है । इन अध्यायों में समाजिक संरचना, समाज में नारी, संस्कार, खानपान, आभूषण एवं प्रसाधन, ललित कलायें, आर्थिक अवस्थायें एवं शिक्षासाहित्य का चित्रण किया गया है । कौटिल्य एवं मनु आदि आर्थिक विचारकों के मतों को प्रस्तुत करते हुये विवेच्य क्षेत्र में आर्थिक समृद्धि के महत्व का विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

1- वही पृ0 62   2- वही पृ0 66
3- दत्तनलिनाक्ष और बाजपेयी के0डी0 उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास पृ0 268
4- बाजपेयी के0 डी0 युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ0 37
5- दत्तनलिनाक्ष और के0 डी0 बाजपेयी वही पृ0 243
6- बाजपेयी के0 डी0 युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ0 33

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैदिक पौराणिक धर्म का प्रचार सम्पूर्ण विवेच्य क्षेत्र में रहा । अशोक के समय में बौद्ध धर्म शुंगकाल में ब्राह्मण धर्म, गुप्तकाल में भगवत धर्म, हर्ष के समय में बौद्ध धर्म में विशेषरूप राजाश्रय दिया गया फिर भी जैन, बौद्ध आदि धर्मों को भीमहत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ । वैदिक धर्म के प्रमुख केन्द्र मथुरा, अयोध्या, काशी, हरिद्वार, बनारस, देवगढ़, चित्रकूट, बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र सारनाथ, कुशीनगर, संकाश्य, आलवी, मथुरा, कन्नौज, कौशाम्बी तथा जैन धर्म के प्रमुख केन्द्र :- कम्पिल, अहिच्छत्रा, मथुरा, श्रावस्ती आदि नगर के जिससे विवेच्य क्षेत्र के धार्मिक अवस्था के विकास एवं प्रसार का समुचित बोध होता है । साहित्यिक दृष्टि से यह कार्य विशेष रुप से सम्पन्न रहा है वेद उपनिषद, रामायण, महाभारत, बौद्ध तथा जैन साहित्य पुराण स्मृति धर्मशास्त्र महाभाष्य, अष्ठाधायीतथ अर्थशास्त्र आदि प्रमुख कृतियां है जिन्होंने भारतीय साहित्य कलेवर को परिपूर्ण करके स्वर्णयुग का प्रादुर्भव किया । जैवली, उद्दालक, अश्वपति, आचार्य शौध, व्यास, वालमीकि शाक टायन, भरद्वाज, पतंजली, पाणिनी, कौटिल्य, वात्सायन, कालिदास वाण एवं हर्ष आदि महान साहित्यकारों ने माँ भारतीय के भव्य महल की दीवारों पर सुन्दर चित्रकारी की है । जिनके वर्णन की सजीवता एवं माधुर्यता बेजोड़ है ।

विवेच्य क्षेत्र में विभिन्न स्थानों से प्राप्त प्रतिमाओं एवं कलाअवशेषों के व्यवस्थित अध्ययन का प्रयास किया गया है। यह निर्विवाद है कि यह क्षेत्र मूर्ति कला की दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्न रहा है । उल्लेखनीय कला केन्द्रों में मथुरा, अयोध्या, काशी, सारनाथ, कुशीनगर, अहिच्छत्रा, देवगढ़, कम्पिल एवं कन्नौज का महत्वपूर्ण स्थान रहा है ।

अन्तिम अध्याय निष्कर्ष के रुप में है शोध नियमों से सम्बन्धित प्राचीन कलाकृतियों के चुने हुये चित्र शोध प्रबन्ध में यथा स्थान दिये गये है । विवेच्य क्षेत्र के सांस्कृतिक केन्द्रों का एक मानचित्र प्रस्तुत किया गया है ।

x x x xx

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

-: भौगोलिक विवरण तथा क्षेत्र की विशिष्टता :-

अध्याय-2

प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के अध्ययन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण स्थान है । प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के निर्माण में विवेच्य युग का उल्लेखनीय स्थान है जिसके साक्षी बहुसंख्यक प्रागैतिहासिक तथा ऐतिहासिक अवशेष है जो विभिन्न स्थलों से प्राप्त हुये है ।

क्षेत्रफल :- उत्तर प्रदेश भारतवर्ष के उत्तरी भाग में अक्षांश 23⁰52 और 31⁰18 उत्तर तथा देशान्तर 66⁰10 और 89⁰39⁰ पूर्व के मध्य स्थित है जिसका वर्तमान क्षेत्रफल 293,969 किलोमीटर है जनवरी 1950 से पूर्व इस राज्य का नाम संयुक्त प्रदेश आगरा और अवध था । 1988 में इस प्रदेश को पृथक प्रान्त का स्तर प्रदान किया गया जिसकी राजधानी इलाहाबाद थी । इस प्रदेश की आकृति शेर के समान है तथा जनसंख्या 11,08,58,819 (1)

सीमायें :- इस प्रदेश के उत्तर तथा उत्तर पूर्व में हिमालय तिब्बत और नेपाल, पूर्व में बिहार, दक्षिण में मध्य प्रदेश स्थित है । उत्तर में काली नदी इस प्रदेश के पहाड़ी जिलों को नेपाल से पृथक करती है। पूर्व में गंडक, घाघरा और नदियों के कुछ भाग इस प्रदेश की प्राकृतिक सीमा बनाते हैं । इस प्रदेश को प्रमुखतः 4 प्राकृतिक भागों में बाँटा गया है ।

(1) उत्तर पर्वतीय प्रदेश (2) हिमालय का तराई भाबर प्रदेश
3) गंगा यमुना का मैदान (4) दक्षिण का पठारी भाग ।

उत्तर पर्वतीय प्रदेश :- हिमालय सदियों से भारत का उन्नति मस्तक रहा है । ऋगवेद (2) में हिमालय का वर्णन है सतपथ ब्राह्मण (3) तथा अर्थवेद (4) में त्रिककुद का उल्लेख है जो हिमालय पर्वत श्रृंखला के अन्तर्गत ही एक पर्वत था ।
उपनिषदों (5) महाभारत(6)रामायण(7), जातियों (8) पुराणों (9), योगिनीतन्त(10) कालीदास (11) और राजशेखर (12) हिमालय का वर्णन किया है ।

1- दैनिक पायनियर-29 नवम्बर-1981 (2) 10/12/4 (3) 31/3/12
4- 4/9-8 (5) 3/12 (6) वनपर्व-253
7- रामायण-बालकाण्ड 6/14 (8) अंगुत्तर निकाय 4/101 परमत्थजोतिका
9- कर्मपुराण-30/45-48, कालिकापुराण अध्याय15 21 पृ06 जातक 6/125,4138,21976, पृ0 5 2/178,396 396, 6/265.
10- वही 1/16 (11) कुमार सम्भवा । (12) काव्य मीमांसा 96/1-4

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिमालय आर्थिक, धार्मिक तथा राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण नहीं अपितु भारतीय संस्कृति का उद्गम क्षेत्र भी रहा है । परमत्थजोतिका (1) में हिमालय का विस्तार 3 हजार योजन बताया है गंगा, यमुना, अचिरावती, (छोटी राप्ती) सरभू (सरयू) आदि अनेक नदियां हिमालय से निकलती है । हिमालय सघन वनों से आच्छादित है (3) हिमालय पांच सौ योजन उंचा आकाश में उठा हुआ तथा तीन हजार योजन के घेरे में है (4) उत्तर के उत्तरी भाग उत्तराखण्ड कहा जाता है जिसमें अल्मोड़ा, गढ़वाल, टेहरी गढ़वाल, देहरादून जिले का उत्तरी भाग और नैनीताल के जिलों का प्रमुख स्थान है । नन्दा देवी (7-8 किलोमीटर) तथा नन्दकोट (6-8 कि०मी०) आदि हिमालय की उंची चोटियां है इस प्रदेश की चौड़ाई 290 कि०मी० और क्षेत्रफल 7,500 वर्गमील है यह प्रदेश समस्त राज्य का 18 % भाग (94° 340 वर्ग कि०मी०) है । प्रदेश का ढाल उत्तर पूर्व दक्षिण पूर्व की ओर है । हिमालय की तीन समानान्तर श्रेणियां सदा बर्फ से ढकी रहती है ।

हिमालय का झावर तथा तराई का प्रदेश :- यह हिमालय पर्वत तथा गंगा के मैदान का मध्यवर्ती भाग है । पतली पट्टी के रुप में पश्चिम से पूर्व तक गंगा के मैदान और हिमालय पर्वत प्रदेश के बीच फैला हुआ है । इस प्रदेश में सहारनपुर, बिजनौर, पीलीभीत, बरेली, खेरी, गोंडा, बस्ती, बहराइच और गोरखपुर जिलों के उत्तरी भाग सम्मिलित है । हिमालय पर्वत की तलहटी में 32 कि०मी० की चौड़ाई में झावर प्रदेश फैला हुआ है ।

गंगा यमुना का मैदान :- गंगा यमुना के मैदान में विवेच्यकाल के सामाजिक एवं धार्मिक विकास को विशेष रुप से प्रभावित किया है । यह क्षेत्र अत्यधिक उपजाऊ रहा है । (5)

1- वही जिल्द । पृ0 224, जिल्द पृ0 443

2- मिलिन्दपमोट पृ0 117

3- सौरत्थप्प कासिनी जिल्द । पृ0 365, लाहा विमलचरण, प्राचीन भारत का इतिहासिक भूगोल, पृ0 69

4- पृ0 47-48 लाहा विमलचरण जोग्राफी आफ अर्ली बुद्धिस्ट पृ0 27,41-42

5- ऋग्वेद 39/8, अयोध्या काण्ड 50/12/14 महाभारत, भीष्मपर्व 9/10, जातक 2/283, 5/2, 6/427, ब्रम्हपुराण अध्याय 882 श्लोक 27, रघुवंश 2/26,6/48,53/57,16/33 कादम्बरी पृ0 75

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गंगा को सुरगंगा (1) अलकनन्दा (2) स्वर्गतरंगणी (3), भगीरथी (4), आदि नामों से पुकारा जाता था । यह मैदान पंचाल जनपद का निर्माता था (5) इस विशाल मैदान का निर्माण भावर तथा तराई के दक्षिण में गंगा तथा उसकी सहायक रामगंगा, गोमती, घाघरा, ताप्ती, गण्डक एवं यमुना आदि नदियों द्वारा लाई गई कॉप मिट्टी से हुआ है । मौर्य युग में आये हुये मेगस्थनीज ने गंगा की महत्ता का उल्लेख किया है । (6) निआर्कस (7) ने लिखा है भारत का अधिकांश भग मैदान है जो गंगा और उसकी सहायक नदियों द्वारा बनाया हुआ है । गंगा यमुना के तटों पर भारतीय संस्कृतिक का प्रचुर विकास हुआ । हस्तिनापुर, संकाश्य, मथुरा, कन्नौज, कौशाम्बी काशी, प्रयाग आदि महत्वपूर्ण सामाजिक विकास एवं धार्मिक उत्थान के महत्वपूर्ण केन्द्र इन्हीं नदियों के किनारे स्थित थे यात्र फाहियान ने भी इन संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्रों की यात्रा की । सातवीं सदी में आये हुये हेनसांग (9) इन नदियों के तट पर स्थित प्रयाग, स्थानेश्वर, मथुरा, संकाश्य, कान्यकुब्ज, अयोध्या, कौशाम्बी आदि ऐतिहासिक स्थलों की यात्रा की थी । गंगा आवागमन का प्रमुख साधन रही है । (10) हरिद्वार से प्रयाग तक गंगा नदी यमुना के समानान्तर बहती है । स्पेड (12) एडवर्ड (13) ने भी गंगा की विशालता का वर्णन किया है । गंगा विष्णु के चरणों से निकली है (14)

1- ऋग्वेद 29/23

2- भागवत पुराण 6/24, 3/42

3- ऋग्वेद, 38/8

4- जातक 5/93, 255, 6/204 महाकवि अश्वघोष बुध्द चरित्र 15/14

5- सिंह ब्रजमोहन, गंगा रामगंगा दोआब सोड पोट भाग (वाल्यूम) 16 सं0 4 अक्टू0 1964 पृ0 318

6- एरियन पेग । पृ0 33-34 इण्डिका अध्याय 4 पृ0 186/94

7- स्टावो जोग्रफी वक 16 अड ऐंशियेन्ट इण्डिया ऐज डिसक्राइब्ड इन क्लासिकल लिट्रेचर पृ0 21, जैन बलभद्र वही पृ0 8

8- गाइल्स ट्रेवल्स आफ फाहियान पृ0 29

9- वील वही पृ0 22

10- रामायण 65/2, 71/3

11- लाहा विमलचरण प्राचीन भरत का ऐतिहासिक भूगोल पृ0 133

12- स्पेड इण्डिया टू पाकिस्तान पृ0 97

13- हिस्ट्री आफ इण्डिया पृ0 20

14- डब्लू क्रुक दी पापुलर रिलीजन फोकलोर आफ नार्दन इण्डिया पृ0 35 भाग ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्ट्राबो (1) ने इस मैदान को उपजाऊ कहा है । गंगा के अलावा यमुना (2), अचिरावती, (छोटी राप्ती (मही) गंडक (4) गोमती (5) इक्षुमती (सरस्वती) (6), गंडक (7), आदिनदियों का भी मैदान के उपजाऊ बनाने में महत्वपूर्ण स्थान रहा है । गंगानदी हरिद्वार के निकट मैदान में प्रवेश करती है । मेरठ, रुहेलखण्ड, फरुखाबाद, अवध, इलाहाबाद, मिर्जापुर, बनारस, बलिया आदि जिलों को पवित्र करती हुई गंगा प्रयाग के निकट यमुना में मिल जाती है । उत्तरी पंचाल तथा दक्षिणी पंचाल की विभाजक रेखा भागीरथी नदी थी । यहाँ अहिच्छत्रा नदी थी । यहाँ अहिच्छत्रा एवं कम्पिल संस्कृति के विकास के दो महत्वपूर्ण स्तम्भ थे । (8)

गंगा के सरयू के बीच का विस्तृत भूभाग में पंचाल जनपद अयोध्या और काशी राज्य थे । इस भू-भाग में सारा रुहेलखण्ड लखनऊ, फैजाबाद और बनारस कमिश्नरियों के क्षेत्र शामिल है । सरयू नदी के दूसरी ओरे के प्रदेश में बहराइच, गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, देवरियों के जिले है । बौध्द धर्म के विकास की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है । श्रावस्ती, कोशल की राजधानी थी । कसिया, लुम्बनी आदि महत्वपूर्ण केन्द्र इसी क्षेत्र में विकसित हुये । गंगा यमुना का दोआब आर्थिक राजनैतिक तथा धार्मिक महत्ता की दृष्टि से प्रमुख एतिहासिक स्थल है ।

<u>दक्षिण का पठारी भाग</u> :- इस क्षेत्र में बुन्देलखण्ड के पांच जिले झांसी (झांसी), जालौन, हमीरपुर, बांदा, ललितपुर एवं मिर्जापुर का क्षेत्र सम्मिलित है । मिर्जापुर जिले में सोनघाटी तथा चित्रकूट के आसपास अनेकों प्रागैतिहासिक जिसमें भारतीय कला के उत्कृष्ट नमूने उपलब्ध होते हैं । चम्बल वेतवा, केन इस क्षेत्र की प्रमुख नदियां है । ललितपुर जिले में देवगढ़ का प्राचीन मन्दिर इस क्षेत्र का दर्शनीय स्थल है । रामायण कालीन सीतापुर, कामतानाथ, पहाड़ी, लक्ष्मण प्रहरी, जानकी कुण्ड, हनुमानगढ़ी, स्फटिकशिला, गुप्त गोदावरी, अनुसूइया आदि पवित्र स्थल यहीं विद्यमान है । शिल्पियों द्वारा इस क्षेत्र में उत्तर कलाकृतियों का निर्माण हुआ जो न केवल भारतीय इतिहास में अमर है वरन् विदेशी यात्रियों ने भी मुक्त कंठ से प्रसंशा की है ।

1- स्ट्राबो ''जाग्राफी बुक 15 अनु० मैग्रेडिल पृ० 25

2- ऋग्वेद 52/17,8/19/89, अथर्ववेद 4/9/10, सांख्यायन श्रौतसूत्र 13,29/25/33, कात्यायन 24,6/10/39, अश्वलायन 12, महाभाष्य 1/1/85 पृ० 435 कालिकापुराण 15/8, भागवत पुराण 11। 4136

3- अवदानशतक 1/63/11/60 अष्टाध्यायी 3/119, वाटर्स वही पृ० 399

4- अंगुत्तर निकाय जिल्द 4 पृ० 101, मिलिन्दपनोह पृ० 73

5- ऋग्वेद 10/75/6 वैद्य चिन्तामणि विनायक वही भाग 26 पृ० 178

6- अवस्थी अवध बिहारी, वही पृ० 18, लाहा विमलचरण प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल 16

7- ऋग्वेद 9/30/18, आदिकाण्ड 23/5, अष्टाध्यायी 4/1/174 रघुवंश 8/95

8- मिश्र एस०डी० रिवर्स आफ इण्डिया पृ० (9) जातक 5/29 गाइगर वही, पृ० 24, वाटर्स वही भाग 2 पृ० 48 दीर्घ निकाय भाग 2, पृ० 134,137, 146

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जलवायु :- प्रदेश के उत्तरी भाग की ऊँचाई 1200 फुट से लेकर 25000 फुट तक है, जिसके कारण जलवायु में भिन्नता पायी जाती है । विवेच्य क्षेत्र में 90" से लेकर 100 तक वर्षा होती है । जनवरी में पहाड़ी स्थानों का तापमान 75° 80° के बीच रहता है । कालिदास (1) वाण (2), ने प्रकृति का सजीव चित्रण किया है । कृषक वर्षा के जल पर ही निर्भर रहते थे (3) ऋग्वेद (4) में पानी बरसने के लिये प्रार्थना करने का उल्लेख मिलता है । बाजसनेयी संहिता (5) में काले, उड़द मूंग का अष्टाध्यायी (6) में गेहूँ, चावल, इक्षु, ईख, रंग का उल्लेख मिलता है । कालिदास (7) ने अपने साहित्य में मसालों का वाण (8) अंगूर, अनार एवं ईख का विशेष रूप से उल्लेख किया है । पाणिनी ने (9) आश्वयुग ग्रीष्म तथा वसन्त में बोई जाने वाली तीन प्रकार की फसलों का उल्लेख किया है । फाह्यान (10) ने भी सरसों, चावल की बहुलता का उल्लेख किया है । हल, लवन, (कटाई) खनित्र, हसिया, दाँती आदि अनेक प्रकार के कृषि के कृषि उपकरणों का उल्लेख किया है (11) (डायोडोरस) (12) ने मैदानी क्षेत्र के रसदार फलों की बहुलता का वर्णन किया है । सातवी सदी में आये हुये चीनी यात्री ह्वेनसांग चावल, गेहूँ, ईख, अंगूर, अनार आदि फलों की विशिष्टता का वर्णन किया है । इत्सिंग ने चावल, ईख का उल्लेख किया है । पान, सुपारी, मसाले, कपास, लौकी अनेक प्रकार के फूलों फलों का वर्णन जातकों में भी मिलता है जिससे स्पष्ट है कि विवेच्य क्षेत्र की जलवायु अत्यधिक उपजाऊ थी ।

1- रघुवंश 13/54-57
2- वाण हर्ष चरित्र 14/16/80, 218, 219, 257-258
3- ऋग्वेद 4/57/1
4- 4/57/17/101/3, 10/50/3, 1/116/9, 8/49/6, 1/55/8, 10/01/6-7
   3/45/3, 1/55/8
5- 18/12, 19/22, 21/29
6- 4/3/45, 5/2, 5/2/29, 8/3/57, 4/1/42
7- रघु 4/45/48
8- हर्ष चरित्र अग्रवाल वासुदेव शरण 'हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 182
9- अध्याय 3/2/183
10- वील जीवनी, 1/117-78
11- अष्टाध्यायी, 3/2/183 में
12- मैक्रिन्डल एण्ड एरियन एंशियेन्ट इण्डिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन
   पृ0 11, 35-7
13- वील जीवनी 1, 177-78
14- जीव वृतांत
15- जातक 1/341-384, 2/378, 3/198, 4/290, संयुक्त निकायभाग-2 पृ0 985

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य क्षेत्र में आज भी गन्ने का उत्पादन मेरठ, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर सीतापुर, जौनपुर, आजमगढ़, बस्ती, रामपुर, पीलीभीत, लखीमपुर, देवरिया, गोरखपुर, बलिया, मूँगफली का उत्पादन गंगा, रामगंगा, तथा गोमती का क्षेत्र, जूट का उत्पादन खीरी, नैनीताल, बहराइच, गोंडा, पीलीभीत, रामपुर, देवरिया, बरेली, गोरखपुर कपास का उत्पादन मेरठ, बिजनौर, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, लाही सरसों का उत्पादन मथुरा, आगरा, फरखाबाद, इटावा, कानपुर, गोंडा एवं बहराइच अलसी का उत्पादन झांसी, जालौन, हमीरपुर, बांदा, मिरजापुर, गोंडा, बहराइच चाय का उत्पादन देहरादून गढ़वाल, अलमोड़ा तिल का उत्पादन मेरठ, जालौन, बांदा, हमीरपुर आलू का उत्पादन फरखाबाद, कानपुर, देहरादून नैनीताल, अलमोड़ा आदि क्षेत्रों में बहुलता से होता है ।

वन सम्पदा :- विवेच्य क्षेत्र में वन सम्पदा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है । प्रदेश के 13.2 भूमि पर बन पाये जाते हैं तथा 39.770 कि0मी0 क्षेत्र में फैले हुये हैं (2) वामन पुराण (3) में सप्तबनों का उल्लेख है । श्रावस्ती का अन्धबन साकेत का अंजनबन और कंकटीवन, बैशाली का महाबन, लुम्बनी बन, कुसिनारा के शाल बन, काशी का अम्बाटक वन, आलवी और कौशाम्बी के सिंस पावन, बज्जियों के नागवन तथा मथुरा के वन काफी प्रसिद्ध हैं । बुद्ध जी xxx अपनी यात्रा के मध्य इन वनों में विश्राम करते थे (4) पाणिनी ने मिश्र का वन (सीतापुर जिले में) नेमिषारण्य) एवं पतंजली ने (6) खाण्डव वन का उल्लेख किया है । विवेच्य क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के वनों का उल्लेख मिलता है ।

1- उष्ण कटिबन्धीय पतझड़ वाले वनों में विजासाल, गूलर तुने खैर, हल्दू तथा सेमल, शीशम, महुआ, चन्दन, तथा शिरीष आदि की बहुलता है ।

1- माथोरिया चतुर्भुज ''भारत का भूगोल'' पृ0 162
2- तिवारी ए0आर0 जाग्राफी आफ उत्तर प्रदेश पृ0 68 लाहा प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल पृ0 68
3- वामनपुराण 34/1
4- उपाध्याय बुद्धकालीन भूगोल पृ0 145
5- अवस्थी प्राचीन भारतीय भूगोल पृ0 48
6- वही, पृ0 57

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chahdigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

2- अल्पाइन वनों में वाई, ओक, साइप्रस, देवदार आदि वृक्षों का बाहुल्य है । (1) सदाबहार के बन अलमोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़ में, समशीतोष्ण बन नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ में पाये जाते हैं । विवेच्य क्षेत्र में हिमालय की मिट्टी (तर्शियरी, दोमट, चूना, डोलोमाइट) शिवालिकदून, नैनीताल, मंसूरी, में तथा गंगा के मैदान की मिट्टी (वामर तथा खादरी) गंगा तथा उसकी सहायक नदियों द्वारा लाई गई मिट्टियों का उल्लेखनीय स्थान है । (1)

खनिज सम्पदा :- विवेच्य युग से प्रारम्भ से ही सोने , चांदी, लोहा, तांबा आदि खनिज सम्पदा का बाहुल्य रहा है । खनिज सम्पदा का उल्लेख ऋगवेद (2) ब्राम्हण साहित्य (3) महाभारत (4) रामायण (5) जातक (6) अष्टाध्यायी में तथा कौटिल्य (7) कालीदास (9) एवं वाण (10) ने अपने साहित्य में किया है । कालिदास (11) ने हीरा पन्ना, पद्मराग, महानील, मरकत, स्फटिक, मणिशिला, सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त आदि बहुमूल्य द्रव्यों का उल्लेख किया है । हैनसांग (12) ने भी सोने चांदी आदि खनिज सम्पदाओं का उल्लेख किया है ।

लोहा (नैनीताल तथा रामगढ़ क्षेत्र) तांबा (चमोली, उत्तरकाशी, नैनीताल)- सीसा (टेहरीगढ़वाल,अल्मोड़ा), जस्ता (गढ़वाल, खड़िया (देहरादून चमोली, बाल का पत्थर (देहरादून वाराणसी), संगमरमर (देहरादून,झांसी, मिर्जापुर), केलसाइट(मिर्जापुर), स्टेटाइट(अल्मोड़ा), मैगनेसाइट(उत्तरकाशी) आदि खनिज पदार्थ आज भी विवेच्य क्षेत्र में पाये जाते हैं । संचालन विभाग लखनऊ द्वारा उन्नाव में चूने की पत्थर की खोज की गई है । देश की 208, 42 करोड़ टन चूने की सुरक्षित राशि में 770" 2 करोड़ टन संचित राशि उत्तर प्रदेश में ही अनुमानित की गई है । अतः स्पष्ट है कि विवेच्य क्षेत्र में खनिज सम्पदा का बाहुल्य रहा है ।

1- बाजपेयी के०डी० ''उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 102 तिवारी ए०आर० ज्योग्राफी आफ उत्तर प्रदेश पृ0 30
2- वही 8/78/3, 2/33/10, 1/166/9, 5/54/1
3- अथर्ववेद 11/3/1/37, तीतिरीय संहिता 2/2/9/7, सतपथ ब्राह्मण 12/8/3/11
4- 1/58/11
5- महाभारत 13/48, 32-33
6- जातक 1/267, 3/281, 4/411, 6/22, आचारांग सूत्र 2/20, 3/153, 2/122/460
7- पाणिनी 4/3/62,4/3/65, (8)अर्थशास्त्र 2/12,13/11,2/18 (9) उपाध्याय इण्डिया इन कालीदास पृ0 259,260,470 (10) वाणहर्ष चरित्र 11/171-178
11- रघु 16/28, 11/51, 14/33,18/53-59 मेघदूत पृ0 13/7 कुमार सम्भव 6/42, 1/17-44 (12) वील वही 119/80-81

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पशु :- कृषि की उर्वरता एवं आर्थिक सम्पन्नता ने पशुओं की उन्नत अवस्था को प्रभावित किया है । गाय, बैल(1) घोड़ा (2) भेड़ (3), ऊँट (4), हाथी(5), भैंस (6), कुत्ता (7) सांप (8) मुर्गा, तोता, मैना, नेवला (9), बन्दर (10) मृग आदि का उल्लेख पाया जाता है । शिव का वाहन बैल (11) हूण शासक मिहिरकूल के शासकों, संघ वर्मा (12), पंचाल के शासकों (13) की मुद्राओं पर अंकित है । एरियन तथा स्ट्राबो ने हाथी, बन्दर, सांप, बाघ आदि का उल्लेख किया है (14) महाराज प्रवरसेन के चमनक ताम्र पत्राभिलेख में गाय बैल का तथा प्रभावती गुप्त को पूना ताम्र पत्राभिलेख परिग्राम में समृद्ध पशुधन का उल्लेख है । गुप्त सम्राटों की मुद्राओं, परगणा संकिसा के स्तम्भ पर हाथी, तथा गजमूर्ति (15), रामपुरवा के स्तम्भ पर सांड की मूर्ति एवं सिंह (16) सारनाथ स्तम्भ पर सिंह, हाथी, घोड़ा (17), कुषाण मुद्राओं पर बैल (18) आदि सम्राटों के महरोली (19) स्तम्भ पर गरुड़ एवं मयूर मूर्ति (20) से स्पष्ट होता है कि विवेच्य युग में पशु पक्षियों को महत्वपूर्ण समझा जाता था । पशुओं की उन्नति अवस्था में संस्कृति एवं सभ्यता के प्रसार एवं प्रचार को प्रभवित करती है ।

1- ऋग्वेद 10/102/6, 6/28/56, 10/169/4, 10/62/7, 4/24/10 जातक 1/336, 2/82, 2/224
2- ऋग्वेद 10/62/8, 4/24/8, अथर्ववेद 13/29, तैत्रिय संहिता 1/8/15 काठक संहिता 15/8, वाजसनेयी संहिता 1/8/15
3- ऋग्वेद 8/6/48, 1/138/2,
4- वही 4/4/1
5- यजुर्वेद 30/11, स्ट्राबो 15/1?43, पृ0 50 माइक्रिन्डलएनसियेन्ट इण्डिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिट्रेचर ।
6- ऋग्वेद 1?117?9, 8/49/6
7- जातक 4/437, 1/175
8- जातक 3/238, अथर्ववेद 1/148-51
9- पद्मपुराण 10/85-66, जातक 1/436, 5/410, 3/98
10- एरियन इण्डिका 15 माइक्रिन्डिल एनसियन्ट इन्डिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन, पृ0 218
11- महाभारत शान्तिपर्व 284, 92 पृ0 517
12- वही अध्याय 7
13- बाजपेयी के0डी0 इण्डियन न्यूमेस्टिक स्टडीज अध्याय 8
14- फ्रैग (डायडोरस) 2/38 माइक्रिन्डल एनसियन्ट इन्डिया डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ0 32-35
15- शास्त्रीय नीलकंठ नन्दमौर्य युगीन भारत पृ0 419
16- चंदा बिगनिंग्स आफ आर्ट इन ईस्टर्न इन्डिया विद स्पेशल रेफरेन्स 5, एकल्चर इन द इन्डियन म्यूजियम कलकत्ता सं0 30
17- शास्त्रीय के0ए0 नीलकंठ वही पृ0 419
(18) जोशी नीलकंठ प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ0 29-30
19- उपाध्याय गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 157
20- मथुरा संग्रहालय 466

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यापारिक मार्ग :- विवेच्य युग के राजनैतिक, आर्थिक सामाजिक तथा धार्मिक विकास में यातायात के साधनों ने महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित की है। आधुनिक काल में निम्नलिखित मार्ग है :-

1- वाराणसी से इलाहाबाद, फतेहपुर, इटावा, आगरा मथुरा होते हुये दिल्ली तक

2- लखनऊ से सीतापुर, शाहजहांपुर, बरेली, रामपुर, मुरादाबाद, गाजियाबाद होते हुये दिल्ली

3- लखनऊ से उन्नाव कानपुर, अठावा मथुरा होते हुए दिल्ली तक

4- लखनऊ से गाजीपुर होते हुये वाराणसी तक ।

5-लखनऊ गाजीपुरहोते हुये दिल्ली तक ।

6- वाराणसी राष्ट्रीय मार्ग द्वारा कलकत्ते से सम्बद्ध है । वाराणसी से मिर्जापुर होते हुए एक राष्ट्रीय मार्ग रीवा, जबलपुर, हैदराबाद, बंगलोर होते हुये कुमारी अंतरीप तक चला गया है । गोरखपुर से बरौनी भी एक राष्ट्रीय मार्ग द्वारा सम्बद्ध है । ग्रांड ट्रंक रोड वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर, फर्रुखाबाद, अलीगढ़ आदि नगरों से होता हुआ दिल्ली तक चला गया है ।[1] राज्य के मिर्जापुर जिले से बंगलोर को आने वाली ''ग्रेड डेकन'' रोड कर दिया गया है । आगरा से हाथरस होते हुये अलीगढ़ तक इस मार्ग द्वारा ग्रांड ट्रंक रोड तथा बम्बई आगरा मार्ग परस्पर सम्बद्ध है । आधुनिक कालकी भांति प्राचीन युग में भी सड़के आवागमन का प्रमुख साधान रही है एवं धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास में उल्लेखनीय भूमिका अभिनित की है प्राचीन काल मे निम्नलिखित महत्वपूर्ण आवागमन के साधन थे :-

1- तक्षशिला होकर महाजनपद काशी और मिथिला तक जाता था ।

2- पेशावर से गंगा के मैदान के दो रास्ते है । पेशावर से सहारनपुर होकर लखनऊ तक की रेलवे लाइन उत्तरी रास्ते का द्योतक है । इस पद के समानान्तर दक्षिणी रास्ते चलता है जो लाहोर से रायपिंड फिरोजपुर और भटिंडा होकर दिल्ली पहुँचता है और फिर गंगा के दाहिने किनारे को पकड़े हुये इलाहाबाद पहुँच जाता है । दक्षिणी रास्ता इलाहाबाद से बनारस पहुँचता है और गंगाके दाहिने किनारे से भागलपुर होकर कलकत्ते तक जाता है ।

1- मल्लशेखर डिक्शनरी आफ पाली प्रोपर नेम्स 1, 982

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

3- प्रतिष्ठान (पेठन) माहिरसती (1) उजेन विदिसा, कोशाम्बी (कोसम) होते हुये सावत्ती को मार्ग जाता था उसके बाद सेतव्य, कपित वस्तु, कुशीनारा, पावा, भोगपुर और वैशाली होते राजगृह तक पहुंचता था ।

4- वैरंज से प्रारम्भ होकर सोरेयय (संकसा) कामकवज, प्रयागतित्य) इलाहाबाद) होते हुये बनारस जाता था (2)

5- सावस्थी से राजगृह को किटागिरि और आलवी होते हुये जाता था ।

6- यह मार्ग राजगृह से तक्षशिला जाता था । इस पर वाराणसी प्रयाग, कान्यकुब्ज, संकिसा इन्द्रप्रस्थ, सकल (स्यालकोट) थे । यह उत्तरापथ नाम से विख्यात हुआ जो इसी मार्ग से निकलता था। पाणिनी (3) ने भी इस मार्ग का उल्लेख किया (१)

7- अयोध्या से बिठूर तक एक मार्ग था (4)

8- एक मार्ग मथुरा से भडौच उज्जैन होता हुआ नर्मदा की घाटी होते हुये भडौच तक जाता था

9-अन्य मार्ग विदिशा होकर वेतवा की घाटी होते हुये कोशाम्बी पहुंचता था (5)

10- विवेच्य क्षेत्र में रेलवे लाइनों का भी महत्वपूर्ण स्थान है । प्रमुख रेलवे लाइनें गाजियाबाद, मेरठ, खुर्जा -मेरठ, बरेली-अलीगढ, टूंडला-आगरा-फर्रुखाबाद,-शिकोहाबाद, आगरा, कानपुर-रायबरेली, लखनऊ- इलाहाबाद, वाराणसी-जौनपुर, फैजाबाद- इलाहाबाद, सुल्तानपुर, फैजाबाद, इलाहाबाद-रायबरेली आदि है ।

वायु यातायात के प्रमुख अड्डे बमरौली (इलाहाबाद), आगरा, वाराणसी अमौसी (लखनऊ) गोरखपुर, बरेली, झांसी, चकेरी, (कानपुर) कुसुमी (ललितपुर) सहारनपुर एवं रामपुर आदि स्थानों पर है ।

विवेच्य क्षेत्र प्रारम्भ से ही जल यातायात का महत्वपूर्ण श्रोत रहा है । गंगा में हरिद्वार से कानपुर नावें चलती थी । कानपुर से प्रयाग वाराणसी, एवं उसके आगे स्टीमर चला करते थे । यमुना, गोमती, रामगंगा, सोन, शरदा आदि नदियों में नावें चलाई जाती थीं ।

1- चौधरी हेमचन्द्र, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास भाग 5 पृ0 142, दत्त नलिनाक्ष और बाजपेयी के0डी0 वही पृ0 12,13

2- विनय पिटिक 3/11

3- अष्ठाध्यायी 5/1/77

4- रामायण उत्तराखण्ड 622/2/70-3, 45/18/17, 47/15-16,

5- मोतीचन्द्र सार्थ वही पृ0 179

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋगवेद (1) अथर्वेद(2)धर्मसूत्र(3)महाभारत(4), बौदधसाहित्य(4)/ जैनसाहित्य (6)महाभाष्य (7), मनुसंहिता(8) आदि के उल्लेखसे स्पष्ट है कि गंगाके मुहने से लेकर चम्पा पाटलीपुत्र वाराणसी एवं सहजाति तक माल का परिवाहन था । गंगा के मैदान के दक्षिणी रास्ते पर मथुरा, कम्पिल, साकेत एवं बनारस पड़ते थे । (9) कौशाम्बी से बनारस नावें चलती थीं (10) यमुना एवं सहायक नदियों पर प्रयाग तक लगने वाले घाट विशेष महत्व के रहे हैं । (11) प्रदेश के भीतरी स्थानों का माल नदियों से होकर समुद्र तक पहुँचता था और वहाँ से विदेशों को भेजा जाता था (12) विन्ध्य क्षेत्र की नहरें भी 550 कि0मी0 की लम्बाई नौका गमन के योग्य है । प्रदेश में जलमार्ग के लम्बाई 1200 कि0मी0 है जो अन्य राज्यों की अपेक्षाकृत अधिक अच्छी है (13)

अतः स्पष्ट है इतिहास कि निर्माण यहाँ की भूगोलिक परिस्थितियों का विशेष योगदान रहा है । धन, खनिज सम्पदा, कृषि योग्य अच्छी जलवायु में सामाजिक एवं धार्मिक विकास को विशेष रुप से प्रभावित किया है । आर्थिक सम्पन्नात के कारण दार्शनिक एवं धार्मिक विकास तीव्रगति से हुआ, परिणामतः साहित्य एवं कलाकृतियों के श्रोत बह निकले जिसमें अवगाहनकर माँ भारती के अमूल्य पुत्र उत्तर प्रदेश के प्रति श्रद्धा से स्वतः ही नतमस्तक हो जाता है ।

1- 7/6/4, 5/56/6, 1/84/3,
2- 5/7/6,
3- 1/2/4, 1/38/14
4- 2/23/29, 2/45/48
5- जातक 466, 218, 201, 503
6- ब्रहत कल्प सूत्राष्य 3495-96 3804, 2506, ज्ञाताधर्मकथा 15, 149, 8/75 आवश्यक चूर्ण 3472 आवश्यक नियुक्ति 12/76
7- महाभाष्य 5/3/99
8- मनु 3/158
9- मोतीचन्द सार्थवाह न0 77
10- बाजपेयी के0डी0 प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 7 भूमिका मोतीचन्द्र
11- बाजपेयी के0डी0 प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 14-15
12- वही पृ0 24
13- त्रिपाठी विशुद्ध वन्द वही पृ0 203

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजनैतिक इतिहास

अध्याय- तृतीय

विवेच्य क्षेत्र का राजनैतिक इतिहास, सांस्कृतिक परम्पराओं की भांति ही महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक अनुशीलन से ज्ञात होता है कि समय समय पर देश के राजनैतिक तथा सामाजिक परिवेश में उल्लेखनीय परिवर्तन हुये ।

वैदिक तथा महाकाव्य-काल:-

मूलरूप से राजनैतिक इकाई कुल परिवार थी। जन के नेता को ही राजा माना जाता था। बाद में यह पद कुलगत होने लगा । राजा निरंकुश नहीं था(1) वह सभा समिति(2) मंत्री पुरोहितो(3) के परामर्श से शासन कार्य सम्पादित करता था। ऐतरेय ब्राह्मण(4) में सर्व प्रथम 'जनपद' शब्द का उल्लेख मिलता है।

विवेच्य क्षेत्र में राज्य का आधार जन ही था एक जन में एक ही व्यक्ति का निवास था। दशराज युध्द ऋगवेदीक काल की प्रमुख घटना है(5)। यह युध्द भरतजन के राजा सुदास(6) तथा अन्य 10 जातियो (जनअनु,द्रुत, तुर्वश, यद, पुर, अलिन, पुक्थ, मलान, शिव,और विषापेन है) के मध्य हुआ इस युध्द में राजा सुदास विजयी हुये(7)। इस वंश का प्रतापी शासक दिवोदास(राजा सुदास का पूर्वज) हुआ(8)। राजा सवंरन का पुत्र कुरु ने पंचाल को जीत लिया। त्रित्सु, भरत तथा पुरजनो से मिलकर कुरु जनपद का निर्माण हुआ (9)।

कुरु जनपद:- यह राज्य सरस्वती से गंगा तक फैला हुआ था। महाभारत में कुरु राज्य की सीमा (सतलज तथा गंगा यमुना के उद्गम के समीप) कुलिन्द की सीमा से (मथुरा तथा वैराट क्षेत्रो में क्रमशः) शूरसेन तथा मत्स्य जनपद तक (पूर्वी पंजाब की सीमा से रुहेलखण्ड) पंचालो की सीमा तक बतायी गई है(10) इस जनपद में -

---

1- शतपथ ब्राह्मण 13/2,अथर्ववेद5/19/25, 13/21,3/8,5/3,3/9 त्रिपाठी रमाशंकर, 'प्राचीन भारत का इतिहास' पृष्ठ 25

2- अथर्ववेद7/12/1,12/1/56,शतपथ 5/3,1/10/6,,ऐतरेय 8/2।

3- पाण्डेय राजवली प्राचीन भारत पृ0 60 (4) 8/14/4

5- ऋग्वेद 7/83/78,7/18/5-6 (6) विद्यालंकार सत्यकेतु प्राचीन भारतीय इतिहासका वैदिक युग पृ0 139

7- अवस्थी अवध बिहारी'प्राचीन भारतीय भूगोल' पृ0 16 (8)ऋगवेद 1/51/6

9- सत्यकेतु विद्यालंकार वही पृ0 139

10 महाभारत 1/109/1, 149/5-15

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आधुनिक मेरठ, मुजफ्फरनगर, बुलन्दशहर, सहारनपुर, दिल्ली तथा थानेश्वर आदि माने जाते है(1)। ऐतरेय ब्राह्मण (2) में कुरुपंचाल को 'मध्य देश' के नाम से सम्बोधित किया गया है। कुरु जनपद तीन भागो में विभाजित था:- कुरुजंगल, कुरुखास तथा कुरुक्षेत्र। कुरुजंगल सरस्वती तट पर काम्यक बन से यमुना के समीप खाण्डव तक फैला हुआ था(3)। कुरुखास हस्तिनापुर(मेरठ) का ही प्रदेश था(4)। कुरुक्षेत्र के दक्षिण में खाण्डव, उत्तर में तुदन(तुरगना) तथा पश्चिम में परिणह में स्थित है। वर्तमान थानेश्वर दिल्ली तथा गंगा केदोआब तक फैला हुआ था(5)। हस्तिनापुर दुष्यन्त तथा भरत के समय में महत्वपूर्ण राजधानी थी। महाराज हस्तसेन ने छठी शताब्दी में गजपुर, आसनदीवन्त के स्थान पर हस्तिनापुर नाम प्रदान किया युधिष्ठिर के उपरान्त परीक्षित, जनमजय तथा निच ने हस्तिनापुर को वैभव पूर्ण नगर बनाया(6)। निचक्षु के समय में टिड्डियों के आक्रमण तथा गंगा की बाढ़ से हस्तिनापुर नगर नष्ट हो गया तथा कौशाम्बी को उसने अपना वैभव केन्द्र बनाया(7)। कुरुजनपद महत्वपूर्ण राजनैतिक गतिविधियो का केन्द्र था।

पंचाल जनपद:-

इस जनपद में आधुनिक बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद, रुहेलखण्ड और मध्यवर्ती दोआब के भाग सम्मिलित थे(8) वैदिक साहित्य(9) में पंचाल जनपद का विस्तृत उल्लेख मिलता है। पंचाल जनपद दो भागों में विभाजित हो गया - उत्तरी पंचाल, दक्षिण पंचाल था।

1- उपाध्याय भरत सिंह 'बुध्द कालीन भूगोल' पृ० 404, अवस्थी अवध बिहारी लाल वही, पृ० 22

2- 38/3 'मध्यभाया दिशी कुरुपंचालाना राजान' (3) महा० 1/109/24, 8/1-39/24

4- रामा० 2/68/13, महा० 1/128, स्मिथ 'आक्सफोर्ड हिस्ट्री' पृ० 31, 1919

5- रायचौधरी 1978, द्वितीय संस्करण वही पृ० 20

6- मैकडानल और कीथ वही पृ० 78

7- पार्जिटर, 'ऐंशियेण्ट इंडियन हिस्टारिकल ट्रेडीशन' पृ० 285, 1922

8, शतपथ ब्राह्मण 135/4-7, वैदिक पृ० 1-86 लाहा, विमल चरण 'प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल,' पृ० 85 अवस्थी अवध बिहारी वही पृ० 22

9- शतपथ ब्राह्मण 13/5/4-7, ऐतरेय 8/14, काठक 30/2, महा० भीष्मपर्व 9/39, आदिपर्व 2/110, 185, 6-23, 139/43

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरी पंचाल:-

उत्तरी पंचाल की राजधानी अहिच्छत्रा थी(1) उसको परिचक्रा भी कहा जाता था(2) वर्तमान रामनगर गाँव(अक्षांश 28·05 30 देशान्तर 79°25 पूर्व) के समीप बिखरे है(3)। रामनगर से द्वितीयशदी की यक्ष प्रतिमा भी प्राप्त हुई है जिस पर अहिच्छत्रा नाम मिलता है(4)। अश्वमेध कर्ता केश्य(5)शोण(6)एवं द्रोण(7) का तत्कालीन राजनैतिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान रहा है। इसको अर्जुन ने गुरुदक्षिणा के बदले द्रोपद से जीत कर द्रोण को दिया था(8)।

दक्षिण पंचाल:-

दक्षिण पंचाल की राजधानी कम्पिल थी (9)। दक्षिण पंचाल के शासक द्रोपद थे अर्जुन द्रोपदी के विवाह के साथ ही उनका पाण्डवो से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो गया। कम्पिल की तुलना फर्रुखाबाद जिले की कायमगंज तहसील के रेलवे स्टेशन से 8 कि० मीटर की दूरी पर कम्पिल नामक ग्राम से की जाती है।(10) किसी समय गंगा कम्पिल के पास बहती थी (11) यहाँ के प्रवाहण जैवली तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियो की महत्वपूर्ण इकाई थे(12)।पृथु, जनमजाय, बृहदत्त, परीक्षत आदि शासको के समय कम्पिल की विशेष उन्नति हुई।

काशी जनपद:-

काशी जनपद की गणना भारत के प्रमुख राजनैतिक एवं धार्मिक केन्द्रो मे की जाती थी (13)।काशी वरणा तथा असि नदियों के मध्य स्थित था(14)

---

1) महा० आदि पर्व 140 मैक्डानल और कीथ, वैदिकइंडेक्स पृ० 469, अवस्थी अवध बिहारी, वहीपृ 22

2) शतपथ ब्राह्मण 13/5/4-7, बृहदारण्यक, उप० 6/1/1

3) कनिंघम ऐंशियेन्ड ज्याग्रफी आफ इण्डिया पृ० 41 से 416, अवधविहारी अवस्थी वही पृ. 144

4) वाजपेयी के०डी० एस०पृ० इन्स्क्राइब्ड इमेज फ्राम अहिच्छत्रा जनरल आफ यू०पी०सोसाइटी 1950 पृ० 112

5) शतपथ ब्राह्मण 13/5/4-9 (6) ऐतरेय ब्राह्मण 9/39/23

8) आदि पर्व 165-21, 136-76-77 (7) अवस्थी अवधविहारी लाल वही पृ० 79

रामा० बाल कांड 24/20 कनिंघम एंशियेण्ट जियो० पृ० 413 अवस्थी अवधविहारी वही पृ० 80

10) लाहा विमल चरण वही पृ० 156 (10) कनिंघम वही पृष्ठ 413, आर्क० । पृ० 255

11- महा० आदि पर्व 128/73 नन्दलाल जियाग्रोफीकल पृ० 88

12) रामायण 1/33, वाजपेयी के०डी० अहिच्छत्रा 1956 प्रथम संस्करण पृ० 8 से 11,

13) शतपथ ब्राह्मण 13,5|4/19, आदि पर्व 95/105, उद्योग पर्व 72/7-14 द्रोण पर्व 22/38, भीष्म पर्व 50/924

14) अथर्ववेद 5/7/1, कूर्म पुराण अध्याय 30 श्लोक 63

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वरणा नदी अथर्ववेद (1) की वरणावती नदी ही है। इस नगरी की आकृति अर्धचन्द्राकार है। पुराणो(2) में उल्लेख है कि हैहयराज भद्रश्रेण्य ने काशीराज दिवोदास को हराया और काशी पर अधिकार कर लिया। क्षेमक राक्षस ने अवसर पाकर वाराणसी पर अधिकार कर लिया। महाभारत(3) में भी इस घटना का उल्लेख मिलता है।अलर्क काशी का प्रभुता सम्पन्न शासक हुआ।[4] काशी जनपद, कोशल की सीमा पर मिला हुआ था। इसलिये काशी कोशल का साथ साथ उल्लेख भी पाते है।(5) काशी के एक अन्य शासक धृष्टराज ने एक बार अश्वमेध यज्ञ किया जिसमें वह हार गया परिणाम स्वरुप काशी निवासियो ने यज्ञ अग्नि को प्रज्वलित करना छोड़ दिया(6)।महाभारत (7) के अनुसार राजा प्रवर्दन ने वीतहव्य या हैहय राजाओ को कुचल दिया था। शाखायन श्रौत सूत्रे(8) से काशी का वर्णन कोशल और विदेह के साथ हुआ है। काशी के शासको की उपाधि ब्रह्मदत्त(9)थी एक स्थान पर (10) काशी राज की पुत्री सर्वसेनी का विवाह भरतदौष्यति से हुआ। भीष्म द्वारा काशी राज की तीनो पुत्रियां अंबा, अंबिका और अंबालिका को स्वंबर में प्राप्त करने का उल्लेख है(11)। काशी शासक प्रर्वदन तथा मिथिला के राज जनक के मध्य युध्द की चर्चा महाभारत (12) में मिलती है।महाभारत(13) से स्पष्ट होता है कि कृष्णजी को कई बारा जलाया था। काशी विभिन्न धर्मों, भाषाओ तथा सांस्कृतिक परम्पराओं की मनोरम संगम स्थलीय रही है। दीर्घ व्यापी भारतीय संस्कृति का काशी नगरी प्रतिनिधित्व करती है। राजनैतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र थी।

1- वही 4/7/1
2- वायुपुराण 92 /23-28, 61-68,ब्रह्माण्ड पुराण 3/63/119-141
3- अनु0 30, 1949-96
4- मत्स्य पुराण 180,68
5- सभा पर्व 793- द्रोण पर्व 125-53
6- शतपथ ब्राम्हण 13/5/4/19, चौधरी हेमचन्द्र हिन्दी अनु0 /वही 76
7- महाभारत 13/30
8- वही 16/285
9- महा0 218/23
10- आदि पर्व अध्याय 95
11- उद्योग पर्व 172/94
12- महाभारत 112/99, 1-2,13/38 उद्योगपर्व
13 वही 47/40

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोशल जनपद:-

कोशल आधुनिक अवध भूमि का क्षेत्र था जहाँ सरयू नदी बहती थी। पश्चिम में गोमती दक्षिण में सिन्धु तथा उत्तर में नेपाल की पहाड़ियों से कोशल घिरे हुये था(1)। सदानीरा (बड़ी गंडक)कोशल जनपद को विदेह से अलग करती थी(2)। काशी कोशल का क्षेत्र पास-पास था कोशल के दो भाग थे उत्तरी कोशल तथा दक्षिणी कोशल।

उत्तरी कोशल:-

इसकी राजधानी श्रावस्ती थी जिसके अवशेष गोंडा बहराइच जिलो की सीमा पर सहट-महट नाम से बिखरे पड़े है(4)श्रावस्ती भारतीय संस्कृति एवं राजनैतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रही है। लव यहाँ के शासक थे (5)। मंदिरो बिहारो स्तूपो का निर्माण यहाँ विपुल मात्रा में हुआ। इस नगर का निर्माण श्रवस्तकद्वारा हुआ था(6)। भौगोलिक स्थिति के कारण श्रवस्ती सामाजिक एवं धार्मिक विकास का प्रमुख श्रोत था। यहाँ से एक बड़ी सड़क दक्षिण के प्रसिध्द नगर प्रतिष्ठान तक जाती थी। इस पर साकेत, कौशाम्बी, विदिशा, गोनर्द उज्जयनी महिष्मती आदि नगर थे। दूसरी सड़क राजगृह तक जाती थी इस पर सेतव्य, कपिवस्तु, पावा हस्तीग्राम, भण्ग्राम वैशाली पाटलीपुत्र तथा नालन्दा पड़ते थे।

दक्षिणी कोशल:- इसकी राजधानी अयोध्या थी जिसके शासक राम थे। यह प्रमुख तीर्थ स्थान है अयोध्या एक शाश्वत नगरी थी इसको साकेत एवं 'विनीता' भी कहा जाता था(7)। अयोध्या सुन्दर मकानो एवं कलाकृतियों की अनुपम केन्द्र थी। राम के समय कुलभूषण एवं देशभूषण 'केवली' भगवान पधारे थे तथा महेन्द्रोधम में ठहरे थे (8(। मन्वादिचारण ऋद्धिधारी सप्तऋषि मथुरा में चार्तुमाए करते समय कईबार पधारे थे और सीता के घर आहार लिया था(9)। राम के समय अयोध्या की विशेष उन्नति/सभी कला विधाओं में हुई(10)। इस वंश में ककुत्स्थ, रघु, मान्धाता, हरिश्चन्द्र, सबर, अवरीश, दिलीप, रघु, दशरथ राम आदि प्रतापी शासक हुये। स्वयं मनु ने अयोध्या को बसाया था।

1-रामा० 49/11-12,7/104/15, सभापर्व50/20, अवस्थी अवधविहारी लाल वही पृ० 23 लाहा विमल चरण वही पृ० 224, रैपसन कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया भाग 1 पृ० 178
2-मजूमदार 'ऐशिएण्ट इंडिया 'पृ० 64, लाहा विमल चरण वी पृ० 78
3-सभी पर्व पृ०793, (4) कनिंघम वही पृ० 67, अवस्थी अवधविहारी लाल वही पृ०46 लाहा विमलचरण वही पृ० 218. (5) उत्तराखण्ड 107/17-21
6- विष्णु पुराण अध्याय-2 वनपर्व 201, 3-4
7- आदि पुराण पर्व 122 श्लोक 122श्लो76, शान्ती पर्व29-61, आदि पर्व 176/36-42
8-पद्म पुराण 85/136 (9) वही 92/78 (10) रामा० 309श्लोक 22 महा० 241/2, वनपर्व 88/10-1, वायुपुराण997/200
11- रामा० 5/5-6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शूरसेन जनपदः-

---------- यह जनपद मथुरा के पश्चिमी किनारे पर स्थित था(1)। वर्तमान मथुरा ही शूरसेन जनपद के नाम से जाना जाता था। पश्चिम में मथुरा जनपद की सीमा मत्स्य जनपद थी। पूर्व में दक्षिण पंचाल को सीमा से मिलती है(2)। गोवर्धन पर्वत एवं यमुना के मध्य मथुरा नगरी थी (3)मधु के नाम पर ही मथुरा और उसके आस-पास का प्रदेश चन्द्रवंश की यादवशाखा के अधिकार में आ गया था(4) वर्तमान समय में मथुरा नगर उत्तर प्रदेश के पश्चिम में 27^{0} 28 उत्तरी अक्षांश तथा $77^{म}$41 पूर्व देशान्तर पर स्थित है मार्कण्डेय पुराण(5) से ज्ञात होता है कि सूरसेन जनपद का विस्तार दक्षिण में चम्बल नदी से लकर उत्तर में कुरु राज्य की सीमा तक था। महाभारत(6) में कुरु पंचाल चेदी, मत्स्य जनपदो के साथ सूरसेन का नाम भी मिलता है। रामायण(7) से ज्ञात होता है कि मथुरा यमुना के पश्चिमी तट पर स्थित था। मथुरा की सीमा उत्तर मेंपूर्व दक्षिण में चेदी राज्य, पूर्व में पंचाल राज्य तथा पश्चिम में मत्स्य अनपद था(यादवों की दो शाखाये थी।अधर्ववंश मथुरा में शासन करता था तथा दुसरा वृष्णि वंश को व्दारिका में शासन करता था।ये दोनो गणराज्य थे । महाभारत युध्द में कृष्ण जी ने उल्लेखनीय भूमिका अभिनित की(8)। विवेच्य काल में मथुरा राजनैतिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा था(9)।कृष्ण जी ने कंस, जरासंध ,शिशुपाल आदि अत्याचारी शासको का दमन कर नये कीर्तिमान स्थापित किये(10)। यादवो को अंत गृह कलह में हो गया इस जनपद की प्रमुख नदी यमुना है जिसको कालिन्द्री, भानुजा आदि नामों से पुकारा जाता था(11)। विवेच्य क्षेत्र को उपजाऊ बनाने में यमुना तथा उसकी सहायक नदियों का प्रमुख योगदान रहा है(12)। कृष्ण के आविर्भाव से नये युग का सूत्रपात हुआ उन्हो ने दार्शनिक मान्यताओं में समन्वय स्थापित किया(13)

1- हरिवंश पुराण 155/36, कनिंघम वही पृ0 427 (2) मार्कण्डेय पुराण 351-52

3- वराह पुराण 165/21 (4) बाजपेयी के0डी0 मथुरा परिचय पृ0 38 , लाहा विमल चरण वही पृ0 86-27

5-पार्जिटर संस्करण 35/1/52 (6) विराट पर्व 4/1/9

7-वही 62/17, 68/3 (8)बाजपेयी के0डी0 'ब्रज का इतिहास व्दितीय खण्ड पृ0 2

9- छन्दोग्य उपनिषद 3/17/6

10- तैत्तिरीय अण्याव 10/1/6 राय चोधरी 'अर्ली हिस्ट्री आफ वर्णय पृ0 39-52 विन्टरनीज 'हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर जिल्द 1 पृ0 184 वेदान्ता मणि वही भा। पृ0 184

11- ऋग्वेद 10/75, अथर्ववेद 4/9/10, ऐतरेय 8/14 /4 रामा0 40/20/22

12- मार्कण्डेय पुराण सर्ग 7/22

13- बाजपेयी के0डी0 ' ब्रज का इतिहास व्दितीय खण्ड पृ0 2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चेदी जनपद:- चेदी जनपद राज्य के चतुर्दिक यमुना(1) का क्षेत्र था। चम्बल के पास मत्स्य से भी इसका सम्बन्ध था तथा काशी एवं शोण घाटी के कारणों से भी सम्बन्धित था(2)।भीम का स्वागत चेदी राज शिशुपाल ने किया (3)।यह सुन्दर देश था(4)। यहां का शासक वसुउपरिचर थे जिसने चेदी राजाओं को उन्नति के शिखर पर पहुंचा दिया(5)। शुक्तिमती पुरी(चन्देरी) इसकी राजधानी थी(6)बेतवा(शुक्तिमती) इस क्षेत्र की प्रमुख नदी थी (7) ऋग्वेद (8) के अनुसार यह एक प्रमुख जनपद है।इस क्षेत्र की अनुपम कलाकृतियां वस्तुकला के सुन्दर उदाहरण है।

मल्ल जनपद:- यह एक प्राचीन जनपद था। जनपद सूची में मल्ल राष्ट्र(9)और मल्लाह(10) का उल्लेख है। रामायण (11) के अनुसार लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु ने मल्ल भूमि चन्द्रकांता नामक नगरी बसायी थी । इस जनपद में देवरिया तथा गोरखपुर के कुछ भाग सम्मिलित थे राजनैतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है।

वत्स जनपद:-

वत्स भूमि यमुना के किनारे सुन्दर बनो से एवं आश्रमो से युक्त पूर्ण जनपद था(12)। इसके निकट ही प्रयाग था। यहां की राजधानी कौशाम्बी थी (13)। इलाहाबाद से दक्षिण पश्चिम में यमुना के उत्तरी तट पर 60 कि०मी० दूर कोसम नामक ग्राम से की जाती है। (14)2 आजकल प्राचीन वैभव शाली कौशाम्बी नगरी के स्थानपर गढ़वा कोशल इनाम और कोसम खिराज छोटे छोटे गांव यमुना तट पर स्थित है।

उपरोक्त जनपदो के अलावा अजजन(15), शीघ्रजन(16),दासराज(17)क्रीविजन(18) का भी उल्लेखनीय स्थान था।

1- महाभारत 1/63/2/58, (2) वही 198/2,74/16,6/47,24,3/69,14-15
3- भीष्म पर्व 9/40,आदिपर्व 62-2,वनपर्व22/50, (4)अवस्थी अवधविहारी लाल वही पृ०82
5-आदिपर्व 63/8-12 (6) अवस्थी अवध विहारी लाल पृ० 22
7- आदि पर्व63/35-36 (8) 8/5/37-39 (9)महा० 9/44
10- महा० 9/46 (11) उत्तराखण्ड,112/9
12- रामायण 2/52/101 सभापर्व 30द/10,उद्योग पर्व 186/19/25
13- आदि पर्व 63/31,अवस्थी अवध विहारी लाल वही पृ० 88
14- लाहा विमल चरण वही पृ० 83, कनिंघम वही पृ० 451 (15) ऋग्वेद 1/51/6
16- अवस्थी अवध विहारी लाल वही पृ० 17 (7) ऋग्वेद 8/18/6-19
18- मिश्र सुदामा 'जनपद स्टेट इन ऐंशियेण्ट इंडिया पृ० 26

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महा जनपद काल

विवेच्य काल तक साम्राज्य वादी भावना का विकास तेजी से हो रहा था। कुल 16 जनपदों का उल्लेख मिलता है(1)। कुरु पंचाल, शूरसेन, वत्स, काशी, कोशल, चेदी, आदि जनपद के अन्तर्गत आते है। इन जनपदों ने विवेच्य युग को सामाजिक एवं धार्मिक विकास को विशेष रुप से प्रभावित किया है।

कुरु जनपदः- महाजनपद काल मैं कुरु जनपद के अन्तर्गत थानेश्वर, दिल्ली तथा गंगा के प्रदेश सम्मिलित थे(2)।यह शूरसेन और मच्छ जनपदो के उत्तर तथ पंचाल के पश्चिम मैं स्थित था(3)।कुरु जनपद की राजधानी इन्द्रपत्तन (इन्द्रप्रस्थ) थी। जातको(4) मे कुरु राज्य को धनन्जय कोरव्य कोरव्य(5) तथा सुतसोम(6) नाम से विभूषित किया गया है। मुख्य कुरु हस्तिनापुर से समीकृत किया गया है।पपंचसूदनी-8 के अनुसार इस प्रदेश के कुरु रट्म नाम जम्बू द्वीप के शासक मान्धाता के समय मैं उत्तर कुरु के निवासियो के यहां आकर बसने के कारण पड़ा। अवदान शतक(9) मैं कुरुपट्म की राजधानी हस्तिनापुर बताई गयीहै। बोधिसत्व अबदान (10) मैं इसे कौरवो की राजधानी विस्तार (11) मैंयहां के राजा को पाण्डवों का वंशज बताया गया है। हस्तिनापुर विनास के कारण निचक्षु वंश की 26 वीं पीढी मैं कौशाम्बी के शासक उदयन हुये। भगवान ऋषभ देव के लिये श्रेयस राजकुमार व्दारा दिये गये आहार दान की घटना से हस्तिनापुर काफी प्रसिध्द हो गया(12)।

1- अंगुतर निकाय जिल्द 4 पृ0 252, 256, 260, महावस्तु जिल्द। पृ0 34, जयनागम भगवतीसूत्र-15
2- राय चोधरी हेमचन्द्र वही 7वां संस्करण पृ0 2।
3- उपाध्याय 'बुध्द कालीन भूगोल' पृ0 484
4- कुरु धम्म जातक 276
5- महासुत सोम जातक 537
6- महाभारत 1/95/75
7- स्मिथ आक्सफोर्ड हिस्ट्री पृ0 131
8- 1/1/184 लाहा विमल चरण 'समुक्षेत्रीय ट्राइब्स इन ऐंशियेन इंडिया पृ0 23
9- पृ0 36।
10- पृ0 435
11- अध्याय-2
12- जैन जे0पी0 'भारत के प्राचीन तीर्थ पृ0 5

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हस्तिनापुर महत्वपूर्ण पड़ाव था(1) अंग, विदेह, कोशल, और वाराणसी के व्यापारी हस्तिनापुर होते हुये तक्षशिला जाते थे।

पंचाल जनपद:- पंचाल जनपद बरेली बदायूँ फर्रुखाबाद जिले में स्थित था(3)। गंगा के किनारे स्थित युगों युगों से यह जनपद भारत की सामाजिक एवं धार्मिक विकास को प्रभावित करता आ रहा है। (4) पंचाल जनपद के दो विभाग थे:- उत्तरी पचांल तथा दक्षिणी पचांल।

उत्तरी पचांल:- उत्तरी पचांल की राजधानी अहिच्छत्रा थी जिसके अवशेष बरेली जिले में रामनगर गाँव के समीप टीलों के रूप में बिखरे पड़े हैं जो आजकल आदिकोट के नाम से पुकारा जाता है(5)बौध्द तथा जैन साहित्य(7) में भी अहिच्छत्रा को एक प्रमुख राजधानी बतायी गई है इस समय प्रिय बन्धु शासक था। कटारी खेड़ा से एक स्तम्भ मिला है जिसमें भट्टाचार्य इन्द्रनन्दि के शिष्य महाहरि के द्वारा पार्श्वपति (पार्श्वनाथ) मन्दिर को दान देने का उल्लेख है। अहिच्छत्रा को सांख्यावती भी कहा जाता था(8)। यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र था। महापथ उत्तर पंचाल, यानी बरेली जिले से धसता हुआ वह कोशल प्रदेश में होता हुआ उसके अधिकारी राज्यों, जैसे शाक्यों और मल्लों के देश से होकर सीधे कपिल वस्तु पहुँचता था(9)।

दक्षिण पचांल:- दक्षिण पंचांल की राजधानी कम्पिल थी (10) बौध्द (11) तथा जैन साहित्य में(12) कम्पिल को राजनीतिक तथा धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बताया गया है। यह गंगा के किनारे स्थित था(13) महावस्तु में(14) कम्पिल की जनसंख्या 84हजार बतायी है इक्ष्वाकुवंशी महाराज कृतिवर्मा (15) यहाँ के तत्कालीन शासक थे। हरिषेण चक्रवर्ती ने समस्त पृथ्वी को जैन प्रतिमाओं से अलंकृत कराया तथा भगवान मुनि सुव्रतनाथ के तीर्थ में सिध्द पद प्राप्त किया(16)। यहाँ पर ब्रह्म दत्त नामक शासक हुये जिन्हो ने माण्डव्य ऋषि की पुत्री पद्मावती से गंधर्व विवा किया(17)

1-जैन् जे०पी० 'भारत के प्राचीन तीर्थ पृ० 5
2- मिश्र सुदामा वही पृ० 147
3- संयुक्त निकाय जिल्द 4, 1/164, 4(2)274अंगुत्तर निकाय 2/486, 3/556महावस्तु1/28 3 3/161
4- कनिंघम वही पृ० 413, बाजपेयी के०डी० ' अहिच्छत्रा पृ० 111
5- जातक 3/379, संयुक्त निकाय4/2/217, 3/246, 5/165, 6/439जातक 6/418
6- जैन ज्योति प्रसाद 'उत्तर प्रदेश में जैन धर्म पृ० 41, जैन कामता प्रसाद कम्पिल कीर्ति पृ49
7- जैन बलभद्र वही पृ० 97
8- मोती चन्द्र वही पृ० 51 (9) ब्रह्मदत्त जातक 323, 408
10 महावस्तु जिल्द 1/23, 3/161, संयुक्त 4/1/164, 4/2/174
11- जैन बलभद्र वही पृ० 109, जैन कामता प्रसाद वही पृ० 13
12- महावस्तु जिल्द 1 283, 3/161, अंगुत्तर निकाय 2/488 जातक 5/32, 3/246संयुक्त 4/164, 4/2/274
13- जैन् बलभद्र वही जिल्द 1/284
14- वही पृ० 106
15- वही पृ० 109
16- महावस्तु 3/361-63

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरी पचांल को प्राप्त करने हेतु कुरु तथा पचांली में भयंकर युध्द हुआ(1) राजा दुर्मुख द्वितीय चूलनि ब्रम्हदत्त था। पचांल क्षेत्र के अन्तर्गत आधुनिक ऐटा, फर्रुखाबाद और आसपास के जिले सम्मिलित थे (2) प्रारम्भ में पचांल का तात्पर्य दिल्ली से उत्तर और पश्चिम हिमालय की तराई से लेकर चम्बल तक फैला विस्तृत क्षेत्र था(3) संकासय(4)आलवी, कान्यकुब्ज वेरजा आदि महत्वपूर्ण पड़ाव थे(5)।

काशी जनपद:- विवेच्य युग में धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास में काशी जनपद ने महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित की(6)। जातको(7)से स्पष्ट होता है कि काशी के शासक सम्पूर्ण भरत के शासक हुये। काशी के पूर्व में मगध तथा पश्चिम मेवत्स जनपद था(8)। तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ(9) एवं स्वामी सामन्द्रभद्र(10) की महत्वपूर्ण घटना ने काशी को जैन धर्मावलम्बियों के लिये प्रसिध्द तीर्थ स्थल बना दिया। राजा परेसनदि के पिता महाकोशल ने अपनी कन्या कोशल देवी का विवाह बिम्बसार से कर प्रितुं काशी उसको दहेज में दे दिया। बिम्बसार की मृत्यु के उपरान्त परिस्थितियों वश उसे अपनी पुत्री वाजिरा का विवाह अजातशत्रु से करना पड़ा(11) तथा काशी ग्राम पुनः दहेज के रुप मे उसे दे दिया(12) इसकी राजधानी वाराणसी थी (13) डा0 मोतीचन्द्र के अनुसार 18 उपराज्य थे जो काशी कोशल के राजा प्रसेनजीत के आधीन थे(14) सारनाथ(भृगदव) वाराणसी से 9 कि0मी0 दूर बौध्द धर्म का प्रमुख केन्द्र था।

पारस्परिक युध्दों के कारण काशी की शक्ति क्षीण होती गई परिणमस्वरुप ईसा पूर्व छठी शदी के प्रारम्भ में कोशल में समाहित कर लिया गया। भारत के रानीतिक तथा धार्मिक तथा सांस्कृतिक विकास में काशी जनपद का उल्लेखनीय स्थान रहा है।

1- ब्रम्हदत्त जातक 323, दिव्यव दान पृ0 433, सोमनस्य जातक505,उपाध्याय वही412
2- कनिंघम वही - 412, पृ0 5
3- डा0 नन्दलाल जाग्राफी डिक्सनरी आफ एनसियेंन्ट इंडिया पृ0 145
4- थेरीगाथा 33, कनिंघम वही 423, 427
5- थेरीगाथा पृ0 53 दत्तनली नाथ और बाजपेयी के0डी0 वही पृ0 5,8
6-अगुंत्तर निकाय1/2/3,4/252,256,260,अष्टाध्यायी 4/2/116
7-कोशाम्बी जातक सं0428,शकुन्तला जातक जा336
8- उपाध्याय वही पृ0 382
9- तिलोय पण्णत्ति 4/532,जा/548
10- जैन बलभद्र पृ0 117
11-संयुक्त निकाय 1/082-84
13- स्थानांग 10,717, निशीय सूत्र 9/19
14- वही पृ0 30

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोशल जनपद:- कोशल जनपद भारत के 16 प्रमुख जनपदों में से था(1) गौतम बुध्द के समय में कोशल का विस्तार आधुनिक अवध भूमि पर था जिसकी पूर्वी सीमा गंडक तथा पश्चिमी सीमा गोमती थी (2) तथा दक्षिण में कोशल की सीमा काशी पहुचती थी (3) पूर्व में विदेह से कोशल को अलग करने वाली सदानीरा तथा उत्तर में नेपाल को पहाड़ियां थी। कोशल जनपद दो प्रमुख राजनैतिक इकाइयों में विभाजित था। 1-उत्तरी कोशल तथा 2- दक्षिणी कोशल।

उत्तरी कोशल:- इस भग की राजधानी श्रावस्ती थी (4) जो कि एक वैभवशाली नगरी थी। श्रावस्ती से राजगृह की दूरी 45 योजन और तक्षशिला की 192 योजन बताई है(5)यहां के जेतवनाराम विहार (6) राजकाराम विहार(7) तथिकाराम विहार(8) पूर्वाराम विहार(8) बोध्द धर्म विकास के प्रमुख केन्द्र थे। तीसरे तीर्थंकर भगवान सम्भनाथ के सभी कल्याणक इसी क्षेत्र में सम्पन्न हुये (10)महावीर स्वामी के समय यहां का शासक प्रसेनजित था वह अपने ही पुत्र विदूरक के षणयन्त्र के कारण मारा गया(11) श्रावस्ती से साकेत की दूरी 7 योजन थी यहां पर अंजन बन(12) तथा कंटकी बन(13) महत्वपूर्ण स्थल है। तत्कालीन शासक जयसेन था वह जैन पाखण्डी साधू द्वारा मारा गया(14)

दक्षिण कोशल:- महाजनपद काल में दक्षिण कोशल की राजधानी अयोध्या थी (15) प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव, भगवान अजीतनाथ(दूसरे तीर्थंकर), अभिनन्दन नाथ, सुमतिनाथ, अनन्त नाथ(चौदवे तीर्थंकर) के विभिन्न कल्याणक उत्सवों के मनाने का श्रेय इसी नगरी को रहा है।(16) राजा वसु के दरवार में नारद और पर्वत का लोक विख्यात सम्बाद भी यही हुआ था(17)।

1-वाजपेयी के0डी0 'युगो युगो में उत्तर प्रदेश, पृ0 35 (2)दत्त नलीनाथ और वाजपेयी के0डी0 पृ0 35 वही पृ0 ला
3- मोतीचन्द्र सार्थवाही पृ0 49 (4) मझिम निकाय 3/177
5) पपंच सूदनी जिल्द 2 पृ0 152 (6) उपाध्याय वही पृ0 340
7- बुध्द चार्या से0 318 (8) वही
8- उपाध्याय वही पृ0 243
10- तिलोय पण्णाति 5/8, जैन बलभद्र वही 164 से 170
11-जैन बलभद्र वही पृ0 164, 167 (12) सारत्थपकासिनी जिल्द 3 पृ0 247
13- विनय पिटक पृ0 288 (14)हरिषेण कथा कोष कथा 156
15- रिजडेविड बुद्धिष्ट इन्डिया पृ0 34
16- तिलोय 4/526,527,529,530,539, जैन ज्योति प्रसाद महावीर स्वामी स्मृतिग्रन्थ खण्ड - ख पृ0 6
17- जैन बलभद्र वही पृ0 158

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मल्ल जनपदः- मल्ल राष्ट्र वज्जि गणतंत्र और कोशल राज्य के बीच हिमालय के तराई में स्थित था जिसकी सीमा महानदी(गंडक) थी (1)मल्ल जनपद के पश्चिमोत्तर में शाक्य जनपद था और पश्चिम में कोलिय जनपद का अचिरावती(राप्ती) नदी द्वारा उसकी सीमा कोशल राज्य से विभाजित थी। मगध राजा तथा वज्जि गणतंत्र मल्ल के पड़ोसी थे। मल्ल जनपद दो विभागो में विभाजित था जिसकी पावा तथा कुशीनारा दो राजधानियां थी।

पावाः- विमल चरण लाहा ने (2) पावा को छोटी गंडक के तट पर तथा गोरखपुर जिले में कसया से समीकृत किया है। कनिंघम(3) ने पावा को पडरौना से समीकृत किया है। पावा बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था(4)।

कुशीनगरः- बौद्ध साहित्य(5) में कुशीनगर को कुशीनारा, कुशीनगरी, कुशीग्राम आदि नामो से सम्बोधित किया गया है। कुशीनगर के दक्षिण पश्चिम में मल्लो का उपवत्तननामक शाल बन था जो हिरण्यवती के दूसरे किनारे पर स्थित था(6)।कुशीनगर के प्राचीन अवशेष कसिया के सन्निकट विस्तृत भूभाग पर फैले हुये है। कसिया 36° 45, 30° 55 देवरिया से कुशीनगर, गोरखपुर से 32 मील दूर तथा पडरौना से 13 मील दक्षिण पश्चिम में स्थित है। अशोक कुशीनगर से अत्यधिक प्रभावित हुआ था(7)।

मल्ल जनपद का बौद्ध धर्म के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

शूरसेन जनपदः- शूरसेन जनपद मत्स्य जनपद के दक्षिण पश्चिम और कुरु राष्ट्र के दक्षिण में स्थित था पूर्व में पचांल तथ दक्षिण में अवन्ती जनपद का दक्षिण जनपद था(8)मथुरा एक राजनैतिक केन्द्र ही नही अपितु वैदिक धर्म के साथ ही बौद्ध (9) तथा जैन धर्म(10) का प्रमुख केन्द्र रहा है। भगवान जम्बुस्वामी की विस्मय कारी कलाओं ने मथुरा को आकर्षण केन्द्र बना दिया(11)यहां महावीर स्वामी का समवसरण भी आया था(12) 600 ई0 के बाद यहाअवंतिपुत्र नामक राजा राज्य करता था जो अवंति केराजाचन्द्र प्रद्योत का दोवता था(13)

1- अवस्थी अवध विहारी वही पृ0 40 (2)लाहा ज्याग्रफी अर्ली बुधिजन पृ0 14, दक्षनलीनाथ एव बाजपेयी के0डी0 पृ0 10

3- कनिंघम आर्कलोजी सर्वे रिपोर्ट आफ इण्डिया, 1961-62पृ075-76वही पृ0 499

4- संयुक्त निकाय2पृ0 587-589दीर्घनिकायभाग2, पृ0 134, 137 व 148, जातक1/392, दक्षनलीनाथ एवं के0डी0 बाजपेयी पृ0 17, उपाध्याय वही पृ0 324 (5)जातक1/392, 5/278, दीपवंश 3/9

6-सारनाथ कासिना जिल्द 1 पृ0 222,

7- वही पृ0 294, विनय पिटक पृ0 252-253 दीर्घनिकाय 147-148

8- मनुस्मृति 2/18/20, 2/19, (9)दिव्यदान पृ0 348-49, अंगुत्तर निकायपृ0 57 मज्झिम निकाय पृ0 343 अगुत्तर भर्ग पृ0 67-68 दीपनलिनाथ और बाजपेयी वही पृ0 11डिक्सनरी आफ पाली प्रापर नेम्स, जिल्द 1 पृ0 67-88

10- जैन बलभद्र वही 36 से 57 जैन ज्योति प्रसाद मथुरा मे जैन धर्म का उदय पृ0 101 से 53वर्ष2

11- जैन बलभद्र वही पृ0 36-37 (12)मित्तल प्रभुदयाल 'ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 246

13- ललित विस्तार पृ0 21-23 बाजपेयी के0डी0 मथुरा पृ0 22, राय चौधरी वही (हिन्दी) पृ0 108

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्र प्रद्योत की पुत्री वासवदत्ता का विवाह कौसाम्बी के शासक उदयन के साथ हुआ। शूरसेन जनपद को आधुनिक ब्रजमण्डल से मिला सकते है। शूरसेन जनपद भारतीय संस्कृति का उदगम स्थान रहा है।

<u>वत्स जनपद:-</u> वत्स जनपद के अवशेष इलाहाबाद से 30 मील दूर यमुना के किनारे स्थिति कोशल ग्राम में पाये जाते है(1) कौसाम्बी वत्स जनपद की राजधानी थी जिसकी गणना 6 महानगरो मे की गई है(2)। यहां का शासक उदयन था जिसने वासवदत्ता से विवाह कर राजनैतिक सम्बन्धो को दृढ़ किया। कौसाम्बी बौध्द धर्म तथा जैन धर्म का प्रसिध्द केन्द्र थी(3)। जैन धर्मावलम्बियों को लिये भी कौसाम्बी महत्वपूर्ण स्थल रहा है। राजा सतनीक की महारानी मृगावती के मोह में पुस कर अवन्ति नरेश चन्द्रप्रदोत्त ने कौसाम्बी पर आक्रमण कर दिया युध्द के मध्य ही राजा सतनीक की मृत्यु होगई। उदयन छोटा था उसके राज्याभिषेक के उपरान्त रानी मृगावती ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया। कला प्रिय शासक होने के कारण उसने कौसाम्बी को सांस्कृतिक विकास का प्रमुख केन्द्र बना दिया। समकालीन नरेशो में इतिहास प्रसिध्द प्रसेनजित, चन्द्रप्रदोत्त, श्रेणिक-बिम्बसार, आजातशत्रु, हस्तीपाल, दधिवाहन आदि शासको का महत्वपूर्ण स्थान है। जैन साहित्य से (4) विदित होता है कि महावीर स्वामी यहा अनेको वार पधारे थे। इस नगर ने बौध्द संघ को बड़ी संख्या में शीक्षु भिक्षुनियाँ प्रदान की (5) वत्स जनपद न केवल भारतीय व्यापार की एक विशाल पर्णशाला थी वरन धर्म और संस्कृति के विकास का भी महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है(6)।

<u>चेदि जनपद:-</u> यह जनपद कुरु के चतुर्दिक यमुना के समीप फैला हुआ था(7) आधुनिक बुन्देलखण्ड तथा समीप वर्ती प्रदेश को प्राचीन चेदि राज्य कहा जाता था(8) मध्य काल में चेदि का राज्य का विस्तार नर्मदा(मेकलसुता) तक था। चेतीय जातक(10) के अनुसार विवेच्य जनपद की राजधानी सोत्थीकी नगरी थी। शुक्तिमती इस क्षेत्र की प्रसिध्द नदी थी। पार्जीटर ने शुक्तिमती को आधुनिक केन नदी माना है। बौध्द साहित्य तथा जैन साहित्य मे भी चेदि जनपद की महत्ता का उल्लेख मिलता है।(11) बुध्द जी यहा कई बार पधारे है। काशी से चेदि जनपद का मार्ग असुरक्षित था। चेदी को त्रिपुरी भी कहा जाता था(12) चेतियों के बीच रहते अनुरुध्द ने अर्हत पद प्राप्त किया था(13)

1- अवस्थी अवध विहारी वही पृ0 34, जैन बलभद्र वही 141 तिलाये पणावति 4/531
2- विनय पिटक 272, जातक2/248, जैन बलभद्र वही 141 ... अंगुत्तर 4/37, विनय पिटकपृ0 322, 334, 480
3- संयुक्त निकाय हि0अनु0 भाग1पृ0 377, अंगुत्तर 4/37, विनय पिटकपृ0 322, 334, 480 ... 2/380, 270, 3/28।
4- आवश्यक सूत्र 221 (5) धम्मपद कामेन्ट्री1, 21/37, 2/380, 270, 3/28।
6- लाहा विमल चरण वही पृ0 212, लाहा 'सम क्षेत्रीय ट्राइब्स इन एंसियेण्ट इंडिया पृ0 128
7- पार्जीटर जे0आर0एस0ए0पी0 1895पृ0 253 (8) अवस्थी अवधविहारी'लाल'प्राचीनभारतीय भूगोल 34
9- वैध चिन्तामणि वही 4/280 (10) वही पृ0 422
11- जातक 6/514, अंगुत्तर3/355-56, दिघनिकाय 2/200-203, जैन बलभद्र वही पृ0 181-207
12- नन्दलाल डे0 वही पृ0 14 (13) अंगुत्तर निकाय 8/228

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सहजाति(1) तथा त्रिपुरा (2) महत्वपूर्ण नगर थे। विवेच्य क्षेत्र अनुपम कला कृतियों का अद्वितीय भण्डार रहा है। अभी तक सार्वभौम सत्ता की स्थापना नहीं हुई थी। बड़े बड़े राज्य छोटे छोटे राज्यों को हड़प रहे थे। काशी कोशल वत्स पांचाल में राजतंत्र तथा मल्ल जनपद में गणतंत्र प्रणाली थी। कोशल के शासक पसेनदि को अपने ही पुत्र के कारण गद्दी छोड़ देनी पड़ी। महाजनपदों का उत्थानकाल समाप्त होगया था। छोटे छोटे जनपद नष्ट होकर एक बड़े जनपद मगध में सम्मिलित हो गये। इन राज्यों में काशी का पतन सर्व प्रथम हुआ उसके बाद कोशल मगध साम्राज्य में मिला दिया गया था(3) अन्त में शिशुनाग ने वत्स तथा अवंति को नष्ट करके मगध में मिला लिया। विस्तृत साम्राज्य का अन्त महापद्मनाग ने कर दिया(4) तथा नई युग का सूत्रपात्र हुआ जो इतिहास में मौर्य युग के नाम से प्रसिध्द हुआ।

मौर्य तथा शुंग काल

मौर्य युग का आविर्भाव अंधाकार में प्रकाश के समान ही है। महापद्म नन्दवंश का अन्तकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने विश्व विख्यात, नीति विशारद कूटनीतिज्ञ तथा आर्थिक विचारक कौटिल्य के सहयोग से (5) नवीन मौर्य साम्राज्य की स्थापना की (6)। राजा के आदर्शों का पालन करते हुये(7) तथा उचित सहयोग से (8) सेल्यूकस को हरा कर (9) तथा उसकी पुत्री हेलन से विवाह कर मगध में नये राजनैतिक इतिहास का सुत्रपात किया। चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी राजदूत मेगस्थनीज को अपने दरबार में उचित सम्मान दिया। महाविजेता ने 6 लाख सैना लेकर समूचे भारत को अपना अंग बना लिया। (10) इस सम्राट का शासन सिन्धू सरिता की पश्चिमी सीमा से आगे बढ़ कर हिन्दूकुश तक विस्तृत हो गया(11) चन्द्रगुप्त की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र बिन्दुसार गद्दी पर बैठा।(12) बिन्दुसार ने अपने पिता के राज्य को सुरक्षित रखा(3) बिन्दुसार के उपरान्त विश्वप्रेम का अधिष्ठाता अशोक गद्दी पर बैठा(14)।

1- लाहा विमल चरण समक्षेत्रीय ट्राइब्स आफ एनसियेण्ट इंडिया, अध्याय6
2- अंगुत्तर निकाय 3/355 (3) घटजातक -355 महासीलव जातक 51
4- राय चौधरी वही पृ0 148-149 (5) राय चौधरी वही पृ0 198 अनु0
6- द ऐज आफ नन्द एण्ड मौर्यास पृ0 9-26 (7) अर्थशास्त्र 1/19
8- स्मिथ अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया पृ0 130, मजूमदार एनसियेण्ट इंडिया पृ0 111-112
9- राय चौधरी वही हिन्दी अनु0 पृ0 101
10- मैक्रिण्डल एनसियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकाल लिट्रेचर पृ0 107
11- कालीशंकर भटनागर प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पृ0 403
12- जे0एस0आर0एस0 1909 पृ0 24, 1919 पृ0 98
13- जे0एस0आर0ए0एस0 1909 पृ0 24
14- स्मिथ 'अशोक तृतीय संस्करण पृ0 257, जे0बी0ओ0आर0एस0 1917 पृ0 438

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अशोक के शिलालेख कालसी (देहरादून), लुम्बिनी, सारनाथ, दिल्ली, मेरठ, कोसम, आदि स्थानो मे प्राप्त हुये है(1)जिससे स्पष्ट है कि अशोक का साम्राज्य इन स्थानो पर भी रहा?। इस समय हस्तिनापुर पुनः बसने लगा था(2)।अशोक ने देवनाम प्रिय की उपाधि धारण की(3)।मथुरा सांस्कृतिक विकास का प्रमुख केन्द्र था(4)।नासिक अभिलेख तथा जूनागढ के महाक्षत्रप रूद्रदामन प्रथम के अभिलेखो मेंआशोक का नाम मिलता है।मगध, पाटलीपुत्र, वाराबर की पहाडियो, कौशाम्बी, अत्वी(आलवी) भी अशोक के साम्राज्य मे थी(5)।पिलनी के अनुसार गंगा के सभी तटवर्ती प्रदेश मगध सम्राट के अन्तर्गत थे (6)। विभिन्न स्थानो से प्राप्त शिलालेखो, अभिलेखो सिक्को तथा कलाकृतियो से विवेच्य युग कीसामाजिक एवं धार्मिक अवस्था पर गहरा प्रभाव पडता है। मौर्य साम्राज्य में काशी, कोशल, कुरुपन्चाल, वत्स, चेदि, शूरसेन, (मल्ल)कुणाला(सावस्ती) ने मगध साम्राज्य के अन्तर्गत भुक्ती का रूप ले लिया था जिसकी पुष्टि बृहतकल्पभाष्य (7)।प्राचीन कोशल तीन भुक्तियों में विभाजित हो गया था। खास कोशल की राजधानी साकेत थी । कुणाला की राजधानी श्रावस्ती और संडिल्ल (संडीला) की राजधानी नन्दीपुर थी ।महाजनपद पूर्व के समान ही था। कुरुक्षेत्र से उत्तर - होकर जाने वाले रास्ते पर हस्तिनापुर, अहिच्छत्रा, कुणाला, सेतव्या श्रावस्ती, मिथला, चम्पा तथा ताम्रलिप्ति पड़ते है ।गंगा के मैदान में दक्षिणी रास्ते पर मथुरा, कम्पिल, सौरेय्य,, साकेत, कौशाम्बी, तथाबनारस पड़ते थे(8)।

अशोक एक शान्ति प्रिय शासक था इसी शान्तिप्रिय नीति के कारण मगध साम्राज्य शिथिलहोने लगा। मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ को मारकर उसके सेनापति पुष्यमित्र मौर्य वंश का अंत कर शुंग वंश की स्थापना की (9)। शुंग वंश ने नवीन कीर्तिमान स्थापित किये। इसी समय यवनो ने आक्रमण किया तथा मथुरा पचांल एवं साकेत पर अधिकार कर लिया(10) पुष्पमित्र ने यवनो को सिन्धु के तट पर पराजित किया (11) विपत्ति में तलवार उठाने के कारण शुंगो को आचार्य कहा गया है(12)

1- कनिघम आर्कलोजी सर्वे आफ इंडिया 1967 वैलम इन्सक्रिप्शन आफ अशोक 12, 15 ,33, 38
2- जे०वी० आर०आर० एस० 1917 पृ० 138 (3) कालसी अभिलेख
4- मैक्रिण्डल 'एंसियेण्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड वाइ टालमी पृ० 124, मैक्रिण्डल ऐंशियेण्ट एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ० 206
5- राय चौधरी वही पृ० 226
6- इन्डियन एण्टीक्वरी 1877 पृ० 226 मैक्रिण्डल ऐंशियेण्ट इन्डिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन प० 141, 42, शिवु (अशोक) पृ० 107
7- मोतीचन्द्र सार्थवाही पृ० 76 (8) वही पृ० 77
9- राय चौधरी वही हिन्दी अनुवाद पृ० 226
10- महाभाष्य 72/11 बाजपेयी के०डी० 'ब्रज का इतिहास' भाग-1 पृ०75
11- सरिता अक्टूबर 1, 1981 'पूत' प्रभात त्यागी पृ० 164 से 172
12- अश्वालयायन गृह्यसूत्र 12/13/5, अष्टाध्यायी 6/2/130

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी विजय के उपलक्ष में पुष्यमित्र ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया(1) पुष्यमित्र ने 36 वर्षों तक शासन किया। उसकी मृत्यु के उपरान्त कौशाम्बी, अयोध्या, अहिच्छत्रा आदि ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी स्थानीय शासक पाल घोष, एवं सेन्य(2)आदि का भी अस्तित्व था। दक्षिण पचांल में नन्दी शासको का राज्य था(3)शुंग वंश का शासक देवमूर्ति अत्यधिक दुर्बल शासक था अपने ही मंत्री के षड्यंत्रो द्वारा मारा गया।आन्ध्रवंशी सेमुक ने शुंगो की बची हुई शक्ति को नष्ट कर दिया। यह कहना अतियोक्ति न होगा कि शुंग सम्राटों के प्रयासो के परिणाम स्वरुप एक ऐसी राजनैतिक अभिनय स्थल का निर्माण हुआ जिसपर गुप्त सम्राट ऐसी अपनी नवीन प्रतिमा का प्रदर्शन कर सके।

सातवाहन वंशः- पुराणो में उल्लिखित आन्ध्रवंश का नाम अभिलेखो में सातवाहन मिलता है अशोक की मृत्यु के उपरांत आन्ध्रो ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी ।इनकी राजधानी कृष्णा नदी के निचले हिस्से में श्री काकुल थी ।आंध्रो ने कुछ समय तक सम्पूर्ण मगध पर शासन किया परन्तु उत्तरावध, विदेशी आक्रमणो के कारण उत्तर का साम्राज्य आन्ध्रो ने खोदिया। इन शासको मेंशतकर्णी, गौतम पुत्र शातकर्णी एवं यज्ञश्री शतकर्णी का प्रमुख स्थान है। 255 ई० के लगभग आंध्र का अस्तित्व समाप्त हो गया।

शकः-उत्तरी भारत में शुगो के उपरान्त शको ने अपना राज्य मथुरा में स्थापित किया। राजा ह्यान तथा हायमस(4) तथा रजोबुल(5) की मुद्रायें मथुरा के आस पास तथा संकिसा (वसन्तपुर) से प्राप्त हुई है। रजोबल ने महाक्षत्रप की उपाधि धारण की (6)राजासोदाय के द्वारा चलाई गई अनेक मुद्राये प्राप्त हुई है। शाक्यों द्वारा बनवाया गया गोलाकार पात्र पिप्रावा (वस्ती जिले के वसई परगने) से प्राप्त हुआ है(7) सिक्को तथा अभिलेखो से यह पता चलता है कि ईसवी सदी के कुछ ही पहले हिन्दूकुश से मथुरा तक का प्रदेश शक शासन में था(8)

1- वैद्य चिंतामणि ऐंशिक इंडिया पृ० 54-58
2- बाजपेयी के०डी० ब्रज का इतिहास भाग- 1 पृ० 96
3- वाजपेयी आई०एन० एस० पृ० 79
4-जे० यू० पी० एच० भाग-3 प्लेट 3 पृ० 107
5-स्मिथ द काइन्डस आफ एंशियेन्ट इंडिया पृ० 211-12
6- वाजपेयी के०डी० एण्ड पाण्डे प्राचीन भारत का इतिहास पृ० -315
7- वाजपेयी के०डी० युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ० -41
8- मोतीचन्द्र सार्थवाह पृ० 95

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुषाण कालः- शको तथा मथुरा के क्षत्रप शासन ह्यान, हायमस रज्जुबुल के उपरान्त कुषाण काल का महत्वपूर्ण समय प्रारम्भ हुआ (1) अंतिम शाकस रुद्रसिंह तृतीय, चन्द्रगुप्त द्वितीय के द्वारा पराश्त हुआ और शको के शासन का भी अंत हो गया। इस वंश में कजूलकडफिस, विम कटफ्हसेस, कनिष्क, वसिष्ठ, हुविष्क तथा वासुदेव महत्वपूर्ण शासक हुये (2) परन्तु सबसे योग्य एवं बुद्धिमान शासक कनिष्क था(3) कुषाण सम्राज्य के चिन्ह बनारस तथा मथुरा में प्राप्त हुआ है(4) कनिष्क ने अपनी सेना साकेत भी भेजी थी। मथुरा से प्राप्त कुषाण कालीन कृतियों से स्पष्ट है कि विवेच्य युग में मथुरा महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केन्द्र था(5) मथुरा, अयोध्या, सहटमहट, सारनाथ, संकिसा, फरुखाबाद, से अनेको सिक्के (6) प्राप्त हुये है। प्राप्त हुई मुद्राये आयाग-पट्ट शिलालेख, कनिष्क सम्राज्य विस्तार का द्योतक है। कमरा (पाकिस्तान) से प्राप्त हुआ खरोष्टि लिपि में अभिलेख कुषाणो के राजनैतिक जीवन पर नया प्रकाश डालती है। (7) सामाजिक तथा धार्मिक उन्नयन में कनिष्क ने महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत की। काशी, कोशल, अहिच्छत्रा कम्पिल, मथुरा एवं अयोध्या इस कार्यल के प्रमुख राजनैतिकएवं सांस्कृतिक केन्द्र थे। (8)

1- स्मिथ 'द कुषाण, जे०आर०ए०एस० 1903 पृ० 1-64
2- जे०आर०ए० एस० 1914, पृ० 977
3- जे०आर०ए०एस० 1903, 1905, 1906, पृ० 913
4- स्मिथ 'अर्ली हिस्ट्री आफ नार्दन इंडिया पृ० 101, हर्टल 'न्यू कुषाण फाइन्डस एट मथुरा वी०एस०ए०यू०पी० भाग5: 3 पृ० 58-59, अग्रवाल आर०सी० 'सम कुषाण स्कैपचर इन नेपाल म्यूजियम दिल्ली वी०एम०ए० यू०पी० भाग-3 पृ० 23-24
5- श्रीवास्तव ए०के० मथुरा एज नेनेवू द काइन्डस वही भाग-11 पृ० 30-36 हर्बर्ट हल्टल ' द कुषाण नाग टैम्पिल आफ सोंकि पृ० 1 से3 भाग 11-12-1973 शर्मा रमेशचन्द्र मथुर कलाशैली की अनूठी देन' वही भाग 11-1973 पृ० 21 से 29 श्रीवास्तव रानी कुषाण कालीन शिल्पकला में नृत्य मुद्राये वही भाग- 1- 1974 पृ० 38-45
6- मुकर्जी वी०एन० नोट आफ द एट्रीब्यूशन आफ सम कुषाणा काइन्डस भाग5, वही 1974 पृ० 1-4 श्रीवास्तव सी०सी० 'कुषाण हार्ड आफ ट्रेजर आफ काइन्डस इन यू०पी० भाग5:3 1969, श्रीवास्तव ए०के० 'फाइन्ड स्पाट आफ कुषाण काइन्डस इन यू०पी० भाग5 8 वही पृ० 37-43 श्रीवास्तव ए०के० 'कुषाण गोल्डन काइन्स आफ उन्नाव वही भाग5-5-6 1970 पृ० 31 से 33, श्रीवास्तव ए०के० मथुरा एज नोन टू द काइन्स वही भाग-11-12 पृ० 30-36
7- मुखर्जी वी०एन० 'ए नोट ओन ए रिसेन्टली डिसकवर्ड कुषाण रिकार्डस 'ए०एच०एम०वी० मई 1976 भाग5-
8- वाजपेयी के०डी०' उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक केन्द्र पृ० अहिच्छत्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाग वंश:- कुषाण काल के पतन के उपरान्त नवीन राजवंश नागो का उदय उत्तर प्रदेश मे हुआ(1) इन नाग शासको ने विदिशा पद्मावती, मथुरा तथा कान्तीपुरी मे राज्य किया। (2)गुप्तो के उदय के समय नागो का व्यवस्थित साम्राज्य था। प्रमुख शाखा भारशिव ही नागो की थी। इन लोगो ने गंगा की घाटी को जीत कर 10 अश्वमेध यज्ञ किये। वीरसेन शक्तिशाली शासक था जिसने उत्तरी भारत पर अपनी सत्ता स्थापितक की (3)समुद्र गुप्त की प्रयाग प्रशस्ति मे गजपतिनाग, शिवनाग, नागदत्त, नागसेन तथा नन्दी की पराजय का उल्लेख हुआ है(3)। इस समय का तत्कालीन शासक गजपतिनाग था(4) ।अबतक वृषभनाग, भीमनाग, विभुनाग, देवनाग, वृहस्पतिनाग, वसुनाग, गणपतिनाग, प्रभाकरनाग, स्कन्दनाग, भवनाग, नागसेन तथा वीरसेन शासको का अस्तित्व प्रकाश मे आया है(5)।

मघ वंश:- मघवंश का उल्लेख पुराणो मे हुआ है जिस समय पद्मावती मे भारशिव नाग शासन कर रहे थे उसी समय कौशाम्बी तथा बघेलखण्ड मे (महाकोशल का उत्तरी भाग) पर मघवंश शासन कर रहा था। इस वंश का प्रथम शासक भीमसेन था जो 125 ई0 के बाद शासक हुआ। इस वंश मे प्रौष्ठ श्री, भद्रमघ, शिवमघ, वैसवन, भीममघ, पवमघ, विजयमघ, व्यमघ, पुरमघ, दानदेव, प्रोष्ठदत्त, भीममघ तथा रुद्रमघ शासक हुये। इनके वाद वशिष्ट पुत्र, चित्रसेन ,वशिष्ट पुत्र शिवघोष, स्वामीदत्त तथा महाराजा कृष्णध्वज गोतमी पुत्र शासक हुये(6)

गुप्त तथा वर्द्धन काल:- तृतीय शती ई0 के अन्त मे देश मे जिन बड़ी शक्तियो का उदय हुआ उनमे पूर्वी उत्तर प्रदेश मे उदित होती हुई गुप्तो की राजशक्ति प्रमुख है। गुप्त साम्राज्य जहाँ दकन पर्यंत भारतीय एकता का प्रतीक है(7) वहाँ वह भारतीय वर्चस्व और अन्योन्याश्रित अन्तस्स अन्तरावलम्बित समन्वित संस्कृति का भी प्रतीक है। गुप्त साम्राज्य के अन्तर्गत विंध्य के उत्तर का भूभाग (उत्तरी मध्य प्रदेश सहित) सम्मिलित था(8)

प्रारम्भिक राजाओ के ना श्री गुप्त, श्री घटोत्कच गुप्त और चन्द्रगुप्त मिलते है इनमे पहले दो मे महाराज कहे गये है और चन्द्रगुप्त महाराजाधिराज उपाधि से अभिव्यक्त हुआ है। इसने लिच्छवी वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया जो राजनैतिक क्षेत्र मे एक नया मोड़ था(9) चन्द्र गुप्त (329-335) के समय मे प्रयाग, अयोध्या

1- जायसवाल काशीप्रसाद हिस्ट्री आफ इंडिया पृ0 3 (2)उपाध्याय गुप्त काल सांस्कृतिक इतिहासपृ0 56
3- वाजपेयी के0डी0 'प्राचीन भारत का इतिहास पृ0 221
4- जायसवाल काशी प्रसाद 'द ऐज आफ इम्पीरियल यूनिवर्सिटी पृ0 170
5- वाजपेयी के0डी0 'प्राचीन भारत का इतिहास पृ0 315
6- वाजपेयी के0डी0 ' प्राचीन भारत का इतिहास पृ0 393
7-गुप्त परमेश्वरी लाल 'गुप्त साम्राज्य पृ0 221, रघुवंश- 4/225-85
8- उपाध्याय भगवतशरण वी पृ0 60
9- स्मिथ 'अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया चौथा संस्करण पृ0 295-96

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मगध तक ही राज्य सीमित रहा परन्तु उसके पुत्र समुद्रगुप्त केराज्य में उत्तर भारत ही नही अपितु मध्य प्रदेश के बनराज्यो, दक्षिणापथ के राज्यो तथा पंजाब राजस्थान राज्यो का भी अस्तित्व था उसने कान्तीपुरी के नाग शासको का अंतकर कोशल के राजा महेन्द्र को भी परास्त कर दिया तथा आर्यावर्त के शासक मातिल तथा वल वर्मा(1) को भी अपने अधिकार में कर लिया। समुद्रगुप्त चन्द्र गुप्त प्रथम के शासन को इलाहाबाद से गंगा तक फैलाया(2) समुद्र गुप्त के सिक्के पूर्वी पंजाब देहली(3) कोशाम्बी(4) अहिच्छत्रा (5) आदि स्थानो से प्राप्त हुये है इलाहाबाद अभिलेख से ज्ञात होता है कि समुद्र गुप्त ने पंचाल शासक अच्युत को हराया(6)।

समुद्र गुप्त के उपरान्त रामगुप्त शासक हुआ वह मन तथा शरीर से कमजोर था उसकी मानसिक दुर्वलता का लाभ उठाकर शकराज ने रामगुप्त की रानी ध्रुवदेवी के लोभ में आक्रमण कर दिया संधि के शर्त के अनुसार उसने अपनी पत्नी ध्रुवदेवी को शकराज को देना स्वीकार कर लिया परन्तु चन्द्रगुप्त (द्वितीय) ने नारीवेश में शकराज का वध कर दिया और ध्रुवदेवी के विवाह के साथ ही गुप्त साम्राज्य पर भी अधिकार कर लिया(7) रामगुप्त की कमजोरी के कारण शक प्रबल हो गये थे इसलिये चन्द्रगुप्त ने वाकाटको से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करके राजनैतिक स्थिति को मजबूत किया तथा शको को पराजित किया(8)। तत्कालीन राजनीति में शको का पराभव एक महत्वपूर्ण राजनैतिक घटना थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विक्रमादित्य की उपाधि धारण की प्राप्त हुये अभिलेखो से स्पष्ट होता है कि इस समय भी मथुरा एक महत्वपूर्ण राजनैतिक केन्द्र था(9)। विदेशी यात्री फाह्यान (10) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में भारत आया उसने मथुरा, संकाश्य, कान्यकुब्ज, साकेत श्रावस्ती, कपिलवस्तु, कुशीनगर, वैशाली, पाटलीपुत्र, राजगृह, गया, वाराणसी आदि स्थानो का भ्रमण किया जिससे स्पष्ट होता है कि यह स्थान चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन के अन्तर्गत थे। चन्द्रगुप्त के उपरान्त कुमार गुप्त (प्रथम) शासक हुआ (11)

1- जे०वी०ओ०आर०एस० जून 1933 पृ० 142 वैध चिन्तामणि 'एपिक इंडिया, 12 पृ० 73-76
2- स्मिथ 'अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया पृ० 175 (6) जायसवाल 'हिस्ट्री आफ इंडिया पृ० 150
3- पृ० 11 जैन बलभद्र वही
4- राय चौधरी वही पृ० 486
5- वाजपेयी के०डी० अहिच्छत्रा पृ० 03
6- सी०आई०आई० भाग-3 न० 1 पृ० 1-17, राय चौधरी वही हिन्दी अनु० पृ० 388, वाजपेयी के०डी० न्यू मैटिक इस्टडीज अध्याय 2
7- उपाध्याय 'प्राचीन भारत का इतिहास पृ० 243-44
8- उपाध्याय 'भगवत शरण 'गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास पृ० 69
9- वाजपेयी के०डी० मथुरा भाग-2 पृ० 17
10- लेगे 'ट्रैवल्स आफ फाहियान पृ० 55-56 गाइल्स ट्रेवेल्स आफ फाह्यान्स, मोतीचन्द्र सार्थवाह पृ० 185, नलिनाक्ष दत्त एवं वाजपेयी के०डी० वही पृ० 238
11- वैध चिन्तामणि 'एपिक इंडिया 21 एवं 7,5 राय चौधरी वही हि०अनु० पृ० 425

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसका अभिलेख विलसढ़(ऐटा) से प्राप्त हुआ है। कुमार गुप्त (प्रथम के उपरान्त स्कन्दगुप्त(1) गद्दी पर बैठा उसके अभिलेख कहांव(2) (देवरिया), सैदपुर(3)(भीतरीगाव जिलागाजीपुर) से प्राप्त हुये है। गुप्त वंश के अन्य शासको मैं कुमारगुप्त (प्रथम)(366-395) बुध्दगुप्त(477-495), भानगुप्त (495-510) का प्रमुख स्थान है। उत्तरगुप्त काल(4) मैं कृष्णगुप्त, जीवेत-गुप्त, कुमार गुप्त एवं दामोदर गुप्त का प्रमुख स्थान है। गुप्तकाल निश्चय ही भारत के इतिहास मैं स्वर्ण युग रहा है राजनैतिक क्षेत्र मैं भी इस वंश का उल्लेखनीय महत्व रहा है।

गुप्तकाल के साथ ही गंगा की घाटी मैं मौखरी वंश का उदय हुआ जिसे उत्तोरी भारत मैं अपनी राज्य सत्ता स्थापित करने के लिये गुप्तो से भयानक युध्द करनापड़ा। यह शक्ति मौखरी वंश की थी (5)। इस वंश के प्रारम्भिक सम्राट राजकुमार हरिवर्मन, आदित्यवर्मन एवं ईश्वर वर्मन के महाराजाधिराज उपाधि के कारण मौखरी तथा गुप्तो का परस्परिक संघर्ष करना पड़ा। गुप्तो ने गोडो की सहायता से हर्षवर्दन के बहनोईगृहवर्मन मौखरी को मार डाला(6)। कोटा राजस्थान तथा वरावर और नागार्जुन की गुफाओ से प्राप्त अभिलेखो से मौखरी वंश की प्राचीनता का आभास होता है। परन्तु शक्ति सम्पन्न राजवंश के रुप मैं इसका प्रादुर्भाव कन्नौज मैं हुआ। कन्नौज की बढ़ती शक्ति से मगध सशंकित हुआ। मौखरियो ने वर्दन से तथा गुप्तो ने गोडो से मित्रता स्थापित की। इनाचार राज्यो के पारस्परिक सन्धि विग्रह की कहानी ही इस युग के उत्तरापथ का इतिहास है। राज्य वर्द्धन ने अपने वहनोई के हत्यारो देवगुप्त को मार दिया परन्तु वह स्वयं गोड शासक शशांक से मारा गया हर्ष ने अपने थानेश्वर के साम्राज्य के साथ ही (7) कन्नौज के राज्य को भी संभाला। हर्ष एक योग्य तथा पराक्रमी सम्राट था (8) कन्नौज को अपनी राजधानी बनायी(9)। हर्ष के सिक्के फर्रुखाबाद जिले मैं भीतरगांव नामक स्थान पर पाये गये है(10)।

1- इण्डियन एन्टीक्वरी 1886 पृ0 251, राय चौधरी वही हि0 अ0 पृ0 427
2- वाजपेयी के0डी0 'युगो युगो मैं उत्तर प्रदेश' पृ0 12
3- उपाध्याय भगवत शरण वही पृ0 158 (4)वैद्य चिन्तामणि 'एपिक इंडिया पृ0 110
5- राय चौधरी वही हि0 अ0 पृ0 449 (6)मजूमदार 'एन्सियेण्ट इण्डिया' पृ0 171
7- वही हर्ष चरित्र पृ0 794 कावल तथ धमय का अनुवाद 'हर्ष चरित्र' पृ0 101
8- राय चौधरी वही हि0 अ0 पृ0 252-53, हर्ष चरित्र पृ0 183
9- वील वही भाग-1 पृ0 210-11, वाटर्स पृ0 343
10- जे0 आर0 ए0 एस0 1908 पृ0 843, मुकर्जी 'हर्ष' पृ0 115-18

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसी स्थानपर सिक्के ईशान वर्मा,6 सरवर्मन के तथा अवन्ति वर्मन के प्राप्त हुये है।9सिक्के प्रभाकर वर्मन और 284 शिलादित्य उपाधि से विभूषित हर्ष के प्राप्त हुये है(1) डा0वाजपेयी (2) को हर्ष स्वर्ण मुद्रा फर्रुखाबाद से प्राप्त हुई है। थानेश्वर, सुघ्न, ब्रम्हपुत्र(गढवाल)कुमायूं) गोवीसना(काशीपुर) पीलीभीत के वर्तमान जिले अहिच्छत्रा, बिलसद(ऐटा), कपित्थ(संकिसा), अयोध्या, हयमुख(रायबरेली), प्रतापगढ, प्रयाग, कौशल, कौशाम्बी आदि हर्ष के साम्राज्य मे थे (3)। ह्वेनसांग ने मंडावर, हरिद्वार, अहिच्छत्रा, सौरो, संकिसा, मथुरा, कान्यकुब्ज, अयोध्या, प्रयाग, कौसाम्बी कुशपुर, श्रावस्ती कुशीनगर एवं वाराणसी आदि स्थानो की यात्रा की थी (4)हर्ष के शासन काल में कन्नौज(5)कुशीनगर(6), मथुरा(7), सारनाथ(8)श्रावस्ती(9)संकाश्य(10)पचांल(11), अयोध्या (12) आदि नगरो में भारतीय संस्कृति के विकास में महान योगदान दिया। हर्ष के बांसखेड़ा (शाहजहांपुर जिला, उत्तर प्रदेश) और मधुवन(आजमगढ)अभिलेख, हर्ष के रिकार्ड (13)अहर इन्सक्रिपशन,(14)(बुलन्दशहर) से शासन विस्तार का ज्ञान होता है। हर्ष को 'सकलोत्तरपथनाथ' की पदवी से सुसोभित किया गया।उसका राज्य सम्पूर्ण उत्तर भारत मे था। ह्वेनसांग(15) ने अपने यात्रा विवरण मे लिखा है शीघ्र ही हर्ष ने अपने भ्राता की मृत्यु का बदला ले लिया औररभारत का स्वामी बन गया(16)30 वर्ष बाद उसने अपनी तलवार म्यान में रखी और शान्तिपूर्वक शासन किया(17)। हर्ष शासक और विजेता के रुप में महान था। कन्नौज मे एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया थाजिसमें 18 देशो के नरेशो और 5 भरतो के राजाओ तथा विभिन्न सम्प्रदायो के स्त्री पुरुषो ने भाग लिया(18)। इस समारोह से उसकी राजनैतिक प्रभावपरिलक्षित होता है। हर्ष के कोई उत्तराधिकारी न होने से वर्धन साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया।

1- वाजपेयी के0डी0 'न्यू मैस्टिक इस्टडीज अध्याय37 (2) वही
3- वील लाइफ पृ0 154 (4) कनिंघम एनसियेण्ट जाग्रफी आफ इंडिया पृ0 378
5- कनिंघम 'आर्कलोजी सर्वे आफ इंडिया भाग।1पृ0 37-38 (6) वही पृ0 76
7- बुलेटिन आफ यू0पी0 हिस्टारिकल सोसाइटी न04 1975 पृ0 23, वार्टर्स वही भाग पृ0 301, वील, 'बुद्धिष्ठ रिकार्डस' पृ0 206-207
8-कनिंघम 'आर्कलोजी सर्वे आफ इंडिया 1904, पृ0 905 (9)वही पृ0 330
10- बुलेटिन आफ यू0पी0 हिस्टारिकल सोसाइटी भाग-4 पृ0 55
11-गाइल्स 'ट्रैवेल्स आफ फाह्यान पृ0 24 ,वार्टर्स पृ0 333
12- कनिंघम 'एनसियेण्ट जाग्रफी आफ इंडिया पृ0 439-404, लेगे वही पृ0 55-56, गाइल्स वहीपृ0 29-30
13- भण्डारकर वही पृ0 138
14- 1409-11, 1414-15, 1417-1420,(15)लाइफ पृ0 83वार्टर्स वही भाग-2, पृ0 239 वील भाग- 2 पृ0 256-57 (16)वार्टर्स भाग।पृ0 343, वील वही भाग-1 पृ0 313
17- वील भाग-1 पृ0 213, वार्टर्स वही भाग 1, पृ0 343
18- लाइफ पृ0 177, वील वही भाग-1, पृ0 218

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि वैदिक काल से लेकर हर्ष के समय तक कुछ विशिष्ट स्थल ही धार्मिक एवं राजनैतिक गतिविधियो के प्रमुख केन्द्र रहे है। वैदिक काल से कुरुपचाल एवं महाजनपद काल मे काशी, कोशल, पचाल, कुरु, शुरसेन, मल्ल, कोशल, चेदी, भारत के प्रमुख सांस्कृतिक एवं धार्मिक तथा राजनैतिक गतिविधियो के प्रमुख केन्द्र थे। पाचवी शताब्दी मे मगध के शासको ने समस्त छोटे छोटे राज्यो का दमनकरके एक छत्र साम्राज्य की स्थापना की। आलमगीरपुर(मेरठ जिले मे), अतंरजी खेड़ा(1)(एटा जिले), बनीमीला(2)(मिर्जापुर)भीटा(3)(इलाहाबाद), जाजमउ(कानपुर(4), विसोली(जिला वदायूँ(5), विठूर(6)छाका(7)(जिला शाहजहाँपुर), फतेहगढ़, वार्दी(8)मैनपुरी(9), कुशीनगर(10)देवगढ(11)लाखामचडल(12)(देहरादून) कालसी(13), हरिद्वार(मायापुरी)(14), हस्तिनापुर(15)कन्नोज(16)कम्पिल(17), संकिसा(18) नोहाखेड़ा(19), प्रयाग(20), काशी(21)मण्डावर(22)(विजनौर, अहिच्छत्रा(23), अयोध्या(24) मथुरा (25), सारनाथ(26), श्रावस्ती(27), पिप्रावा(28), कहाव(29), (देहरादून)चित्रकूट, कान्तीपुर, अल्लाहपुर कसेरी (30)कोसाम्बी(31), आदि क्षेत्र विवेच्य क्षेत्र मे संस्कृति के विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित करते रहे है।

---

1)वाजपेयी के०डी० 'युगो युगो मे उत्तर प्रदेश पृ० 26
2)कनिंघम 'आर्कलोजी सर्वे रिपोर्ट आफ इंडिया भा1 पृ० 30 (3) वही पृ० 47
4) वाजपेयी के०डी० 'युगो युगो मे उत्तर प्रदेश' पृ० 43
5) एन्टीक्टी न०72-1944 पृ० 142, मजूमदार एशियेण्ट इंडिया न०4 पृ० 24-25
6)कैटेलाग आफ आर्कलोजी कलेक्शन इन इंडियन म्युजियम 1883 पृ० 395
7)मजूमदार एनसियेण्ट इंडिया न07 पृ० 27 (8) वही
9)एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल 1868 पृ० 251-262
10)वाटर्स भाग-2, वही पृ० 46 कनिंघम एनसियेण्ट जाग्राफी आफ इंडिया पृ० 493
11)वाजपेयी के०डी० 'युगो युगो मे उत्तर प्रदेश पृ० 43,
12)वैध चिन्तामणि 'एपिक इंडिया भाग-3, पृ० 44, कनिंघम आर्कलोजी सर्वे अ रिपोर्ट आफ इंडिया भाग-1, पृ० 17 संयुक्त निकाय 2/112-114, 3/167-69, 173-77
13- कनिंघम आर्कलोजी सर्वे रिपोर्ट आफ इंडिया भाग पृ० 247
14) वही पृ० 402 (15)यू०पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी भाग-4, 1965 पृ० 15
16)वील 'बुद्धिष्ट रिकार्ड आफ वेस्टर्न वर्ड भाग 1 पृ० 206-213
17) वाजपेयी के०डी० कम्पिल कल्प 2अक्टूबर 1979 प्रथम संस्करण
18)वील वही भाग-1 पृ० 35-43, कनिंघम, एनसियेण्ट जाग्राफी आफ इंडिया पृ० 422
19) वाजपेयी के०डी० 'युगो युगो मे उत्तरप्रदेश पृ० 33
20)जैन वलभद्र वही पृ० 134-141, कनिंघम-एनसियेण्ट जाग्राफी आफ इंडिया पृ० 494
21)उपाध्याय 'बुध्द कालीन 'भूगोल पृ० 41 (22)वाजपेय के०डी० 'युगो युगो मे उत्तर प्रदेश पृ० 33
23-कनिंघम 'आर्कलोजी सर्वे रिपोर्ट आफ इंडिया भाग-1 255-265 (24)जैन वलभद्र वही पृ० 153-160
25- यू०पी० हिस्टोरिकल सोसाइटी भाग-4, 1965, पृ० 23
26- वही पृ० 39, कनिंघम-एनसियेण्ट जाग्राफी आफ इंडिया पृ० 466
27- लेगे 'ट्रेवेल्स आफ फाह्यान पृ० 55-56, वाटर्स भाग 9 वही पृ० 377, भाग-2, पृ० 228
28- वाजपेयी के०डी० 'युगो युगो मे उत्तर प्रदेश' पृ० 12 (29) वही
30- दीक्षित के०एम० 'एक्सकेवेशन आफ कसेरी एण्ड अल्लाहपुर वी०एम०स०यू०पी० भाग-7, पृ० 55-
31- जैन वलभद्र वही पृ० 141, कनिंघम एनसियेण्ट जाग्राफी आफ इंडिया पृ० 458

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय-4

वैदिक एवं महाकाव्य काल की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था का अनुशीलन

सामाजिक संरचना एवं वर्णों का विभाजन :-

वैदिक काल में समाज को जो रूप था उसमें राजनैतिक घटनाचक्र तथा परिवर्तन शील समय के अनुरूप परिवर्तन होते आये हैं । भारतीय इतिहास में अपनी प्रभुता एवं प्रभाव को बढ़ाने के लिये समाज के विभिन्न वर्गों में हुये पारस्परिक संघर्ष का अध्ययन सामाजिक इतिहास के लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना राजनैतिक इतिहास में सिंहासनों के निमित्त राजवंशों का युद्ध । ऋग्वेद(1) में पंचजनाः-अनु, द्रुह्यु, तुर्वस, यदु और पुरु का उल्लेख है । इस नयनोन्मीलन काल में मानवमात्र आर्य और अनार्य दो भागों में विभक्त था(2) उनमें रोटी रोजी बेटी का निकटतम सम्बन्ध तथापूर्ण व्यवसायिक स्वतंत्रता थी । ऋग्वेद(3) से विदित होता है कि गुण कर्म ही सामाजिक व्यवस्था का आधार थी । यजुर्वेद(4) में चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है । शक्ति सम्पन्न गौरवर्ण अल्प संख्याकों ने श्यामवर्ण के बहुसंख्यकों पर अपनी पवित्रता एवं श्रेष्टता बनाये रखने के लिये इनको अपना दास बना लिया(5) वर्ण एवं जाति भेद ने जटिल रूप धारण नही किया था किन्तु निकटतम सम्बन्धियों में विवाह नहीं हो सकता था । कर्म ही प्रधान था व्यक्तिगत शील पर विशेष ध्यान दिया जाता था । द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, कृपाचार्य आदि ब्राह्मण होकर भी क्षत्रिय वृति सैनिक कार्य करते थे । रामायण(6) तथा महाभारत(7) में चारों वर्णों एवं शूद्र अपने अपने कार्य में संलग्न रहते थे । विदेह के राजा जनक(9) प्रवाहणजैवली(10) कैकेय देश के राजा अश्वपति (11) एवं अजातशत्रु(12) काशी शासक की कथा उपनिषदों में विद्यमान है । छन्दोदग्य उपनिषद(13) से ज्ञात होता है सत्यकाम के कुल का पता न होने से भी गौतम ने उसे विद्याभ्यास कराना स्वीकार कर लिया । हिन्दू समाज की सम्पूर्ण रूप रेखा इस समय

1- 1/89/10, 2/2/10, एमएडवर्ड 'हिस्ट्री आफ इंडिया पृ० 27
2- 2/12/14, (3) 9/66/10, (4) 30/5
5- वासम 'अद्भुत भारत पृ० 115-16, सनफिल्मान' व्रात्त एण्ड द वैदिक सोसाइटी जे० ओ० आई० वी० भाग-12 सं० 3, मार्च 1963 पृ० 288-98
6- 4/4/6 (7) गीता तेरवां अध्याय (8) 2/100/41
9- शतपथ ब्राह्मण 14/6/1 (10) छन्दोग्य उपनिषद 5/3
11- वही 5/2 (12) बृहदारण्यक उपनिषद 2/1
13- 4/1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बन चुकी थी (1) अथर्वेद (2) यजुर्वेद (3) वाजस्नेयी (4) तैतरीय ब्राम्हण (5) रामायण (6) महाभारत (7) में ब्राम्हण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है।

ब्राम्हण :- विवेच्य साहित्य (8) से ज्ञात होता है कि ब्राम्हणों का समाज में देवता स्वरूप सम्मान था। धार्मिक कृत्यों पर उन्हीं का अधिकार था। ऋग्वेद में (9) स्पष्ट उल्लेख है कि ब्राम्हण क्षत्रियों से श्रेष्ठ हैं। राजा प्रजा दोनों को ही ब्राम्हणों का आदर करना चाहिये। ब्राम्हणों में तपस्या; स्वाध्याय, शौच, अर्चना, ज्ञान विज्ञान आदि गुण अनिवार्य थे (10) अपनी वृत्ति का परित्याग करने वाले ब्राम्हण निन्दनीय समझे जाते थे (11) आचार्य सुधन्वा से राम ने धनुष विद्या सीखी (12) रामायण में (13) प्रत्येक वर्ण का व्यक्ति अस्त्र धारण कर सकने का उल्लेख मिलता है। परन्तु आवश्यकता पड़ने पर वैश्यकर्म भी किया जाता था। ब्राम्हणों के नगरवासी, ब्रम्हवादी, शास्त्रवादी एवं श्रमजीवी भेद थे (14) महाभारत (15) के अनुसार कर्म एवं धर्म से विरक्त होने पर ब्राम्हणों पर कर लगाया जाता था।

क्षत्रिय :- क्षत्रिय शूर कर्म कर राष्ट्र एवं प्रजा की रक्षा करते थे। (16) शतपथ ब्राम्हण में (17) एक स्थान पर क्षत्रियों को ब्राम्हण से श्रेष्ठ माना है। अथर्वेद (18) में कुछ मंत्र तो केवल राजाओं के लिये और क्षत्रियों के ही लिये है। छन्दोग्य उपनिषद (19) में क्षत्रियों द्वारा हिन्सात्मक यज्ञों के विरोध का उल्लेख भी मिलता है। महाभारत (20) में क्षत्रिय ब्राम्हण विरोध को सामाजिक प्रगति का अवरोध माना गया है। क्षत्रियों के प्रमुख गुण शौर्य तेज, दान एवं ईश्वरता है (21)।

वैश्य :- ऋग्वेद में (21) चारों वर्णों का उल्लेख नहीं मिलता केवल पुरुष सूक्त में समाज के स्वरूप को एक शरीर के समान प्रतिपादित करते हुये चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है। वैश्यों में प्रमुख व्यवसाय पशुपालन तथा अन्योपार्जन करना था। (22)।

1- भटनागर भारतीय संस्कृति का इतिहास पृ 66
2- 3/5/7 (3) 30/5 (4) 26/2 (5) 1/1/14, विद्यालंकार सत्केतु प्राचीन इतिहास वैदिक युग पृ 196
(6) 4/4/6 (7) गीता अध्याय 13, शर्मा मथुरालाल भारतीय संस्कृति का विकास पृ 6
(8) ऋग्वेद 8/45/10, 4/508, तैतिर्य संहिता 1/7/31, तैतिर्य ब्राम्हण 1/2/6 तैतिर्य अरण्यक 2/15 रामायण 2100/9, वाजसनेयी संहिता 1/2/7, 7/10/38
9- 7/10/3-6 (10) रामायण 5/28/5 (11) महाभारत 13/23 अनुशासन पर्व 33/9 एम एडवर्ड वही पृ 30
12- रामायण 2/100/14 (13) वही 1/5/23, 1/12/4-5
14- महाभारत उद्योग पर्व 38/5, शान्ति पर्व 78/4-6,
15- 12/76, 2/3/56, 65/42, 78/18 (16) शान्ति पर्व 76/18
17- 14/4/1/2/3 (18) 3/4, 3/3, 5/20-21
19- 2/11/5 (20) शान्ति पर्व 56/24, -25, 73/8/13, 12/56/25
21- वही 6/1/22, सभापर्व 12/19
21- 10/90/12
22- वही 7/1/1/7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐतरेय ब्राह्मण (1) में स्पष्ट कथन है कि वैश्यों का देश की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान था। रामायण(2) में नगरों की सुव्यवस्थित दुकानों का उल्लेख है। वाणिज्यरत होने पर भी वह मांस मदिरा, लोहा तथा चर्म का विक्रय न कर सकते थे।(3)

शूद्रः- शूद्र का स्थान निम्न था। शूद्रों की संख्या वृद्धि से पारिवारिक दास यानौकर, मजदूर एवं हीन व्यवसाय करने वाले बहुत से वर्ग हो गये(4)चाण्डाल, निषाद, पिक्कस, उग्र आयोगव, मागध, रथकार, कुम्भकार, कुलाल एवं शबर आदि जातियों एवं उपजातियों का उल्लेख है(5) तैत्तिरेय संहिता ब्राह्मण उपनिषदएवं वाजसनेयी ऐतरेय संहिता ब्राह्मण में मिलता है। शूद्र को परम पुरुष के पैरों से उत्पन्न बताया है(6)।तीनों वर्णों की सेवा करना उसकाकर्तव्य था।(7)महाभारत(8) से विदित होता है कि आपात काल में वह अपने स्वामी को नही छोड़ सकता था। स्वयं का धन भी स्वामी के लिये है (9)।100ईसवी पूर्व के शूद्रों को स्थिति में अकस्मात परिवर्तन आ गया विद्वान शूद्रों ने उपदेश का स्थानग्रहण कर लिया(10) रामायण(11) से ज्ञात होता है कि शबरी ने आत्म समाधि द्वारा महाविभियों के दिव्य लो को प्राप्त किया था।शान्ती पर्व(12) में स्पष्ट उल्लेख है कि जन्म से कोई ब्राह्मण अथवा शूद्र नही वृति एवं आचरण ही वर्ण निर्णय के अंतिम प्रमाण है।महाभारत(13)में उल्लिखित है कि शूद्र पुत्र भी अपने आचरण से क्षत्रिय ब्राह्मण अथवा वैश्य बन सकता है। परन्तु वास्तविक रूप से जाति परिवर्तन करना अत्यन्त कठिन कार्य था। विश्वामित्र जैसे विद्वान क्षत्रिय को ब्राह्मणत्व प्राप्त करना कठिन था। वन पर्व (14) से विदित होता है कि युधिष्ठिर ने यज्ञ में शूद्रों को भी आमंत्रित किया था। शूद्रों की निर्वासित तथा अनिर्वासित दो कोटियांथी(15) राज्य के प्रमुख पद भी शूद्रों को मिलने लगे थे (16)। महाभारत में (17) वर्ण संकर जातियों की संख्या 132 थी। उनकी विविधताये समाज में विषमताये न पैदा सकी।वर्ण व्यवस्था पूर्ववत चलती रही सभी अपने कार्यों से सन्तुष्ट थे (18) समाज का विभाजन गुणमूलक था जिसे समाज के विकास में बाधा नही समझा जाता था(19)

1-17/9 (2)1757 (3)राजबली 'प्राचीन भारत पृ076 (4)महाभारत12/295/5-6
(5)तैतिर्य संहिता 4/5/42, 3/4/1, 1/1/4ऐतरेय ब्राह्मण37/7, 33/6वाजसनेयी संहिता17/21 वृहत उपा0 3/8, 3/8/1
(6)वही 4, 29/30 (6)~~3/8, 3/8/1~~ (7)महाभारत4/50/6
8-महाभारत 12/60, (9) वही 12/60/37 (10)पाण्डेय श्रीनेत्र भारत का वृत इतिहास पृ0 108
11-3/78 (12)186/4/8 (13)3/212, 11-12
14-2/6, 14-15, 12/296/5-9 (15)वही (16)महाभारत 12/13/22
17-अनुशासन पर्व148/28, वन पर्व80-31/33, 48/7, आदि पर्व115/42, 29/17, 48/5, 12
18-रामायण 6/128/103, 1/6/18, 6/128/103, दत्त रमेश चन्द्र 'प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास पृ0 149
19-व्यास शान्तिकुमार नानराम 'रामायण' कालीन संस्कृति पृ0 75

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आश्रम:- वर्ण के साथ साथ आश्रमो का भी विकास इसी काल मे हुआ वर्ण का सम्बन्ध सामाजिक प्रवृत्ति से था तथा आश्रम का सम्बन्ध उसके व्यक्तिगत सुधार एवं संस्कार से था। जीवन को संतुलित बनाये रखने के लिये आश्रमों ने महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीति की(1)ये आश्रम चार है :-ब्रह्मचर्याश्रम, (2)गृहस्थाश्रम(3)वानप्रस्थ (4) एवं सन्यास(5)। ब्रह्मचर्य आश्रम मे 25 वर्ष तक गुरुचरणो मे बैठकर विशेष नियमो के साथ विद्याध्ययन करता था(6)। रामायण(7) से विदित होता है कि उपनयन के बाद ब्रह्मचर्याश्रम प्रारम्भ होता था। महाकाव्यो (8) मे गृहस्थाश्रम को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मान्य है। क्यो कि इसी आश्रम से जीवन पूर्ण होता है। तथा गृहस्थाश्रम की गुरुता अन्य तीनो आश्रमो की सम्मिलित गुरुता के योग के बराबर है। अन्य तीनो आश्रम गृहस्थाश्रम पर ही आधारित है। व्यक्तिगत तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाहन मे गृहस्थाश्रम ही सहायक है।

गृहस्थाश्रम के उपरान्त व्यक्ति वानप्रस्थाश्रम मे प्रवेश करता है। इस अवस्था मे साधक इंद्रियो पर संयम कर साधनामय जीवन व्यतीत करता था(9)वानप्रस्थाश्रम का व्यक्ति साधनामय जीवन व्यतीत कर सन्यासाश्रम मे प्रवेश करता था। सन्यासाश्रम साधना एवं तपस्या का मनोरम संगम था जिसमे व्यक्ति अवगाहन कर मानवमात्र के कल्याण को समाहित करता हुआ परम ब्रह्म के पास पहुचने का प्रयास करता था।

चतुराश्रम का विशेष महत्व था। यह सभी वर्णो के लिये आवश्यक था वैदिक साहित्य मे चारो आश्रमो का उल्लेख नही मिला केवल ब्रह्मचारी(10)ब्रह्मचर्य(11)श्राते(12)गृहपति(13)यद्ध का उल्लेख मिला है आर्य मनीषियो द्वारा आयोजित यह व्यवस्थाउनकी वर्ण व्यवस्था का ही पूरक है।

परिवार:- संयुक्त परिवार की प्रथा थी ।तथा परिवार का वृद्ध व्यक्तिही परिवार का प्रमुख था(14)वही सम्पूर्ण सम्पत्ति का मालिक था उसको गोद लेने का भी अधिकार था।

1-भटनागर कालो शंकर वहीपृ0 29 (2)पुरोहित राजवली वहीपृ0 76, विद्यालंकारसत्यकेतुपृ0 206
3-रामायण2/106/28, 2/82/11शान्तिपर्व12/12 (4)रामायण7/108/4-5, 5/13/38, 3/9/2
5- महा0 12/245,6-25 (6) महा0 12/167, 14/26/2-6 (7) 2/82/11
8-रामा0 2/106/26,अयोध्या काण्ड2/106/22,6/1, 28/100,शान्ति पर्व12/12, 12/295/39
12/244-45
9- रामायण 6/128/100,7/108/4-5,5/13/38,3/9/23,12/192/22,12/91/4
13/14/16,2/95/6,-7,महा0 3/200,96-97,3/200
10- ऋग्वेद10/109/5 अथर्ववेद6/108/2 (11) अथर्ववेद 11/5,5/19
12-ऋग्वेद 8/3/9,8/6/18,
13- वही 6/56/2,अथर्ववेद 14/1/51,पृ0 206, पुरुष वही पृ0 132
14- सिंह राजकिशोर 'प्राचीन भारतकी कला एवं संस्कृति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संयुक्त परिवार में माता पिता, भाई बहन वंसज तथा समानान्तर सम्बन्धी सम्मिलित थे(1) अथर्ववेद(2) में एक नेता के निरीक्षण में संचालित सम्मिलित परिवार में प्रविष्टि तथा एकता के लिये प्रार्थना की गई है। यथा योग्य सत्कार, आचार्य पूजा, अतिथि सत्कार एवं आपसी स्नेह ही परिवार का आदर्श था(3) ।रामायण(4) से ज्ञात होता है कि राम ने अपने जीवन में अलौकिक गुणों का परिचय दिया जिसकी जड़ें उनके अपने परिवार में जमी थी। उन्होंने सत्य, दान, तप, त्याग, मित्रता, पवित्रता, सरलता एवं गुरु सेवा जैसे सद्गुणो को विकसित किया। पारिवारिक जीवन कार्य एवं कर्तव्यो का अपूर्व संगम था।

संस्कार:- जीवन में संस्कारो का विशेष महत्व था। संस्कारो का प्रमुख उद्देश्य अशुभ प्रभावो से सुरक्षा, भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति, आत्मिक तथा नैतिक उत्थान एवं सांस्कृतिक उत्कर्ष था। क्षमा, दया, परोपकारिता आदि सद्गुणों का उचित विकास संस्कारो के प्रभाव से ही होता है। गर्भाधान, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, विवाह संस्कार आदि संस्कारो का सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान था।यह संस्कार(5) निम्नलिखित है:-

गर्भाधान संस्कार:- यह संस्कार सन्तति की प्राप्ति के लिये किया जाता था।ऋग्वेद(6)में तीनो वर्णों का संस्कार सिद्धान्त विकसित अवस्था में था एवं पति ही इस संस्कार को सम्पन्न करता था। ऋग्वेद(7) से यह भी विदित होता है कि ऋतुकाल मे सहवास करना अनिवार्य था। महाभारत में(8 7) गर्भाधान संस्कार का वर्णन मिलता है।

1- जौली हिन्दू ला कस्टम पृ 168, मजूमदार वही पृ 44

2- 2/30, ऐतरेय ब्राह्मण 5/14, छान्दोग्य उपनिषद 4/214

3- रामायण 2/118/51, 1/62, 7/59, 2/21/56, 5/1/112, 3/12/28, 3/46/33-9 3/47/1-2, 2/32/4, 2/35/33, 1/18/30, 2/73/10, 7/59, 2/21/36, 1/18/30 2/72/10, 7/59, 2/21, 2/113/17, 1/61/19, 2/21/30, अनुशासन पर्व 76/63 -64 वन पर्व 204/3/4 आदि पर्व 76/63, -64, 100/103

4- 4/12/30

5- गुलाबराय 'भारतीय संस्कृति' पृ 131

6- 35/10, 1/89/9, 10/142/6, 10/40/2 सक्सेना मदनमोहन 'भारतीय प्राचीन संस्थाये' पृ 90

7- 10/185/37 अथर्ववेद 6/9, 14/2/2

8- अनुशासन पर्व 162 शान्ती पर्व 81/11, आदि पर्व 64-10-12

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुंसवन संस्कारः- अथर्ववेद(1) जातकर्म(2) ऋग्वेद अथर्ववेद महाभारत मे नामकरण (3) का ऋग्वेद, अथर्ववेद, ऐतरेय ब्राह्मण रामायण तथा महाभारत मे चूणाकरण संस्कार (4) अथर्ववेद, यजुर्वेद एवं रामायण मे तथा उपनयन संस्कार (5) का अथर्ववेद, शतपथ, छन्दोग्य उप0, वृहा उप0 रामायण एवं महाभारत मे विस्तृत उल्लेख मिलता है। यह संस्कार शिशु की रक्षा के लिये, मेधा, दीर्घआयु, बल, एवं स्वास्थ्य रक्षा हेतु वैदिक मंत्रो के साथ सम्पन्न होते थे। इन संस्कारो की छाप मानवीय जीवन पर अत्यधिक गहरी थी।

विवाह संस्कारः- मानवीय जीवन मे विवाह संस्कार का प्रमुख स्थान था ऋग्वेद मे(6) विवाह संस्कार को अनिवार्य बनाया है। धार्मिक एवं लौकिक भावना की पूर्णतः विवाह द्वारा ही हो सकती थी (7)। ऋग्वेद(8) मे स्पष्ट उल्लेख है कि विवाह के अभाव मे व्यक्ति स्वर्ग नही जा सकता था तथा धार्मिक क्रियायें यज्ञ आदि सम्पन्न नही कर सकता था।

विवाह के अनेको प्रकार का प्रचलन था इनमे प्रमुख ब्राह्मण विवाह(9) आदि गान्धर्व विवाह(10) राक्षस विवाह(11) असुर विवाह(12) का विशेष प्रचार था।

1- अथर्ववेद 2/23, 3/3, 14/8/9

2- ऋग्वेद 1/1, अथर्ववेद 1/11, महाभारत 4/119, आदि पर्व 4/3, 178/2, 109/168, 128/14 शान्ती पर्व 233/2, आदि पर्व 221/71, वन पर्व 292/23, रामायण 1/193

3- ऋग्वेद 10/55, 2/71/1, वही 1/11, यजुर्वेद 1/3/3, बालकाण्ड दोहा 196 चौपाई 1, महाभारत 70/1

अथर्ववेद 6/68/1, यजुर्वेद 3/33, बालकाण्ड 202/2

5- अथर्ववेद 11/5/3, 11/5/6, 11/5/3, शतपथ ब्राह्मण 1/2, 1/8, 2/4, छन्दोग्य उपनिषद 4/10/1, 4/3/5 वृहा उप0 6/2/1, रामायण 1/70/26-8, 2/75/36, महाभारत तेरहवी अध्याय, गुलाबराय वही पृ0 133/138

6- 10/85/24

7- ऐतरेय ब्राह्मण 1/2/5, शतपथ ब्राह्मण 5/2, 1/10, रामायण 5/53/9, 2/67/19, 9/21/17 5/22/4-6, 6/5/13-14, 5/5/9-19, रामायण 5/33/9, 2/67/19, 5/10/18-42, शान्ती पर्व 12/295/281

8- 10/85/36 विद्यालंकार सत्येन्द्र वही पृ0 212

9- ऋग्वेद 10/784, 10/34/3, रामायण बालकाण्ड 177/2, महाभारत 1/81/26, 1/17-/2-20 1/69-72 मजूमदार वही पृ0 82, पाण्डेय विमल चन्द्र 'भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पृ0 228

10- ऋग्वेद 10/20, /20, 1/192/19, 1/116/1, मैत्रायणी संहिता 1/10/11 महाभारत 1/172/15

11- महाभारत 1/245/5-6, 13/45/22, रामायण 3/17/25

12- अनुशासन पर्व 44/7, 1/122/1, सर ऐ0 ऐ0 ' सैक्स एण्ड मैरिज इन द ऐज आफ द महाभारत एम0 आर्ची भाग 43 न0 1 जनवरी मार्च 1973 पृ0 42-54

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाभारत(1) में [illegible] विवाह के भी उल्लेख मिलते हैं ।
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

<u>विवाह में यम नियम</u> :- विवेच्य युग के साहित्य(2) से स्पष्ट होता है कि विवाह निश्चित करते समय वर कन्या के चरित्र, शारीरिक लक्षण, गुण एवं परिवार पर विशेष ध्यान दिया जाता था । अनुशासन(3) पर्व में जहाँ एक ओर गुरु कन्या से विवाह निषेध बताया है वहीं दूसरी तरफ मुनि उद्दालक एवं गौतम ने अपनी कन्या का विवाह अपने शिष्य के साथ किया ।

अन्तर्जातीय विवाहों का प्रचलन था । पुष्यमित्र की कन्या का विवाह(4)भीम का विवाह(5)ययाती देवयानी का विवाह तथाच्यवन ऋषि का सुकन्या से विवाह अन्तर्जातीय विवाहों के ज्वलन्त उदाहरण उल्लिखित है । रामायण(7) से ज्ञात होता है कि श्रवण की की माता शूद्र तथा पिता वैश्य थे । ऋग्वेद(8)अथर्व वेद(9), तैत्तिर्य ब्राम्हण(10) से विदित होता है कि विवाह में गोत्र का विशेष ध्यान दिया जाता था । भरद्वाज,आशुलयन, गार्ग्य, वाघयन,गौतम,मुद्गअग्नि,कश्यप,वसिष्ठि आदि गोत्रों का उदय हो चुका था । महाभारत(11) में मातुल विवाह के उदाहरण भी उल्लिखित है । जैसे अर्जुन ने सुभद्रा से, सहदेव ने मद्रराज की कन्या से, शिशुपाल ने मद्रा से तथा परीक्षित ने इरावती से विवाह किया ।

ऋग्वेद(12) में साधारणतः एक ही विवाह के उदाहरण मिलते हैं । परन्तु राजवंशों में बहुविवाह का भी प्रचलन था । रामायण(13) से स्पष्ट होता है कि राम ने अश्वमेध यज्ञ के समय सीता की स्वर्ण प्रतिमा निर्माण कर एक पत्नी व्रत का आदर्श उदाहरण स्थापित किया ।

1- अनुशासन 44/7,44/4
2- ऋग्वेद 10/34/3,10/10/12 शतपथ ब्राम्हण 1/117,7/2/17, महाभारत 165/35, 44/18/15, आदि पर्व 77/14-17
3- वही 44/14 (4) ऋग्वेद 1/112/19
5- आदि पर्व 155 वां अध्याय (6) वन पर्व 122 वां अध्याय
7- 2/63/50 (8) 10/34/3,10/10/12
9- 5/21/3 (10) तै० ब्राम्हण 22/3
11- सभापर्व 45/11, आदि पर्व 220/8,95/80
12- 1/150
13- 5/29/14

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वयंबरः- समाज में स्वयंबर की प्रथा का प्रचलन था। राम सीता, नल दमयन्ती एवं अर्जुन द्रौपदी का विवाह स्वयंबर प्रणाली से हुआ। विवाह इच्छुक क्षत्रिय व्यक्ति इस स्वयंबर में भाग लेते थे।(1)

शवदाह संस्कारः- मानवीय जीवन का यह संस्कार अंतिम संस्कार था। इस संस्कार का प्रमुख उद्देश्य मृतक के सम्बन्धियो के मरण एवं शोच से मुक्ति तथा मृतं आत्मा का शान्ति प्रदान करना था।ऋग्वेद(2),अथर्ववेद(3)रामायण(4),तथा महाभारत (5) में शवदाह संस्कार का विस्तृत विवरण उल्लिखित है।

समाज में नारीः- समाज के सामाजिक एवं धार्मिक उत्थान में नारी ने महत्वपूर्ण भूमिका अभिनित की। कन्या के रूप में वह पिता के संरक्षण में, यौवन में पति के तथा वृद्धा वस्था में पुत्र के संरक्षण में रहती थी। ऋग्वेद से विदित होता है कि कन्या का जन्म पुत्र के समान शुभ नही माना जाता था। महाभारत (7) में उनको गोद लेने का भी उल्लेख मिला है। सुन्दर संलक्षित कन्याओ का दर्शन शुभ माना जाता था। पत्नी के रूप में उसका आदर था। तेजस्वी गृहणी प्रशंसनीय थी (8) पति के सहयोग से लौकिक एवं धार्मिक क्रियाये सम्पन्न करती थी। रामायण(9) से ज्ञात होता है कि स्त्रियों को विलासता का साधन समझ कर दान एवं उपहार में भी दिया जाता था। स्त्रियो को मनोरंजन स्थलो एवं न्यायालयों में जाने की सुविधा थी (10)। रामायण(11) से यह भी विदित होता है कि माता के रूप में इनका विशेष आदर एवं सम्मान था। पर्दा प्रथा नही थी। राजा दशरथ ने चारो बहुओं को गोद में बैठाया(12)विवेच्य युग में विख्यतारा मैत्रेयी सीता, अनुसूइया, सवरी, शकुन्तला, गांधारी द्रौपदी, कुन्ती आदि नारियाँ पर्दा नही करती थी। चरित्र ही नारी का अवगुंठन था(13) कैकयी मंथरा जैसी नारियाँ समाज का अभिशाप सिद्ध हुई(14)। नारियाँ स्वतंत्रता पूर्वक सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवोंसामाजिक स्थलो एवं राजदरबार में भी उपस्थिति होती थी।

1-रामायण बालकाण्ड 207/4, 1/68/27, 1/77/26, 2/118/38पाण्डेय विमलचन्द्र वही 229
2-10/24, 10/11-19, 102/8/7, 7, 11, 10, 10/14/7-8
3-18/2/34, 5/19/4, 5/19/12, 8/1/19, 9/2/11, 18/2/4-8
4- अयोध्या काण्ड 156/1 (5) अनुशासन पर्व 168/16-163आदि पर्व 127,/31, 128/3
6-1/91, 20/3/1, 23/18, 85/25अथर्ववेद8/2/3, 11/5/18, यजुर्वेद8/1, रामायण9/29589
7- 6/46/2, 2/98/17, 2/30/6, 5/24/91, 1/25/562/118/30-353
8- आदि पर्व 113/3, (8) वन पर्व 232/54, अनुशासन पर्व 146/18-51
9) 6/121/3, 2/42/14, 4/24/38 (10)रामायण 2/91, 2/8/8, आदि पर्व 134/15
11- 2/35/28 (12) बालकाण्ड 353/2
(13) रामायण 6/17/32, गुलाबराय वही पृ०- 148
(14) रामायण दोहा 160, चौ०-3 दोहा 162-चौ०-2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाल विवाह का प्रचलन नहीं था।तै0 संहिता(1) एवं शतपथ ब्राह्मण(2) में श्वसुर गृह में नारी को सम्राज्ञी पदपर सुशोभित किया गया है। अथर्व वेद(3) में अविवाहित कन्या को 'अमाणु' कहा गया है।आदिपर्व (4) से विदित होता है कि सौभाग्यवती तथा पुत्रवती रानियों का विशेष सम्मान था। द्रौपदी ,देवयानी,दमयन्ती,कुन्ती,उत्तरा आदि का विवाह वयस्क होने पर हुआ(5) क्योंकि विवाहों को पुष्टि विवाहोपरान्त एकान्त रमण से होती है। स्वयंवर प्रथा विवाह पूर्व प्रेम वयस्क विवाह के ज्वलन्त उदाहरण है।

पुत्र के समान कन्या`कविधाध्ययन की व्यवस्था थी । तै0 संहिता(6) में त्रायणी संहिता(7) शतपथ ब्राह्मण(8),का0उप0(9) से वि दित होता है कि नृत्य गान आदि विविध कलाओं से विशेष निपुणता प्राप्त क करती थी ।

विधवा विवाह का प्रचलन तत्कालीन समाज में नहीं था फिर भी देवर अथवा नियोग प्रथा व्दारा पुत्र प्राप्ति का प्रचलन था(10)। रामायण (11) से विदित होता है कि पुनर्विवाह होते थे सीता ने लक्ष्मण से क्रोध में कहा कि राम की रक्षा न करने का कारण तुम्हारा मुझसे शादी करने का विचार है। महाभारत से (12)ज्ञात होता है कि इरावती की पुत्रवधू ने अर्जुन के साथ पुनर्विवाह किया था। विधवाओं की मांगलिक अवसरों पर उपस्थिति शुभ नहीं समझी जाती थी (13)।

1-5/ख (2) 5/2/2/1/10 (3) 1/14/3

4- 158/22

5- शान्ती पर्व 3/87,4/10,1/77,/13,ओमप्रकाश ' प्राचीन भारत का इतिहास पृ077

6- 6/1/6/5 (7) 3/7/3

8- 14/1/3/35 (9)3/3/1,3/7/1

10- अथर्ववेद 8/5/27-29, 2/26/1 वृहदारण्यक उप0 6/4,11/10,अनुशासन पर्व 8/22 आदि पर्व 1/20/135, अनुशासन पर्व 44/52, 50/79, भट्टाचार्य सुखमय ' 'महाभारत कालीन समाज पृ0 8

11- 3/45/5-7

12- 6/7/10

13- 7/63/17,2/86/47,2/39/21, महाभारत 6/7/10

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋग्वेद से (1) वेश्याओं के अस्तित्व का ज्ञान होता है। रामायण तथा महाभारत में गुप्त प्रेम अथवा कई पुरुषों के साथ सम्बन्ध रखने वाली स्त्रियों को कुलटा कहा गया है(2)।सती प्रथा के अस्तित्व का भी आभास होता है। रामायण से विदित होता है कि कैकयी,कौशल्या, सुमित्रा राजा दशरथ के साथ सती नही हुई थी , परन्तु पाण्डव के साथ माद्री सती हुई थी (3) अतः स्पष्ट है कि सती प्रथा अनिवार्य नही थी । आध्यात्मिक क्षेत्र में नारियों का गौरवपूर्ण स्थान था। घोषा को ऋग्वेद के दशम मण्डल के उन्नीसवे और चालीसवे सूक्त बनाने का श्रेय दिया जाता है। विश्ववारा में पंचम मण्डल के अट्ठाइसवाँ सूक्त कोरचना की तथा सूर्या ने दशम मण्डल के पचासिवें सूक्त की रचना की (4)। गार्गी ने विद्याध्ययनमेंयाज्ञवल्क्य से लोहा लिया था(5) तथा उनकी स्त्री मैत्रेयी ने ब्रह्म विद्या के आगे धन सम्पत्ति का तिरस्कार किया था। मण्डन मिश्र की स्त्री ने अपने पति के साथ शंकराचार्य से हुये शास्त्रार्थ की मध्यस्थता की ।(6)

अतः स्पष्ट है कि तत्कालीन समाज में स्त्रियों का महत्वपूर्ण एवं स्वतंत्रताअस्तित्व विद्यमान था परन्तु पुरुषों से अलग रखने का रिवाज प्रारम्भ हो गया था(7)धार्मिक तथा सामाजिक उत्थान में विवेच्य काल की नारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदिनित की ।

खान- पान

भोजन शुद्ध तथा शाकाहारी था। वैदिक साहित्य((8) से विदित होता है कि व्रीह, यव, तिल, मांस(उड़द),श्यामांक(सावंक),प्रियंगाला(सरसों) एवं गन्ने का प्रयोग होता था, जिसे कृषि द्वारा उत्पन्न किया जाता था क्षीरोदन(खीर)दध्योदन(दही चावल),मुँगदोदन(मूँग की खिचड़ी),तिलोदन, उदोदन(जल में पके चावल),मांसौदन, घृतोदन, आदि पदार्थों का निर्माण सुरुचि पूर्वक किया जाता था। यव का अनेकों स्थानों पर उल्लेख हुआ है।(9)यजुर्वेद(10) में पुरोडास का भी उल्लेख मिलता है।

1-1/92/4,7/4/5,8/35/5,9/66/4,1/117/18,1/134/3,8/133/217,7/63/3,
2- रामायण 2/21/21,2/35/3,3/3,महाभारत1/118/5-9
3- 7/17/33,भट्टाचार्य सुखमय वही पृ 83
4- गुलाबराय' भारतीय संस्कृति पृ 148
5- वृहदारण्यक उपनिषद 3/8/1-11
6-गुलाबराय वही पृ 147 परखुक एम0डी0 उपा नारी विद्याज्योति भाग22अं0 1, 197 3पृ85-88
7- रामायण 2/101/8,2/53/3,2/33/8
8- ऋग्वेद8/77/10,1/23/15,अथर्ववेद10/9/26,11/1/18 शतपथ ब्राह्मण2/5/3/5 11/5/7/5 वृहदारण्यक उपनिषद 6/4/13-18
9- वही 1/23/15 (10) 2/58

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य युग में भेड़ तथा बैल के मांस का भी प्रचलन था(1)वृहदारणयक(2) उपनिषद में भी मांस का उल्लेख मिलता है। सोमरस का पानकिया जाता था(3)।ऋग्वेद(4)से विदित होता है कि सुरा निन्दनीय समझी जाती थी। रामायण(5) में कचौड़ी,मोदक,अनूप, चावल से बने पकवानों, गोरस, दधि,फलों का रस एवं अनेक प्रकार के सुस्वाद व्यंजनों को वाहुल्य था। महाभारत(6)में आम्र,कटहल,ईख, वदरी(बेर), इड़िया, नारीकेल,खजूर आदि रुचिकर फलों का उल्लेख मिला तथा। अनुशासन पर्व(7) से ज्ञात होता है कि मांस भक्षण प्रिय होने पर भी निन्दनीय समझा जाता था। महाकाव्यों(8) में हिरण,वारहसिंगा, खरगोश,भालू,बकरा, मुर्गा ,बन्दर के मांस का खानेका उल्लेख मिलता है।शास्त्र ढंग से सम्पत मांस एवं ब्राह्मणो के उद्देश्य से मारे गये पशु का मास अवैध्य नही समझा जाता था।देवता पित्रों के उद्देश्य से निवेदित न किया मांस वृथा मास कहलाता था। रामायण(9)महाभारत (10)से मद्यपान का रूप भी सामने आता है। रामायण मे (11) सौवाल मध सबसे निम्न तथा वारुणी शराब सबसे तेज का उल्लेख हुआ है। परन्तु सर्व साधारण मे शराबपान उचित नहो समझा जाता था। सिंधु शराब (गुड़ से तैयार), मैरय(मसालेदार) शराब का उल्लेख अनेक स्थानो पर रामायण मे हुआ है।(12)।

1- ऋग्वेद10/27/17, 10/27/2,8/43/11,8/69/15,

2- 8/4/18

3- ऋग्वेद 8/48-30, पंचविंश ब्राह्मण 9/5/3,ऋग्वेद1/93/6,3/53/4,9/65/25,1/109/
9/99/8,9/74/9,अथर्ववेद 6/70/1

4- 7/66/6

5-2/30/17,1/5/7,4/14/16,1/5/17,2/9/63,3/16/7,4/28/ 18
4/17/36,2/75/30,2/56/14,2/3/14,1/53/3

6-5/34/39,अनुशासन पर्व 118/11/16,वन पर्व 2/8/26,1/3,13/53/18,2/20/17,
2/75/30,5/34/49,4/13/9

7-उ 116/11-16

8-रामायण 4/17/39,3/11/50-64,2/91,115/45,53,93/121,93/12,वन पर्व
2/58,2/8,261/3 (9) 2/114/30

10-विराट पर्व 72/28,16/3,उद्योग पर्व 156/19,आदि पर्व 76/55,द्रोण पर्व110/61

11- 3/47, 75,2/91/15

12- 6/60/97,5/24/44,7/42/189,4/33/7,5/11/32,4/28/33,1/53/2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुसज्जित शराब खानों का अस्तित्व का था। महाभारत(1) से विदित होता है कि बड़े बड़े घरों में रसोइया खाना बनाता था। चाँदी सोने के बर्तनों का प्रयोग आर्थिक सम्पन्नता के द्योतक है। जनवास के समय द्रौपदी के पास कांसे की पतीली थी। रामायण(2) में आसन्दी(लकड़ी)उलूखल, करंभी, कलश, काष्ठओदन, कुम्भि, वारपात्र, पात्र, पानभाजन, पिटक, योत्र, स्थाली आदि बर्तनों का उल्लेख मिलता है। साधारणतः भोजन दो बार दिन में किया जाता था। कुछ व्यक्ति 3 बार भी करते थे। महाभारत(3) में स्पष्ट उल्लेख है कि शुद्ध मन से शुद्ध स्थान पर तथा प्रत्येक व्यक्ति की थाली में अलग अलग भोजन करना चाहिये। तथा शुद्ध जल का पान करना चाहिये। विवेच्य काल में भोजन शुद्ध सात्विक तथा शाकाहारी एवं उचित नियमों से युक्त था।

वेश-भूषा :- ऋग्वेद (4) से विदित होता है कि व्यक्ति अधोवस्त्र एवं उत्तरीय दो प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे स्त्रियाँ अधोवस्त्र के ऊपर करधनी पहनती थी जिसका उल्लेख अथर्ववेद, वृ0 उप0 तथा मैत्रायणी संहिता में मिलता है(5)। वेशभूषा में वसन, वस्त्र, अधोवस्त्र नीवी, सम्मिलित है। ऋग्वेद (6) से विदित होता है कि ऊनी वस्त्रों का प्रयोग होता था। अथर्ववेद (7) में कंबल, शामुल्य, बालों के वस्त्र(गाय, मारुत, हिरण, बकरा)भेड़) के बने वस्त्रों का उल्लेख मिलता है। कु0 उप0 (8) तथा शतपथ (9)ब्राह्मण ने ऊनी वस्त्रों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है पंच विंश ब्राह्मण(10) मैत्रायणी संहिता(11) तथा तै0संहिता(12) में भी ऊनी वस्त्रों के प्रयोग का उल्लेख मिलता मिलता है।

1-आदि पर्व 3/97, विराट पर्व 8/9, सभा पर्व 49/18 वन पर्व 232/42, 3/72
2-6/111, 115-116, 2/91/72, 2/63/38, 1/72/23, 2/91/72, 6/112/116, 7/75/2 291/70, 5/11/19, 3/31/25, 2/91/35, 1/67/5, 1/45/18, 6/11/116, 1/45/88, 2/91/68, 2/50/49, 2/46/10
3-13/104/95
4- 34/11/95, 71/26, 77, 10/40/9, 1/34/1, 1/95/7, 1/26/27 सत्येन्द्र विद्यालंकार वही पृ0 218-219
5- अथर्व वेद8/2/16, 12/2/50, 8/2/6 वृहदारण्यक 6/1/10, मैत्रेयी संहिता1/8/1/1
6-8/67/3, 10/85/29, 1/166/10, 6/9/2-3, 10/71/9, 10/26/8
7- 15/2/66, -67, 10/138/28/68/11, 4/7/6, 18 /4/31, 4/4/3, 1/3/7/1 मोतीचन्द्र 'प्राचीन भारतीय वेश भूषा पृ0 11
8- 2/36
9-3/1/13-16, 1/1/4/1, 3/9/1/12, 5/2/21/24, 5/3/5/20, 3/1/2/18,
10- 17/1-15, (11) 3/7/7
12- 6/11/1/3, 6/11/14

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायण(1) तथा महाभारत (2) में अनेक प्रकार से ऊनी वस्त्रों के प्रयोग का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। सफेद रंग शुचिता का प्रतीक था(3)। रामायण (4) से विदित होता है कि राजा जनक ने सीता के विवाह में अनेक रंग के वस्त्र दिये थे तथा हनुमान ने सुनहरे तारों से जड़े वस्त्रों को आग में डाला था। महाकाव्य(5) में पील वस्त्र, कषाय वस्त्र तथा लाल रंग के वस्त्रों विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। ~~रामायण (5)~~। ऋग्वेद (6) तथा ऐतरेय (7) एवम् शतपथ(8) ब्राह्मण से स्पष्ट होता है कि कपड़े पर जरदोज़ी का काम किनारे पर झालर वाले तथा यज्ञ से अवसर पर स्वच्छ धुले वस्त्र पहने जाते थे तथा व्रात्य मुख्य किनारेदार नीले रंग के कपड़े पहनते थे। ऋग्वेद(9) में अलंकारों की कढ़ाई वाले सुन्दर वस्त्रों का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद(10) से ज्ञात होता है कि उष्ण केवल पुरुष पहनते थे तथा द्रावी स्त्री पुरुष दोनों ही प्रयोग करते थे। ऋग्वेद, अथर्व वेद, शतपथ ब्राह्मण तथा मैत्रेयी संहिता से ज्ञात होता है कि पगड़ी तथा जूतों का प्रयोग भी विवेच्य काल में किया जाता था। (11)। पंचविंश ब्राह्मण(12) में व्रात्य लोगों के काली गोट का कपड़ा बकरे की काली तथा ~~सफेद~~ सफेद खाल एवं गले में निष्क माला पहनने तथा टेढ़ी पगड़ी लगाने का उल्लेख मिलता है। रामायण(13) महाभारत (14)में बारीक कपड़े पहनने का रिवाज परिलक्षित होता है।

आभूषण :-
========

स्त्री तथा पुरुष दोनों ही आभूषण पहनते थे। (~~14~~) कर्णशोभन, निष्क खड़वे, मणियाँ आदि सोने के आभूषणों का प्रयोग होता था।

- -

1- 3/34-37, 5/15/45, 5/53/6, 5/67/31,5/27/8-11
2- 1/3/58
3- 5/27/9/11 रामायण
4- 1/74/4/29।
5- 5/15/8 45, 2/12/98, 7/97/13, 2/12/98,(6) 5/15/45, महाभारत 6/106/61, 3/297
6- 7/33/1
7- 7/32
8- 4/2/2/1 मोती चन्द्र प्राचीन भारतीय वेश भूषा पृ0 24
9- 7/33/1
10- 1/85/7, 4/18/5, 2/35/14, 4/74/5, 8/28/3, 9/107/13, 9/100/9, 5/(/10, 1/122/2, 5/55/6
11- ऋग्वेद 5/271, 17/1/14, 5/3/5-23 अथर्ववेद 5/21/10, 20/133/4 शतपथ ब्राह्मण 5/3/5/23, कात्यायन 21/4, मैत्री संहिता 4/4/3
12- 17/1/14, 13/3/36
13- 3/46/19, 7/26, 23, 3/7/13
14- 1/12/31/19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऋग्वेद (1) अथर्व वेद(2) मे निष्क,ग्रोव,ऐतरेय ब्राह्मण(3) मे निष्क रूप० का अथर्व वेद मे (4) कुरीर तथायजुर्वेद(5) मे कुकरीरा विधिका प्रयोग सिर के आभूषण के लिये किया गया है। ऋग्वेद (6) मे रुक्म छातीपर लटकने वाला आभूषण न्योचनी सैाक एक अन्य आभूषण थाजिसे ऋग्वेद (7) मे विवाह के समय पहनने वाला वधू आभूषण था ।

महाकाव्य (8) काल मे सोने चाँदी, मोती मूँगे, हीरा जवाहरात आदि के आभूषण पहनते थे इनमे प्रमुख चूडामणि, कुण्डल, हेममाला, मुक्ता हार, कटिसूत्र, मेखला, केयूर अंगद, वलय, अंगलीयक, नूपुर, विशेष उल्लेखनीयथे। लोहे के आभूषण चांडाल पहनते थे। महाभारत(9) से विदित होता है कि बाजूबन्द तथा कुण्डल विवेच्य युग के प्रसिद्द अलंकार था । रामायण(10) मे आभूषण प्रियता काउल्लेख मिलता है।

प्रसाधन :-

प्रसाधन का विशेष शौक था ऋग्वेद(11) मे बालो मे तेल डालकर जुडा बनाकर फूलो से सजाया जाता था रामायण(12) तथा महाभारत(13) मे केश विन्यास आकर्षक उदाहरण मिलते है। ऋग्वेद (14) से विदित होता है कि पुरुष बडी मूछे रखते थे । महाकाव्यो (14) मे चन्दन मे 'तुग' नामक द्रव्य मिलने के बाद शरीर पर लपेटा जाता था तथा स्नान के बाद सुगन्धित माला धारण करने का उल्लेख मिलता है महाभारत (15) मे सौन्दर्य को बढाने हेतु भौंवो के मध्य कृत्रिम ति बनाये जाने का भी उल्लेख मिलता है। रामायण (16) से विदित होता है कि मुक्त केश अथवा के गंठित केश पराजय के सूचक तथा जटायें बनवास की सूचक थी ।

1- 5/19/3 (2)- 5/16/14

3- 8/22 (4)- 6/138/3

5- 11/56 (6)-2/34/2

7) 10/8526

8) रामायण 1/58/11, महाभारत 13/48/,32-33

9) द्रोण पर्व 1/11/14, विराट पर्व 31/8

10)रामचरित मानस दोहा नं0 11

11)7/33/1

12)7/2 26/15, 5/18/18, 1/4/22, 4/16/4

13) अनुशासन पर्व 4/9/12, 5/73/00

14) रामायण 4/15/7, 5/25/17, 3/11/52, सभा पर्व 21/18/, 58/36, अनुशासन 99/20

15) वन पर्व 69/2

16) 2/52/68, 2/100/1, 2/81/93

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायण (1) में स्नान से पूर्व शरीर पर तेल मलने का उल्लेख है इस क्रिया को उत्सादनम कहते है। विवेच्य युग के साहित्य का अवलोकन करने से विदित होता है कि स्त्री पुरुष दोनों के ही केश प्रसाधन का शौक था ।

अमोद - प्रमोद :5

ऐहिक सुख-सुविधाओं की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। रथ दौड़ घुड़ दौड़, नृत्य संगीत, पशु समाज, ब्रम्ह समाज का आयोजन होता था। सामाजिक उत्सवों को राष्ट्र के संवर्द्धन का साधन माना गया है(2) राज्य प्रसाद में गणिकायें, नर्तक, नागरिक व्यापारी एकत्र होकर प्रसन्नता से उत्सव मनाते थे। महाकाव्य(3) काल में आखेट, कुशलता का प्रदर्शन, उद्यान यात्रा, जल क्रीडा, हास्यकार, जादू, कठपुतल, गुल्ली-डंडा, कहानी सुनना, नाटक, उद्यान, उद्यान क्रीडा, मल्लयुध्द, कौतुक क्रीडा आदि मनोरंजन के साधनों का उल्लेख मिलता है। उन्नत एवं विकसित मनोरंजन के साधन तत्कालीन समाज के विकास के द्योतक है।

ललित कलायें :-

कला का उद्देश्य मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक था। इस भावना की तृप्ति के लिये रेखा, वर्ण, ध्वनि, शब्द आदि के माध्यम से विविध कलाओं का विकास विवेच्य युग में हुआ। ऋग्वेद(4) से स्पष्ट है कि वास्तुकला की उन्नति का आभास उनके भवनों लोहे तथा पत्थर निर्मित नगरों से होता है। ऋग्वेद(5) में शतभुजी परकोटे वाले नगरों का उल्लेख है। ऋग्वेद(6) इन्द्र को बेचने तथा मोल लेने का उल्लेख से इन्द्र प्रतिमा का संकेत मिलता है, इसी वेद में रुद्र की (7) रंगीन मूर्ति का वर्णन, सुनहरे कोट पहने वरुण (8) का वर्णन, इन्द्र तथा अग्नि को अलंकृत करने के बाद (9) देव के सात हाथ, चार सींग तथा तीन पैर वर्णन से मूर्ति ~~के लिए~~ निर्माण कला का भास होता है। वाजसनेयी(10) में रुद्र को नीले गले तथा लाल मुख एवं चमड़े को धारण करने वाला कहा गया है।

1- 2/60/15 (2) 2/100/44, अयोध्या काण्ड 3/4/15

3- रामायण 2/60/9, 2/1/28, 2/19/40, 2/43/17, 2/114/19-21, 3/10/9-11 3/42/15, 6/81, 2/166, 1/23/121, 1/18/19, 5/20/26, 6/40/13, 1/15/21 महाभारत विराट पर्व 13/40-41, 1/189/7, 1/1/84, 17, 1/128/25, 5/32/13 3/72/18 (4) 2/41/5, 4/30/20, 1/166/8, 7/15/14,

5- 1/164, 1/24/26, 4/30/20, 1/166/8, 7/15/14, 8/1/5, 1/25/13, 1/21/2 4/48/3, 8/17/8, 10/105/7, 2/33/9 (6) 4/24/10, 8/1/5, 8/17/8, 10/105/7

7- 2/33/9, एच०सी०एस०भाग - 2 पृ० 705-717

8- 1/25/13 वही (9) 1/21/2 वही (10) 16/7, 16/51

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तैत्तरीय ब्राह्मण(1)में भारती और सरस्वती की स्वर्ण प्रतिमाओ का उल्लेख है। रामायण(2) से विदित होता है कि रावण स्वतः अपने साथ स्वयं शिव लिंग रखता था तथा अश्वमेध यज्ञ के समय राम ने सीता की स्वर्ण प्रतिमा बनवाई थी । महाभारत में भी प्रतिमा पूजन पर विशेष बल दिया गया। पुण्डरीक तीर्थ में विष्णु की सालिग्राम मूर्ति श्रेष्ठिल तीर्थ में विश्वेश्वर तथा उनकी पत्नी की प्रतिमा तथा नन्दीश्वर की प्रतिमा से मूर्ति कला के विकास का उल्लेख मिलता है(3) महाभारत(4) में उल्लेख है कि ब्रम्हा की प्रतिमा भी दर्शन से राजसूय तथा अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। धर्म प्रस्त के समीप मतांग्रम में स्थित धर्म की प्रतिमा के स्पर्श से वाजिमेध यज्ञ का फल मिलता है(5) । अतः स्पष्ट है कि विवेच्य युग में मूर्तिकला का प्रचुर विकास था।

महाभारत से ज्ञात होता है कि शिखण्डी चित्रकला में निपुण था (6) कच तथा अर्जुन संगीत तथा नृत्य में विशेषज्ञ थे (7)। युधिष्ठर की दासियाँ 14 कलाओं में पारंगत थी(8) अर्जुन चक्षुषी विध जानते थे (9)। राम और सीता और तारा निमित विद्या के ज्ञाता थे(10) स्पष्ट है कि संगीत तथा काव्य कलाओ का काफी विकास हो गया था।(11)

1- 2/6/17, जोशी नीलकंठ पुरुसोत्तम' प्राचीन भारती मूर्ति विज्ञान' पृ0 913

2- 73/29-31,91/5/15

3- महाभारत 3/84/134,3/8/134,13/25/21

4- 3/84/103-104

5-वही 3/84/102, मिश्र इन्दुमती प्रतिमा विज्ञान पृ0 100-102

6- 5/189/1-2

7- वही 1/76,/24,7/11/12

8- वही 2/61/9-10

9-वही 1/172/43-46

10- रामायण 6/106/136,3/280/19,3/52/8,3/52/9

11- शान्ती पर्व 89/47, आदि पर्व 109/11,128/41

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

:- आर्थिक अवस्था :-

कृषि आर्थिकोपार्जन का प्रमुख साधान थी। ऋग्वेद(1) से प्रमाणित होता है कि खेती में हल, बैल, कुदाल, हसियाँ, सूप, बीज, आदि का प्रयोग होता था। वर्षा के अलावा कुओं तथा नहरों से सिंचाई की जाती थी (2)। अथर्ववेद(3) में कृषि की समृद्धि के लिये प्रार्थना की गई है। तै० संहिता(4) रामायण(5) एवं महाभारत(6) से विदित होता है कि वर्ष में खरीफ तथा रवी की दो फसलें होती थी। रामायण(7) में स्पष्ट उल्लेख है कि कृषि की तरफ विशेष रूप से राजा को ध्यान देना चाहिये। महाभारत(8) से विदित होता है कि उत्तरायण सूर्य भूमि को विशेष उर्वर बनाता है। शतपथ(9) ब्राह्मण खेती की चारो प्रक्रियाओं जुताई, बुवाई, लवनी एवं मणिनी का उल्लेख मिलता है। विवेच्य साहित्य(10) से प्रमाणित होता है कि तत्कालीन युग में ब्रीहि, तन्दुल, माषास(उरद) गन्ना, तिल, (सारिसाधा) प्रियंग, निवार, एवं विविध फलों का उत्पादन होता था। कृषि पर आधारित अनेक पशुओं का आर्थिक जीवन में विशेष स्थान था। पशुओं की समृद्धि की प्रार्थना की जाती थी।

1- 8/6/47, 18/101/4, 8/78/10, 10/101/2, 131/2, 10/48/7

2- ऋग्वेद 3/45/3, 10/99/4, 1/116/9, 8/49/6

3- 7/18/19, 8/10/24

4-5/5/6/3

5-2/20/49

6-2/89/36

7- 2/281/28

8- वन पर्व 3/5/9, 27/14

9- 2/1/1/7

10- ऋग्वेद 3/45/3, 10/99/4, 1/116/9, 8/49/6,, अथर्व वेद 7/18/19, 8/10/24
2/14/3/4, 19/31/1/3, 9/7/20, 10/9/26, 12/2/54, 18/3/6, 214/5
तै० संहिता 5/6/7/3 तै० उपनिषद 3/3, वाजपेयी संहिता 18/12/22, रामायण
2/22-28, 2/80-7, 2/50, 8/11, 2/100, वन पर्व 254, /7, 2/50

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाय(1)घोड़ा(2) ऊँट(3) हाथी(कुत्ता(4), बैल (5), आदि पशु पाले जाते थे। आर्थिक सम्पन्नता में व्यवसायों का भी विशिष्ट महत्व था। ऋग्वेद (6) में अनेक प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख है। अथर्व वेद(7) यजुर्वेद(8) शतपथ ब्राह्मण(9), पंचविंश ब्राह्मण(10), तैत्त(11), रामायण(12) तथा महाभारत (13) बढ़ई, कर्मकार, सुनार, चर्मकार, तन्तुकार, मृगया, कताई, बुनकर, भिषक, नट आदि व्यवसायों का उल्लेख मिलता है। विविध प्रकार के रंग बिरंगे वस्त्रों से अलंकारों विभिन्न प्रकार की चर्म वस्तुओं से आर्थिक सम्पन्नता एवं कला कौशल पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है।

व्यापार उन्नतिशील था। प्रमुख उद्देश्य धन कमाना, फायदे के लिये पूँजी लगाना, तथा दूरे देश में माल भेजना था(14)। ऋग्वेद (15) अथर्व वेद(16) तथा शतपथ ब्राह्मण (17) से विदित होता है कि विनिमय का प्रमुख साधन निष्क, शतमान, गाय, हिरण पिण्ड एवं रुपये पैसे थे। ऋग्वैदिक (18) आर्यों को समुद्र का ज्ञान था। क्योंकि समुद्र से बहुमूल्य हीरे प्राप्त करने के उल्लेख मिलता है। अथर्वेद (19) तथा यजुर्वेद(20) में समुद्री यात्रा की सुरक्षा की प्रार्थना का उल्लेख मिलता है।

1- ऋग्वेद 1/11/69, 8/49/6.,6/48/18,6/49, रामायण2/40/45,2/46/17, 2/49/10,2/67/29, महा० 5/79, अनु० 63/17-22, 69/7-8,126/29

2- ऋग्वेद 8/46,1/163, रामा० 2/45/1,6/90/28,9,2/68/10 अनु० 3/71/18

3- रामायण 6/53/63, 3/64/46

4- रामायण 2/70/20, 2/100/50, 2/55/31,6-/16/6-84 5/47/20,2/31/24, 6/13,/19, 2/24/38,2/74/35,5/1/64,5/9/5,72,23,24,

5- शतपथ ब्राह्मण 3/1/2/3

6- 9/112/1,3/33/9,1/~~43~~-2 105/18,10/71/2 अग्रवाल वी०एस० सिम्बोलीजियम आफ दि टू वीयलस एण्ड स्टडी आफ वी०ओ०आई० भाग-1 मार्च 1963 पृ० 40-49

7- 4/22/2,9/2/6, 18/4/31 (8) 30/21

9- 213/3/15,12/8/311,5/3/5/20 (10) 17/1/14,1/8/9

11- 22/9/7, 2/1/4/2 (12) 2/80/10

13- आदि पर्व 63/69, 105/8,113/34,128/41,113/31,अनु० 96/20,7/33/81, 96/18,168/15 सभा पर्व53/13/14,51/34 वन पर्व 111/10, शान्ती पर्व 343/4 100/8, 37, 38

14- ऋग्वेद 6/45,1/47,7/88,1/25,1/131,1/97,5/59, 8/58,10/152,4,10/7/3 1/26/2, 4/20/9,1/126/2,3/118/3, अथर्वेद 3/15/4 रामा०4/80, 6/22/51-68 शान्ती पर्व 71/10,3/64,23/28

15- 5/19/3,8/47/15,1/128/2,4/25/10,2/32/80,1(16)20/131/18

17- 12/7/2/3,13/2/3/

18- 7/6/7,5/56/6,1/48/3,1/91/1,1/42/7,2/27/7,4/32/24,8/22/10

19- 12/1/47, (20) 3/28, 7/43

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यातायात केसाधन :-

विवेच्य युग में यातायात का प्रमुख साधन सड़कें थी। ऋग्वेद(1) में 'प्रपथ'(बड़ी सड़के) तथा अथर्व वेद(2) में परिरथ्या(रथ चलाने वाली) सड़कों का उल्लेख मिलता है। ऐतरेय ब्राह्मण(3) तथा छान्दोग्य उपनिषद (4) में बड़े बड़े ग्रामों के महापथों से जुड़ने के उल्लेख है। अथर्व वेद (5) से गाड़ी चलनेवाले ऐसे रास्तों का पता चलता है जो पास की पगडण्डियों से ऊंचे होते थे। इनके दोनो ओर पेड़ तथा नाप हेतु स्तम्भ लगे होते है। रामायण(8) में सड़क का निर्माण हेतुअनेक श्रेणियों लोगों का उल्लेख मिलता है जो सड़क निर्माण से पूर्व इसकेगुण दोषों का विवेचन करते थे। सरस्वती के किनारे से लेकर उत्तरी प्रदेश को उत्तरी महालनपथ जो गण्डक तक पहुँचता थ, प्रमुख मार्ग था(9)। रामायण (10) से विदित होता है कि अयोध्या से बिठूर तक रथ मार्ग था। इसी मार्ग से लक्ष्मण जी सीता जी को बनवास छोड़ने गये थे तथा शत्रुघन लवण को मारने गये थे। मालसार्थ वह होते थे।(11)।

यातायात का साधन सड़क भी थी। ऋग्वेद(12) में समुद्र से रत्न मोती का व्याप र समुद्री व्यापार के फायदे का उल्लेख है जो वैदिक आर्यो को समुद्र ज्ञान को परिलक्षित करती है। ऐतरेय ब्राह्मण(13) समुद्र को भूमि का शोषक तथा शतपथ ब्राह्मण(14) में प्राच्य और उदिच्यके बादरत्नाकर(अरबसागर) और महोदधि बंगाल की खाड़ी के नाम आये है। समुद्री व्यापार नाव से चलता था (15)। नावों के लिये 'नौ' शब्दका उल्लेख है।

1- ऋ 10/17/4-6
2- 8/8/22
3- 4-1/78
4- 8/6/2
5- 14/1/63, 14/2/6, ~~(2)~~ 7/8/9
6- ऋग्वेद 2/32/8, आथर्व वेद 18/2/58
7- 3/15/1
8- 2/74/1,-3, 274/19
9- वाजपेयी के0डी0 प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 3
10- 62/2/70-3, 43/17518, 47, 15/16, 49/1-6, 9/23
11- मोतीचन्द्र 'सार्थवाह' पृ0 43
12- 1/47/6, 1/48/3, 56/2, 4/46/6
13- 3/39/7
14- 1/6/3/11
15- ऋग्वेद 1/13/2, 2/292, 4 गोखुल वी0वी0 'समुद्र इन ऋग्वेद जे0यू0पी0 (जनरल आफ युनिवर्सिटी आफ पूना) प्लेट 2 सितम्बर 1963 पृ0 37-47

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तै०सं० में भी समुद्र ज्ञान का उल्लेख मिलता है(1) ऋग्वेद (2) में जहाजों का भी उल्लेख है। वेदों(3) में धुम्न(बेडा) तथा प्लव (नाव) तथा 170 डंडो= वाले जहाज का उल्लेख है। डांड चलाने वाले अरित्र और नाविक नावजा थे। नोमण्ड डूंगर था और नवीन नाव हटाने की लग्गी थी (4)।

बुध्द से पूर्व विवेच्यक्षेत्र में काशी कोशल, पंचाल, शूरसेन आदि जनपद आर्थिक दृष्टिकोण से अत्याधिक सम्पन्न थे। महाभारत में (5) अयोध्या, अहिच्छत्रा, इन्द्रप्रस्थ, एकचक्रा (चक्रनगर जिला इटावा), मथुरा, कम्पिल, कुरुक्षेत्र, कान्यकुब्ज(कन्नौज), ~~[illegible]~~ गजपुर (हस्तिनापुर)गया, मथुरा काकन्दी (दक्षिण पंचाल की दूसरी राजधानी), पृथुदक(कुरुक्षेत्र के निकट पिवोहा नाम स्थान) प्रयाग, प्रागज्योतिषपुर (कामरूप आधुनिक आसाम, वाराणसी आर्थिक समृद्धि के केन्द्र थे तथा व्यापार का संचालन इन्हीं केन्द्रों से होता था।

xx शिक्षा एवं साहित्य xx

शिक्षा मानवता की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थी। महाभारत में शिक्षा को व्यापक क्षेत्र का उल्लेख है। मंत्रों का उदय, नूतन रचनायें, मंत्रों का एकत्र चुनाव एवं ऋग्वेद की मौलिक सामग्री से अन्य संहिताओं को विकास ही शिक्षाजगत की चालू अवस्थायें में थी। मौलिक सामग्री से अन्य संहिताओं का विकास ही शिक्षा जगत की चालू अवस्था में थी। ऋग्वेद (6) से विदित होता है कि आचार्य का घर ही विद्यालय था जहाँ शिक्षा मौलिक ढंग तय था। तप के प्रभाव से दैवी प्रेरणात्मक मुनी अथवा विप्र प्रेरणा से भरे मंत्र गायक मनीषी उस ज्ञान के अधिकारी थे जिसका केवल एक अंश मानवी वाक या शब्द के द्वारा प्रगट होता है। नैतिकता तथ श्रद्धा का महत्त्वपूर्ण स्थान था। ब्रह्मचर्य नियमों पालन छात्र जीवन का अनिवार्य तत्व था।

1- 2/4/9/2

2- 10/15/3, 1/56/2, 4/55/6, 1/116/3

3- ऋग्वेद 6/19/24, 1/182/5, 1/116/5 आर्थव वेद 2/38/5, 5/9/18, मैक्डानल एण्ड कीथ वैदिक इन्डेक्स 2/107, 1/148 वाजसनेयी संहिता 21/7

4- शतपथ ब्राह्मण 2/3/15, अथर्ववेद 9/2/6,

5- शान्ती पर्व 29/61, 17/6, आदिपर्व 37/73, 174-3, 206/227, अनुशासन पर्व 124/48 165/24, स्वर्गारोहण पर्व, 5/39/77

6- 7/103/4, 1/64/3-5, 10/136, 2/4-5, 1/129, 2/11, 7/103 अग्रवाल वी०एस०ए स्टडी आ ऋग्वेद वी०आर०जे० भाग । पर्ट । 1963 पृ 40-44

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रध्दा

अथर्व वेद से (1) विदित होता है कि ब्रह्मचर्य/शिष्यों, मेधा, धन, एवं अमरतत्व का दाता था। तैत्तिरिय संहिता (2) में अपने कर्तव्य से उरण होने का साधन है। छात्र ब्रह्मचारी आचार्यकुल (3) में निवास, गुरुसेवा(4) परिचर्या(5) तथा गुरुगृह के समस्त कार्य करता(6) एवं गुरु आदेश का पालन करता था। कभी कभी गुरु शिष्य के यहाँ भी विद्याध्ययन कराने हेतु जाते थे। शिष्यों की संख्या निश्चित नही थी। महाभारत(7)में हर वर्ण के व्यक्ति को गुरु शिष्य होने का अधिकार का उल्लेख है। शिष्य गुरु के नाम से ही अपनी परम्परा चलाता था। गुरु शिष्य में काफी मधुर स्नेह था। जैवली श्वेतकेतु, उद्दालक, अश्वपति, अजातशत्रु, द्रोण, विदुर, आचार्य धौम्य, आरुणी, उपमन्यु, कच एवं शुकदेव आदि प्रसिध्द विद्वान थे। भरद्वाज,बालमीकि, मार्कण्डेय, आदि आश्रम अपने विध्दता के लिये प्रसिध्द थे। शुध्द उच्चारण एवं वैदिक पाठ के मौखिक उच्चारण पर ध्यान दियाजाता था। पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद, वेदांग, संहितायें, ब्राह्मण, अरण्यक, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थ थे।

वेद:- ऋगवेद, अथर्व वेद, साम वेद, यजुर्वेद(8)

ब्राह्मण:- ऋग्वेद के ऐतरेय, कौषीतकि, यजुर्वेद के शुक्ल शतपथ ब्राह्मण तथा कृष्ण यजुर्वेद का तैत्तिरेय ब्राह्मण सामवेद के पंचविंश ब्राह्मण, षडविंश ब्राह्मण तथा जैमिनिय ब्राह्मण अथर्व वेद के गोपथ ब्राह्मण ही उपलब्ध है।

अरण्यक:- ऐतरेय अरणयक, तैत्तिरीय अरणयक, ब्रहदारणक जैमीनी एवं छन्दोग्य अरणयक प्रमुख है।

उपनिषद:- ईशोपनिषद,कठोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, प्रश्नोपनिषद, मुण्डक उपनिषद, ऐतरेय उपनिषद,केन उपनिषद, तैतिरेय उपनिषद, छन्दोग्य, उपनिषद, बृहदारण्यक उपनिषद का महत्वपूर्ण स्थान है।

इसके अलावा अनुक्रमणि ग्रन्थ आर्षानुक्रमणी, छन्दोऽनुक्रमणी, देवतानुक्रमणी, अनुवाकानुक्रमणी और शौनक स्मृति की रचना, बृहत्सर्वानुक्रमणी आदि प्रमुख है।

1- 11/3,6/10/2,13/3/2,19/64/14

2- 6/3/10-3

3-बृह० उ० 6/3/15 छन्दोग्य उपनिषद 6/12 रामायण 3/1/3,3/1/50

4- छन्दोग्य उप० 2/123/1,शतपथ ब्राह्मण 13/3/3-5

5- शतपथ,ब्राह्मण 4/3/5

6-वही 4/10/2

7- रामायण 2/100/14,2/27-8,3/12/32-8,108/4/14 सभापर्व 45/15,वन पर्व 31/8 शान्ती पर्व 165/31, 318/88

8- अग्रवाल वासुदेव शरण ' प्राचीन भारत`कासांस्कृतिक विश्वकोष महाभरत सिंहावलोकन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान 6 दिसम्बर 1953

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेदान्तः-शिक्षा, छन्द, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और कला 6 वेदांग है।

उपवेदः- आयुर्व वेद, धनुर्ववेद, शिल्प वेद, गान्धर्व उपवेदाओं की रचना हुई।

महाकाव्यों रामायण तथा महाभारत का प्रमुख स्थान है। विवेच्य युग में धार्मिक महाकाव्यों में रामायण तथा महाभारत का प्रमुख स्थान है। विवेच्य युग धार्मिक साहित्य सृजन के साथ ही विलक्षण साहित्य का सृजन हुआ जो भारतीय जनजीवन के प्रेरणा दायक स्रोत रहे है। भारतीय साहित्य शास्त्र, ज्ञान विज्ञान, कलायें, धर्म, दर्शन, आदि कोईतत्व ऐसा नहीं है जिसकी स्पष्ट रुपरेखा विवेच्य साहित्य में न मिले। विवेच्य युग की संस्कृति ने भारतीय संस्कृति कोसमग्ररुप से प्रभावित किया है।

धार्मिक अवस्था

धर्म की इतीन विशद एवं व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की गई है कि भारतीय जीवन का प्रत्येक क्षेत्र इसके आंचल में समाविष्ट हो गया है। वेद को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वेद सत्य है, सत्यकाल से परे है अतः वेद शाश्वत चिन्तन, दर्शन और साक्षातकार के क्षेत्र में जो ज्ञान रश्मियां ऋषियों के अन्तपटल पर अवतरित हुई वह दिव्य ज्ञान सामायिक परिभाषा और परिकल्पनाओं में मंडित होकर एक विशेष सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में प्रस्फुटित हुआ और उसके अनुरुप एक विशेष धार्मिक उपचार आचार संहिता जीवन शैली में उपनिबद्ध हो गया। अतः विवेच्य युग का साहित्य शाश्वत होने पर भी बाहरी परिधान ऐतिहासिक है जो धर्म का मूल स्तम्भ तथा प्रेरणास्रोत है(1)महाभारत (2) में धर्म का अर्थ परहित, आत्मशुद्धि शिष्टाचार तथा कर्तव्य का पालन करना है। गृहस्थ भी मोक्ष प्राप्ति का अधिकारी है महान पुरुषों के मार्ग का अनुसरण श्रेष्ट आदर्श है। पूर्वजों के द्वारा अनुष्ठित आचरण ही कुलधर्म है। वेदों में विवेच्य धर्म ही जनजीवन का धर्म था। रामायण(3) से ज्ञात होता है कि दुष्ट पापी रावण को मारने के लिये राम ने वेदान्त विधि का ही अनुसरण किया। महाभारत में(4)धर्म की व्यापक कल्पना की गई है। श्राद्धकर्म, अतिथि, सत्य, अक्रोध, शौच, आत्मज्ञान तथा विश्व हित ही धर्म का सच्चा स्वरुप था। अहिंसा परमोधर्मा, सत्य की प्रतिष्ठता ही जीवन का लक्ष्य था इन्द्रियों पर संयम रखना सबसे बड़ा तप था। वैदिक काल में जीवन पद्धति जितनी सरल थी उतना ही धार्मिक जीवन ही अत्यधिक जटिल था। वैदिक कर्मकाण्ड अन्धविश्वसनीय एवं अपव्यय पूर्ण हो गये है। लेकिन धार्मिक जीवन अत्यधिक सीमित एवं विश्वास पूर्ण थी।

1- विन्टरनित्ज वो पृ 94-104 (2)वन पर्व 3/2/102, शान्ती पर्व 167वाँ अध्याय, वन पर्व 312/117

3-6/20/14

4- शान्ती पूर्व 38/10, 26/5-8देखिये रसेल दि एथिजिस्टेस आफ गोड(सा)जानटिक का है लन्दन विश्व भारती पत्रिका खण्ड 14, 1973, मैकमिलन 1964मार्ट जे.जे.सी 'दि एथिजिस्टेस आफ =

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवता :- देव की परिभाषा बड़ी व्यापक थी परम पुरुष को लेकर प्रकृति की विभिन्न शक्तियों (सूर्य, चन्द्र, वायु) पूर्वज, आचार्य, माता पिता एवं अतिथि तक की गणना देव समूह में प्रतिष्ठित थी। सरल हृदय मानव प्रकृति की शक्तियों के आगे नतमस्तक हो गई (1) वैदिक काल में देवताओं को 3 वर्ग में विभाजित किया गया :-

पार्थिव देता :- अग्नि, सोम, पृथ्वी

अंतरिक्ष देवता :- इन्द्र, वायु, मारुत, परजन

स्वर्ग के देवता:- धौस, वरुण, मित्र, सूर्य, सविता, पूसन और विष्णु प्रकृति के विभिन्न रूपों को तथा उसमें वास करने वाले प्रभू के रूप में द्योतन शील, दीप्तिमय कह कर पुकारा जाता था (2) ऋग्वेद में (3) भावरूप में देवताओं की गणना की गई। कालान्तर में मनुष्य ने देखा कि जिस प्रकार संसार की ब्राह्य शक्तियाँ जीवन को संचालित एवं प्रभावित करती है उसी प्रकार अंतः शक्तियाँ भी अनेक हैं क्रोध, बुद्धि, श्रद्धा, शक्ति एवं वाक्शक्ति। ऋग्वेद (4) से विदित होता है कि शतवर्षीय जीवन की कामना सभी देवताओं की उपासना से ही पूर्ण हो सकती है। इन सभी देवताओं से एक ऐसी शक्ति की कल्पना की गई जो समस्त प्राणियों की सृष्टिदाता थी। अथर्व वेद (5) में संसार के सभी परिवर्तनों में एक तत्व व्याप्त है उपनिषदों (6) में ब्रह्म से ही विश्व की सृष्टि होने का उल्लेख है। वैदिक आर्यों के दार्शनिक विचारधारा की चरमसीमा थी। देवताओं की संख्या धीरे धीरे बढ़ने लगी। अर्थव वेद (7) में देवताओं की संख्या 33 है परन्तु ऋग्वेद (8) में 3339 देवताओं की संख्या है। शतपथ ब्राह्मण (9) में 33 देवताओं की गणना वैदिकों के इस देवतावाद ने एक ऐसी उदात्त संस्कृति को जन्म दिया जिसमें देशकाल की परिधियाँ विच्छिन्न हो कर अविरत, अविच्छिन्न तथा सार्वभौमिक भावधारा के रूप में सृजित हुई है। इस सार्वभौम धारा को ही ऋग्वेद में सत्यअनन्त एक देव, अद्वितीय शान्तिमय, शिवमय और आनन्दमय कहा गया है (10) इन्द्र, वरुण, मित्र, अग्नि, सुपर्ण, मरुत्मान, मातरिश्वा, यम आदि एक ही सर्वोच्च सत्ता के विविध नाम है और उसएक सत्ता को ही विद्वान लोग इन्द्र, मित्र, वरुण आदि विविध नामों से पुकारते है (11) रामायण (12) में 33 करोड़ देवताओं का उल्लेख है।

महाभारत(13)

1- राधाकृष्ण इन्डियन फिलासफी पृ0 72-73 रमेशचन्द्र दत्त प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास पृ0 79 अनु0 गोपाल दास एवं कमलाकर तिवारी (2) पाण्डेय नेत्र भारत का बृहत इतिहास पृ0 1950 (3) 2/3/8 (4) 10/37/6 (5) 10/7/10, 8/19/534 (6) मुण्डक उप0 1/1/3, 1/17, कठ उपनिषद 2/2/9-10 बृहत उप0 2/1/28, 2/5/15, 1/4/10 छान्दोग्य उपनिषद 6/8/7 (12) 3/14/14 यदा यदा धर्मस्य ग्लानि भवति भारत भीष्म पर्व 28/7/8 वन पर्व 189/27/31 अनु0 /7-158/12 (7) 10/7/13 (8) 6/9/9 (9) 11/6/3/5

10- गैराल वाचस्पिति 'भारतीय संस्कृति और कला पृ0 157

11- ऋग्वेद 1/164/46 वाजपेयी के0डी0 'इन्द्र इन अर्ली लिटरेचर एण्ड आई आर0एम0 (6) 1969 पृ0 127-30

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब- जब धर्म की हानि होती है तब-तब भगवान दुष्टों का दमन करने के लिये अवतार लेते हैं एवं विश्रृंखल स्थिति को मर्यादा में बाँधते है। विवेच्य युग देवताओं की संख्या अनेक थी। जिनमें प्रमुख निम्नलिखित है :-

पृथ्वी एवं सविता :- ऋग्वेद(1) में पृथ्वी एवं सविता का उल्लेख है। अथर्ववेद(2) पृथ्वी सूक्त एक राष्ट्रीय सूक्ति है। सर्व प्रथम उनकी दृष्टि अनन्त अपार आकाश पर पड़ी। जो अपने विशाल वक्ष स्थल पर सूर्य चन्द्र धारण किये है। सविता शब्द ने सूर्य का दिन में व्यक्त एवं अव्यक्त रहने वाला रूप है इस प्रकार पापोद्धार के निमित्त दैवी करुणा के अवलम्बन का प्रतिपादन सविता की उपासना में मिलता है। प्रकृति की जो सृजन शक्ति है वो देवता पर ही निर्भर है।

सोम :- ऋग्वेद(3) में सोम को उल्लास का देवता मानागया जो सूर्य के समान चमक कर अन्धकार का निराकरण करता है।

अग्नि :- ऋग्वेद (4) में अग्नि को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया । सूर्य अग्नि का रूप है । अतः अग्नि को पुरोहित याज्ञिक एवं होता भी कहा गया तथा धर्मों के अध्यक्ष पद पर सुशोभित किया गया क्योंकि अग्नि आहुति देवता तक पहुँचाती है(5) वह अन्धकार, शीत, रोग, हिंसक, पशु को दूर करता है इसी कारण उसको बन्धु मित्र भी कहा गयाहै(6)। अग्नि भी परमेश्वर है तथा महाभारत (7) के अनुसार उसकी सात जीभें है।

इन्द्र ऋग्वेद (8) में इन्द्र को आकाश अन्तरिक्ष एवं पृथ्वी से बड़े देवता के रूप में सम्मानित किया गयाहै। ऋग्वेद(9) में स्पष्ट उल्लिखित है कि इन्द्र ही सूर्य एवं उषा को जन्म देता है एवं कोई भी रूप धारण कर सकता है। बिना इन्द्र के विश्व की कल्पना करना असम्भव है(10)। धीरे-धीरे इन्द्र का महत्व घटता गया। महाकाव्य काल में केवल उपाधि मात्र रह गया।

विष्णु :- ऋग्वेद(11) में सूर्य को विष्णु के रूप में प्रतिष्ठित किया गयाहै जो संसार के रक्षक है। महाभारत(12) में विष्णु को सर्वव्यापी विश्वेश्वर तथा मनोवांछित फल को प्रदान करने वाला बताया है। ~~महाभारत का प्रत्येक पर्व नारायण की वन्दना से~~

- -

1- 7/73, 1/90/7, 1/164/33 (2) 12/1, 7/17/4 राधाकृष्णन पृ 83
3- 9/16, 10/106/10,
4- 2/13/3, इम्पीरियल गजेटियर भाग 2- 1909 पृ 213 अग्रवाल बी०एस०वैदिक स्टडीज पी टी 1972-73 पृ 21-42
5- ऋग्वेद 25/1214, 1/26/6, 10/70/1 अनु0 84/56, 85/15), उद्योग पर्व 13/9
6- ऋग्वेद 10/7/3, (7) आदिपर्व 22/7, सभा पर्व. 31/40-88
8- 3/4622, 1/52/11, 11/89/10, विन्टर निज 'प्राचीन भारतीय साहित्य' पृ 68
9- 3/48, 3/48/8, 8/47/10, 1/32/4, 6/30/4, 1/32/1, 10/138/1-2
10- ऋग्वेद 8/62/2 (11) 1/155/4, 1/55/6, 6/48/13, 6/89/5, 7/99/3, 1/22/18, 7/89/1-2, 7/1-2, (12) अनु0 149/5/8-8

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाभारत का पृष्ठो (2) क पर्व नारायण की वन्दना से प्रारम्भ होता है(1)राम कृष्ण विष्णु के ही अवतार है ऋग्वेद के अनुसार विष्णु का प्रधान कर्तव्य इसी बात मे है कि वह अकेले ही सुदीर्घ एवं सुविस्तृत लोक को 3 पद उठा कर नाप डालते है।इसी भावना से विष्णु का वावन आवतार का रूप विकसित हुआ। शतपथ ब्राह्मण (3)तथा तैतीर्य संहिता (4) मे विष्णु के वामन रूप का उल्लेख है। विष्णु सबकी रक्षा करने वाले है,पालन करे वाले है तथा पृथ्वीलोक धुलोक, एवं सम्पूर्ण भुवन को धारण करने वाले हैं।(5) उन्हीं ने पृथ्वी सूर्य आकाश चारो ओर खूटियों से कसकर स्थिति किया हुआ है(6)वैदिक संहिताओं विष्णु देवता का वह महत्वपूर्ण स्थान नही जो पौराणिक धर्म मे है पर विष्णु, इस महातथ्य मे वीज वेदों मे अवश्य विधमान है।कृष्ण विष्णु के अवतार है वह आदित्य गुणों मे विष्णु नक्षत्रों मे शशि तथा संसार मे जितनी भी वस्तुये है उनमें उन्ही का अंश विधमान है।(7)

शिव :- वैदिक काल का शिव सर्व व्यापी ,परम बलशाली,शत्रुओं को रुलाने वाला,पर्वतो पर रहने वाला(गिरीश),नीलकण्ठ(नीलग्रीव),लालरंग वाले (विलोहित),धनुष धारण करने वाले संरक्षक चोरो का अधिपति एवं पशुओं मे प्रविष्ट एवं शिरस्त्राण तथा कवच धारण करने वाला रहा है। (8) ऋग्वेद मे उन्हें पर्वतवासी ,वृषभ, शिव एवं वज्रधारण करने वाला कहा है। यजुर्वेद (9) मे नील कंठ कृत्तिवासा एवं कपर्दी कहा गया है।मानवता की मंगलमय भावना ही शिवकृति है शिव ही विश्व प्रगति का प्रवाह है। उनमे सत असत् देवतत्व ,मानवतत्व और रौद्र का अद्भुत समन्वय हुआ है।(10)

1- वन पर्व 272/11-18
2- 1/154/3,8/12/27
3- शतपथ 1/2/5/5
4- 2/1/ 3/1
5- ऋग्वेद 3/55/10
6- ऋग्वेद 7/99/3
7- भीष्म पर्व 34/41
8- 2/33/10,11,2/63/11,2/33/8,10/92/8
9- 16/7,16/6,16/51,3/61
10 गैरोला वाचस्पति भारतीय संस्कृति और कला पृ0 134

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाभारत पर्व में(1) उनको पिनाकी, शूलपाणि, उमा पति, उमापति आदि नामों से अभिहित किया गया है। द्रौपदी, अर्जुन, कुन्ती, गान्धारी एवं भीम की शिवोपासना से शिव की महत्ता प्रतीत होती है। रामायण(2) में भी राम रावण की शिवोपासना का उल्लेख मिलता है।

ब्रम्ह :- कूर्म पुराण(3) के अनुसार ब्रम्ह ही प्रथम शरीरी है उनके चार रूप है परामूर्ति, प्रजापति, हिरण्यगर्भ और वेदार्थ वेदी भगवान, ब्रम्ह के द्वारा प्रजापतियों का प्राकट्य हुआ और उन्होंने सृष्टि का निर्माण किया। चतुरमुख, चतर्वेद तथा चर्तुमूर्ति स्वरूप है आदि पर्व(4) के अनुसार ब्रम्ह की द्वैपायन ऋषि के पास महाभारत की रचना निमित्त पहुँचे।

कार्तिकेय :- ऋग्वेद(5) में कार्तिकेय का सम्बन्ध अग्नि से है अथर्व वेद(6) के विशिष्ट परिशिष्ट के रूप में स्कन्द भाग या धूर्तकल्प को दर्शन होते हैं जहाँ स्कन्द को भगवान देवों धूर्त कहा गया है। महाभारत(7) से विदित होता है कि असुरदेवता युध्द में उनको सेनापति बनाया गया वह भूत, पिसाच, शिव, अशिवा माताओं का आधिपति माना गया इस प्रकार वह घर के अन्दर पूजनीय नहीं अपितु वाह्य ग्राह है।

शक्ति पूजा :- संसार की प्राचीन उपासनाओं में शक्ति उपसना का प्रमुख स्थान है। ऋग्वेद (8) में देवमाता अदीति उषा, पृथ्वी, वाक, श्री आदि देवियों का उल्लेख मिलता है। अम्बिका, उमा, सूर्य काली आदि नामों का उल्लेख ऋग्वेद में नहीं मिलता। वाजसनेयी(9) संहिता तथा तैत्रिरीय ब्राम्हण में(10) इसे रुद्र की भगनी तथा तैत्तिरीय अरण्यक(11) में पत्नी बताया है। केनोपनिषद में उमा हेमवती का उल्लेख है। भद्र काली, भवानी, दुर्गा देवी के नाम भी विवेच्य युग में मिलते हैं(13)

1- आदि पर्व 169/8, 197/45, 188/1, 223/35, 110/9, 196/16, अनु० पर्व 14/23
2- 73/29-3 (3) 4/38 पृ० 9, 4/48/51 पृ० 19-20
4- 1/57/74 (5) अग्रवाल पी०के० स्कन्द कार्तिकेय 1967 अध्याय 1 पृ० 1-37
अग्रवाल वासुदेव शरण प्राचीन भारतीय लोक धर्म पृ० 45

6- अग्रवाल पी०के० वही पृ० 104-7

7- वन पर्व 226/10-15, स्कन्द पुराण अध्याय 61-82(मोर प्रति) पृ० 536-6540 अग्नि पुराण (मोर प्रति) 93, 27-28 पृ० 195
8- 10/145, 6/61, 10/75, 1/92/4, 1/1/124/3, 1/92/10, 1/115/2, 7/78/1, 8/9/17, 8/5/2, 8/18/6, 1/116/18 : 10/39/8 अग्रवाल पी०के० वी०एस० मथुराटेरकोटा जे०ओ०पी०एच० भाग 4 प्लेट 2, 2 जुलाई 1936 पृ० 19-26
9- 3/57 (10) 1/6?10/4-5 (11) 10/8, डी०एच०आई० पृ० 491

12- 3/25, मुण्डक उपनिषद 1/2/4

13- डी०एच०आई० पृ० 491

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामायण मे (1) सीता को लक्ष्मी का अवतार कहा गया है। एकनशा विंध्यासिनी को हरिवंश पुराण(2c) में निद्रा, आर्या, गोदवती का अवतार, विष्णु पुराण में (3)निद्रा,योग निद्रा, अम्बिका का अवतार, कर्म पुराण में (4) कमला, निशा, पद्मपुराण(5) मे नारायण माया तथा पार्वती के रूप में उल्लिखित है। एकनशा को वैष्णवी महामाया का अवतार मानते हुये भी उसके अष्टभुजा का वर्णन करते है तथा दुर्गा, अम्बिका, भद्रकाली आदि नाम भी सम्मिलित है।

दुर्गाः- तैत्तिरीय अरण्यक में (6) दुर्गा शिव पत्नी के रूप में उख्यात है। केनो उपनिषद(7) में हैमवती उमा का उल्लेख इन्द्र को अमर तत्व का उपदेश देने वाली के रूप में किया गया है। महाभारत (8)विन्ध्यवासिनी के रूप में मद्य एवं रक्त का पान करने वाली कहा है। वायु-पुराण(9) में श्री और प्रज्ञ अथवा लक्ष्मी और सरस्वती ये दो महादेवियाँ थी जो कालान्तर मे अनेक रूपो में अभिवृध्दित हुई। रामायर्ण(10) मे तथा महाभारत में गंगा का उल्लेख देवी के रूप में हुआ है पवित्र पावन सलिल गंगा एक पवित्र नदी मानी जाती रही है।

यक्ष एवं पिशाचः- यक्षो की गणना भूत किन्नर, राक्षस, गन्धर्व, नाग, दानव, किम्पुरुष ~~[illegible]~~ आदि अमानुषीतन वर्ग मे की गई है। महाकाव्यों में (12) उल्लखित यक्ष एवं पिशाच पूजा से विदित होता है कि कुछ राक्षस प्रवृति वाले यक्ष राक्षस की पूजा करते थे और तामसी पुरुष भूत प्रेत की पूजा करते थे। रामायण से ज्ञात होता है कि प्रजापती ने जनका संरक्षण करने के लिये खास प्रकार के जनो का सृजन किया। पुराणो में(13)मनोहर एवं भयंकर रूप वाले यक्षो उल्लेख मिलता है। वृक्ष पूजा का (14) रामायण में वर्णन है।

1- लंका काण्ड चौपाई 1/2/3/4/5 दोहा 108
2- 4/36पृ0 224,4/46 पृ0 225,2/27, पृ0 217, 3/1 पृ0 219,120/2 पृ0 695
3- 5/1/70 पृ0 370 (4) 24/74 पृ0 112
5- 245 /25 /30, पृ0 870 (6) 10/18
7- 3/25, (8) वन पर्व 39/4 पृ0 1059
9 - 9/98 पृ0 49 (10)1/43/30,2/50,78-79
11- आदि पर्व 97 वा अध्याय अनुशासन पर्व 26 वां अध्याय इम्पीरियल गजेटियर आफ इंडिया भाग2, 1909 पृ0 220
12- रामायण उत्तरा खण्ड 7/16/43 सभा पर्व 18/2/41/4
13- अग्नि पुराण 50/30 पृ0 96, पद्मपुराण उत्तराखण्ड 128/135-6 पृ0 459
14- 2/25/25

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यज्ञः- सभी देवताओ को सन्तुष्टि के लिये यज्ञ का प्राविधान किया गया था। ऋग्वेद से ज्ञात होता है (1) कि वह अपने देवताओं से मोक्ष न मान कर सतवर्षी जीवन की कामना करता था। यज्ञ के द्वारा वह अनित्य एवं दुखमय संसार से उपर उठ कर अमृतानन्द को प्राप्त करता था(2) प्रत्येक देवता को अपनी अपनी ऋचायें होती थी तथा मंत्रो से आहूत दी जाती थी (3)।कठो उपनिषद(4) से विदित होता है कि ईश की महिमा जानने के लिये धाता का प्रसार आवश्यक है। रामायण(5) से यज्ञो का विवरण भी मिलता है। यज्ञ मनुष्य तथा प्रकृति के मध्य सेतू बनाते है। अयोध्या मे वेद पारंगत सर्वगुण सम्पन्न यज्ञकर्ता निवास करते थे। दशरथ ने पुत्र प्राप्ति हेतु विशालय यज्ञ का आयोजन किया था(6) रामायण(7) से यह भी विदित होता है कि विश्वामित्र यज्ञो की रक्षा हेतु ही राम लक्ष्मण को दशरथ से मांग कर ले गये थे। महाभारत (8) से ज्ञात होता है कि युधिष्ठर ने राजसूय यज्ञ का विशाल आयोजन किया था। विवेच्य युग में यज्ञ कई प्रकार के होते थे।

दैनिक यज्ञः- शतपथ ब्राह्मण (9)तैत्तीरीय (10) एवं रामायण महाभारत(11) में उल्लेख है कि दैनिक यज्ञो का सम्पादित करना प्रत्येक गृहस्थ को करना चाहिये। संध्या अग्निहोत्र से दीर्घ आयु, श्रेष्ट बुद्धि एवं बल प्राप्त होता है। महाभारत (12) में संध्या अग्निहोत्र को भी विशेष महत्व दिया गया है। रामायण(13) से ज्ञात होता है कि पूर्वजो की सन्तुष्टि हेतु तर्पण करना चाहिये। रामायण तथा महाभारत(14) से भी पाण्डवों के तर्पण करने का उल्लेख मिलता है। यह दैनिक देव यज्ञ, पितृ यज्ञ अतिथि यज्ञ, ब्रम्ह यज्ञ, भूत यज्ञ।

दैनिक यज्ञो के अलावा माह में दो बार प्रतिपदा और पूर्णिमा के दिन अग्नि और इन्द्र सोम को पुरोडस (अन्न का परेठा) दिया जाता था।शरद एवं बसंत ऋतु के यज्ञो में बैल की बलि तथा वर्षा के यज्ञ में सांढ छोड़ा जाता था। सोम यज्ञ भी किया जाता था जिसमें सोमरस की आहूति दी जाती थी योज्ञामणी यज्ञ में सुरापान की प्रथा चल पड़ी थी अग्निहोम यज्ञ पाँच दिनो में पूर्ण होता था। सारभौम चक्रवर्ती पद प्राप्त करने हेतु अश्वमेध राजसूय यज्ञो का आयोजन किया जाता था।(15) रामायण(16) से ज्ञात होता है कि दशरथ ने ~~पुत्र प्राप्ति हेतु यज्ञ किया था। इस यज्ञ जिसमें~~

1- 1/36/14, 10/33/6 (2)मुकर्जी राधा कुमुद 'हिन्दू सभ्यता पृ0 117

2- ऋग्वेद 1/2/9/2, 1/39/10, 3/74/32, (4) 2/20

5- रामायण 2/71/30, 1/39/10, 1/75/20, 3/74/32, 2/71/20

6- राम0 दोहा 188 चौपाई 3 वालकाण्ड (7) राम0 वालकाण्ड 205 चौपाई 4

8- महाभारत 17/1/11 (9)शतपथ ब्रा0 11/5/8/5, 11/5-6/3-9

10- 2/10, 2/110/3 (11) राम0 महाभारत 2/100/13, 260/10/1113/3/17, 14/32/54, 2/10/16, 1/15/9

12- अनु0 104/18, शान्ती 284/11

13- राम0 7/37, 1/23/18, राम0 7/81/21 (14)यज्ञ व्यास शान्ती पर्व रामायण कालीन संस्कृति पृ0 105

15-वालकाण्ड दोहा 188 चौ0 3

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुत्र प्राप्ति हेतु यज्ञ किया जाताहै, दक्ष यज्ञ जिसमें सती ने अपना शरीर त्याग किया था, वर्णन मिलता है । महाभारत(1) में भी पाण्डव द्वारा राजसूय यज्ञ का उल्लेख मिलता है । यज्ञ में हृदय अनुन्यगार होत्री का समावेश था (2) गृहपत्य अग्नि, दक्षिण अग्नि, आह्वनीय तीन प्रकारकी अग्नि यज्ञ हेतु प्रज्वलित की जाती थी । यज्ञ प्रणाली ही ब्राम्हण युग की मरु भूमि से फुटा हुआ एक फूल है । उपनिषदों को वेद रूपी सुन्द्र का मथा हुआ अमृत कहा जा सकता है इनमें वैदिक चिन्तन कासार संगृहित है(3) । उपनिषदों(4) में विशुद्ध ज्ञान की सर्वत्र जिज्ञासा है ।

लोक धर्म तथा दर्शन

आह्तिक कृत्य :- रामायण(5) तथा महाभारत(6) में मलमूलोत्सर्गनियम, भोजन आदि के नियमों का विस्तृत उल्लेख मिलता है । यज्ञ द्वारा देवता आतिथेय द्वारा मनुष्य एवं बलि आदि कर्म द्वारा सर्वभूत हित की वृष्टि की जाती है । महाभारत(7) में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि बलि के बाद द्वार पर उपस्थित द्विज को भिक्षा देने का नियम था । देव बलि में पुष्प सहित, दुग्ध में सुगन्धित प्रियदर्शी अन्न निवेदित करना चाहिये । राक्षस बलि में माँस, नाग बलि में सुरा तथा भूत वाले में गुड़ मिश्रित तिल देना प्रशंसनीय है ।महाभारत (8) में आवास के ब्रह्मग्रहण वाले निवेदक, भिक्षा दान, उर्ध्वदान, तथा पितरों को तिलोदक आदिके लिये तांबे वर्तन श्रेष्ठ बताये गये हैं । सोम वाले तथा आकाश चमनयोग का उल्लेख भी महाभारत में(9) मिलता है । संकल्प विधान का उल्लेख भी महाभारत में (10) स्पष्टरूप से मिलता है । सभी व्रतों में अनशन श्रेष्ठ है । व्रत में जल, फल, दूध, हवि औषध, ब्राम्हण अथवा गुरु के आदेशों से दूसरे द्रव्य खाने से उपवास भंग नहीं होता । सन्तों का आदर कर उनके आदेशों से लाभ उठाने का उल्लेख रामायण(11) तथा महाभारत(12) में मिलता है ।

1- महाभारत 17/1/11 शान्तीपर्व 152/39, उद्योग पर्व 13/7
2- मैकडानल एण्ड की वही पृ 499 दत्त रमेशचन्द्र 'प्राचीन भारत का सभ्यता का इतिहास पृ 79
3- राधाकृष्णन् वही पृ 137, (4) पाण्डेय विमल चन्द्र प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा संस्कृति इतिहास 75 (5) 2/6/5-6, 6/116/24, 2/71/47
6- अनु0 पर्व 104/23, उद्योग पर्व 37/33
7- अनु0 पर्व 97/6-7, 13 (8) अनु0 पर्व 126/22-23
9- वही 126/48/49, 127/3 (10) वही 126/65, उ0 पर्व 39/7।
11- उत्तराखण्ड 120/8-11
12- भीष्म पर्व 37/21, वन पर्व 31/23

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिदिन स्नान करना चाहिये (७) महाभारत(८) में पूर्णसलिला नदी में स्नान कर्म प्रासन पूर्ण पर्वत पर रहना आदि धर्म प्रायश्चित के रूप में विवेचित है ।

-: जगत और जीवन :-

उपनिषदों (1) में चरम तत्व की गवेषणा है । विश्व की विविधता के पीछे एक तत्व व्याप्त है जगत में नित्य सूक्ष्म से स्थूल, अमूर्त से साकार और इसके विपरीत प्रवृत्ति चलती रहती है । ऋग्वेद के (2) अनुसार शरीर के नष्ट हो जाने पर भी आत्मा का अस्तित्व कायम रहता है । अर्थव वेद(3) के अनुसार पुनर्जन्म भी होता है ।

सत्य जनित माया :- माया के स्वरूप का विश्लेषण महान दार्शनिक राधाकृष्णन ने भी किया है(4) छन्दोग्य उपनिषद(5) में स्पष्ट है कि ससांसारिक शोक से ग्रसित व्यक्ति ही शूद्र है स्वयं मनुष्य को स्वर्ग के यश की प्राप्ति की कामना होनी चाहिये, सत्य के क्षेत्र में धर्म जाति, योनि एवं वर्ण के भेद भाव का कोई स्थान नहीं है ।

कर्म एवं ज्ञान तथा भक्ति :- उपनिषदों में कर्म एवं ज्ञान को प्रमुख स्थान दिया गया । कर्म ही अमृत है(6) विश्व की पहेली समझने और आत्मसत्व का निरूपण करने में वैदिक ऋषियों का महत्वपूर्ण स्थान है । ज्ञान की प्राप्ति को उन्होंने चरम शान्ति का साधन समझा इस सिद्धान्त की स्वाभावित व्याप्ति आत्मा के आवागमन के सिद्धान्त में भी कर्मप्रिय व्यक्ति सभी ब्रम्ह ज्ञानियों में श्रेष्ठ है (7) ईश्वर को प्राप्त करने का प्रमुख साधन भक्ति ही है(8) ।

1- छन्दोग्य 57/10/1 गैरोला वाचस्पति वही पृ0 12

2- ऋग्वेद 10/8/26 डी0एम0 कल्याण यजरा मार्येत सयामृता गृह 1/164/38 वही 10/5

3- अथर्व वेद 11/4/14

4- राधाकृष्णन पृ0 199 (5) छान्दोग्य 4/4/1-/8/14/1,5/10/7 गैरोलावाचस्पति पृ0 144 भारतीय संस्कृति और कला

6- मुण्डक उपनिषद 1/1/8, रामायण 6/64/9

7- भगवत गीता 3/30 गैरोलावाचस्पति भारतीय दर्शन पृ0 56-58

8- शर्मा सत्यनारायण मानस का भक्ति पक्ष भाग 7 विश्व भारती पत्रिका खण्ड 14 अंक 3 अक्टूबर दिसम्बर 1973

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भागवत गीता (1) में स्पष्ट उल्लेख है कि आदर्शों का परित्याग विषम परिस्थितियों में भी नहीं करना चाहिये । बुध्दि तथा श्रध्दा की दृष्टिकोण से जो प्रयोग बनते है उनका नाम एवं ज्ञान एवं भक्ति है और उनसे समन्वित होकर कर्म ठीक से किया जा सके। इस प्रकार गीता ज्ञानमूलक भक्ति प्रधान एवं कर्मयोग की शिक्षा देते है।

व्यक्ति समाज और भगवान

विश्व का संतुलन आंतरिक शक्ति से चल रहाहै। व्यक्ति को समाज एवं परिवार के लिये तथा समाज को देश पर बलिदान होने पर मूल मंत्र ही महाकाव्य का जयघोष है। सभी वर्णों एवं आश्रमों के संतुलन के साथही समाज उन्नति करता है। संतुलन बिगड़ता है तो अराजकता फैल जाती है। अराजकता तथा अव्यवस्था को रोकने के लिये ही महान विभूतियो का जन्म होता है।किन्तु इन सबके पीछे एक ही दैवी शक्ति है। जिसके माध्यम से निर्गुण पुरुषोत्तम और सगुण देवताओं का सामंजस्य होता है। गीता(2) का सार हैमनुष्य प्रकृति के बन्धन में बंधा हुआ भी स्वंतत्र है। जैसी इच्छा है करे। गीता(3) हिंसा का अहिंसा का अद्भुत सामंजस्य है अच्छाई की प्रतिष्ठा तथा बुराई को दूर करने के लिये जो युध्द किया जाता है वह दोषरहित है । एवं एक सामाजिक शल्य चिकित्सा है। धर्म योद्धा समाज के कलुषित नागों को शस्त्र से नष्ट करता है।संसार एक कर्म भूमि है जहां शुभ अशुभ कर्मों का फल भोगना पड़ता है। रामायण(4) के अनुसार वर्तमान समय में पूर्व जन्म के कर्मों का ही फल मिलता है। हमारी अन्तरात्मा शुभ अशुभ शब्दों एवं विचारों की साक्षी है। विधाता के विधान का उलंघन नहीं किया जा सकता (5) रामायण (6) में उल्लेख है कि कभी कभी व्यक्ति दूसरो के शुभ अशुभ कर्मों के फल को भी भोगता है। वन पर्व (7) में फल की इच्छा किये बिना कर्म करने का आदेश दिया है। मृत्यु के समय व्यक्ति अपने कर्मों के प्रति प्रमाद करने लगता है(8)शान्ती पर्व से विदित होता है कि धर्म की आड़ में निर्बलो पर अत्याचार नहीं करना चाहियें, गुरु द्वारा निर्देशित व्यक्ति ठीक राह पर चलता है ।किसी भी अवस्था में धर्म का परित्याग नहीं करना चाहिये धर्म का परित्याग करने वाला व्यक्ति मृतक के समानहोता है(10) जहां धर्म है वहीं जय है यही महाभारत का मूल मंत्र है(11)

1- 3/30,3/23, 24,5/8-10 (2) 18/33
3- 2/2-3 (4) 8/64/4,2/12/78
5- रामा० 3/66/16,6/113/42-4,2/98/24,4/24
6- 2/27/5 (7) 31/2
8- रामा० 3/56/18 (9) ब 92/18/19
10- उद्योग पर्व 40/12, स्वर्गारोहण पर्व 5/64
11- 6/89

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नैतिक पक्ष तथा पुनर्जन्म :- अथर्व वेद(1) से ज्ञात होता है कि याज्ञिक अनुष्ठानो तथा स्तुतियो के साथ अन्तकरण की शुध्दि, दान तथा सद्गुणो की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था साथ ही जादू टोना, धोखा व्यभिचार, आदि दुष्कर्मों की निन्दा की गई है। धर्म देवतात्मक होते हुये भी नैतिक था। ऋषियो ने निर्धन, मूर्ख असहाय व्यक्तियों के प्रति उदार एवं दानशील होने की सम्मति दी है(2) रामायण(3) में उल्लेख है कि आत्मा अमर है वह शरीर की आयु से नियंत्रित नही होती है।

मनुष्य का देवत्व तथा भौतिक जगत की दिव्यता:- ऋग्वेद (4) में मानव जगत की महत्वपूर्ण उपलब्धियों एवं उच्चतम अभिव्यक्तियो कावर्णन किया है। मानववाद का इतना उज्वल एवं विखरा हुआ रुप अन्यत्र सुलभ नही है। शतपथ (5) ब्राह्मण से ज्ञात होता है कि भौतिक जगत के समस्त उपादन सूर्य चन्द्र, वायु, जल, पृथ्वी आदि देवता है। पृथ्वी पर अग्नि, आकाश मेंसूर्य, अन्तरिक्ष में वायु प्रधान होता है। उसके बाद 11-11 देवता हो जाते है उनके 33 देवता 3339 हो जाते है(6) एवं नैतिक एवं चरित्र प्रधान व्यक्ति होसर्वोपरि है।

सत्य :- शान्ती पर्व (7) में सत्य बोलना ही सबसे बड़ी तपस्या है तथा परमधर्म है।व्यष्टि रूप सत्य आदर्श है(8) प्राणीमात्र के लिये हितकर वचन ही सत्य है किसी के हित के लिये बोला गया झूठ भी सत्य है(9) आदि पर्व (10) से ज्ञात होता है कि सत्य एवं धर्म का घनिष्ठ सम्बन्ध है। सत्य का महत्व 100 अश्वमेधो से भी बड़ा है। तथा सत्य सैसूर्य आलोक प्रदान करता है एवं ब्रम्ह प्राप्ति का साधान है सत्य द्वारा ही मिथ्या व्यक्ति पराजित होता है(11) झूठ को सत्य के आवरण में छिपाने से जो आत्म ग्लानि होती है वह नरक की यंत्रणा के समान होती है।

समष्टि रूप सत्य ही महासत्य है। सत्यवादी व्यक्तियों में श्री का निवास होता है।

परलोक :- रामायण (12) में हितकर वचन को परलोक के लिये हितकर माना है एवं दुखमय जीवन होने पर भी उसको नष्ट करना आसान कार्य नही है। राम को विश्वास था कि उनके पिता अवश्य ही स्वर्ग गये होंगे। रामायण(14) में स्पष्ट उल्लेख है कि पुण्यो का नाश होने पर व्यक्ति

1- 1/7
(2) अथर्व वेद 1/164/30,4/27/1
3- 2/105/140,2/60/6,6/64/9,
(4) 10/12/5/3
5- 4/1/5/16
(6) ऋग्वेद 3/9/9
7- 192/23
(8) अनु० पर्व 11/11
9- वन पर्व 208/4,212/31,82/16/17
10- 75/103,-196, अनु० पर्व 75/30
(11) उ० पर्व 33/58
12- 2/11/29,2/57/22
(13) रामा० 2/105/32
14- 2/105/24-7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जो पुनः स्वर्ग से वापिस आना पड़ता है। दुःख के बाद सुख अवश्य आता है अतः व्यक्ति को कष्टों को ही उत्साहपूर्ण झेलने चाहिये। आशावाद निराशावाद दोनों ही तत्वों का समन्वय विवेच्य क्षेत्र में मिलता है जीवन के प्रति आशा एवं उत्साह का होना स्वाभाविक ही होना चाहिये। आदर्श जीवन है जो एकांगी न होकर बहुमुखी है यह मानव अस्तित्व के आध्यात्मिक व्यवहारिक और भौतिक सभी पक्षों का यथोचित सेवन करे(1)।

आनन्द और उत्साह:- समस्त संसार माया की कृति है इस जीवन के कर्मों के अनुसार अगला जीवन निर्धारित होता है। सत कर्मों से व्यक्ति अच्छी योनि में जन्म तथा मोक्ष पद प्राप्त करता है उपनिषद आशावादी है तथा विश्व को आत्मोन्नति का कार्य क्षेत्र बताते है। गृहस्थ आश्रम में रहता हुआ मनुष्य सदाचार, स्वाध्याय और इन्द्री संयम द्वारा ब्रह्म लोक अथवा अमरत्व प्राप्त कर सकता है। जीवन और जगत आनन्द का समुन्द्र है आनन्द की तरंगों के बिखरे हुये कण प्रत्येक पदार्थ में व्याप्त है आनन्द से ही सब प्राणी उत्पन्न होते है तथा आनन्द के द्वारा ही सब जीवित रहते है। अन्त में आनन्द में ही लीन हो जाते है (2)। धीरे धीरे दुखी व्यक्ति भी मरने की कामना नहीं करता (3) क्यों कि वह आनन्द के उस कण का स्वाद होता है जिससे उसके व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है। उपनिषद मनुष्य को ललकारता है उठो ज्ञान का अर्जन करो।

भागवत धर्मः- यज्ञों से जटिल कर्मकाण्ड के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया तत्वचिन्तक मुनियों द्वारा शुरु हुई थी उसका एक महत्व पूर्ण परिणाम भागवत धर्म का प्रारम्भ था । इसकी पूजा का सर्वोत्तम उपाय भक्ति है और भक्ति के साथ साथ अपने कर्तव्यों को कुशलता के साथ करनेमें मनुष्य का कल्याण है इसके प्रधान प्रवर्तक वासुदेव कृष्ण जी है यज्ञों की उपयोगिता को स्वीकार करते हुये उसमें सर्वोपरि भक्ति की सत्ता , आत्मा की अमरता, कर्म मार्ग की उत्कृष्टता और हरि भक्ति की महिमा को प्रतिपादित किया गया। गीता भागवत धर्म का प्रधान ग्रन्थ है।भागवत धर्म का उद्देश्य वैदिक मर्यादा, प्राचीन परम्परा और याज्ञिक अनुष्ठानों कोकायम रखते हुये धर्म के ऐसे स्वरुप का प्रतिपादन करना था जो नैय चिन्तन के अनुरुप था । गीता की सम्मति में तपोयज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, आदि ही वास्तविक यज्ञ है। इसके अनुष्ठानो के लिये विधि विधानो की आवश्यकता नहीं ज्ञान प्राप्ति स्वाध्याय चरित्र शुद्धि और संयम द्वारा इस यज्ञ का अनुष्ठान होता है। अपने आचार विचार, धर्म , चेष्टादि को सुनियंत्रित और मर्यादित करके ही मनुष्य

1- 2/4/12-5 (2) तै० उ० 3/6

3- छान्दोग्य 2/16/7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने आचार विचार, धर्म, वेद आदि को सुनियोजित और मर्यादित करके ही मनुष्य दुःखों बच सकता है। वास्तव में हिन्दू धर्म समाज के सभी व्यक्तियों की (1) आवश्यकताओं के अनुरूप सभी धार्मिक रीतिरिवाजों को अपने अनुकूल समेटे हुये है। धर्म के अंचल में दर्शन का उदय हुआ है। धर्म तथा दर्शन का पूर्ण मय मिलन ही भारतीय विचारधारा की सबसे बड़ी विशेषता है ईश्वर अपने बच्चे के समान ही सबको प्यार करता है(2)।

अपने आराध्यदेव की उपासना में मग्न उपासक आनन्द में निमग्न हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि शिवेश्वर पुष्प ज्ञान का स्रोत, शान्ति का सागर है व शिव का साक्ष्य है ज्ञान कर्म एवं जीवन का आधार दीप है।

XXXXX

1- अनुवाद डी0एस0 शर्मा एण्ड कुमार टी0कु0 अंक0 भाग- 8 नं0 2 जुलाई 1984 पृ0 333-48

2- गैरोला वाचस्पति भारतीय संस्कृति और कला पृ0 140-144, हैव टैट आर0वी0 सन एसोसिएट यू आर्ट्स नेचर आफ रिलीजियस विजिल 1955 शिव भारती पत्रिका अंक 14 अंक 3 1973

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाजनपद काल की सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्थाः-

अध्याय - 5

वैदिक काल के उपरान्त ऐसे युग का प्रादुर्भाव होता है जिसमें सभी सामाजिक व्यवस्था एवं रीति रिवाजों को विधिवत रुप दिया गया। विवेच्य युग के इस अध्याय में यह देखने का प्रयास करेंगे कि सामाजिक एवं धर्मिक नियमों एवं परिसीमाओं की क्या महत्ता है।

सामाजिक संरचनाः-अष्टाध्यायी (1) से विदित होता ह कि स समय जाति शब्द का प्रचलन हो गया था तथा गौत्र एवं वर्णो का भी महत्व था। गोत्रों के प्रकरण में जो एक सहस्त्र नाम है उनका समाजिकरणअलग अलग जातियो के रुप में संगठित हो गया था(2) समाज में ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र चार वर्ण है। इन चारो वर्गों काविभाजन गुण कर्म माना गया। शील के द्वारा शूद्र एवं चांडाल भी परलोक प्राप्त कर सकता है(3)। मज्झिम निकाय(4) से विदित होता है कि मनुष्य में जन्म जात प्रधानता एवं हीनता नही होती।उत्तराध्ययन सूत्र(5) मेंसदाचार ही मनुष्य की स्थिति को निर्धारित करता है। ये वर्ग निम्नलिखित हैः-

ब्राह्मणः - जातक(6) में स्पष्ट निर्देश है कि सदाचरण से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता था सम्यक् आचार एक मात्र साधन है। जातकों (7) में ब्राह्मणो में मंत्राचारो के निरर्थक एवं कथनो को अन्धविश्वास पूर्ण बताया है तथा उनके यज्ञो के हिंसात्मक कुरूप बताया है। आप0सूत्र(8) में ब्राह्मण शब्द आध्यात्मिक गुण सम्पत्ति के लिये प्रयुक्त किया है और ब्राह्मण जन्म पर आश्रित जाति के लिए। आचार हीन ब्राह्मण ब्रह्मबन्धु कहलाते है। भिन्न भिन्न देशो मे बस जाने के कारण ब्राह्मणो के अलग अलग नामों की प्रथा चल पड़ी (9)। दस वर्षीय ब्राह्मण सौ वर्षीय क्षत्रिय से श्रेष्ठ है(10)। मनु(11) ने ब्राह्मण के लिये अलग अलग कर्मों की सृष्टि की है। संसार की समस्त सम्पत्ति पर ब्राह्मणो का अधिकार है।ब्राह्मणो को दंड नहींदिया जा सकता है(12) जब कि बोधिम (13) का कथन है कि विष तो केवल एक ही व्यक्ति को मारता है जब कि ब्राह्मण पौत्र तक को मार देता है।(14) मनु(15) ने ब्राह्मण को समस्त वर्णों एवं संसार का

1- पाणिनी 2/1/63, 4/1/63, (2) वही 4/1/99
3- आप0 1/1/1/5, विनय महावग्ग 6/25/8, जातक 3/104/5, 4/2-75
4- पृ0 151 (5) 25-29
6- जातक 1/206-6, 3/236/7, 4/299-310
7- जातक 3/24/-238, 6/206-8, 3/215, 238, 4/373, 1/343
8- 5/1/124, 5/4/105, (9) 5/4/105
10- आप0 धर्म सूत्र 1/4, 14-23 (11) मनु0 स्मृति 1/95
12-6/5, 11/5-6, 12/43
13- 10, 18/19, गौतम 22/27, वशिष्ठ धर्म सूत्र 17/94/87
14- 183/103, 9/3/7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वामी बताया है तथ गंभीर से गंभीर अपराधो मे भी अवध्य है। ब्राह्मण कर एवं दण्ड देने के योग्य नही है।(1) एक ही अपराध मे अन्य वर्गों के लिये कठोर दंड की व्यवस्था कीगई है। आप0 धर्म (2) मे स्पष्ट उल्लेख है कि दिव्य ब्राह्मणो को ही नियंत्रित करना चाहिए। मनु(3) ने ब्राह्मणो को आवश्यकतानुसार धन का उपार्जन करनेका निर्देश दिया है। आवश्यकता पड़ने पर वह शूद्र से भी धन ले सकता है।गौतम(4) तथा मनु(5) ने ब्राह्मणो मे तपस्वी सदाचरित्र एवं अध्ययन प्रवृत्ति को आवश्यक बताया है। गौतम (6) तथा बौधायन (7) ने आवश्यकता के समय किसी भी पेशे को अपनाने के लिए ब्राह्मण को निर्देश दिया है परन्तु मनु(8)एवं वशिष्ठ(9) के अनुसार अपने से ठीक जाति के वर्ण के पेशे को अपनाया जा सकता है। परन्तु वह शूद्रो के लिए यज्ञ नही कर सकता ।उच्च वर्ण के पेशे को अपनाना अधर्म है। सूत्रकारो (10) ने अधर्मो कोशूद्र मे संलग्न करने का निर्देश दिया है तथा वह निश्चित वस्तुओ का ही व्यापार कर सकता है, सुगन्धित द्रव्य एवं अच्छे वस्त्रो का नही। जातक(11) मे व्यवसाय के अनुसार ब्राह्मणो को चिकित्सक(जो चिकित्सा करते है) मैत्री एवं राजाके साथ परिचर्या करने वाले(परिचर्या) वर्णिक भिक्षा वृत्ति एवं धूल धूसर भिक्षावृत्ति वाले, पुरोहित, पशुपालक आदि अनेक कोटियां जो दीर्घ निकाय (12) मे भूमिधर कृषक, पशुपालक, शिल्पी, ज्योतिष आदि ब्राह्मणो की कोटियां थी।

1- आप0 2/10, 242, वशिष्ट धर्म सूत्र 1//44/16,मनु 7/31, 4/192-4

2- 2/6, 5/9-10

3- मनु 4/94/97

4- 7/6/7

5- मनुस्मृति 4/47

6- गौतम 7/22/24

7- बौधायन 1/1/120,वशिष्ट 3/24

8- 10/8/22

9- 2/22

10- आप0 धर्मसूत्र 1/1,28/7,मनु 10/15,बौधायन 2/4/20 गौतम 7/2/24 वशिष्ट3/1-2
मनु 2/168, ,गौतम 7/5/15, मनु 10/92

11- जातक 4/361

12- 1/4, पाण्डुरंग धर्मशास्त्र का इतिहास पृ0138

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जातको से ज्ञात होता है कि ब्राह्मण जादू टोने तथा क्रय विक्रय में विख्यात थे (1)।परन्तु वास्तव में ब्राह्मणो का सम्मान समाज मे उनकी विध्दता के कारण ही था(2)। पुरोहित राजा का सबसे बड़ा शुभ चिन्तक था(3)। जातको(4) में ब्राह्मणो के विशेष सम्मान का उल्लेख है। राजा ब्राह्मणो को प्रति दिन भोजन कराता था। जातो (5) से यह भी विदित होता है कि उनासक्त ब्राह्मण ही मोक्ष का अधिकारी था। समाज में ब्राह्मणो का सम्मानपूर्वक पद तथा महत्व था।

क्षत्रिय:-

ब्राह्मणो के उपरान्त समाज में क्षत्रियो का स्थान था। इस समय ब्राह्मण -क्षत्रिय विरोध काफी बढ़ गया था। दीर्घनिकाय(6) में क्षत्रियो को ब्राह्मणो से ऊंचा स्थान दिया गया है। स्वयं बुध्द जी ने कहा कि मै क्षत्रिय कुल मे जन्म लूंगा स्वयं काशी नरेश ने वेदो तथा शिल्पो की शिक्षा प्राप्त की थी ।जातक(7) में एक क्षत्रिय राजकुमार के 16 विधाओ के विध्दान होने का उल्लेख मिलता है। योग की 2 प्रमुख शाखाओ काप्रवर्तन 2 क्षत्रिय राजकुमारो ने किया (8)।मज्झिम निकाय(9) से विदित होता है कि क्षत्रियो का प्रमुख कार्य राजकीय होता है। तथा उनको रक्त शुध्दता का विशेष ध्यान था। अष्टाध्यायी(10) में पंचाल जनपद में अधिकतम निवास करने वाले एवं शासन तंत्र के संचालन में भाग लेने वाले अधिकारियो को क्षत्रि कहा है। मनुस्मृति(11) मे स्पष्ट कथन है कि ब्राह्मण की उन्नति से ही क्षत्रिय उन्नति कर सकते है। लोक धर्म की सुरक्षा राजा एवं ब्राह्मण दोनो मिलकर ही करते है(12)।सूत्रों (13) में ब्राह्मणो की महत्ता प्रतिपादित करने के लिए ही क्षत्रियो के यज्ञ दान पर विशेष जोर दिया गया । आवश्यकता पड़ने पर ब्राह्मण क्षत्रिय के विधाध्ययन भी कर सकता है। क्षत्रिय ज्ञान एवं शौर्य में श्रेष्ठ है।

1- जातक 5/12(44/207)/455, 33, 357, 2/247 'महाव्रत सोम जातम 5/47।
2- जातक 1/167,6/207,कात्यायन श्रौत 22/4/22 लाटायन श्रौत 8/6/28
3- जातक 1/343,3/45,4/79,335,2/211,282,1/289
4- जातक 1/334,305,2/46,6/554 उत्तर अध्ययन टीका 123, निशीद चूर्ण 93,जातक1/187
5- जातक 4/302 (6) मजूमदार आरसी0 'एन्सीएण्ट इंडिया पृ0 213
7- 2/297 (8) 3/158
9- 1/163 (10) 6/2/34,4/1/269
11- 2/166 (12) गौतम 21/6/10
13- गौतक 11/13, 10/48/45,10/1/3,7/50 आप0 6/11,1/2,11/30 शांख्यायन 15/13-14,कात्यायन 12/1 ,1/12,आप 9/3/4,23,9/1/8/1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैश्यः- बोध्द साहित्य (1) मैं गृहस्थ शब्द का प्रयोग वैश्यो के लिये किया गया है। महाबग्ग(2) मैं भी क्षत्रिय परिषद तथा ब्राह्मण परिषद के साथ वैश्य परिषद का भी उल्लेख हुआ है। संयुक्त निकाय मैं महासाल, ब्राह्मण महासाल का उल्लेख है उसे से स्पष्ट है कि गृहपति का प्रयोग तृतीय स्थान पर हुआ है। जातक (3) से ज्ञात होता है कि राज्याभिषेक के अवसर पर वैश्य भी उपस्थित रहते थे। उनके लिये 'कुटुम्बिक' शब्द का प्रयोग हुआ है(4)। जातको (5) मैं सेट्ठि शब्द का प्रयोग वैश्यो के लिए किया गया है। वैश्यो का प्रमुख कार्य कृषि था एवं पशुधन के अलावा अपार सम्पदा का मालिक था। जातको (6) मैं वैश्यो का विदेशी व्यापार का भी उल्लेख है। वैश्य भी आवश्यकता पड़ने पर अपने से नीचे वर्ग के व्यवसाय को अपना सकता था(7) वैश्य विद्यार्थियो का उल्लेख भी जातको (8) मे मिलता है। वैश्य सन्यास भी धारण कर सकते है। (9) वैश्य शूद्र से उचे है(10) तथा समाज के उत्थान मैं आर्थिक सहयोग इन्ही पर आधारित है।

शूद्रः- शूद्रो का समाज मैं निम्नतम स्थान था। सूत्रो (11) से ज्ञात होता है कि अपने जीवकोपार्जन के लिये द्विजातियों की कृपा पर आधारित रहता था उन्ही के दिये वर्तनो तथा कपड़ो का प्रयोग करता था तथा द्विजातियो की सेवा करना ही शूद्र का कर्तव्य था एवं आवश्यकता पड़ने पर अपने संचित धन से अपने स्वामी की सहायता भी करता था। सूत्रो (12) मैं उल्लेख है कि शूद्रो को मारने मैं कोई पाप नही है। मनु(13) से विदित होता है कि ब्रह्मा ने सवर्णो की सेवा करने के लिए बनाया है। शूद्र परम पुरुष के पैरो से उत्पन्न हुए है। शूद्रो को वेद सुनने से कानो मैं गरम लावा डलवाना पड़ता था।

1- जातक 1/217 (2) 9/28/4

3- जातक 3/408/ 1/70 (4) महाबग्ग 1/12/3, जातक 2/267 (5) जातक 1/269, 349, जातक 4/83

6- जातक 207, 1/114, 4/370, 2/367, आवषक चूर्ण पृ0 40

7- जातक 3/21, 4/446, गौतम धर्म 26

8- जातक 4/37, 2/186, 3/475, 2/475, आप0 2/2/4, 25-28, मनु0 10/1/2/141

9- जातक 1/290, 2/302, 4/251, 291

10- बौधायन 110/19/1-6, वसिष्ट 4-3

11- गौतम 10/57, 10/69, बौधायन 2/1/59, आप0 1/9/27, गौतम 10/58, 10/59,-59 10/62, 10/64-65

12- आप0 1/1/115

13- 1/94, 8/4/13, 107/124, 104/129

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेद मंत्र का उच्चयरण करने से जीभ काट ली जाती थी (1)।आपधे० (2) शूद्रो को उपनयन संस्कार कराने पर , वसिष्ट(3) में शूद्रो के वेदाध्ययन पर मनु जेमिनी(4) में अग्निहोत्र करने पर प्रतीवन्ध लगाया गया है विवाह के समय में ही ब्राह्मणो को दान देने का उल्लेख आप० (5) करता है।आर्यों ने शूद्रो को निम्नतम स्थान समाज मे दिया और फिर भी वह उनकी संस्कृती की पूर्ण रुपेण उपेक्षा न कर सके । गौतम आप० एवं मनुस्मृति (6) से विदित होता है कि कुछ अनार्य ऐसे भी थे जो आर्यों के समान भद्र पुरुष समझे जाते थे तथा उन्हे दान देने तथा भजन करने का अधिकार था। मनुस्मृति(7) में शूद्रो के यहां नामकरण का भी उल्लेख मिलता है। कट्टर पंथी वोधायन ने (8) शूद्रो को कुछसामाजिक सुविधाये प्रदान करी। शूद्रो के अलावा वर्णसंकर जातियां निम्न थी :-

अम्बष्ट(9) यह ब्राह्मण पुरुष तथा वैश्य स्त्री की संतान थी ।गौतक (10) इसको क्षत्रिय पिता तथा वैश्य माता की संतान मानते है।

आयोगत(1) शूद्र पुरुष तथा वेश्य स्त्री की संतान।

उग्र (12):- वैश्य पिता तथा शूद्र माता की संतान।

करण:- (13):- मनु(14) ने व्रात्य क्षत्रिय कहा है।

क्षत(15):5 शूद्र पुरुष तथा क्षत्रिय स्त्री की संतान है।

चैंडाल(16):- शूद्र पुरुष तथा ब्राह्मण स्त्री की संतान है।

निषाद (17):- ब्राह्मण पुरुष तथा शूद्र स्त्री की सैतान।

मागध(18):- यह वैश्य पुरुष तथा ब्राह्मण स्त्री की संतान।परन्तु वोधायन (19) शूद्र वैश्य की संतन मानतेहै।

1- मनु 11/131
(2) 16/11/12
3- 8/11/12
(4) जेमिनी 6/1/25-36 मनु० 4/80
5-1/2/7, 20-21
(6)गौतम धर्मसूत्र 11/20,आप० 2/3/6,1/2/128 मनु 3/15/8, 177/9/86
7- 2/28 8
(8) 1/9/3
9 - आप० 10/8
(10) गौतम 4/14
11- वही 4/15
(2) वही 3/34
13- वही 4/17
(14)मनुस्मृति 10/22
15- वोधायन 1/9/7
(16) गौतम 4/ 15-16
17- वही 4/4
(18) वही 4/15, मनु 10/11/17
19/ 1/9/7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुम्भकार (1) कर्मार (2) रजक(3) नट(4) गन्धर्व(5) केवर्ण(6) आदि जातियो का उल्लेख जातको में मिलता है।

शुद्र अपने कर्म के कारण सदा से ही उपेक्षित रहा । शूद्रो को सदा से हीअवकुंठित रुप में पाते है। ये शूद्रनिम्न है :-

चाण्डाल:- समाज में इनका स्थान निम्न समझा जाता था। छाया का भी स्पर्श नही किया जा सकता था। जातको(7) से ज्ञात होता है कि चाण्डालो का कार्य शवदहन मकान मरम्मत तथा वेणुवादक था।

पुक्कस:- जातको (8) में इनका वर्णन चाण्डालो के साथ हुआ है।

निषाद:- बौध्द साहित्य (9) में इनके पशु पक्षी मारना पकड़ना आदि व्यवसाय का वर्णन नहै।

वेण :- (10) इनकी जाति भी निन्दनीय समझी जाती है।

उपरोक्त जातियों के अलावा रथकार(11) नलकार(12)) नाविक(13) की भी उल्लेख मिलता है।

इस समय प्राचीन जाति व्यवस्था आदर्श मात्र रह गई थी। बौद्धो की समाजिक व्यवस्था ऐसी न थी जिसमें वर्ण शंकर समिष्ट हो सके जब कि उनका उद्देश्य जाति व्यवस्था की संकुचित दीवारों को तोड़ना था। ब्राम्हण व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु वर्ण ही था जिसके अन्दर वर्ण शंकर समा सकता था। धर्म सूत्र(14) तथा मनुस्मृति(15) में रथकार, वैदेहक सूत्र पौल्कस, मेद, मैत्रेयक, एवं वेण आदि जातियों का उल्लेख हुआ है। ब्राम्हणों के श्रेष्ठता तथा शूद्रों की निम्नता समाज में स्वीकृत हो चुकी थी(16) जाति में परिवर्तन कठिन हो गया था(17) जाति के नियमों का उलंघन करने पर समाज से स्थायी अस्थायी रुप से वहिष्कृत कभी-कभी मृत्युदण्ड भी दिया जाता था।(18) अष्टाध्यायी(19) में महाशूद्रक जाति का भी उल्लेख मिलता है।

---

(1) जातक 5/296 (2) 6/372 अथर्व वेद 3/5/6
(3) जातक 6/273 गाथा 1197, 3/541,, उत्तराअध्यायन टीका 12/1, 74/18/250, व्याहार भाष्य 3/94
(4) जातक 3/62, 4/324, 6/91, 2/167
(5) जातक 2/249,3/188,5/417,2/325,4/258,1/183
(6) जातक 4/391-82,2/82,4/376-390,5/459,4/391,3/214,व्याहारभाष्य2/37
(7) जातक 5/620,2/132,3/94,4/384
(9) 5 4/4222/36,4/422,2/306 (10) बौधायन 1/9/12 (11)बौधायन 1/98
(12) जातक 1/290,2/391,4/251,6/314,4/251,1/356,अवदान2/359
(13) जातक 3/352
(14) बौधयन 1/8/7,1/8/9,1/9/14,1/9/113,1/9/8, गौतम 4/12
(15) मनु स्मृति 10/47,10/18,10/49
(16) पाण्डे विमल चन्द्र वही० पृ० 186 (17) पाण्डे राजबली 'प्राचीन भारत पृ० 84
(18) वासम एल०एम० 'अद्भुत भारत' पृ० 122
(19) 9/3/64,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतः स्पष्ट है कि जाति व्यवस्था का स्वरूप अपेक्षाकृत स्थायी हो गया था। जाति तथा उपजातियों का विकास हो गया था।

आश्रम :- ब्रम्हचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास चारों आश्रम निसन्देह हिन्दू तत्व की प्रधान विषेशता है। बौध्द तथा जैन साहित्य में गृहस्थ आश्रम की अपेक्षा सन्यास आश्रम को प्रमुख स्थान दिया गया है। महावग्ग (1) से विदित होता है कि बहुत से व्यक्ति संघ में इसलिये सम्मिलित हुये ताकि वह जनता के दान से संचालित संघ में सुखपूर्वक रह सके एवं राजा के दंड से बच सके(2)। अतः बुध्द जी ने कुछ प्रतिबन्ध लगा दिये (3) महावग्ग(4) से ज्ञात होता है कि गृहस्थआश्रम में प्रवेश के उपरान्त माता की आज्ञा से ही संघ में ही प्रवेश मिल सकता है अतः ब्राम्हण व्यवस्था कारों के सामने नतमस्तक होना पडा क्योंकि एकमात्र संसार त्यागी व्यक्ति से धर्म नही चलाया जा सकता है(5)। पाणिनी(6) ने ब्रह्मचर्य तथा ब्रह्मचारी दोनो शब्दों का उल्लेख किया है। इन चारो आश्रमों का महत्व प्रतिपादित किया गया है(7अ)। विवेच्ययुग में आश्रम प्रणाली में सुसंगठित रूप ले लिया ये आश्रम ज्ञान वर्धन एवं गंभीर साहित्य के निर्माण में उसी प्रकार श्रेष्ठसाधन थे जिस प्रकार यूरोप के मध्यकाल में बडे-बडे गिरजाघर थे। यही हमारे दर्शन आचार शास्त्र, धर्मशास्त्र तथा साहित्य के अनेकों भागों का निर्माण हुआ (7ब)।

ब्रह्मचर्य आश्रम :- चरित्राता एवं पवित्रता एवं कर्तव्य पालन का पाठ यही से प्रारम्भ होता था। मनु (8) ने यज्ञोपवीत की अन्तिम सीमा ब्राह्मण की 16 वर्ष, क्षत्रिय की 22 वर्ष वैश्यों की 24 वर्ष माना है। पाणिनी (9) ने वर्ण शब्द का प्रयोग ब्रम्हचारी के लिये किया गया है। आ आचार्य ही विद्यार्थियों को अपने समीप लाकर उपनयन करता है। बौधायन (10) से विदित होता है कि शूद्रों को छोडकर शेष तीनों जातियों को ब्रम्हचर्य आश्रम में प्रवेश का अधिकार था। य अश्वलायन(11) अधिकार स्त्रियों को भी देता है। गोभिलगृह्यसूत्र(12) में विवाह से समय स्त्रियों भी यज्ञोपवीत धारण किये जाने का उल्लेख है। ब्रम्हचारी(13) दो प्रकार के थे। प्रथम उपकुर्वा

1- 1/24/1/12 (2) मिलिंद प्रश्नोत्तर 32 (3) महावग्ग 1/50

4- 1/41,42,44,46,64-65,386 (5) मजूमदार एन्सियेन्ट इण्डिया पृ0 214

6- अष्टाध्यायी 5/2/134,4/4/90,

7- वही 5/2/134,4/4/80,3/2/168,6/11/54, गौतम 3/2अ आप0 2/9/21। वशिष्ठ 7/1-2, अग्रवाल वासुदेव शरण 'प्राचीन कालीन भारत' पृ0 98 पाण्डे विमल चन्द्र 'भारतीय सामाजिक चिन्तन पृ0 43

8- मनु0 2/49 (9) अष्टाध्यायी 5/2/134 (10) 2/9/1/22/

11- 3/8/11 (12) 2/1/18 (13) मजूमदार 'एन्सियेन्ट इण्डिया' पृ0 19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे जो गुरुदक्षिणा देकर लौट जाते थे। दूसरे नैष्ठिक थे जो जीवन पर्यन्त गुरु चरणों में बैठकर विद्याध्ययन करते थे। ब्रम्हचारीके उत्तरीयतथा वास दो प्रकार के वस्त्रों के उल्लेख अश्व,वशिष्ठ, बौधायन में मिलता है।(1) अश्व(2) गौतक(3) बौधायन(4) आप0(5ए) वशिष्ठ(5बी) से विदित होता है कि क्षत्रिय वैश्यों के लिये विभिन्न वस्त्रों मेखला तथा दंड की व्यवस्था की गई है। मनुस्मृति (6) में ब्रम्हचारी के माता-पिता से भिक्षा माँगने का उल्लेख मिलता है। हितकर अन्न को आयु के लिये पूर्व की ओर यश के लिये दक्षिण की ओर धन के लिये पश्चिम की ओर तथा शेष के लिये उत्तर की ओर मुँह करके भोजन करना चाहिये। ब्रम्हचारी को दिन में दो बार भोजने करना चाहिये। अश्व तथा गौतम(7) से विदित होता है कि ब्रम्हचारी विद्यार्थी को निराश करने वाल व्यक्ति महापातक समझा जाता थातथाविद्यार्थी ब्रम्हचारी को अनेकनियमों तथा साधनों का पालन करना पडता था। मनु0(8) ने माँस, मदिरा, मधु, संगीत, एवं विलासिता पूर्ण साम्रग्री का निषेद किया है तथा उनकोहिंसा का परित्याग कर गुरु सेवा करनी चाहिये तथाआदेश पालन करना चाहिये। विवेच्यसाहि0(9) से विदित होता है कि ब्राम्हण 8 वर्ष में क्षत्रिय का दस वर्ष में दीक्षा संस्कार होना चाहिये। भौतिक जीवन की अपेक्षा आध्यात्मिक जीवन को महत्ता प्रदान करना ही उनका प्रमुख कर्तव्य था।

गृहस्थाश्रम :- मनु0(10) ग्रहस्थाश्रम को प्रमुख स्थान दिया है। परमार्थ के लिये गृहस्थाश्रम बाधक नही है अन्य आश्रम गृहस्थाश्रम पर ही अवलम्बित है। मनुस्मृति(11) में स्पष्ट उल्लेख है गृहस्थ को बिना कष्ट उठाये धन संचय करना चाहिये। गृहस्थ ही श्राद, हवन,अग्निहोत्र,यज्ञ आदिधार्मिक कार्यों को सम्पन्न कर प्राणिमात्र देवता पूर्वजों एवं भूतों को संतुष्ट करता है।(12)

1- अश्व । 1/19/8,बौधायन 2/5/16, वशिष्ठ 11/61/63
2- 1/8 19/11 (3) 1/15,1/22/23 (4) 2/15/13,
5- 1/2/39-41 (6) 2/50,2/51,2/18, (7) 1/22/3 गौतम 10 108/76, 5/16
8- 2/179,191,194 (9) गौतम 3/1/35, ~~अश्व~~ बौधायन 2/6/29,आप। 2/9/21, मनु0 3/77
10- मनु0 2/201 (11) 4/43 ~~4/22~~ (12) 3/80-342 आप। 1/3/19,
अश्व । 9/3/48 गोभिल 3/21, बौधायन 2/3/68,2/9/21 आप। 2/4/9/5-6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनुस्मृति(1) में रति आनन्द, पुत्र प्राप्ति एवं धर्म की उन्नति हेतु गृहस्थाश्रम को प्रमुख स्थान दिया गया है। गृहस्थाश्रम ही प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करता हुआ लोकर कल्याणमयी एवं मंगलमयी बन्दनवार बांधता हुआ बानप्रस्थाश्रम में प्रवेश की तैयारी करता है।

वानप्रस्थाश्रम :- ब्रम्हचारी एवं गृहस्थाश्रम के उपरान्त व्यक्ति वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता है(2) परिवार का दायित्व पुत्र के कन्धों पर रख दिया जाता था। मनु0(3) ने वन में जितेन्द्रीय होकर संयम जीवन व्यतीत करने का आदेश दिया। वशिष्ठ(4) ने सीधे ब्रम्हचर्य से वानप्रस्थ की अनुमति दी है। गौतम (5) ने वैखानस शब्द का प्रयोग वानप्रस्थ के लिये किया है। गौतम(6) तथा आप0(7) में स्पष्ट उल्लेख है कि व्यक्ति को इस अवधि में क्रोध, मोह का परित्याग कर समस्त उपनिषद, वेद, धर्मशास्त्र तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये ।

सन्यासाश्रम :- इस समय व्यक्ति पूर्ण विरक्त जीवन व्यतीत करता था~~(8) मनुस्मृति(9)~~ ब्रम्हचरी, अहिंसावृत्ति, सत्यनिष्ठ, क्रोधहीन, एवं क्षमाशील होता था(8) मनुस्मृति(9) से विदित होता है कि मोहरहित होकर व्यक्ति ईश्वर के ध्यान में मग्न रहता था तथा मन, वचन, से पवित्र होकर गर्मी, वर्षा तथा जाडे को सहन करता हुआ लोभ, क्रोध मोह से दूर रहकर संसार के कल्याण हित की प्रार्थना करता हुआ धैर्य पूर्वक मृत्यु की कामना करता था। भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति हेतु आश्रम व्यवस्था अनिवार्य थी ।

परिवार :- परिवार एक महत्वपूर्ण इकाई थी। अष्टाध्यायी(10) से विदित होता है कि संयुक्त परिवार में पित-माता, पितामह सम्मिलित थे। परिवार की संज्ञा कुल थी। अष्टाध्यायी (11) से विदित होता है कि मैं विस्तृत रूप से हुआ है।

1- 3/67 (2) मनुस्मृति 10/32,8/2 (3) '8/14
(4) 7/3,3/58 (5) 3/2 (6) वही
7- 2/9/81,12/9/217 (8) गौतम 3/11,5/23
9- 8/43,6/46-8, 7/37 (10) 4/2/139,42/96, राधकुमुद 'हिन्दू सभ्यता' पृ0 287 (11) 4/1/163,5/2/119

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिवार के श्रेष्ठ पुरुष के सिर पर पगड़ी बांधी जाती थी। पुत्र प्राप्ति से सुखी सम्पन्न पति-पत्नी सुप्रजा(1)तथा बहुप्रजा(2) कहलाते थे। माता,पिता, भ्राता, स्वजा, पुत्र पौत्र, भातक आदि पारिवारिक सम्बन्ध थे।(3) अष्टाध्यायी(4) से विदित होता है कि परिवार के सदस्य के अलावा मित्र, सुहृद भी परिवार में सम्मिलित थे। बड़ा भाई गार्गी की पदवी धारण करता तो छोटा भाई गार्ग्यायन कहे जाते। पाणिनी ने स्पष्ट लिखा है कि पंचायत में चाचा सम्मिलित तो भतीजा ''गार्ग्यायण'' होने के कारण घर में रहता। पिताके जीवित रहते पुत्र का गार्ग्य बन जाना अच्छा नहीं समझा जाता है। गौतम(4) से विदित होता है कि सम्पत्ति का बटवारा पिता के जीवित रहते हुए अथवा मृत्यु के उपरान्त दोनों रूपों में होता था। ब्राह्मण व्यवस्थाकारों ने गृह को स्वर्ग कहा परन्तु जैन तथा बौद्ध धर्म में दुखों का मूल कहा गया है। फिर भी उनको गृहस्थम आश्रम को महत्व देना था। परिवार के प्रत्येक सदस्य के अपने अपने कर्तव्य एवं अधिकार निश्चित हुए उन्हीं निश्चित नियमों में बंधा परिवार रूपी नैया आज भी अविरल गति से प्रवाहित होती जा रही है।

<u>संस्कार</u> :- इस समय संस्कार मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास के साधन माने गये थे। गौतम(6) से 40 संस्कारों का वर्णन किया है। गौतम गृह्यसूत्र(7) आश्व तथा आप० से विदित होता है कि यह संस्कार केवल द्विजातियों के लिए ही थे स्त्रियों के संस्कार विवाह को छोड़कर मंत्र हीन होते थे।

प्रमुख संस्कार निम्न है :-

<u>गर्भाधान संस्कार</u> :- इस संस्कार का वर्णन गृह्यसूत्रों(9) एवं स्मृतियों में (10)

1- अष्टाध्यायी 5/4/122, (2) वही 5/4/123

3- वही 1/5/7,4/2/36,4/1/164, 1/2/68,5/1/20,4/1/144

4- 5/1/126,4/2/150,4/1/184 (5) गौतम 15/19,18/4 आप० 2/1/4

6- 8/3 (7) 8/4/24

8- 1/15/12,1/16/61 (9) बौधायन 1/7, पा० गृह्यसूत्र 1/2/8,1/11/7

10- मनुस्मृति 3/2,3/45,2/16 याज्ञवल्क्य स्मृति 1/79,1/20

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुंसवन(1) सीमन्तोन्नयन(2) जातकर्म(3) नामकरण(4) निष्क्रमण(5) अन्नप्राशन(6) चूडाकरण(7) कर्णवेध संस्कार एवं विद्या प्रवेश संस्कार एवं उपनयन संस्कार(8) समावर्तन संस्कार(9) विवाह संस्कार(10) अन्त्येष्टि संस्कार(11) का वर्णन प्रयुक्त: हुआ है। वे सभी संस्कार बल वीर्य, प्रभुता, विद्या, दीर्घायु एवं वैभव को देने वाले है।

विवाह :- जातक में (12) स्त्री को आध्यात्मिक उत्थान में बाधक बताया है। उत्तराध्ययन (13) में टीका में उल्लेख है कि स्त्री से उदासीन रहने पर ही व्यक्ति अपने कर्तव्यों को पूर्ण कर सकता है। धार्मिक सूत्र(14) से विदित होता है कि विवाहित जीवन प्रज्वलित आग के समान है। मोक्षप्राप्ति के लिये विवाह अनिवार्य नही माना गया दूसरी ओर संयुक्त निकाय(15) में स्त्री सर्वश्रेष्ठ सखा है। मिलीन्दपनोह(16) में पतिहीन स्त्री निन्दनीय समझी जाती थी। अनेकों विरोधों के बावजूद विवाह होते रहे (17) तथा विवाह को अनिवार्य माना गया।

1- पार। गृह्सूत्र 1/14/23, बौधायन 1/9/1, याज्ञ स्मृति 1/14/3 शाख्य 12/1

2- बौधायन 1/10/7, 21/10/1, आप। गृह्सूत्र 1/14/1, आप। 14/1, 1/14, बौधायन 1/10/8, पा0 1/12/1, 1/15/4, याज्ञस्मृति 3/89

3- पा0 16/14, 16/6, 16, 1/17/3, हिरण्य गृह्सूत्र 2/2/8 गोभिल 17/2/7

4- पा0 गृह्सूत्र 1/17/3, बौधायन 1/1/5/9, आप्त। 14/14 हिरण्यक। 2/2/8 मनुस्मृति 2/3/2-3

5- मनु0 1/134 (6) मनु0 2/34, याज्ञस्मृति 1/12, आप0। गृह्सूत्र 1/16, 12/7, पार। 1/19/4, शाख्य। ~~42/~~= 1/28, 301/17

7- पा0 2/2 गोभिल 2/9 आप0 13/2, 1/17, बौधायन 2/4

8- याज्ञ। स्मृति 1/15, 1/11, मनुस्मृति 1/15, 2/34, 2/26, पा0 गृह्सूत्र 2/2, 2/5/2, गोभिल 2/2, 10: 1/6, 1/17/18, शंख। 2/4

9- मनुस्मृति 2/47, 242, 247 याज्ञ। स्मृति 1/49 पार0 2/5/28, 2/1/8, 2/8/13, 2/2/17, 18, 2/3, 2/3/2, शाख्य। 1/21/5 आ0 गृह्सूत्र 1/19/10, 1/1[illegible] गोभिल /26

10- 1/128 (11) बौधायन 3/1, 1/1, आ0 गृह्सूत्र 4/2-4, मनु0 3/10, याज्ञ स्मृति 3/20, आप्त। 3/10/8, 1/4/3

12- जातक 1/128 (13) 2/16/17 (14) 21

15- भाग - 2 पृ0 37 (16) 46/2/2

17- गोभिल 3/5/22, आ0 3/98, आ0 2/6/13, 16/17, जैमिनी 6/1/17 अष्टाध्यायी 1/2/16

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)

विवाह के यम नियमः- निरुक्त से विदित होता है कि कन्या 3 वर्ष छोटी होनी चाहिये।पुत्रहीन पिता अपनी कन्या का विवाह का इसी शर्त पर वर से करता है कि कन्या का पुत्र अपने पिता का नही कर उसका पिंड दान करे।लघु की प्रियता, अप्रियता बर की रुचिकर निर्भर थी। जातको (2) मे कन्या के सर्व प्रथम गुण सदाचार है तथा उसमे गुण का समावेश होना अनिवार्य था।कन्या को ढूढने भेजा जाता था तथा कन्या के लक्षण परिक्षिण की प्रथा थी ।

सपिण्ड विवाहः- गौतक(3) तथा विसिष्ठ(4) ने पिता के पक्ष में 7 पीढ़ियो तक तथा माता के सम्बन्ध मे 5 पीढ़ियो तक सपिण्ड सम्बन्धो का उल्लेख मिलता है। सपियड विवाह वर्जित था। बर रक्त शुध्द के लिए 10 पीढ़ियो तक रक्त शुध्द होने चाहिए। कन्या के समान बर के कुल शील , विधा, ब्रह्मचर्य स्वास्थय वर विशेष ध्यान दिया जाता था।

संगोत्र विवाहः- संगोत्र विवाह वर्जित माने जाते है । विवाह सूत्र मे बंधने वाले गोत्रो केनाम का जोड़ा एक साथ बोला जाता था।(5)।

अर्न्तजातीय विवाहः- आपस्त के अनुसार विवाह निषेद थे । परन्तु गोतम(6)बोधायन(7) मानव गृ (8) वसिष्ठ(9)मे अन्तर्जातीय विवाहो का उल्लेख मिलता है। क्षत्रिय को रक्त शुध्दता को पवित्र समझा जाता थ(10) शूद्रा स्त्री से विवाहित ब्राह्मण को श्राध्द के समय आमंत्रित नही किया जाता था।(11) दीर्घनिकाय(12) से विदित होता है कि ब्राह्मण, क्षत्रि, विवाह शलाघ्य नही समझे जाते थे ।

प्रतिलोम विवाहः- नाया धम्म (13) कहीं से विदित होता है कि राजवंशीय मेघ कुमार

1- 3/4
2- जातक 2/138, 4/33, 1/29, 3/122, 150, 5/211 , गोभिल 34/5, आप0 5/1 /16, बोधायन 4/1/20, आप0 1/3/2, जातक 1/199, 2/93, 4/255, 3/93
3- 4/1 (4) 8/1, मानवगृह्सूत्र 1/7/8
5- गौतक4/2,वसिष्ट 8/1, जातक 4/328
6- 4/1 (7) 2/2/19
8- 1/7/8, पाण्डेय राजबली प्राचीन भारत पृ0 123
9- 1/24/27 1/24/27
10- जातक 5/257
11- गौतक 4/15/8
12- 2/124
13-1/23

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का विवाह समान वय सुन्दरगुणवान 8 कन्याओं के साथ हुआ था। उत्तराध्ययन टीका(1) के उल्लेख है कि राजवंशीय ब्रह्मदत्त ने ब्राह्मण कन्या के साथ चित्रसूत्र(2ए) ने चित्रकार कन्या के साथ विवाह किया था। सभी प्रतिलोम सन्तान धर्म हीन होती थी (2बी)। अनुलोम जातियो को तो द्विजो के संस्कार के अधिकार है परन्तु प्रतिलोम जातियां शूद्र समाज होने का कारण इन अधिकारो से वंचित थी।

विवाह के प्रकारः- ब्रह्म विवाह(3) देव विवाह (4) आर्ष विवाह(5) प्रजापत्य विवाह(6) गान्धर्व (7) असुर(8) राक्षस विवाह (9) पैशाच विवाह(10) का वर्ण व्यवस्थाकारो ने किया है।

स्वयंबरः- जातक (11) तथा नायधम्मकहा(12) से विदित होता है कि विवेच्य युग में स्वयंबर प्रथा का प्रचलन थां। ब्रह्म विवाह सर्व श्रेष्ठ समझा जाता था।

समाज में नारी :- समाज में स्त्रियों का महत्वपूर्ण स्थान था।जातक तीन(13) से ज्ञात होता है कि पुत्र तथा पुत्री में कोई भेद नही समझा जाता थां। स्वयं महात्मा बुध्द भी पुत्री को पुत्र से श्रेष्ठ बताते है।(14) पुत्रहीन व्यक्ति भी तीर्थ कर पद प्राप्त कर चुके है।(15) परन्तु वास्तव में नारी पुरुष की सम्पत्ति है।(16ए) बालपन में पुत्री माता पिता के संरक्षण में रहती थी नारी अव्यवस्थित बुध्दि की है।(16बी)।

भार्या के रुप में उसकी प्रशंसा सर्वत्र की गई है। संयुक्त निकाय(17) के अनुसार नारी पुरुष की सखा है जातक पांच में उल्लिखित है कि पति की अनन्य सेवा करती है। कौशल देवी ने अपने पुत्र द्वारा पति की हत्या सुनकर अपने प्राणो का बलिदान कर दिया।

1- 1/23 (2ए)9/141 (2बी) गौतम 4/20

3- अनुसूचीय जातक 2/93,286,4/316,दीर्घनिकाय 1/11, नायाधम्म कहा 16/168,मनु 3/27,याज्ञ0 1/61 वोधायन 1/11, आप0 2/6,13/10-11

4- वोधायन 11/5,मनु3/53, (5) आप0 1/6,मनु3/29,याज्ञ0 1/61 मनु3/54,वोधायन 1/11, आप0 2/6

6- मनु 3/30,3/51,54,-55, 10/98, 1/61, मानवगृह्यसूत्र 1/7/8 गोतक 1/4/5

7- उत्राध्ययन टीका 8/141,मनु 8/22',3/22,वोधायन 1/11,13/7

8- जातक 4/272,जेमिनी 8/1/15,वशिष्ट 1/37,वोधायन 1/11/20-1 मनु 9/98

9- जातक 1/297,5/425,वोधायन 4/1/17

10, मनु 3/24,8/366,6/26,याज्ञ0 2/287,288, वोधायन 1/11/10

11- जातक 1/205-6, (12) 11/169-92 (13) 3/521

14- संयुक्त निकाय 3/2/6, थेरी गाथा 33 (15) भद्रवाहु संहिता 7/9

16ए- महावग्ग 7 (16बी) मनु 9/3,8/77-98

17- भाग 2 पृ0 37

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दीर्घ निकाय से विदित होता है कि स्त्री की गणना चक्रवर्ती के ~~14 रत्नो के~~ 14 रत्नो में की गई है। सुजाता, अम्बरा, उभय, मुद्रा, कोशल देवीमल्लि, साधना, राजश्री, जयन्ती, अज्ज चन्दना आदि जैसी उत्साही वीर, तिर्थंकर भिक्षुणी एवं विद्वान महिलाओ ने नये कीर्तिमान समाज एवं धर्म के क्षेत्र में स्थापित किये (1)।
अष्टाध्यायी(2) में नव विवाहित के लिये सुमंगली शब्द का प्रयोग हुआ है।युवती स्त्री के पति को 'युवाजीनि' और वृध्दाजनि कहा गया है। अच्छी शील वाली माता का पुत्र 'भद्र मातुर' कहलाता था।अकारण पत्नी को त्यागने वाले पुरुष की निन्दा की गई है। जातकों (3) से विदित होता है कि माता का विशेष सम्मान था तथ मां की रक्षा हेतु अपने प्राणो की भी चिन्ता नही करनी चाहिए। क्यों कि माता के अभाव मे पिता भी अपना नही होता। गृह्सूत्रों(4) मे माता का स्थान आचार्य से भी ऊँचा निर्धारित किया है। पतित होने पर पिता का त्याग किया जा सकता है परन्तु माता का नही।

एक तरफ नारी को महिमामय एवं वैभव मय कहकर पुकारा है तो दूसरी तरफ नारी को पुरुष की सम्पत्ति महावग्ग(5) में बताया गया है। नारी की अस्थिरता जल में मछली के समान है। जातकों (6) में तो नारी को अविश्वसनीय बताया गया है तथा वह किसी भी पुरुष के साथ व्यभिचार कर सकती है एवं वह धार्मिक उत्थान में मल समान है। नारी में सत्य दुर्लभ है एवं वह नीच प्रकृति की है। मिलिन्द पन्होह(7) में उसे स्वर्ण जड़ित कटार बताया गया है। किसी भी अवस्थान में उसको स्वतंत्रता नही दी जानी चाहिए।(8)दंसवेयालिया सूत्रों में (9) उल्लेख है कि प्रेम में वह पुरुष की हत्या कर डालती है। गौतक (10) तथा वसिष्ट (11)

1- नायाधम्म कहा 8, कल्पसूत्र 5/135,भगवती सूत्र 12/2, अष्टाध्यायी 4/1/49,6/2/66
2- 4/1/30,5/4/134, 4/1/125 (3) जातक 137, 6/587
4- गोतम 2/51, आपo 1/10,/28-9 (5) 7
6- सुत्त बग्ग 18/21 (7) 4/18
(8) वही 6/232, मनु 2/213 (9) 88/91
10- 18/11
11- 5/1, वियोगी मोहन लाल वही पृ0 170

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा मनुस्मृति एवं वसिष्ठ(1) में उल्लेख है कि वह पुरुष पर निर्भर है तथा धार्मिक कार्यों के लिए स्वतंत्र नही है। कुमारीअवस्था में उत्पन्न पुत्र को 'कामीन' कहा जाता था जिस स्त्री का सम्बन्ध माता पिता करे वह 'वूध्या' तथा जो स्त्री अपने पति का स्वयं चुनाव करे ' वह पतिवश, कहलाती थी(2)।समाज में नारी का महत्वपूर्ण स्थान था। सामाजिक तथा धार्मिक प्रगति मे विशेष सहयोग दिया परन्तु साधारण वर्ग मे कोई स्थान न था। राजवंशीय महिलाओं के लिएअवगुंठन का वर्णन जातको (3) में मिलता है। महाबीर स्वामी के पास अवगुंठन के बिना ही राजा कुणिय की रानियाँ भी आती थी (4ए)। अतः स्पष्ट है कि स्त्रियाँ स्वतंत्र थी तथा वह सामाजिक समारोहो तथा उत्सवों में स्वच्छन्दतापूर्वक (4बी) सम्मिलित होती थी एवं महत्वपूर्ण तथ्यों पर उनकी राय महत्वपूर्ण समझी जाती थी ।जातको (5) से विदित होता है कि सारनाथ, बनारस,मथुरा आदि में महिलाओं की शिक्षा की उचित व्यवस्था थी । विदुषी महिलाओं का विशेष आदर था। बौध्द साहित्य(6) में महाप्रजा-पति, क्षेमा, दाजिरा आदि विदुषी नारियो का उल्लेख मिलता है।सुविख्यात भिक्षुणियों ने अपने स्थान ब्राह्मण व्यवस्थाकारो की अपेक्षा बौध्दकाल मे महत्वपूर्ण स्थान बना लिया (7)।

बौध्द साहित्य (8) से विदित होता है कि वेश्याओ का समाज में अस्तित्व था।गणिकाओं को कुम्भदासी, कुम्भदासी आदि नामों से पुकारा जाता था। सालवती आम्रपाली आदि गणिकायें व्यक्तिगत गुणो के साथ साथ अत्यधिक सम्पन्न भी थी तथा लोक भग्य न होकर केवल एक ही पुरुष से सम्बन्धित थी। प्रेमी के दुख सुख की सहगामिनी थी । चम्पा नामक गणिका 64 कलाओ में दक्ष थी। समाज में गणिकाओ का स्थान निम्न था।गौतम(9) का स्पष्ट कथन है कि ब्राह्मणी वेश्या के रूप में कोई दोष नही है। मनु(10) ने प्रवंचनात्मक वेश्याओं का वध करने का विधान किया है।मत्स्य पुराण(11) में

1- 9/2-3, वसिष्ट 5/1, (2) अष्टाध्यायी 4/1/116,3/2/46,
3- जातक 5/439,6/31,33,167, कल्पसूत्र 4/63 (4ए)औवाइया 33-144
(4बी) कोसाम्बी धर्मानन्द 'महात्माबुध्द पृ0 83 (5) जातक 6/25,3/934,5/427
6- संयुक्त निकाय 12-2 (7) अंगुत्तर निकाय 2/144, संयुक्त निकाय 1/5-6
8- जातक 3/59-63 महावग्ग 6/30, जातक 3/435,2/380,6/228
9- 22/27 (10) 8/259
11- 243/17

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेश्याओं को दर्शन मात्र से सद्यशुभ माना गया है। पद्म पुराण(1) से विदित होता है कि एक ब्राह्मण ने प्रभावती वेश्या के सम्पर्क से जुआँ चोरी आदि अपकर्म छोड़ दिया। याज्ञ0 (2) ने वेश्या के धन जाने वाले पर जुर्माना लगाया है, सूत्र साहित्य में (3) पराधीन नारियों के उल्लेख मिलते है।

बौद्ध साहित्य(4) में किसी भी पुरुष को पर स्त्री के साथ समागम का अधिकार नहीं था। परस्त्री गामी पुरुष दंड एवं कलंक का भागी होता था। व्यभिचार के लिए अंग भंग दण्ड की व्यवस्था की गई है। पुनर्विवाह को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता था। कन्या का विवाह एक ही वर से करने का विधान है। पति की आज्ञा का करने उलंघन करने वाली स्त्री को परित्याग कर दिया जाता था। रुग्ण पति का परित्याग करके दूसरे पुरुष के साथ विवाह करने वाली स्त्री का पुत्र'पौनर्भ' कहलाता था(5)। वशिष्ठ(6) बौधायन(7) ने विधवा विवाह का समर्थन किया है। मनु(8) को भी पुनर्विवाह की आज्ञा देनी पड़ी।

नियोग प्रथा का प्रचलन था परन्तु वह 2 पुत्रों तक ही सीमित थी। वर के अभाव में सगोत्र, सपिण्ड, सप्रवर तथा विजातीय व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है ऐसे पुत्रों को 'क्षेत्रज,' कहा जाता था।वशिष्ठ(9) के अनुसार उन्मत्त,अवश, रुग्ण स्त्री नियोग के लिये अनुपयुक्त है। ऐसी दम्पत्ति धार्मिक कर्म के अयोग्य होती है। एवं नरकगामी होती है।(10) मनु(11) को भी नियोग की अनुमति देनी पड़ी। धीरेधीरे इस प्रथा का ह्रास होने लगा। जातको(12) में विरक्त एवं कुरुप पति को त्याग करने का उल्लेख मिलता है। श्वसुर गृहलोग भी पुत्र बधु को पुनर्विवाह की अनुमति देते थे। बौद्ध धर्म (13) में पुनर्विवाह के अपेक्षा संघ प्रवेश में अधिक विश्वास करता था।बाल विवाह का प्रचलन नहीं था। जातक (14) में वैदिक युग कीअपेक्षा स्त्रियों का स्थान समाज में निम्न ही था(15)।

1- 218/37-38 (2) 2/293 (3) बौधायन12/50-52,वशिष्ठ5/1,गौत 18/1
4- सुत्तनिपात 395,अंगुत्तर निकाय290,धम्म पद 307,मिलिन्द पन्हो4/8/28,जातक4/35 1/258,3/53 थेरी गाथा 22 22,विनयपिटक 4/17/9
5- वशिष्ठ 17/16/20 (6) 17/66 (7)2/2/47
(8)मनु 9/176 नलिनाक्षदत्ता एवं वाजपेयी के0डी0पृ08 (9)गौतम1/8/11बौधायन2/2/17 22/68/70
10- आप0 2/10/27, बौधायन 2/2/39-41 (11)मनुस्मृति 5/59-61,9/69/77
12- जातक 5/288,6/495,3/108, मज्झिम निकाय भाग 2पृ0 109
13-जातक1/225थेरी गाथा72,जातक2/82,अंगुत्तर निकाय3/292
14- जातक3/93,1/205-61/134,5/284-5 6/384,दी0 निकाय37/3-1
15- वियोगी मोहनलाल जातक कालीन संस्कृति पृ0 177

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनु(1ए)के अनुसार नारी का विवाह 12 एवं 8 वर्ष मे हो जाना चाहिए। जातक3/93 में 16 वर्ष बतायी है। स्वयंबर प्रथा से वयस्क विवाह प्रमाणित होता है। बाल्यावस्था का विवाह नारी के लिए 5 दुखो मे से एक है। धम्मपद टीका(1बी) में विशाखा, कुडलम, केशकर, सुमेदा, सेला का विवाह व्यस्कावस्था में हुआ था अतः स्पष्ट है कि समाज मे महिलाओं को आदरपूर्वक स्थान दिया गया। आप० में एक पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह वर्जित बताया है। (2)राजवंशो में बहुविवाह होता था(3) बिम्बसार महाकोशल क्षेमा तथा छेलना के दो रानियाँ थी (4ए) तथा उदयन की तीन रानियों का उल्लेख(4बी) महावग्ग तथाउत्तराध्ययन मे मिलता है। सपत्नीक के दुर्भाग्य पर खेद प्रकट किया गया है। एक पत्नी वृत को आदर्श मानते हुए भी बहुपत्नी के उदाहरण भी यदा कदा मिलते है।

सती प्रथा के उदाहरण नही मिलते है। धर्म सूत्र(5) में इतना ही उल्लेख है कि विधवाओं देवर, शिष्य अथवा विश्वासनीय वृध्दजन श्मशान से वापिस ले आते थे। विधवा की स्थिति शोचनीय नही थी।(6)

जहाँ नारियों की पूजा होती है वही देवता निवास करते है। मनु(7) का यह कथन विवेच्य युग के नारी की महत्ता पर काफी प्रकाश डालता है।

खान पान:- अहिंसावृत्ति की प्रधानता केकारण भोजन में सात्विकता थी (8)।

संसृष्ठ:- (9) भोजन में किसी दूसरीवस्तु को ऐच्छिक रूप से पदार्थ मिलाने का विधान था। मिश्रीकरण में दोनो पदार्थ समान रखते थे जब कि संसृष्ठ में जो भी पदार्थ मिलाया जाता गौण रहता। पाणिनी(10) ने व्यंजन एवंउपासिका का भी वर्णन किया है जैसे खीर बनाने के लिए ओदन में दूध मिलाना आवश्यक था। अष्टाध्यायी (11) में संस्कृत शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है संस्कार के बाद तुरन्त उस पदार्थ को खाया जा सके जैसे चक्की के पीसे सत्तू, दधिक शब्दका प्रयोग किया गया है। जिस पदार्थ का मिलाना ऐच्छिक अनिवार्य अथवा गौण है यह भोजन के प्रकार पर निर्भर करती है।(12)

1ए- 9/94 (1बी) 102-13 थेरी गाथा 35 (2) 1/10, 18/19

3- उत्तराध्ययन टीका 8/1/15, जातक 4/97, 5/288 (4ए)महावग्ग 8/1/4

(4बी) उत्तराध्ययन टीका 8/1/15 (5) आप० 4/2/28

6- बोधायन 2/2/66-68, मनु 5/157/60 वशिष्ठ17/15/46

7- मनुस्मृति 3/56

8- वासम एल०एम० वही पृ0 215(अंग्रेजी) (9) अष्टाध्यायी 4/4/4/22/ -25

10- वही 2/4/12 (12) वही 4/2/18

12- वही 4/ 2/22, 4/4/3, 4/2/17

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनेक प्रकार के धान्यो का उल्लेख जातको(1) में मिलता है। तण्डुल, व्रीहि आदि धान्यो का बाहुल्य था। पाणिनी (2) ने साष्ठिका नीवार, यव, धवली एवं अणु नामक धान्यो का तथा मूदंग, भाष, कुलत्थ, दालो का उल्लेख किया है। जातको(3) से विदित होता है कि चना, मटर, मूँग, उरद दालो का गन्ने, जीरा, अदरक, लहसुन का प्रयोग भोजन में काफी मात्रा में होता था। पाणिनी ने कृतान्त (भात) चवाग(लप्सी) चावका(जौ की खीर) पिष्ठ (पके सत्तू) अपूर्व (अंदर से) मन्थ (भुने धान) पत्र भाष चूर्ण(कसर) मिष्ठान, गव्य पदार्थ(दूध से बनाये पदार्थ) एवं आम, जम्बु आदि फलो का उल्लेख अष्टाध्यायी में किया है(4ए)। नारियल, जम्बु, सेवा, अंजीर, अंगूर, केला, खजूर, आदि फल चाव से खाये जाते थे। (4बी) मद का उल्लेख भी किया जाता था(5) मदपामन ब्राह्मणो के लिए महापातक बताया गया है। अहिंसावृति पर विशेष जोर देने केउपरान्त स्मृति (6) एवं सूत्रों (7) का ज्ञान होता है कि मांस भक्षण होता था। दोनो जबड़ो में पंक्तिवत जमे हुऐ दांतो पशु बील जानवर तथा ग्राम सूकर तो ग्राम कुक्कर को अभक्ष्य माना गया है तथा उपाकर्म से लेकर कुछ समय तक मांस खाने कानिषेध किया गया है। अतिथि तथा पितृ दैवता कर्म को करते समय पशु हिंसा की आज्ञा दी है(8)।

सम्पन्न परिवारो में रसोइया खाना पकाता था। उसका नामकरण रोटी सेकने की मात्रा से होता था। बचा हुआ भोजन भंगी को पकाने के वर्तनो में व्वा भोजन हलवाई को दिया जाता था। (9) भोजन प्रसन्न मन से सिरपर वस्त्र लपेट कर तथा दक्षिण की ओर मुँह करके (10) स्त्री के साथ एक थाल में बैठकर(11) ग्रहण एवं राजा (12) प्रजा पर आपदा के समय भोजन नही करना चाहिये।

1- 1/429, 2/110, 2/316, 6/580 (2) अष्टाध्यायी 5/1/90, 5/2/3, 4/1/49 5/2/4, 4/4/25, 5/1/7, 4/4/4

3- जातक 2/74, 1/42, 488, 6/355, 5/37, 2/240, 6/539, 1/244, 2/336, 3/225, 5/12, 6/526 गाथा 2073

(4ए) वही 4/4/67, 6/3/7, 4/2/136, 7/3/69, 5/1/14, 5/2/104, 4/2/18, 8/4/5 4/2/165

(4बी) जातक 1/423, 2/440, 5/354, 6/529, गाथा 2017

(5) अष्टाध्यायी 5/2/112, (6) 11/59, याज्ञ० स्मृति 3/227, पाराशर 11/18

7- गौतक 17/37/31, आप० 15/17/29-31, 2/2/5-15, 2/3/7/4

8- 2/3/7/4 आप० , मनु 5/4 (9) मनुस्मृति 2/53-55, गौतम 9/59, वसिष्ट 3/69

10- मनुस्मृति 3/28 (11) वही 4/43

12- वसिष्ठ 14, मनुस्मृति 6/207, गौतम 17, आप० 1/15, /16, 17 ~~/19~~ 1/6/19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्विजातियो के लिये प्याज लहसुन गाजर खाने का निषेद किया गया है।(1)गौतक सूत्र (2ए) से विदित होता है कि बासी भोजन तथा बच्चा होने के दस दिन तक गाया का दूध नही पीना चाहिए। मनुस्मृति में पुत्रहीन स्त्री सर्प तथा बिना आदर के दिये गये भोजन का निषेद किया गया है। तथा वानप्रस्थ के लिए शहद भूमि में उत्पन्न हुए अन्न को वर्जित बताया गया है। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में भोजन रुचि एवं सम्पन्नता का प्रतीक था।

वेष-भूषा:- वेश भूषा पर नागरीय प्रभाव पड़ने लगा था(2बी)। इस समय सूती(3) क्षोम(4), कौशाय(5) कुशावीर(6) शाण(7)बन्दान(8) वस्त्रो का प्रयोग होता था। काशी के वस्त्रो को कुदम(9)त्र और काशीय(10) कहा जाता था। महापरिनिब्बाण सूत्र(11) से विदित होता है कि बुध्द जी का मृतक शरीर बनारस में निर्मित कपड़े में लपेटा गया था जो हर तरफ से नीली झलक मारता था तथा पीला सफेद हो जाता था।अष्टाध्यायी(12) में वस्त्रो के लिए चीर, चेल, चीवर, अच्छादन तथा रेशमी वस्त्रो को कोषीय अलसी से बनाये गये वस्त्रो के लिये औमक तथा ऊँनी वस्त्रो के लिए और्ण शब्दो का प्रयोग हुआ है।समाज का धार्मिक वर्ग रेशमी वस्त्रो को धारण करता था (13)। सिंह,व्याघ्र, चीता,तेंदुये,गाय, हिरण के चमड़ी का उपयोग बिधावन तथा वस्त्रो के लिए होता था(14) महाबग्ग, मज्झिम निकाय, चुल्लबग्ग से विदित होता है(15)चैत्रक(विस्तार की कालीन) एवं चिलिमिका (फर्श कालीन) वाहीतिक (ऊनी चादर)

1- 1- आप0 1/5/17, 25-27

2(ए)7/14-16, 17/25/26,आप0 1/5/17-19, 15/17/22-24,वसिष्ट14/34/35

2बी) मोतीचन्द्र 'प्राचीन भारतीय वेशभूषा पृ0 25

3- जातक 6/47, 3/286,आत्माराम गुप्त 25/1

4- जातक 6/47,महाबग्ग 8/1/6, सूत 2/5/114,

5- वही (6) महाबग्ग 8/28/53

7- दीर्घ निकाय भाग 2 पृ0 349-50 (8) महाबग्ग 8/28/2-3

9- जातक 6/47, 6/151, 1/335 (10) जातक 6/500

11- महापरिनिब्बाण सुत 5/26, 3/29-32

12- 6/2/127, 3/4/33, 3/1/20, 33/24, 6/3/42, 6/3/150, 4/3/158

13- वही 6/3/42 (14) जातक 6/500, महाबग्ग 5/10/5-7

15-महाबग्ग 5/10/3, 6/2/6, 8/1/36, मज्झिम निकाय 2/4/8, चुल्लबग्ग 10/10/4

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नमतक (भेड़ और बकरी के रोये को कूट कर बनाया गया नमदा) कोजब(ऊंचे रोये वाला कम्बल) का उल्लेख हुआ है।

साधारण धोती (अंतर वासक) दुपट्टा(उत्तरासग) और पगड़ी(उष्नीष)तीनो वस्त्रो का प्रयोग गृहस्थ करते थे (1)। स्त्रियाँ (2) तथा पुरुष(3) कचुंक पहनते थे । विवेच्य साहित्य से विदित (4) होता है कि स्त्रियाँ साड़ी पहनती थी उसपर बांस के रेशे गूँथे हुए ऊन आदि केबने पटको काप्रयोग करते थे । अष्टाध्यायी में शोडिक, मत्स्य, वालक चतुष्कर्णक ,ताल बृन्दक, शतबल्लिक आदि अनेको प्रकार के धोती पहनने के ढंगो का उल्लेख हुआ है तथा नावि बांधने का कटिभाग उपनीवी कहलाता था। पाणिनी ने 'गोसूत्रिक' नामक वस्त्र का भी उल्लेख किया है।

वस्त्रों की धुलाई तथा रंगाई:- वस्त्रों की धोने का उल्लेख जैन साहित्य(5) मेंविशेषतः मिलता है। कपड़े लाल, नीले, पीले, लाल मजीठ वाले तथा हल्दी के रंग में रंग लिये जाते थे भिक्षु लोग रंग बिरंगे कपड़े नही पहनते थे ।(7)

ब्राह्मणो तथा श्रमणो के वस्त्र:- दीर्घनिकाय(8) से विदित होता है कि ब्राह्मण सन से बने, मृत शरीर से अलग किये हुये कपड़े , घूरे पर फिके कपड़े, बलकल के बने वस्त्र लकड़ी के टुकड़ो से बने वस्त्र उल्लू मनुष्य व घोड़ों के बालो से बने कंबल आदि वस्त्रो का प्रयोग करते थे । सिंहनादसुत्त (9) में छव दुस्स नामक घास की चटाई शव लपेटने के काम में आने का उल्लेख है।

बौध भिक्षुओ के वस्त्र:- महावग्ग(10) में संघाटी (कमर लपेटने की दोहरी तहमद)

1- मोती चन्द्र ' प्राचीन भारतीय वेशभूषा' भूमिका पृ 6
2- निकसुनी घास मीकरत 4/17/96, (3) चुल्ल बग्ग 5/29/2
4- अष्टाध्यायी 4/3/44, 10/10, जातक 3/4, 31, 296, चुल्लबग्ग5/29/8, 5/29/2
5- अष्टाध्यायी 1/3/36 , 4/9/44, 5/4/3
6- ज्ञाता धर्म कथा 3/60, महावग्ग 5/1/10, 8/29/1
7- मोती चन्द्र पृ 34
8- भाग 1 पृ 166-67
9- 15
10- 8/11/4-5

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भवंर वासक (शरीर के ढकने वाला) तथा उत्तरासंग (3 वस्त्रो का) पीले रंग के प्रयोग किया जाता था।(1) महावग्ग से विदित होता है कि (2) इसके अलावा आसन (प्रत्यस्थकरण्ण) चार बित्ता तथा 2 वित्ता चौड़ा कोपीन को भी धारण करते है। कंडूक प्रतिच्छादन(खुजली होने पर) पहना जाता था। वार्षिक सटिक (3) (वर्षाकाल में पहननेवाला) भिक्षुआयोगपटट(4) बैठने पर दोनो घुटनों और पीठ के जोड़ने वाली पटटी का उल्लेख मिलता है। चुल्लवग्ग(5) से विदित होता है कि उनके कमरबंद(कायबंद)सीदे और फेंटदार बुनावट की पटि्टयो से बनते थे। किनारे पर लगी पटि्टयो को शोभक कहते थे तथा काम बंध में हुक भी लगाते थे। जो हड्डी, शंख, तथा डोरे के बने होते थे। महावग्ग(6) में उल्लेख है कि भिक्षुक कंचुक नही पहनते थे।चुल्लवग्ग(7) में उल्लेख है कि बोध्द भिक्षुओं को कपड़े बुनने की स्वतंत्रता थी। इसी प्रकरण में करघा ढरकी, दट्टी(शलाका) और डोर के नाम आये है। भिक्षुणियां एकान्त में कटिसूत्र से बंधा लगोट जैसा एक वस्त्र पहनती थी।(8)भिक्खुनी पाचित्तिय(9) से विदित होता है कि भिक्षुणियों को गांव में जाने का निषेध था। जाड़े में जैन साधु दो क्षौम की धोतियां और एक ऊनी चादर ग्रहण कर सकते थे।(10) जाड़े में जैन साधु ढाई हाथ वर्ग गज की दो कोपीन और एक ऊनी वस्त्र ग्रहण करने का उल्लेख शीलांक टीका में मिलता है(11)। आ आधारांगसूत्र (12) में उल्लेख है कि जैन साधू अपने वस्त्रो को रंग अथवा धो नही सकते थे तथा जाड़ा बीत जाने पर क्षौमसाटी भी पहन सकते है।

1- महावग्ग 8/13/4-5 (2) भिक्षुपतिसामिख5/39/90, महाबग्ग8/18/
3- वही 5/39/91, महाबग्ग 8/5/6 (4) चुल्लबग्ग 5/2
5- 5/29/2 (6) 8/29/1
7- 5/20/2 (8) चुल्लबग्ग 10/6/2
9-4/40/96 (10) आप0 सूत्र 1/7/4/1
11- पृ0 251 (12) 1/7/5/1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जूतेः- जूतो का प्रयोग किया जाता था(1)। महावग्ग (2) से विदित होता है कि जूते 1 से 4 तल्ले तिल्ले के होता है जूतो में रंग बिरंगे किनारे लगाये जाते थे भिक्षु एक ही तिल्ले वाले जूते पहनते थे पुराने जूते कई तिल्ले वाले भी पहने जा सकता था।वृहतकल्पसूत्र भाष्य(3) में उल्लिखित है कि पुव्वध्द पालिगुटिम खल्लक वद मेण्डा-विषाण,वध्दिक, अज , विषाण, वद्रिक वृश्चिकालिक मोरपिधपारीयखित,पुन्न पुण्णिक त्रिसिरपट्टिक आदि जूतो के अने प्रकार होते थे ।धार्मिक शिक्षा के समय चप्पल नही पहनी जाती थी (4) महावग्ग(5) में सिंह, व्याघ्र, मृगचीते, उदविलाव, बिल्ली एवं गिलहरी आदि के चमड़ो की जूते बनाये जाने का उल्लेख है। सोने, चाँदी , स्फटिक, कांसा, रांगा से अलंकृत पादकाओं का उल्लेख भी मिलता है।

सूची, सूचिका, नाली, कैची, प्रतिगृह कठिन फ्रेम आदि सिलाई उपकरणो का विवरण विवेच्य साहित्य में मिलता है(6)। उल्लिखित (नाप के लिए निशाल बनाना)बन्धन (सिलने से पहले कमर से जोड़ना) ओवर्हियं करल (लंगर के सहारे सिलाई) कंठुक करण, दटिकरण, अनुवातकरण, परिमण्डकरण, कुसि आवर्टद्रेयकण, अनुवटट, बाधियक,वहन्न, आदि शब्दो का उल्लेख सिलाई के सम्बन्ध में महावग्ग(7) में मिला है। शुकारी का काम भी किया जाता था(8) स्पष्ट है कि विवेच्य युग में सिलाई कला का विकास हो गया था।

<u>अलंकार एवं प्रसाधनः-</u> पाणिनी(9) ने ग्रैवेयक(कर्ण) ललाटिका, कार्णिका,अंगुलिय, ललाटिक आदि अलंकरणो का उल्लेख किया है। स्त्री तथा पुरुष दोनो अलंकारों का प्रयोग करते थे । श्रृंगार प्रसाधनो में अंजनमाला, गन्धा, उपानहद् आदि वस्तुओ का उल्लेख अष्टाध्यायी(10) में हुआ है साथ ही किसर बलाव सुगन्धित द्रव्यों का प्रयोग किया जाता था।

1-जातक 2155,अष्टाध्यायी5/2/42,5/1/14,गौतम 10/58

2- महावग्ग 5/1/29,5/2/1-2, 5/3/2, (3) 4/28/47

4- धर्म भि 61, चुल्लवग्ग 8/2, (5) महावग्ग 5/2/4,5/7/1,5/8/3

6- चुल्लवग्ग 5/11/2,5/11/5,जातक 2/178-179

7 महावग्ग 8/14/2,7/1/5,8/21/2, 7/12/2,7/1/5,चुल्लवग्ग 5/1/2

8- महावग्ग 7/2/5, 7/1/22

9- अष्टाध्यायी 4/3/62-65,4/2/96 भटनागर काली शंकर 'प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास' पृ0 284-5

10-4/5/53,4/4/54

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आभूषण बनाने की कला उच्च कोटि की थी चूडियां(हत्थाभरण) मुद्रिकायें(मुद्रिका) मालायें, कुंडल, मेखला, गेवयक मेखला(विकुर ,) कायूर के उल्लेख मिलते है(1)। स्वर्ण आभूषणो में बहुमूल्य रत्न और मणियां भी जड़ी जाती थी । नीलपीत, लोहित अवदात और पाण्डुरंग के सूत्र में पिरोई हुई सुन्दर पालिश की हुई (सुपारकर्मकृत) वैडूर्य मणियो के भी उल्लेख मिलते है। (2)

आमोद प्रमोद के साधनः- सुरासुन्दरी(3)दोला केली(4) क्रियोपयोगी खेल(5)जैसे सलाकहत्थम, गेंद, चीरम, यथावकुम तथा चबंका चलाकर पत्तियो पर चित्र बनाना, उत्सव, समारोह, दमनोत्सव (चैत्र शुक्ला चतुर्दशी पर शिवमूर्ति झूले पर झुलाई जाती थी । रास एवं जलकेलि(6)पालतु जानवर(राजा ब्रह्मदत्त ने कुत्ता(7), बोधिसत्व ने मुर्गी(8) अनाथ पिंडक के धर में सफेद मुर्गी(9) श्रावस्ती के श्रेष्ठक ने बैल(10)पाल रखा थालंधक(11) अक्षक्रीड़ा(12), नाटक(13,)कठपुतली का नाच(14)कुम कुम क्रीडा (15)चतुर्दशी के दिन शिवपंचमी के दिन सरस्वती, चुर्थी के दिन गणेश जी के मन्दिरो में जलसा किया जाता था।शालभंजिका समारोह(16) में विश्वकल्याण की भावना ही निहित थी (17)प्रचीन भारत का रईस विशिष्ट पदार्थों से निर्मित वस्तुओं से दातोन करता, अनुलेपन तथा केश संस्कार होता । अधर तथा नाखून रंगाई तम्बुल सेवन को विशिष्ट महत्व दिया जाता था (18)

ललित कलाये:- इस युग में विविध कलाओं का विकास हुआ। बोध्द धर्म के अविर्भाव से स्तूप नामक वास्तु का उदय हुआ है(19)। जातको में (20)भूमिगत सुरंगे उसमे स्थित भवन तथा विस्तृत सुरंग मार्ग का उल्लेख मिलता है। कम्पिल में गंगा तट से राज प्रसाद तक एक अतिकृत्तिम सुरंग खोदी गई थी । वृहत्तर सुरंग का मुख्य द्वार गंगा तट पर था इसको700 व्यक्तियो ने खोदा था (20) सुरंग ईंटो की बनी थी उसमें अनेक कमरे और रत्न जड़े थे।कोसम में जैन स्तूपो का तथं मूर्तियो का खजाना प्राप्त हुआ है ऐसा प्रतीत होता है कि व्यवस्थिति ढ़ग से दफनाये गये है।(21) पारकर गृहसूत्र(22)

State Museum Library Lucknow 7227

1-उपाध्याय भरत सिंह पृ0 528, जातक6/9, 1/360, 4/161 (2)जातक4/233, 1/385
3-जातक 1/251, 1/360, (4)स्कन्द पुराण अ0 42, 17/28, चुल्लवग्ग5/1/3-5जातक1/14 अवगद दशाओं पृ0 72 (5)सुमंगल विलासिनी1/86, जातक2/69
6-जातक 1/295, 323, 282, 350, 258, (7)जातक 1/175 (8)बोधिसत्व1/436
9- जातक 1/410, (10)जातक 2/224, (11)जातक 6/270, 1/430
12- मन्मथनराय'प्राचीन भारतीय मनोरंजन पृ0 48
13-जातक 6/72/253, 3/61, 4/311, 1/360 (14) अवदान शतक 65/197
15- अवदान शतक 1/121, (16) जातक 1/52, (17) मन्मथनराय वही पृ0 245
18- द्विवेदी हजारी प्रसाद 'भारतीय प्रचीन भारत के कलात्मक विनोदपृ0 279अष्टाध्यायी 5/3/99, राजकिशोर'प्राचीन भारतीय संस्कृति पृ0 22
19-अष्टाध्यायी 5/99सिंह राजकिशोर 'प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति पृ0 22
20-जातक 546 गुप्त परमेश्वरी लाल वही पृ0 39से 42 लाहा विमल चरण वही पृ0 156 जातक 2/329, 6/410
21- कनिंघम 'आर्कलोजिकल सर्वे रिपोर्ट आफ इंडिया1874-75 वी ।भाग10पृ0 2
22- पृ0 69

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आवस्तम्ब गृह सूत्र(1)मानवगृह सूत्र(2) बोधायन गृहसूत्र(3) में मूर्तिकला के विकास के उल्लेख मिलते है। ह्वेन सांग को भी कोशाम्बी नरेश उदयन द्वारा प्रसेनजित के लिये बनाईगई बुध्द मूर्ति की प्रतिकृति का वर्णन किया है जो जतेवन के समीप चैत्य मे स्थित थी।(4) कनिंघम ने श्रावस्ती के खण्हरो से दूर 62-63 से 7x4 की बोधिसत्व की मूर्ति प्राप्त की जो बालजी नामक भिक्षुक ने बनवायी थी।(5)।

संगीत कलाः- जातको(6) तथा अष्टाध्यायी(7) में मृदंग बीन, वांसुरी, तूर्य मृदंग आदि बाजो का उल्लेख मिला है। अष्टाध्यायी (8) से विदित होता है कि गीति, गेय, गायक गवैया, चारो का उल्लेख अष्टाध्यायी में मिलता है। देवमूर्तियो के हँसने, रोने, थूकने आदि क्रियाओ का अपशुकनो के अन्तर्गत मानकर चित्रकला को प्राथमिकता दी गई। लेखन कला, साहित्यकला, संगीत आदि विविध कलाओं का विकास हो गया था।

आर्थिक अवस्था:- विवेच्य युग साहित्य(9) से विदित होता है कि कृषि पर विशेष बल दिया जाता था। हल, पहवा, खलिहान, मड़नी तथा बैल की सहायता से कपास, जौ, गेहूँ, मूँग, उर्द, गन्ना, धान, अदरक, राई लहसुन, जीरा, नारियल, का उत्पादन किया जाता था। अष्टाध्यायी (10) से फसलों का नामकरण महीनो के नाम से अथवा अथवा उसमें बोयी जाने वाली वस्तुओं के आधार पर होता थां। तीन प्रकार की फसलो का उल्लेख मिलता है। वासन्तक(वसन्त में बोयी जाने वाली) ग्रैष्मक तथा आश्वयुजक।

1- 20/1/3, (2) 15/16 (3) 2/2/13,

4- वार्ट्स ' ओनह्वेसाग ट्रैवेल्स ' जिल्द 1 पृ0 183

5- कनिंघम 'एनसियेण्ट जाग्रफी आफ इण्डिया पृ0 469,-474

6- जातक 2/253,13,3/61,अष्टाध्यायी 4/4/55-56,3/3/3/95,3/4/61, 3/1/145-146, 2/2/87, 4/4/34

7- 3/2/146,2/2/87,4/4/34

8- 4/4/55-58 ,3/1/145-147,3/3/95,3/4/68,2/4/2

9- जातक 1/143,244,423,2/110,240,357,440,4/277,5/37,6/355,439 536,549, अष्टाध्यायी 4/4/97,2/184,3/1/184,3/2/182,5/1/7,3/3/208 5//2/2/-4 मनुस्मृति9/330,उपाध्याय भरत सिंह पृ0505,शर्मा राम शरण 'लाइट आन अर्ली इण्डियान सोसाइटी एण्डएकोनोमी पृ0 61

10- 3/3/119,5/2/18,3/2/21,5/2/29

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रमुख फसल धान थी उसके विभिन्न प्रकार के ब्रीहि, तंडुल, सालि आदि का बाहुल्यथा(1)ए) खेती(2) शूद्रो तथा मजूदूरो से कराने का उल्लेख मिलता है बनभूमि को साफ करके भूमि पर कृषि कार्य किया जाता था((3) शाक्य लोग खेत बोने का उत्सव(वप्पमंगल) मनाते थे फसल काटकर धान्य धरो में भरा जाता था (4) गुड़ बनाये जाने का उल्लेख भी मिलता है(5) फल बेचने वाले को 'पणिका' तथाफूल बेचने वालेको 'मालाकार' कहा जाता था(6) प्रसेनजित के माला गण्ड ने आम्र का फल बुध्द जी को दिया था इसकी गुठली से विशाल आम्रवृक्ष कापादुर्भाव हुआ (7)।बनारस का माली आमो को खट्टा मीठा करने का विशेषज्ञ था(8) याहँ की भूमि अत्यधिक उर्वरक थी । कुओं तालाबों के अलावा नहरो से सिचाई की जाती थी वर्षापर कृषि निर्भर थी (9)। अष्टाध्यायी (10) में अच्छे हलवाले,पुराने हलवाले तथा बिना हल वाले किसानो का उल्लेख मिलता है। भौगोलिक स्थिति धरती की उर्वरता , सिचाई जल की सुलभता तथा यातायात के साधनो की सुविधा के कारण विवेच्य युग में कृषि कीकाफी उन्नति हुई। कृषि को राष्ट्रीय महत्व दिया जाता था(11)।खेत को जोतने,बोने, काटने का , निराई का पूर्ण उल्लेख मिलता है(12)।

पशु पालनः- कृषि के साथ साथ पशु पालन पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

1- उपाध्याय भरत सिंह वही पृ 508 (1बी)जातक 3/52,162,446,4/277,5/212

3- अवदान शतक 'हिन्दी पृ 22/26

3- जातक 2/59,110, 6/336- (4) जातक 4/240

5- विनयपिटक (हिन्दी अनुवाद) पृ 225-26

6- उपाध्याय भरत सिंह वही पृ 510

7- जातक 4/464 धम्म पद कथा 3/206, मिलिन्द प्रश्न पृ 428

8- जातक 5/3, पाण्डेये उमा वाराणी पृ 6

9- अष्टाध्यायी 4/3/18,4/3/26,1/1/14,3/3/123,3/3/51,जातक 2/133, 149, 367

10- 6/2/187

11- जातक 1/75, उपाध्याय भरत सिंह वही पृ 505

12- वही पृ 508

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृषि के साथ गोरक्षा का अटूट अनिवार्य सम्बन्ध था। गो पशु पालन का प्रतीक है। अतिथि को पहले दूध दिया जाने का उल्लेख मिलता है(1) गौ चराने वालो के साथ अजपाल भी होता था जो भेड़ बकरियो को चराते थे (2) गाय(3)बैल(4),बकरी(5), भेड़(6) आदि पशुओ का पाला जाता था।

कृषि गौ रक्षा के उपरान्त बुध्द काल मे अनेक प्रकार के व्यवसाय प्रचलित थे। स्वर्णकार(7) हीरे, मोती, चांदी, स्फटिक आदि काप्रयोग अलंकार बनाने के लिये करता था। कुम्भकार(8) (लोहे की वस्तुये बनाने वाला), शिल्पीय प्रवर्तक(9)(हल,फावड़ा, अस्त्र शस्त्र, पलंग, कीला आदि बनाने वाला) चर्मकार (10), माली(11),निषाद(12), बुनकर(?:), रंगरेज (14),तक्षन(15),धोबी(16),दर्जी(17) आदि व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान था। मनु (18) नेसोने, चांदी, सीसा, तांबा, कांसा, लोहा,टीन आदि धातुओ का उल्लेख किया है। खनिज कर्म पर राजा का अधिकार था। पाणिनी(19) ने कौशाय, और्ण, रत्न, वैदूर्य एवं लोहित आदि वस्तुआ का उल्लेख कि है।

काशी के वस्त्र प्रसिध्द थे बुध्द का शरीर काशी के वस्त्र से ही लपेटा गया था(20) वेसंतन राजा की रानीको बनारस के वस्त्र ही अच्छे लगते थे (21)

1- मज्झिम निकाय 2/5/7 (2) जातक 4/363
3- अष्टाध्यायी 4/3/35,4/2/5, 2/1/67
4- वही 3/2/182, 3/1/184 (5) वही 4/3/136
6- वही 3/2
7- 1/177,206,351,479,2/120,3/53,4/60 मनुस्मृति5/292
8- आचाराग सूत 1/248,3/2,464, 2/58 जातक 2/80,3/376,6/50
9- मनुस्मृति 10/100, 11/64,10/99,4/215
10- जातक 6/ 142,210,4/379 अष्टाध्यायी 5/2/9,3/2/182, 5/1/25
11- जातक 1/95,120,2/321,282 (12) जातक 6/71
13, अष्टाध्यायी 2/3,4/3/136,4/4/160
14- वही 4/1/42,4/3/158 (15) वही 5/ 4/95
16- मनुस्मृति 8 /396, 4/88 (17) वही 4/214,8/397,4/78
18- 11/333,5/114
19- अष्टाध्यायी 4/2/42,4/3/158,3/1/55,4/2/11,6/2/194,4/2/2,8/3/97
4/1/42,5/3/89,5/1/14,4/3/104,3/2/184
20- थेरी गाथा 374,377,सं० निकाय भाग 2 पृ० 641, जातक 6/47,77,144-157
दीर्घ निकाय 2/1,2/3,3/10
21- जातक 2/4,5/7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजकुमार गौतम द्वारा अपने सेवक को काशी के वस्त्रतथा इत्र देने का उल्लेख जातक(1) मे मिलता है। विदेहराज की सभा मैं जाते हुये बोधिसत्व को बहुमूल्य काशी वस्त्र धारण किये बताया है(2)। जनक की राजसभा के ब्राह्मण चंदन से सुवासित तथा जटिल वस्त्रो को धारण किये कहे गये है। (3) महावग्ग(4) मैं क्षेमिमिश्रित कंबल का उल्लेखहै। एक अन्य स्थल पर कहा गया है कि काशी के राजा जनक की सेवाओं से प्रसन्न होकर उसे क्षेमसिश्र कंबल उपहार मैं भेजा (5)।

इत्र, संगन्धित तेल, चंदन के लिये काशी प्रसिध्द था(6)सुगन्धित वस्तुयें देश के प्रायः सभी भागो मैं भेजी जाती थी इनसे लदे ऊँटो के काफिले काशी की वाह्य सीमा पर बराबर देखे जा सकते थे (7) काशी हाथी दाँत(8) के कार्य के लिये, घोडी हाथी (9) तथा लकड़की के काम(10) के लिये काफी प्रसिध्द था। नगरो मैं व्यवसायो के आधार पर वीथियो के उल्लेख मिलते है। (11) शिल्पियों तथा व्यवसायियो के संगठित संघ थे (12) तथा शिल्पकार का आर्थिक जीवन मैं महत्वपूर्ण स्थान था(13)भण्डार घरो का उल्लेख मिलता है। (14) आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्न युग था(15)।उद्योगो की उन्नति एवं सुरक्षा के लिये विभिन्न व्यवसाय वालो ने अपने अपने संगठन बना लिये जो निगम, श्रेणी, संघ, यूथ, निकाय आदि नामो से प्रसिध्द हुये (16) प्रत्येक निगम का एक प्रधान होता था।

1- भमसेन जातक सं0 80 (2) महावग्ग जातक सं0 546

3- महाजनक जातकसं0 539 (4) 4/1/4

5,- वही 8/2जातक 5/322

6- कोकालिक जातक सं0 331 पाण्डेय उमा वाराणसी पृ0 44

7- आल्तेकर अनन्त सदाशिव 'हिस्ट्री आफ बनारस पृ0 15

8- जातक 2//197

9- जातक 1/320,81,जातक 2/48,229,338,3/88, 4/159, 207

10- पलक रक्षण जातक सं0 11 (11) जातक 1/320

12- मजूमदार आर0 सी0 'प्राचीन भारत मैं संगठित प्रवृत्तियां अनु0 वाजपेयी के0डी0पृ0 294

13- उपाध्यायभरतसिंह वही पृ0 522

14-अष्टाध्यायी 5/2/68,5/4/30,4/3/84,

15 - त्रिपाठी रमाशंकर ' प्राचीन भारत का इतिहास पृ0 83, डा0 राजेन्द्र प्रसाद ' संस्कृति औ संस्कृती' पृ0 118

16 नलिनाक्ष दत्त वाजपेयी के0डी0 वही पृ0 20

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जातकों में कुमार जेट्ठक (सं० 387), मालाकार जेट्ठक(सं० 415) वड्ढकिट्ठक (सं० 466), सत्थवाह जेट्ठक (सं० 256) के उल्लेख मिलते है । समुद्दवणिजजातक (सं० 466) में लिखा है कि गांव में बढ़इयों के 1,000 मकान थे इनमें से प्रत्येक 500 बढ़इयों के ऊपर एक अध्यक्ष था(1)

आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक सम्पन्न युग था(2) । साकेत के धनंजय सेठ ने अपनी पुत्री विशाखा के लिये 9 करोड़ मूल्य से एक आभूषण बनवाया । श्रावस्ती के प्रसिध्द व्यापारी अनाथपिंडक ने जेतबन की सारी भूमि को सोने की मोहरों से आच्छादित कर दिया(3) । विशाखा के दहेज में पाँच-पाँच सौ गाड़ियाँ सोने के बर्तनों, रेशमी तथा बहुमूल्य वस्त्रों की 60,000 बैल तथा इतनी ही गाय मिली थीं । संयुक्त निकाय(4) से विदित होता है कि कंजूस सेठ के मरने के उपरान्त 80 लाख अशरफियां प्राप्त हुई थी । चालीस करोड़ का स्वामी धनाढ्यता की सीमा के अन्तर्गत आता था ।(5) श्रावस्ती मथुरा अत्यधिक सम्पन्न नगर थे । कोशल देश के ब्राम्हण महाशालों की सम्पत्ति का उल्लेख जातकों(6) में मिलते है ।

बड़े-बड़े रोये वाले आसन, झालरदार आसन हाथी, घोड़े रथ के साज का निर्माण कराया जाता था । (7) विनयपिटक(8) से विदित होता है 500 रुपये मूल्य तक का क्षौमिश्रित कम्बल बनाये जाते थे । बुनने सूत(9) कातने तथा रंगने के उल्लेख मिलते है ।

1- जातक सं० 466 मजूमदार रमेशचन्द्र कारपोरेट लाइफ इन ऐंशियेंट इंडिया पृ० 5,18-19
   रिजडेविड, बुध्दिस्ट इंडिया पृ० 57

2- त्रिपाठी रमाशंकर (प्राचीन भारत का इतिहास) पृ० 83
   डा० राजेन्द्र प्रसाद संस्कृत और संस्कृति पृ० 118

3- विनयपिटक (हिन्दी) पृ०461, जातक 1/119

4- वही पृ० 80-82 (5) सुमंगल विलासिनी जिल्द 2 पृ० 286

6- जातक 1/349,466,2/272

7- जातक 4/404, दीर्घनिकाय 1/1,2/4

8- वही पृ० 274

9- जातक 6/41,336, विनयपिटक हिन्दी अनु० 277-278

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार के पेशे को कर सकता था । एक पेशे को छोड़कर दूसरा पेशा अपना सकता था उसकी सामाजिक स्थिति में अन्तर नहीं पड़ता था । उग्रसेन श्रेष्टि पुत्र एक रस्सी पर नाच दिखाने वाली नटिनी के प्रेम में फंसकर उसी का कार्य करने लगा (1) सेठ के दर्जी तथा कुम्हार का पेशा अपनाने का उल्लेख जातकों(2) में मिलता है । एक ऐसे क्षत्रिय का उल्लेख मिलता है जो पहले कुम्भकार था जो डलिया बनाने का कार्य करता था अंत में वह रसोइया और फिर मालाकार बना(3) । ब्राम्हण लोग खेती भी करते थे परन्तु उनकी सामाजिक स्थिति में किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ता था ।

धन बहुलता के युग निर्माण में मनचाहे पेशे को अपनाकर उसका विकास करने की प्रवृत्ति ने प्रमुख योगदान दिया ।

<u>व्यापार</u> :- विवेच्य युग में व्यापार अत्यधिक उन्नतावस्था में था । अष्टाध्यायी में व्यापारियों के लिये 'वर्णिक' शब्द का प्रयोग हुआ है ।(4)धनवान सेठ(5), 500 गाड़ियों के साथ व्यापारी(6) लाल वस्त्रों से लदी 500 गाड़ियों के साथ बनारस का व्यापारी(7) चन्दन खरीदने वाला व्यापारी(8), घोड़ों के सौदागरों का वेरजा में पड़ाव(9) एवं उन्नतशील कलों के उल्लेख से विदित होता है कि व्यापार उन्नत दशा में था । वाराणसी, साकेत, कम्पिल, श्रावस्ती, कोशांबी, मथुरा, प्रतिष्ठान आदि प्रमुख व्यापारिक नगर थे । इन बन्दरगाहों में भरुकच्छ (भड़ोच) सुधारक(सोपारा) रोरुक(रोरी) प्रसिद्ध विवेच्य क्षेत्र के व्यापारिक सम्बन्ध बनाए हुए थे । बौद्ध साहित्य में सेटिट शब्द का उल्लेख मिलता है । जातकों(10) में समुद्री यात्राओं के उल्लेख मिलते हैं ।

1- धम्म पद्ठ कथा जिल्द चार्थी 505। (2) जातक 6/372 लिनाक्ष दत्त बाजपेयी वही पृ 18
3- जातक 5/290, जातक 3/1635/68, (4) 4/1/13,5/1/51
5- संयुक्त निकाय पृ 80-82, जातक 6/22, 427 रिजडेविड वही पृ 57-60
7- धम्म पद्ठकथा जिल्द 2 पृष्ठ 429 (8) परम लजोतिका जिल्द 2/523 जातक 3/248, 2/294
9- रिजडेविड वही पृ 34-42
10- जातक 466, कूटवणिज जातक सं0 218, महाजनक जातक सं0 539 सोक्रेन्डल सुधारक जातक सं0 463, दीर्घ निकाय 1/223, अगुंत्तर निकाय 4/27 वही पृ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिश्र के प्राचीन घरो से भारतीय नील रंग इमली की लकड़ी मिली है(1)। जातक से विदित होता है कि कुत्ते, बन्दर, मोर, तोता, कौवे आदि भेजे जाते थे। जातको (2) में पतवार जहाज डूबने, यात्रा के समय भगवान तथा ईष्ट देवता केस्मरण से समुद्री व्यापार की उन्नतावस्था का आभास होता है। कपिल वस्तु तथा श्री-बस्ती मेंव्यापारिक सम्बन्ध चअ थिक थे कपिल वस्तु से ही लोग एक स्थान से दूसरे स्थान जाते थे (3)। चेदिराज्य के प्रसिध्द नगरस्थलीय मार्ग से सोरो से मिलाता था इसी मार्ग से स्थविर खेत तेरो से सहजाति गये थे (4) ।श्रावस्ती_प्रतिष्ठान:-मार्ग इस पर साकेत, कोशाम्बी तथा प्रतिष्ठान प्रमुख नगर थे, श्रावस्ती_राजगृह_मार्ग:- इस पर श्रावस्ती से क्रमशः सेतव्य, कपिलवस्तु,कुशीनगर,पावा हस्तिग्राम, वैशाली,भटटग्राम, पाटलीपुत्र नालंदा थे ।

मथुरा_विदिशा_मार्ग:- इस मार्ग पर देवगढ़, कान्तिपुरी, पद्मावती थे।आदि प्रमुख मार्गों के उल्लेख से व्यापारिक उन्नतिशील अवस्था का ज्ञान होता है।

नदी मार्ग व्यापार भी काफी उन्नत था यमुना से पश्चिम में कौशाम्बी तक नावें जाती थी । गंगा नदी के मुहाने से लेकर चम्पा, पाटलीपुत्र, वाराणसी तथा सहजाति तकमाल का परिवहन होता था। वैशाली के वज्जिपुन्तक भिक्षु नावो में बैठकर वाराणसी होते हुये गंगा के मार्ग द्वारा सहजाति आये थे ।पाटली पुत्र से ताम्रलिप्ति तक गंगा के मार्ग द्वारा भिक्षुणी संघ मित्रा गई थी (6)बौध्द साहित्य (7) में विकसित नदी तट मार्गों का उल्लेख मिलता है। स्थल मार्ग के दोनो तरफ पेड़, धर्मशालाओं के उल्लेख मिलते है(8)।

1- जैकशन 'बम्बई गजेटियर ' जिल्द 2 भाग 4, पृ 3

2- 2/111, 122, 1/39, 3/126, 4/17, 21, 137, 4/10, 3/124, इंडियन हिस्टोरिकल क्वार्टली 5 पृ 612-14

3- उपाध्याय भरत सिंह वही पृ 293

4-विनय पिटिक ' हिन्दी अनुवाद पृ 551, उपाध्याय वही पृ 426

5-वाजपेयी के0डी0 'प्राचीन भारत का विदेशो से सम्बन्ध पृ 48

6- लेगी ट्रवल्स आफ फाहियान पृ 65

7- 10 ब्राह्मण जातक सं0 495, आसकीय जातक सं0 76

8- जातक 1/89, 253, 4/72, अंगुत्तर निकाय भाग: 3 पृ 98 -99

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काशी के वस्त्र ये व्यापारी विदेशो में ले जाते थे इसी प्रकार छुरियां, तलवार, मोर, चिड़िया, रेशमी कपड़े, मलमल, हाथी दांत की चीजें और सोने के आभूषण आदि भारत से विदेशो के लिये निर्यात किये जाते थे (1)। विदेशो से सोने का आयात होता था।

समस्त व्यापार वैश्यों के अधिकार में था। तांबे, रजत, एवं स्वर्ण की मुद्रायें भी बौध्दकाल में प्रचलित थी। स्वर्ण मुद्राये हिरण्य कहलाती थी। सबसे बड़ा सोने का सिक्का निष्क कहलाता था(2)। अतः स्पष्ट है कि बौध्द काल का आर्थिक जीवन अत्यधिक सम्पन्न था।

शिक्षा और साहित्य:- यदि हम साहित्य के झरोखे से झांके तो निश्चय ही यह युग साहित्य सम्पन्नता का युग था। अष्टाध्यायी (3 से विदित होता है कि शिक्षा का मूलाधार ब्रह्मचर्य था। शिक्षा का प्रारम्भ 'ब्रह्मचर्य' से होता था। ब्राह्मण तथा क्षत्रिय 16 वर्ष की आयु में शिक्षा प्राप्त करने के उपयुक्त समझे जाते थे। अच्छी बुध्दि के बालकों के लिये यह आयु 5,6,8 वर्ष भी हो सकती थी। (4) छात्र का सम्पूर्ण जीवन तपोमय का अग्निहोत्र, अग्निचर्या स्वाध्याय, आचार्य सेवा, प्रवचन, भजन आदि छात्रों के लिये अनिवार्य थे (5)। अष्टाध्यायी (6) से विदित होता है कि वेद की पढ़ाई प्रारम्भ करने के पूर्व छात्र कहलाता था। तथा अध्ययन करने की दशा में आचार्य को 'अनुचान तथा प्रवचनीय कहा जाता था। शिक्षक भी अपनी विद्वता एवं स्नेह से छात्र को निःशुल्क शिक्षा देते(7)

1- जातक 3/126,-127, उपाध्याय भरत सिंह पृ0 547

2- ए0पी0 बुध्ददत्त महाथेर ' काइस पाली इंगलिश डिक्शनरी पृ0 131

3- 5/1/154 मनु संहिता 2/93-94

4- जातक 2/277, मनु 2/36-37

5- मनुस्मृति 2/164, 2/104, 108, 187

6- अष्टाध्यायी 4/2/43,6/3/133,3/2/138,3/4/68,2 /1/65

7- 4/3/77, 2/1/36, अष्टाध्यायी मनु 2/140

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आचार्यों के युग में साकटायन आदि शील, भरद्वाज, तथा कोटाहल आदि आचार्य नक्षत्रों के समय सुशोभित थे । मनुस्मृति (1) से विदित होता है कि विवेच्य युग में पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, वेदांग, धर्मशास्त्र, वेदान्त, दर्शनशास्त्र, इतिहास पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थो का समावेश था। सर्वप्रथम व्याकरण की शिक्षा देकर छंदो को कंठस्थ कराया जाता था।

प्रत्येक सत्र का प्रारम्भ उपाक्रम नामक सार्वजनिक होम से किया जाता। अष्टाध्यायी((2) में उपाक्रम तथा उत्सर्ग के उपरान्त 23 दिन का अनाध्याय का उल्लेख मिलता है। अध्ययन के दिन अध्याय कहलाते थे । दीघनिकाय(3) से विदित होता है कि शिक्षा में धर्म का विशेष महत्व था। यांत्रिक शिक्षा केन्द्रो, प्रशिक्षण केन्द्रो एवं संगठित शिक्षणसंस्थाओं का उल्लेख जातको (4) में मिलता है। महाप्रजापती विस्सा, सुन्दरी नन्दा, अमरा, उदुम्बरा, आयचन्द्रता आदि विदुषी नारियों का उल्लेख मिलता है। (5) स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। ब्राह्मणो का एक ऐसा वर्ग भी था जो भ्रमण कर अपने से सिद्धान्तों का प्रसारण करते थे महिलाओ ने दार्शनिक विचारधारा में महायोग दान दिया(6)।

धार्मिक अवस्था:-

उपनिषदों में कर्मकाण्ड परक अनुष्ठानो और कृत्रिम यज्ञो का विरोध कर, दि शिक्षा आध्यात्मिक विध तथा मोक्ष प्राप्ति पर विशेष बल दिया था धर्म की कलुषिता ने जीवन की रंगीन दुनिया में विष घोल दिया। सरल वैदिक धर्म वाह्य आडम्बरो को कलुषित हो गया । जाति पाति एवं वर्णाश्रम के नियम कठोर हो गये थे परिणामस्वरूप धार्मिक सुधारण क्रान्ति हुयी (7) बुद्ध जी ने चार आर्य सत्यों का उल्लेख किया है।(8) दुख, दुख, समुदाय, दुखनिरोध, गामिनी प्रतिपदा। दुखों को दूर करने के लिये मध्यम मार्ग का उल्लेख किया है।

1- 2/10, 49-60 ,140, 160, 113, 184, 11/264, 33, 65, 4/100, 6/3, 12/111, 5/233
2- 3/3/122 (3) 1/8
4- जातक 1/355, 4/391, 1/317, 472, 417, 463, 510, अगुत्तर निकाय 3/391, 3/12 122, 2/49, 5/138, 457, थेरी गाथा (अंग्रेजी अनुवाद पृ0 12-13, 22-33
5- जातक 6/365, कल्पसूत्र 5/135
6- नलिनाक्ष दत्त एवं वाजपेयी के0डी0 पृ0 19
7- वराव आर0 जी0 वी0आर0 एम0 आईसी भाग 14 न0 9 सितम्बर 1963 पृ0 333-34
8- महापरिनिर्वाण सुत 2/3, मज्झिम निकाय 1/5/4, 2/4/2, संयुक्त निकाय जिल्द 5पृ0 39-40

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्यक(1) दृष्टि, सम्यक, संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्मान्त, सम्यकआजीव, सम्यकस्मृति, सम्यक व्यायाम, सम्यक समाधि इन आठों अंगो को 3 स्कन्धे प्रज्ञा, शील, एवं समाधि के अन्तर्गत रखे गये है(2) बुध्द वीर्य स्मृति एवं प्रज्ञा से ही आध्यात्मिक विकास सम्भव है। महावीर स्वामी ने सम्यक श्रध्दा, सम्यक ज्ञान तथ सम्यक आचरणो पर विशेष प्रकाश डाला (3)बुध्द जी अपनेशिष्यों को स्वयं शिक्षा देते थे और संघ में नये नये दीक्षित हो कर आने वाले भिक्षुओ पर बड़ी सतर्क दृष्टि रखते थे। कपिल वस्तु के विश्राम के समय उन्होने सोचा कि मुझे स्वये नवदीक्षित भिक्षुओं की देखभाल एक छोटे पौधे का माली के समान देख भाल करनी चाहिये 4)। सावत्थी से बुध्द जी राहुल को अंकं बन में विकारो को नष्ट करने हेतु ले गये और उन्होने कहा सच्चे शिष्य को इंद्रियों और उनके विषयो के प्रति आसक्ति नही रहनी चाहिये। भौतिक तत्वों का अस्तित्व गंगा के जल्व पर तैरते हुये पेमे के समान ही है तथा वेदना का अस्तित्व गंगा के बुलबुलो के समान है। संज्ञा ज्येष्ठ मास की दुपहरी में दिखाई पड़ने वाली मृग मरीचिका के समान है(5) संस्कारो में केले के खम्बे से अधिक कोई अस्तित्व नही है और विज्ञान केवल जादूगर के खेल के सम्म है(6) स्कन्ध उत्पत्ति विनाशशील है।

निर्वाणः- निर्वाण इसी जन्म से सम्भव है (7) मोक्ष चिरशाश्वतआर्यगामिनी है(8)। निवृत मनुष्य को धर्म की आवश्यकता नही (9)

1- स्वामी प्रबुध्देरानन्द ' बुध्दिज्म एण्ड वेदान्त ' वी डब्लू 160, 1966 पृ07-16, जोषी लालमणी 'द बुध्दिज्म एम0वी0 ओ0 भाग 64 न0 1-2 जनवरी फरव री 966 पृ0 1-9
2- गैरोला वाचस्पति ' भारतीय दर्शन ' पृ0 154, नलिनाथ दत्त और वाजपेयी के0 डी0 वही पृ0 52
3- गुलाबराय ' भारतीय संस्कृति पृ0 165
4-- संयुक्त निकाय भाग - 3, पृ0 91, 105-106, 2, पृ0 281, 5 पृ0 269
5- मज्झिम निकाय 3 पृ0 227 संयुक्तनिकाय भग 4 पृ0 106, भग 3, पृ0 142, 151
6- नलिनाथ दत्त एवं वाजपेयी के0डी0 वही पृ0 130
7- संयुक्त निकाय जिल्द 3 पृ0 187 मज्झिम निकाय 1/3/2 राधाकृष्णनन इण्डियन फिलासफी पृ0 333
8- राधा कृष्णन 'भारतीय दर्शन पृ0 333
9- मज्झिम निकाय 1/3/2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महावीर स्वामी तथा बुध्द जी ने निर्वाण को आवश्यक बताया है तथा जीवन का लक्ष्य घोषित किया(1)

ईश्वर एवं सृष्टि :- मज्झिम निकाय(2) से विदित होता है कि उन्होंने ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रुप में स्वीकार नहीं किया परन्तु उन्हे ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ा। संसार, जीव, पुदगल, धर्म, अधर्म आकाश, पाताल, का समूह ये पदार्थ शाश्वत नित्य और अनश्वर है अतः इसे निर्मित संसार भी मूलतः शाश्वत, नित्य और अनश्वर है(3) बौध्द तथा जैन धर्म में ईश्वर को अधिक से अधिक आत्मा ही माना गया है(4)।

कर्म:- मज्झिम निकाय(5) में विदित होता है कि ज्ञान प्राप्ति कर्म पर ही आधारित है।जीव आजीव के माध्यक का सम्बन्ध कर्म ही है। इस कर्म के ज्ञानवरणीय, दर्शनावणीय वेदनीय, मोहनीय, आयु नामगोत्र आठ प्रकार है। ज्ञान, पूजा, कुल, जाति तथा शरीर के अहंकार से दूर रहना चाहिये ।अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह 5 महा-व्रतो को पालन करने के लिये मैत्री प्रमोद करुण्य और माध्यस्थ (बुरे आदमी की बात पर ध्यान न देना) आवश्यक है। शील व्रत के गुणव्रत तथा शिक्षाव्रत दो प्रकार है। गुणव्रत के दिगव्रत , देशव्रत, और अनर्थ व्रत तथा शिक्षाव्रत के सामायिक प्रोषधापवास उपभोग अतिथि संविभग प्रकारो का उल्लेख (6) हुआ है। ईर्या समिति , भाषा समिति, एषणा समिति, उत्सर्ग समिति एवंआदान निक्षेप समिति कावर्णन साहित्य में मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति को कर्म का फल भोगनापड़ता है तथा कर्मों से प्रभावित जीव संसार में भ्रमण करता है ।(7) अष्टाध्यायी (8) में उल्लेख है कि अन्तःकरण के सुख दुख के कारण

1- गैरोला वाचस्पति 'भारतीय दर्शन पृ0 118
2- वही 2 पृ0 199
3- पंचस्तिकाय समयसार 15
4- राधा कृष्णनन वही पृ0 33।
5- वही 2/2/1 दीर्घ निकाय 3/4, अंगुत्तर निकाय 3/206,4/28।
6 - गैरोला वाचसपति वही पृ0 118
7- मज्झिम निकाय 3/45-6 सतउद्मं जैन सूत्र जिल्द 2 पृ0 301, मनु 4/173,11/51 उत्तराध्ययन टीका 33/1-3
8- 7/2/18,3/3/116,3/1/18,5/4/63-64

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शरीर

शरीर को भी सुख दुःख भी अनुभव करना पड़ता है। सुख अनुकूल तथा दुख प्रतिकूल वेदना है। मनुस्मृति (1) से विदित होता है कि सभी जाति व धर्म अलग अलग है। परन्तु असत्य भाषण, चुगुल खोरी, वेद कोनिन्दा, गवाह मैं असत्य बोलना, ब्रह्म हत्या के समान है। बुध्द जी(2) जीवन तथा जगत कोमानकर चले है इस चक्कर मे नही पड़े कि विश्व अमर है अथवा मनुष्य उन्होन ने तो केवल समय पर कार्य करने का महत्व दिया।

कठिन साधना:- तप साधना का जीवन मैं विशेष महत्व है। पृथ्वीकाय, जलकाय, वायुकाय अग्निकाय, वनस्पति काय, त्रस जीवो के प्रतिसंयमपूर्ण व्यवहार ही अहिंसा है(3)। भातिक तत्व का दमनकरनेहेतु तपश्चा वृत अनशन एवं आत्महत्या तक का विधान है। सत्य तप शुध्द एवं पवित्र जीवन तथा अध्ययन दान से गृहस्थ भी अपना कल्याण कर सकते है। सुतनिपात (4) से विदित होता है कि बुध्दशरणं, धम्म शरणं, तथा संघशरणं त्रिशाल एवं पंचशील संज्ञा, काषाय ~~अमसम~~ वृत को मानने वाला किसी जाति का व्यक्ति बुध्द का उपासक हो सकता है। बोध्द तथा जैन साहित्य(5) से विदित होता है कि भिक्षु जीवन तपोमय एवं अत्यधिक अनुशासित थं, उसको व्यवसाय करने, सम्पत्ति रखने तथ सुगन्धित वस्तुओ का प्रयोग करने का निषेध था। आत्मा के द्वारा आत्मा की जीत का जैन उद्‌घोष माननीय पुरुषार्थ की प्रतिष्ठा करता है।

आत्मा तथा पुनर्जन्म:- आत्मा बांसुरी से निकली हुई ध्वनि के समान तथा पूर्व जन्म के कर्म के अनुसार फल मिलता है(। विश्व के स्वरुप की व्याख्या करने वाला निर्माण मार्ग का आविष्कारक तथा समुद्र के समान गंभीर है।

1- 1/2; 2/26, 87, 28, 88, 11/55

2- मज्झिम निकाय ~~1/~~ 1/426,

3- खन्ति पालो भिक्षुक ' बुध्दिज्म एण्ड जैनिज्म टालरेन्स ' एपीए भाग 24, पृ 196 180-181, मज्झिम निकाय 2/119, अंगुत्तर निकाय 1/214, 4/254, 257, 8/262

4- पृ 69-70

5- अगुत्तर निकाय 3/206, 4/281, संयुक्त निकाय4/104, 5/14, 3/288, 4/265 3/91, 105-106, 4/73, 2/281, 5/88, मज्झिम निकाय2/1, 3/28उत्तराध्ययन टीका 33/13-16, सुत कृतांग 1/9/13, दसवे कालिका 5/194, 3/46/8

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मृत्यं के उपरान्त ध्याता के चाहे वह अर्हत हो अथवा तथागत, मन शरीर के अस्तित्व के भावना का अन्तिम चिन्ह भी मिट जाता है और वह मूलरुप से शुन्यतः में स्थित हो जाता है(1)।

यज्ञः- अष्टाध्यायी से विदित होता है कि इष्टि पशुबन्ध एवं सोम यज्ञ तीन प्रकारके यज्ञो में दर्शपौर्णमास जैसी साधारण इष्टियां, पाक यज्ञ जैसी साधारण होम, पंचदिन तथा सात दिन जैसी विशिष्ट स्थली पाक एवं ? अग्निष्टोम, राजसूय तथ वाजपेयी जैसे कृत का विवेच्य युग में महत्व था। क्रतुओं में सोम की आहुती दो प्रकार की होती थी। अहिन, (111 दिन) सत्र (12 से 100 वर्ष अथवा अधिक समय तक चलने वाला) आप०, अश्व, कात्यायन, अष्टाध्यायी एवं मनुस्मृति में श्रौत यज्ञ, अग्न्या रवा, शुनासीरेय, अग्निष्टोम एवं अश्व मेध के यज्ञ का उल्लेख मिलता है(3)। यज्ञो में तण्डुल , यव, वेदी के अतिरिक्त असंख्य सामगानकरने वाल अवस्कार , पुरोहितो का भी महत्व पूर्ण स्थान था(4)

भक्तिः- भागवत धर्म का भी प्रभाव था मन्दिरों की मूर्तियो को रखा जाने लगा था(5) लोग देवताओं के नये जोड़े प्रचलित थे जैसे ब्रह्मा प्रजापति , शिव, वैश्रवण, स्कन्द विशाख, संकर्षण- वासुदेव, । कंद मूल फल तथा नैवेध्द से देवता वंदित किये जाते थे(6)।

इन्द्रः- जातको में (7) इन्द्र कोअध्यक्ष माना है। अष्टाध्यायी में इन्द्र को मघवन, वत्रहन तथा महेन्द्र आदि नामोंसे सम्बोधित किया गया है(8)।जातको निशिथ चूर्ण एवं वृहतकल्पभाष्यएवं कल्पसूत्र से (9) विदितहोता है कि इन्द्र अपने साथ ही मातुल, देवताओ 8 महीषियों 3 सभाओ, सप्त सेनाओं, 7 सेनापतियों तथा अनेक शरीर रक्षको के साथ सुसोभितहोता है।

1- संयुक्त निकाय 2/25, 4/95, 4/37 मझिम निकाय3/75, जोशी एल०एम० 'बुध्दिज्म प्रिन्सिपलआफ नान क्लन ओटी' एम०बी० ओ० 64 न० 11/12, 1966पृ० 258-59

2- 7/3/1, 4/3/28 8/20, 6/29/2, 8/9/19,

3- आप० 6/15/14-16, 8/2/18, 19/18-27, 10/12/14, 91/218/2/22, 8/2/13 अश्व० 2/15/2, 1/9/1-/, 1/1, 5/20,, जैमनीय 4/19-21, कात्यायन 4/1/30 5/1, 21/4, अष्टाध्यायी3/3/99, 3/2/90, 86, 3/1/132, 3/2/16मनुस्मृति 1227

4-अष्टाध्यायी 3/2/132, 4/3/28, 1/3/16, 5/2/21, 36, 8/2/92, 6/4/11, 5/1/135 मनुस्मृति।227

अग्रवाल वासुदेव शरण ' पाणिनी कालीन भारत ' पृ० 478-80, 349-51

6- शुक्ला डी० एन० वास्तुशास्त्र हिन्दूइकनोलाजी पृ० 3

7 - जातक 4/51-53, 6/132, 1/147/, 3/148, 1/31, 4/253, 1 /202

8- अष्टाध्यायी 4/2/32, 4/4/138, 3/2/80, 4/2/28

9- जातक 3/222, 5/383, कल्प सूत्र 1/13, वृहकल्पभाष्य 4/51,-53, निशीद चूर्ण 9/11/4, -(,?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिव

शिव:- वृहतकल्प भाष्य (1) विदित होता है कि शिव की पूजा का प्रचार था। स्कन्द महोत्सव(2) से शिव पूजा के प्रचलन का आभास होता है। निर्लिप्त निर्विकार ~~स्कन्द महोत्सव~~ निर्पेक्ष, अपार ज्योति से ज्योतिष सच्चानन्द अखण्ड और दिव्य विभूतियो से मंडित है(3)।

विष्णु:- भागवत धर्म का प्रचार था। कृष्ण को विष्णु का अवतार माना गया है(4)निशीथ चूर्ण(5) तथा अष्टाध्यायी (6) से वासुदेव सम्प्रदाय का भी ज्ञान होता है। देवता विरोधी कर्म संहिता में भगवान के उपहास एवं उपेक्षा के भजन होने पर भी (7)भाव की रसमय धारा से जनमानस आलोकित होता रहा। जातको में (8) लक्ष्मी समुद्र देवी गंगा आदि देवियो का उल्लेख मिलत है।

यक्ष:-- उत्राध्ययन सूत्र (9) से विदित होता है कि यक्षो को प्रसन्न करने के लिये यक्षो का आयोजन किया जाता था। आवश्यक चूर्ण, नायाधम्म कहा, अन्तगडदशाओ , उत्राअध्ययन, एवं जातको में यक्षो के विशालकाय तथा कूर करमी होने का उल्लेख मिलता है(10)।

नाग तथा सर्प :- विवेच्य युग में भवन निर्माण के विशेषज्ञो के रुप में मांस मदिरा तथा दुग्ध से तृप्त होने वाले सर्पों का महत्वपूर्ण स्थान था(11)।उबरदत्त, सुरवब,मयनेभ्रद, मंडीर, शूलपाणि, सुराप्रेय, धंटिक पूर्णगद आदि शक्तिशाली आदि यक्षो का नाम मिलते है(12) इसी प्रकार कंती, नटा, भटट, रेवी, तमसुरी, लोका, मेखला, आलिका, वेन्ध,मथा, तिमीष्कि आदि नाम यक्षीयों के मिलते है(13)। मथुरा में गदर्भ यक्ष प्रसिध्द था(14) जिसका बुध्द ने दमन किया था। यक्षो तथा सर्पों के साथ ही गरुण सुजासुपरणा, पिशाचों, आसुरो, राक्षसो की भी पूजा होती थी (15)। तंत्र मंत्र से पिशाचों का दमन किया जाता था(16)

1- 2/804 (2)निशीत चूर्ण 19/11/84/509 (3)गोरोला वाचसपति'भारतीय संस्कृति और कला'पृ0134
4- कीथ जे0आर0 एस0 1908 पृ0 849
5-4/3/95-108 डब्लू क्रुक 'पापुलर रिलीजन एण्ड फाक्लेपर आफ नार्दन इंडियाभाग।पृ03
6-4/3/98 (7)जातक1/494,2/97,8/206-7
8- जातक6/392,33,/2/17,423,12,जैन नीरज जैन पुरातक में गंगायमुना ए0एन0आई1983
9- 16/26, (10)आवश्यक चूर्ण2/19/87,नायाधम्म कहा12/48,अंतगड दशाओ6,अत्राअध्ययन 89,जातक 304/, 1/273,102,4/491,1/328
11-जातक 1/472,498,2/111,6/173,उत्राअध्ययन18/234,नायाधम्म कहा 8/95
12- नलिनाक्ष दत्त एवं वाजपेयी के0डी0 वही पृ0 17
13-मोतीचन्द्र सेंट आफ यक्ष कल्ट 1924,पृ0 43 बुलेटिन आफ दी प्रिन्स आफ वेल्स बम्बई
14- नलिनाक्ष दत्त गिलगिट मैनुसक्रिप्टस जिल्द 3 भाग। पृ0 14-17
15-आव0 2/13,6/191,अष्टाध्यायी 4/4/211,4/4/123,
16- आवश्यक चूर्ण 2/11/62,उत्राअध्यन टीका 1/5/ 12,नायाधम्म कहा 8/99

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्राअध्ययन टीका(1) में विद्याहारी का वर्णन भी मिलता है यह उर्ध्वमानवी तथा अर्धदैवी जाति के है। रसिक होने के कारण विवाह के अवसर पर कन्याओ का अपहरण भी कर लिया करते थे। वृक्ष पूजा के भी उल्लेख जातको में मिलते है(2)।

लोक धर्म तथा जीवन दर्शन

इस समय जैन धर्म तथा बौध्द धर्म के कारण नैतिक तथा अध्यात्मिक गुणो की ओर विशेष ध्यान दिया गया। तप विधा, श्रुत को प्रमुख महत्व देकरचन्द्रायण वृतो का प्रारम्भ हो गया थ(3) मनुस्मृति (4) से विदित होता है कि विशिष्ट कार्य की सिध्दी के विशिष्ट दिन एवं माह तथा संयम उपयुक्त समझे जाते थे। प्राकृतिक शक्ति तथा उसके प्रभाव में मे विश्वास किया जाता था(5) तीर्थ भ्रमण के लिये चतुर्थ, षष्टी, अष्टमी, नवमी एवं द्वादशी तिथियां पवित्र समझी जाती थी (6)तारा पूजा,इन्द्र धनुष्य, पृथ्वी पूजा, कुआँ खुदवाना आदि कार्य पवित्र समझा जाता था(7) भूत चुड़ैल को महत्व दिया जाता था लोग भयभीत थे (8) अष्टाध्यायी (9) से विदित होता है कि पाप पुण्य कर्मफल को मानकर स्वर्ग नरक शब्दों का प्रयोग होता था। शुभ अशुभ फल पर विचार करने हेतु ज्योतिष विधा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। 'इ' देवता तत्व ज्ञान के प्रतिनिध थे (10) धर्म अर्थ मोक्ष पुरुषार्थ ही मानवजीवन का परम लक्ष्य था न तो त्याग ही सब कुछ और न मोक्ष ही सब कुछ, जिसको जिस प्रकार का कार्य दिया गया वही वह करने लगा (11) धार्मिक जीवन में संगठित प्रवृतियां का रुप विकसित हो गया था(12) निश्चित एवं व्यवस्थित व्याकरण स्नेह भक्ति का प्रादुर्भाव विभिन्न देवी देवताओ का प्रभावशाली अस्तित्व अनेक मानवो का मानवीकरण

1- 12/227, 18/28, 24/137/193 (2) जातक 4/217, 353, 74, 153, 3/23, 160, 5/72, 1/259, 169
3- मनुस्मृति 3/25-28, अष्टाध्यायी 3/2/72, 5/1/52
4- 2/143, मैक्डानल एण्ड कीथ ' वैदिक इन्डेक्स ' 1/112
5-मिश्र सुदामा 'जनपद स्टेट इन एनसियेन्ट इंडिया पृ0 261
6- जातक 1/45, 6/458, 251, 1/296, 5/388, 6/190, -8, 5/388
7-डब्लू कुक वही पृ0 25-35
8- वही पृ0 311, कौसाम्बी धर्मानन्द 'भगवान बुध्द' पृ0 76
9-5/1/72, मनुस्मृति 2/143
10- तिलक लोक मान्य ' गीता रहस्य ' पृ0 162
11-मनुस्मृति 1/87, 1/28, शर्मा मथुरीलाल वही पृ0 69
12- महावग्ग 281, दर्माशिमा बुध्दिज्म इन न्यू प्रसपेक्टिव जे0जी0जे0 आर0एस0बी भाग 16, प्लेट 33-41, 197, पृ0 201-11 जोशी एल0 एम0 ट्रू ऐ बुध्दिज्म जे0पी0 जे0 के0 एस0 आर0 भाग16, 1972 पृ0 289

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वस्त्रालंकार एवं रहन सहन के स्तर में सुधार तथा ब्रह्मचर्य शक्ति की पराकाष्ट आदि गुणो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह युग भविष्य की कुंजी है। बौध्द धर्म का प्रमुख केन्द्र मथुरा था दूसरी शताब्दी के मध्य ई० पू० जैन धर्म की जड़े गहरी जम गई (1)। मथुरा के उपगुप्त विहार का बहुत महत्व था(2) अनेक लौकिक मान्यताओ तथा अंधविश्वासो का भी पता चलता है। हस्तज्योतिष, देवकथन, दैवी घटनाओं से फलो का कथन, स्वपनफल, मूषको द्वारा कटे हुये कपडे का फल कथन, अम्बिलि देवी की बलि प्रदान4 वशीकरण, ज्योतिष रहस्य उद्घाटन गुप्त धन खोजने की विधी तथा इन्द्र जाल की विधाओ का महत्व था(3) चमत्कार पूर्ण क्रिया कलापों तथा मंत्र तंत्रो में श्रध्दा विधमान थी (4) इस युग में मनुष्य की चेतना गवेषणा के क्षेत्र में उन्मुक्त विहार कर रही थी इसलिये समस्त सृष्टि जिज्ञासा का विषय बन गई। अंधविश्वास से अपने ध्यान हटाकर तर्क की सहचरी बन गई थी। मनुष्य कीउत्सुकता, जिज्ञासा और तर्कशीलता के सम्पूर्ण वातावरण को सस्वर कर दिया था स्थान स्थान पर सम्प्रदायो की स्थापना हुई धर्म परिवर्तन हुये जीवन के विविध विषयो का मूल्यांकन हुआ तथापि सामान्य जीवन न्यूनाधिक मात्रा में अपरिवर्तित ही रहा। विवादो झंझावट आये। सिध्दान्तो के संघर्ष हुये विभिन्न दर्शन टकराये असके विपरीत भारतीय ग्रामीण सम्प्रदाय आदिरूढि वादी एवं परम्परानुगामी ही रहा। यही कारण है कि हम बौध्द तथा जैन साहित्य में हम उसे पूर्ववत परम्परागत लौकिक धर्म का ही अनुसरण करते पाते है जो तर्क के स्थान पर असीम श्रध्दा के उपर अवलम्बित है(5) भारतीय दर्शन महान वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक भावना से अनुप्राणित है मनोविज्ञान का प्रथम पुष्प सर्व प्रथम भारतीय दर्शन के उथान में ही खिला(6)

1- लाहा विमल चरण वही पृ० 181, 185, विकवध तीर्थ कल्प पृ० 50

2- मज्झिम निकाय भाग 2 पृ० 83, कनिंघम 'आर्कलोजी सर्वे आफ इन्डिया भाग 1, 1975-7 तथा 77-78 पृ० 78।

3- रिज डेविड 'बुध्दिस्ठ इंडिया'। पृ० 143-44

4- नलिनाक्ष दत्त एवं वाजपेयी के०डी० वही पृ० 17

5- सरकार जदुनाथ का युगीन भारत पृ० 31

6- उपाध्याय भरत सिंह 'बौध्द दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन' पृ० 144

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौर्य एवं शुंगकाल

अध्याय - 6

राजनैतिक परिस्थितियों का प्रभाव सामाजिक एवं धार्मिक जीवन पर पड़ता है। यही कारण है कि इतिहास में सामाजिक व्यवस्थाओं का अध्ययन राजनैतिक स्थिति के परिपेक्ष्य में किया जाता है। भारतीय इतिहास में अपने प्रभाव एवं प्रभुता को बढ़ाने के लिये समाज के विभिन्न वर्गों में हुई पारस्परिक संघर्ष का अध्ययन सामाजिक इतिहास के लिये उतना ही महत्वपूर्ण है जितना राजनैतिक इतिहास में सिंहासनो के लिये राजवंशों का युद्ध।लगातार शस्त्र आक्रमणो के कारण राजनैतिक जीवन विश्रृंखलित हो गया था ऐसी अवस्था में सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन उचित अभिव्यक्ति प्राप्त न कर सका। बौद्ध तथा जैन धर्म में वैदिक कर्मकांडो की आलोचना से वर्णाश्रम व्यवस्था शिथिल हो गई थी।

सामाजिक संरचना :- वर्ण व्यवस्था ठोस धरातल पर आधारित नहीं थी वेदांग विद ब्राह्मणो को भी शस्त्र धारण करना पड़ा। वर्णाश्रम धर्म का पालन अनिवार्य था(1)। विवेच्य युग में हम केन्द्रियकरण की व्यवस्था का सूत्रपात देखते है जिसमें केवल बड़े बड़े सम्प्रदाय ही एक सुव्यवस्थित ब्राह्मण(कट्टर पंथी) के सामने अपना अस्तित्व बनाये रख सकते थे (2)।

कौटिल्य (3) ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र चार वर्णों का उल्लेख अर्थशास्त्र में किया है। मेगस्थनीज(4) ने दार्शनिक,कृषक, पशुपालक, शिल्पी,योद्धा, परामर्शदाता, दस्तकार, सात वर्गों का उल्लेख किया है। अशोक ने अपने शिला लेख मे ब्राह्मणो का दर्शन श्रेयकर बताया है(5)

ब्राह्मण :- ब्राह्मणो का समाज में आदर था(6)।सर्वोच्च पद ब्राह्मणो का ही समाज मे था। डायोडोरस ने लिखा है कि पुरोहित के रूप में अपनी सेवाओं के बदले उन्हें बहुमूल्य उपहार मिलता था। अर्थशास्त्र(7) में राजा को आदेश दिया गया है कि वह ब्राह्मणो को दंड एवं कर से मुक्त करदे तथा उनके भूमि का दान करे परन्तु देश

1- मुखर्जी राधा कुमुद, चन्द्रगुप्त तथा उसका काल पृ0 77
2- रेप्सना ' केम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इण्डिया' पृ0 384
3- अर्थशास्त्र 1/3
4- स्ट्राबो 14-1 माकक्रिंडल- एंशिण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिटरेचर पृ0 41-53
5- अशोक शिला लेख 3,4,8, हुल्श 'द इसक्रिप्शन्स आफ अशोक' भूमिका पृ0 9-15, 23-28
6- कौटिल्य अर्थशास्त्र 4/8, मुखर्जी राधा कुमुद 'वही' पृ0 24
7- कौटिल्य अर्थशास्त्र 2/1, 3/1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्रोही ब्राह्मणो के लिये जल समाधि दंड देने का भी विधान किया है। समाज के सभी वर्गों को वर्णाश्रम धर्म का पालनकरना चाहिये(1)

क्षत्रियः-- क्षत्रिय का प्रमुख कर्तव्य सभी वर्णों को अपना धर्म पालन करने में सुरक्षा करे। अर्थशास्त्र(2) से विदित होता है कि क्षेत्रीय अध्ययन, भजन, तथा शस्त्र केद्वारा जीवकोपार्जन करें। धर्म पालन करने वाली प्रजा का कभी नाश नही होता। शस्त्रों का प्रयोग देश की रक्षा, प्राणियों की रक्षा, विधाध्ययन करना, भिक्षा देना तथा ईश बन्दना करना क्षत्रियों का प्रमुख कर्तव्य था(3)

वैश्य तथा शूद्र :- कौटिल्य ने वैश्य तथा शूद्रों का भी उल्लेख किया है(4) देश की आर्थिक बागडोर वैश्यो के हाथ में ही थी। मेगस्थनीज को वर्ण सूची में वैश्यों का तृतीय स्थान था। शूद्र द्विजाति की सेवा करता था(5)। शूद्रदो को कौटिल्य ने पशुपालन, वाणिज्य तथा खेती करने जैसा कार्य करने का अधिकार नही दिया ब्राह्मण क्षत्रियों को विशेषाधिकार दिये जबकि शूद्रों के अधिकार सीमित थे। शूद्र दास होते थे परन्तु उनके साथ बुरा व्यवहार नही किया जाता था (6)और न ही बेचा जा सकता था(7) जैसे जैसे शक्तिधारी जातियों के हाथ में शक्ति संचय होता गयी वैसे वैसे पैदावार के सभी साधन उनके हाथों मे सिमटते चले गये बाद में कृषियोग्य भूमि क्षत्रिय के अधिकार मे आ गई तथा शूद्रो के हाथों में जो कुछ भी था वह छिनता गया((8)

अनेक वर्ण संकर जातियों का प्रादुर्भाव हो गया था। अनुलोम विवाह से सम्बष्ट, पारशव, अः उग्र शूद्र, तथा प्रतिलोम विवाह से मागध वैदिक सन्तान थी। इन वर्ण संकर से परस्पर होने वाली सन्तान कुक्कुटक, वेण, कुशीलव, श्वपाक थी। वर्ण संकर जातियों को धर्म अनुसार उनका समाज मे निम्न स्थान था। समाज मे यवनशक, कुषाण आदि विदेशो

1- अर्थशास्त्र 5/1
2- वही 3/1
3- वही 3/2, मर्खर्जीशाधा कुमूद वही पृ0 78 (4)अर्थशास्त्र 1/3
5- अर्थशास्त्र 31/मा 1/12
6- वासम "अदभुद भारत" पृ0 139
7- अर्थशास्त्र 3/13
8- आचार्य दीवंकर "कौटिल्य कालीन भारत" पृ0 66

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जातियो का मिश्रण था समाज विदेशी आक्रमणो के सम्पर्क में आया। शिथिल पड़ती हुई समाज व्यवस्था में यह विदेशी जातियां धीरे धीरे अन्तर्मुख हो गई। समाज की सरंचना में विभिन्न संस्कृतियों ने योग दान दिया।

आश्रम:- वैदिक काल के समान वर्ण व्यवस्था के रुप में सामाजिक जीवन को चार भागो में विभक्त करके कौटिल्य कालीन भारत आश्रम व्यवस्था के रुप में व्यक्तिगत जीवन को भी चार भागों में विभक्त करके उसे व्यवस्थित तथा नियमित करने का प्रयत्न किया। ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्थाश्रम वानप्रस्थाश्रम और सन्यासाश्रम मे चार आश्रम थे। गृहस्थाश्रम तथा ब्रह्मचर्याश्रम में कर्म का विधान है जबकि वान प्रस्थाश्रम तथा सन्यासाश्रम में सन्तोष त्याग तथा आत्मज्ञान के विधान का उल्लेख मिलता है। राधा कुमुद मुर्खजी के अनुसार(1) ब्रह्मचार्य आश्रम में विधार्थी गुरुनिष्ठा एवं चिन्तन से भजन करता था। ब्रह्मचारी वेदो का उध्ययन, उपासना, भिक्षा मागना, एवं आजीवन गुरु पद पर निष्ठपूर्वक चलने की प्रतिज्ञा करता था। ब्रह्मचर्य जीवन अर्थात विधाध्ययन के उपरान्त विद्यार्थी सुवासित वस्त्र एवं अलंकार धारण करता तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता था। गृहस्थाश्रम के उपरान्त अपने परिवार का उत्तरदायित्व पुत्रों पर छोडकर तथा वैधानिक अनुमति प्राप्तकर बानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करता था(2)।कौटिल्य(3) ने परिव्राजक, तापस , मुंड, वानप्रस्थी, तापोवन, गुहावासी तथा अन्तेवासी का भी उल्लेख किया है। स्ट्राबो (4) ने दार्शनिको एवं सन्यासियो का वर्णन किया है।इस समय वहभूमि पर सोना कन्द मूलफल खाना, जटा धारण, यज्ञ करना, तथा ईश उपासना में ही अपना जीवन व्यतीत करता था। सन्यासियों को इन्द्रियों पर कठोर संयम समस्त सम्पत्ति तथा मोहममता का त्याग कर भूमि पर सोते थे (5)।किसी भी वर्ण का व्यक्ति सन्यासी हो सकता था।

1- मुखर्जी राधा कुमुद ' चन्द्र गुप्त और उसका काल पृ0 78

2- अर्थशास्त्र 12/9-28

3- वही 1/10, 11-12, 1/12, 3/16, 2/2-11, 34, 36, 3/8, 10/3, 1/34

4- मैकिण्डन - ऐशियेन्ट इंडिया ऐज डिस्काइब्ड इन कलासीकल लिटरेचर ,स्ट्राबो 15, 1, 66 (पृ0 72)

5- अर्थशास्त्र 2/12, मुर्खजी राधा कुमुध वही पृ0 78

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐरियन(1) तथा प्लुटार्क ने सिकन्दर तथा सन्यासियों की भेंट का वर्णन किया है। स्ट्राबो(2) ने लिखा है कि श्रमणों में हाईलोबियार को सर्वाधिक सम्मान प्राप्त था। कठोर संयम का व्यवहार करके आध्यात्मिक जीवन में नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त करते। राजा भी उनको सुख सुविधाओं का ध्यान रखता।

यद्यपि सामाजिक सरचना में विभिन्न संस्कृतियों के योगदान के कारण एक अपूर्व आभा प्रज्वालित हो उठी थी / लेकिन मूल रुप से वैदिककालीन ही बनी रही।

संयुक्त कुटुम्ब :- परिवार के सभी सदस्य मिलजुल कर रहते थे बौद्धकाल के उपरान्त विभिन्न व्यवसायों की अलग अलग टोलियाँ बनी, परिवार का मुखिया ही समस्त सम्पत्ति का मालिक होता था। विदेशी जातियों की सम्पर्क के कारण समाज में विघटन प्रारम्भ हो गया था(3)।

संस्कार:- वैदिक काल से प्रतिष्ठित एवं सूत्रकाल में परिमार्जित एवं नियमवध्द किये संस्कारो ने भारतीय हृदय को इतना आलोकिक कर दिया था कि इन अंधविश्वासों को छोडते हुये अंतः चेतना भयभीत हो जाती थी। पूर्व परम्परा के अनसार गर्भाधान जातकर्म, नामकरण, उपनयन, विवाह आदि संस्कारो की प्रतिष्ठा थी। सभी संस्कार महत्व-पूर्ण थे परन्तु विवाह संस्कार का जीवनपर्यन्त महत्व था।

विवाह संस्कार:- विवाह के आठ प्रकार थे (4)ब्रह्मदेव, प्रजापति, आर्य, असुर पिशाच, गन्धर्व तथा राक्षस,। प्रथम चार प्रकार के विवाहें में पारिवारिक स्नेह एवं विश्वास का अटूँट सम्बन्ध तथा बह्म विवाह में कन्या अलंकृत करके बर को सौंपदी दी जाती थी (5)। ब्रह्मविवाह सर्वश्रेष्ठ माना जाता था(6)। अनुलोम तथा प्रतिलोम दोनो प्रकार के विवाहों का प्रचलन था परन्तु प्रतिलोम विवाह निन्दनीय समझा जाता था। गोत्र तथा सपिण्ड विवाह वर्जित माना जाता था(7)

1- मैकिण्डल - ऐशियेन्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन क्लासीकल लिटरेचर, स्ट्राबो 16 66 पृ0 72
2- मार्किण्डिल ऐशयिंट इंडिया ऐन डिस्क्राइब्ड बाई मैगस्थनीज एवं एरियर पैग, पग12, पृ0 87-103, मार्किण्डल इन्वेमन आफ इंडिया बाई अलेकजण्डर पृ0 313-15
3- सहाय शिव स्वरुप ' ~~प्राचीन भारत पृ0 187~~ ' हिन्दू सामाजिक संस्थाये पृ0 102
4- पाण्डेय राजबली ' ' प्राचीन भारत पृ0 187, आचार्य दीपकर वही पृ0 102
5- अर्थशास्त्र अध्याय 2
6- सिंह राजकिशोर ' प्राचीन भारतीय कला एवं संस्कृति ' पृ0 241

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुर्नविवाह तथा नियोग प्रथाः-

नियोग के द्वारा पुत्र प्राप्ति का उल्लेख अर्थशास्त्र (1) में मिलता है। अर्थशास्त्र (2) से विदित होता है कि पुर्नविवाह काअधिकार स्त्रियों का था यदि किसी स्त्री के 10 वर्ष तक सन्तान न हो या लडकियाँ ही पैदा हो, बन्ध्या हो अथवा उसका पति विदेश गया हो तब पुर्नविवाह से पूर्व 8 वर्ष प्रतीक्षा करने का विधान था। अर्थशास्त्र(3) में यह भी उल्लखित है कियदि पति लम्बे समय के लिये परदेश चला गया हो अथवा सन्यास ले लिया हो अथवा मर गया हो तो अपुत्रवती स्त्री 6 माह तक प्रतिक्षा करे तथा सालभर तक पुत्रवती स्त्री को प्रतिक्षा करने का विधान है उसके बाद पति के छोटे भाई अथवा पति के कुल सम्बन्धी से विवाह कर सकती है। डायोडोरस तथा स्ट्रावो उल्लिखित करते है कि विवाह अपने ही वर्ग में किये जाते थे (4)विशेष परिस्थितियों में पति पत्नी दोनो को ही पुर्नविवाह का अधिकार था। कोटिल्य(5) का यह भी निर्देश है कि पुर्नविवाह से पूर्व विधवा को ससुर से आज्ञा लेनी पड़ती थी। विवाह सभी श्रेष्ट थे यदि आपस में प्रीति होती था एक दूसरे/का विश्वास ही विवाह की सफलता की नीव प्रेम एवं विश्वास पर ही आधारित थी। (6)

समाज में नारियों का स्थानः-

समाज में नारियों का आदर था परन्तु वैदिकयुगीन सम्मान की भावना समाप्त हो गई थी क्यों कि उच्चशिक्षा स्त्रियों के लिये बर्जित बताई गई है।जैसे जैसे सामन्तवाद का विकास होता गया पूरा स्त्री समाज भयानक प्रतिबन्धो एवं असह नियतंत्र में फंसता गया। यधपि कोटिल्य ने व्यक्तिगत रुप से स्त्रियों के प्रति अत्यन्त सहानुभूति पूर्ण थे और अपने अर्थशास्त्र में स्थान स्थान पर वेस्त्रियों के प्रति उदारता के भावों का दिग्दर्शन करते है परन्तु एकव्यक्ति के विचार फिर वह चाहे कौटिल्य जैसा महान साम्राज्य का संस्थापक ही क्यों न हो, समाज व्यवस्था के अनिवार्य नियमों का प्रतिवाद एवं व्यापक(7) अपवाद नही कर सकता था। स्त्रियों का आर्न्तनाद पूरे समाज में गूँज रहा था।

1- अर्थशास्त्र 3/2 (2) वही 3/5
3- वही 3/2, पाण्डेय राजबली वही पृ0 187
4- डायोडोरस वही 17/87, स्ट्रावो, वही 15/1/62
5- अर्थशास्त्र 3/2
6- वही
7- आचार्य दीपक ' कौटिल्य कालीन भारत' पृ0 103

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पति के परदेश जाने पर ब्रह्मविधि से विवाहित स्त्री को धन खर्च करने का अधिकार था (1)।गान्धर्व रीति से विवाहित स्त्री को सूद सहित धन वापिस करने का अधिकार नही था आसुर तथा राक्षस विधि से विवाहित स्त्री को चोरी का दंड भोगना पडता था। कौटिल्य(2) ने स्त्री को पुरुष के बराबर अधिकार दिये है परन्तु प्रथम चार प्रकार के विवाहों में तलाक को स्वीकार नही किया है। उच्चवर्ग को शूद्रा के साथ विवाह अनुमति नही दी है(3)। अनुलोम विवाह से उत्पन्न पुत्र को अपने पिता की सम्पत्ति में अधिकार था।कौटिल्य के नियम उन सामाजिक व्यवस्थाओं पर आधारित जो मनुस्मृति तथा अन्य स्मृतियों में प्रतिबिम्बित होने वाले बाद के समाज की अपेक्षा वैदिक समाज के अधिक निकट है।

स्त्री पुरुष की सहचरी थी सभी सामाजिक तथा धार्मिक क्रिया कलापों में पुरुष की सहगामिनी थी । बाल्यावस्था में माता पिता के योवनावस्था मे पति के तथा वृद्धा अवस्था में पुत्रों के संरक्षण में रहती थी ।

सती प्रथा का समाज में अस्तित्व था क्यों कि यूनानियों(4) ने सती प्रथा का वर्णन किया है विधवा पति के शव के साथ चिता पर जला दी जाती थी

वेश्यावृति का समाज में प्रचलन था।अर्थशास्त्र(5) से विदित होता है कि विस्तर छोड़ते समय राजा का स्वागत स्त्रियाँ ही करती थी ।सुयोग्य वेश्या का वेतन एक हजार पणतक होता था। ये स्त्रियाँ अंग रक्षक तथा गुप्तचरो का कार्य करती थी(6)। स्त्रियाँ विक्रय की जाती थी क्यों कि यूनानियों ने स्त्री उनके पति से खरीदने का उल्लेख किया है(7)।

बालविवाह भी होते थे मेगस्थनीजने 6 वर्ष की बालिका के विवाह का उल्लेख किया है परन्तु कौटिल्य (8) ने 16 वर्ष की विवाहावस्था का उल्लेख किया है। चन्द्रगप्त का हेलन से विवाह समाज में स्त्रियों की प्रतिष्ठा का सूचक है।

1- अर्थशास्त्र 3/2 (2) अर्थशास्त्र 3/2

3- वही 3/2

4- मार्क्रिडंल ऐशियेन्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन क्लासेकल लिटरेचर,स्ट्राबो 15-1-30

5- अर्थशास्त्र 1/21 (6) अर्थशास्त्र 1/20

7-मैकिक्रडंल - ऐशियेण्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन क्लासेकल लिटरेचर पृ0 55

8- अर्थशास्त्र 4/15

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खानपानः-

मौर्य कालीन युग आर्थिक सम्पन्नता का युग था । आर्थिक सम्पन्नता का प्रभाव खानपान पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। अर्थशास्त्र में माँस पण्याः(माँस बेचने वाले)पक्व मासिका (पका माँस बेचने वाले), पक्वान्नपण्या(पकाचावल),औदनिका (पका चावल बेचने वाले),आप्तापिका (रोटी बेचने वाले) का उल्लेख अर्थशास्त्र में किया है। मेगस्थनीज (1) ने भारतीय भोजन का वर्णन करते हुये उल्लेख किया है कि उनके खाने का समय एक सा नही था रात्री में भोजन के समय एक पीढ़ा रख देते थे सोने के कटोरे में भात परोस देते थे उसकेउपरान्त भारतीय ढंग से बने सुस्वाद व्यंजन डालते थे अशोक के अभिलेखों से इतना ही ज्ञात होता है कि समाज में माँसाहार का प्रचलन था बौद्ध धर्म गृहण के उपरांत उसने भोजन में पशुपक्षियों के माँस को पकाना विरोध कर दिया था (2)। अशोक ने अपने शिला लेख में उल्लिखित कराया " राजा की धर्म शिक्षा से पशु हत्या बन्द होना, जीव अंहिसा, संबधियों ,ब्राह्मणो तथा श्रमणों का सत्कार, माता पिता की सेवा तथा अन्य धर्माचरण का प्रचार बढ़े"(3)।

यज्ञ के अवसर पर सुरापान किया जाता था । शराब पीने के स्थानसरकार द्वारा निश्चित होते थे । कौटिल्य भी यह भी उल्लेख करता है कि एकव्यक्ति को निश्चित परिमाणसे अधिक शराब न मिल सकती थी । स्पष्ट है कि विवेच्य काल में भोजन सुरुचिपूर्ण एवं सुस्वाद व्यंजनों से पूर्ण होता था।

वेशभूषाः-

अर्थशास्त्र(4) में विभिन्न प्रकार के चमड़े तथा समूरों के वस्त्रों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। नगरों में रहने वाले ब्राह्मण बढ़िया मलमल के वस्त्र पहनते थे कंधे पर दुपट्टा तथा मृगछाला डालते थे तथा सिरपर पगड़ी बाँध लेते थे (5)

1- गाइक्रिडल " एनसियेंट इण्डिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ० 67-70 , मैकिक्रण्डल एनसियेण्ट इण्डिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिटरेचर पृ० 55-8

2- अशोक शिला लेख 1,9 "हुल्स इन्स्क्रपशन आफ अशोक भूमिका पृ० 9-15 , मुखर्जी राधा कुमुद " अशोक " पृ० 13-14, राजेन्द्र प्रसाद संस्कृति और संस्कृति पृ० 127

3- अशोक शिला लेख 4 मुखर्जी राधा कुमुद " अशोक " पृ० 1314

4- शास्त्री गणपति वीही पृ० ~~1/31~~ 1/191, शास्त्री शामा" अर्थशास्त्र पृ० 88,98 फुटनोट 5,6

5- मुखर्जी राधा कुमुद " हिन्दू सभ्यता पृ० 251

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्ट्राबो (1) ने भारतीय क्षौम तथा कपास के वस्त्रों का उल्लेख किया है। ऐरियन (2) ने सूती वस्त्रों का उल्लेख किया है। अर्थशास्त्र (3) से विदित होता है कि कोषाध्यक्ष को विभिन्न ऋतुओं तथा अवसरो पर पहनने वाले वस्त्रों को चूहों तथा क्रीडों से रक्षा करने के उपायों का ज्ञान आवश्यक था। राज्य का अपना कारखाना होता था जहाँ विधवा अपाहिज, बालिकायें, भिखमंगो, वेश्याओं को कार्य करने हेतु रखा जाता था। सूत कातने वालों का पारिश्रमिक सूत की अच्छाई पर निर्भर था अन्यथा दंड दिया जाता था तथा अच्छा कार्य करने पर पुरस्कार भी मिलता था।

पुरुषों की वेषभूषाः-
==============
कामदार साफा घुटने के बीच लटकती हुई चिपकी धोती तथा बटी रस्सियों का कमर बंद वदन का उपरी भाग नंगा रहता था। बायें कंधे पर पडे हुये दुपट्टे एक छोर पीछे की ओर लटका रहता था(4)। भारी पगडी का प्रयोग किया जाता था। इस समय 2 प्रकार की पगडियाँ पहनी जाती थी एक में बालो का सिर पर जूडा बांध दिया जाता था दूसरे प्रकार की पगडी से सारा सिर ढांक दिया जाता था(5) लट्टूदार साफा, झालर वाला साफा, हल का साफा, पिछे उभार एवं अनेकों प्रकार के साफों का उल्लेख मिलता है साथ ही कामदार साफा, पुष्पालंकार साफो का भी प्रयोग किया जाता था(6)। कुमार स्वामी ने सारनाथ से मुगलों जैसी पगडी वाला सिर प्राप्त हुआ है(7)।

सिलेवस्त्रः-
=======
शुंगयुग का भीटा से पूरे बांह का कोट पहने मूर्ति भी प्राप्त हुई है(8) (फलक 1 चित्र संख्या 1)। शुंग युग में कचुंक भी पहनी जाती थी साथ ही फूलनेदार टोपी और पैरों में बूट है(9)। सिलाई कला का अच्छा ज्ञान था

1- ज्योग्राफी 15/1/71 (2) मैक्रिंडल, वही पृ0 16
3- शास्त्री गणपति 1/196, 279, 280
4- कनिंघम भरहुत प्लेट संख्या 22-21, 14
5- मोतीचन्द्र 'प्राचीन भारतीय वेषभूषा पृ0 65
6- कनिंघम वही 33, 3, 4, 24, 21, 22, 25, 17, 44
7- कुमार स्वामी 'हिस्ट्री आफ इन्डियन एण्ड इन्डोनेशियन आर्ट प्लेट। 8
8- मोती चन्द्र वही पृ0 68
9 कुमार स्वामी वही पृ0 14-15।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्त्रियों की वेशभूषा:-

स्त्रियाँ धोती पहनती थीं। कमरबंद फुल्ले और पंजकों से सजा रहता था। धंटियों से बनी मेखला पहनने का रिवाज था। पटका लहरिया-दार हो तथा पर भारी पटका मनके पिरोकर भी बनता था। स्त्रियों का उत्तरी भाग खुला दिखाया गया है पर यक्षिणी चंदा के दाहिने स्तन के नीचे एक मलमली चद्दर की तह के निशान है उनके सिर कामदार ओढनी से ढके होता थाजो कामदार होती थी(1अ)(फलक । चित्र संख्या 2)मा लीलावश कभी कभी पगडी भी पहनती थी (1)। यक्षणी चंदा की वेषभूषा (2)एक सभ्रांत नारी की वेषभूषा का पता चलता है उसकी धोती कमर तक पहुँचती है इस पर खरबुजियाँ मनको और चौखूटी तखतियों से बनी एक सतलडी करधनी है। पटका लहरियादार है कमरबंद फुल्लो तथा पजंको से सजा है। यक्षी यूलीचका(3) की साडी घुटने तक है करधनी तथा कमरबंद बँधा है। सुदर्शना यक्षी (4) सिर पर ओढनी है ,यक्षी के हाथों पर सरकता दुपट्टा तथा सिर पर ओढनी है तथा सिरिमा देवता(5) पंजक से सजा कमरबंद, सतलडी करधनी तथा चूनन दार करीने से पहनी साडी से ज्ञात होता है कि विवेच्य युग की स्त्रियों की पोशाक भारतीय सभ्रांत नारियो के समान है। नर्तकी तथा साधारण सम स्त्री की पोशाक में साफा साडी कमरबंद तथा करधनी है।(6)। मथुरा तथा कौशाम्बी की मूर्तियां भी प्राप्त हुई है जो विवेच्य युग की वेश भूषा का प्रतिनिधित्व करती है(7) मूर्तियों की पुष्टिका जो खाली बच गई है वह फूलों से सजी है। खचित(कढे हुये)[8]वानचित्र(9)(अलंकार बुनना) खंड संघात्य[10](जूडे टुकडों से बना), तत्ुविच्छिन्न (बिना बुने)[11] आदि प्रकार के शाल का उल्लेख मिलता है।

1- ~~मोती चन्द्र वही~~ कनिंघम भरहुत प्ले0 52(1ब) मोतीचन्द्र प्राचीन भारतीय वेशभु पृ0 38

2) कनिंघम वही प्लेट 52

3) वही प्लेट 23 (4) वही

5) वही 51·2 (6) वही प्ले0 18-8

7) डा0एच0जास्टन 'ए टेरीकोटा फीगर ऐट आक्सफोर्ड, जे0आई0एस0ओ0ए0 1942 प्लेट 950,94,102, पर्सीब्राउन 'इण्डियन आर्ट चेक्टर ' पृ06 निहार रंजन 'मौर्य युग आर्ट' पृ0 31, सिवे पाइन आर्ट इन इन्डिया एण्ड सीलोन पृ.10

8) शास्त्री गणपति वही 1/193

9) जार्ज वाट इन्डियान आर्ट एट देहली ' 1903 पृ0 344

10) शास्त्री गणाति वी 1/193

11) वही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कैचलक (ग्वालोका कंबल), कवंल (साधारण कंबल), कलामितिका((गजास्तख), सोमितिका (बैल की पीठ का), तुगास्खखवा(घोडे की जीन), वर्णक(रंगीन कंबल), तालेच्छक (पलंग पोश), वारवाल(कोट) , परिस्तोम(बडा कंबल), समंतभद्रक (हाथी की पाठ) आदि 10 प्रकार के कवंलो का उल्लेख अर्थशास्त्र (यू0शा0)(1) में हुआ है। साधुलोग कौविन चादर पहनते थे । उनकी स्त्रीयाँ चादर ,साडी तथा शिरोवस्त्र पहनती थी (फलक । चित्र 2)। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में अनेक प्रकार के सिले अलंकृत तथा वैभव युक्त वस्त्रो का प्रयोग होता था।

अलंकार:- स्त्री पुरुष दोनो ही अलंकारो का प्रयोग करते थे ।वस्त्रों पर अलंकारों के समान जरी का काम भी किया जाता था। रत्नमणि माणिक, रत्न से जडे हुये आभूषण पहनते थे (2)।एरियन(3)ने लिखा है कि सम्पन्न व्यक्ति हाथी दांत के बने आभूषण पहनते थे । कोटिल्य(4अ) ने मोतियों को हारो का वर्णन किया है यक्षणी के करधनी चूडियाँ, कुडंल,यक्षी चूलकीका के करधनी स्त्रियों के अलंकार प्रियता के धोतक है(4ब) (फलक । चित्र 2)।स्वर्ण का व्यापार , कारोबार, निकासी तथा आभूषणों का निर्माण राजकोय नियंत्रण में होता था(5)। सोना चाँदी के विषय में तो अनियमतायें विषम-तायें भृष्टाचार आज देखने को मिलता है वह उस समय भी मिलता था। इस प्रकार के व्यक्तियों को कठोर दंड दिया जाता था(6)।

आमोद प्रमोद के साधन:- जादू (7) कोटिल्य ने जावंक नामक विधा का उल्लेख किया है जिसका प्रयोग राजनीति में बताया है। विहार करना, (8) नगरों में विहार के लिये शालाये तथा वाटिका ये होती थीं ।अशोक के समय में विहार यात्राओं का

1- शास्त्री गणपति 1/89-192 फुटनोट 7,8,12
2- मोती चन्द्र प्राचीन भारतीय वेषभूषा पृ0 61
3 मार्क्रिडल एंशियेंट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मैगस्थनीज एवं ऐरियन, ऐरियन 16
4- शास्त्री गणपति पृ0 395, 397 (4ब) कनिंघमं भरहुत प्लेo 15
5- कोटिल्य अर्थशास्त्र 3/11
6- आचार्य दीपकंर वही , पृ0 58
7- शास्त्री गणपति अर्थशास्त्र 3/395, 397
8- कोटिल्य अर्थशास्त्र 2/1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का स्वरुप ही बदल गया पहले यात्रायें मनोरंजन के लिये की जाती थी अब ब्राह्मण भिक्षुओं के दर्शन हेतु यात्राये की जाती थी (1)। गण तंत्रीय समाज में जुआ खेलने का रिवाज था(2)।धूत क्रीडा मधपान की बडी बडी सुज्जित शालायेंथी(3)। सामाजिक तथा धार्मिक समारोहो में सभी व्यक्ति सामिल होता थे।

कहानी सुनना, नृपलीला, तथा आखेट एवं उधान यात्रा भी प्रचलित थी। शिकार खेलना तथा पशु युध्द राजा का प्रमुख मनेरंजन था। सार्वजनिक मनोरंजन हेतु गाँवों तथा शहरों में कुछ कुछ कर्मचारी होते थे जो सार्वजनिक उत्सवो तथा समारोहो का आयोजन करते थे जिसमे अनगिनत धनराशि को व्यय किया जाता था।

ललित कलायें:-

यह युग विविध कलाओं के विकास विकास का युग था।वास्तुकला, मूर्तिकला चित्रकला तथ संगीतकला का प्रमुख विकास हुआ ।

बुध्द जी की भस्मीभूत अस्थियों पर अनेको समाधियों एवं स्तुवों का निर्माण कराया गया इन्ही समाधियों को बुध्द ग्रन्थों में चैत्य पुकारा गया। अशोक ने 84000 स्तुवों का निर्माण कराया जो विवेच्य क्षेत्र में मथुरा, थानेश्वर, कन्नोज, अयोध्या, प्रयाग, श्रावस्ती कपिलवस्तु, बनारस, वैशाली एवं सारनाथ, नामक स्थानों पर निर्मित किये गये।अशोक का सारनाथ स्थित सिंह स्तम्भ(4)शुंगकालीन वेदिका स्तम्भ(5), शुंगो का संकिसा अभिलेख(6) कालसी(देहरादून) अशोक स्तम्भ(7) कौसम अशोक अभिलेख(8), देहली में अशोक स्तम्भ (9) लुम्बजनी अशोक पिलर(10), अयोध्या से शुंग अभिलेख(11)। वैशाली के निकटवेसाढ खीरा की मौर्य कालीन लाट(12) आदि इस युग के जीता जागता उत्कृष्ट नमूना है। जिसपर चमकती पालिश सिंह आदि जानवरों की आकृतियो कोअलंकारिरमता के साथ अंकित किया गया(13) अहिच्छत्रा में अशोक के बनेहुए बहुत से बोध्द स्मारक है(14)

1- अशोक शिला लेख 8, "(हुल्स वही पृ0 9-15)

2- अर्थशास्त्र 8/3 (3) वही 2/1, 2/26, 3/8, 2/36

4- वाजपेयी के0डी0 युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ0 16

5- वही (6) शर्मा आर0सी0शुंग इन्सक्रिपशन फ्राम संकिसा वी0एम0ए0यु0पी0 भाग2, 1967-68पृ0 51-52

7-कनिंघम आर्कलोजी सर्वे आफ आफ इन्डिया पृ0 218 (8) वही पृ0 277 (14) राय डी0एन0 "बुलेटिन आफ यू0पी0 हिस्टोरिकल सो0 भाग4, 1965, पृ0 2

9- इलियट जानशन =हिस्ट्री आफ इन्डिया भाग 3, पृ0 353

10- हुलत्यास "द इन्सक्रिपशन आफ अशोक पृ0 164-65

11- शर्मा आर0सी0 "संकिसा और मथुरा से शुंगकालीन अभिलेख0 एम0ए0यू0पी0 भाग-3 1969 पृ0 51-52 (12)साहि राजकिशोर वही पृ0 98 (13)वही पृ0 81, राय कृष्ण दास भारतीय मूर्ति कला पृ0 25

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अशोक का सारनाथ स्तम्भ(1) मौर्य कलाकृतियों में सर्वश्रेष्ठ है इसका आकार कमल जैसा है जो भी अलकंरण चुने गये है वे ऐसी सफाई से नाप से तथा सजीव है कि संसार भर में कहीं भी पुस्तर कला इनसे आगे नही बढती ये विशेषतायें इतनी प्रत्यक्ष है कि स्मिथ तथा सरजान मार्शल तक को विवेच्य युग की कलात्मक विशेषताओं को सजीव मानना पडा(2)। कौशाम्बी से शुंगकालीन पकाई ईंटों का टिकरा मिला है इसी पर वासवदत्ता के प्रणय चित्र अंकित है इतिहास तथा कला की दृष्टि से सुन्दर नमूना(3) है।

मूर्ति कला :-

अपनी नई रुचिरता, नवीन गतिमयता नई आकृति वृद्धि के साथ जो सम्पदा अशोक के बाद मूर्ति क्षेत्र में शुंग काल में स्थापित हुई है। वह सदियोंअप्रतिम रही। मथुरा से यक्षि(4) की शुंगकालीन बुध्द जी के जीवन से सम्बन्धित जातकस्टोरी(5) की प्राप्त हुई है। अशोक कालीन चवँर धारिणी मूर्ति इतिहास प्रसिध्द ही है(6)।मथुरा आगरा के मध्य परखम ग्राम में मौर्य कालीन मूर्तियाँ प्राप्त हुई है जो अपने में अद्वितीय है(7)। मथुरा,भीटा, सरनाथ, अहिच्छत्रा, श्रावस्ती कौशाम्बी मूर्ति कला के केन्द्र थे।

अशोक तथा उसके पोत्र दशरथ ने भिक्षुओं के रहने के लिये गुफाओं का निर्माण कराया(8)। सुदामा गुफा तथा लोमश की गुफाओं को दान में दी थी। प्रवेश द्वार क्रमशः द्वार पर स्तूप पूजा का दृश्य प्रशंसनीय है।

स्थावत्य कला का उत्कृष्ट नमूना पाटलीपुत्र का महल हैमेगस्थनीज जो स्वतः पाटलीपुत्र में रहा है उसने भव्यता का वर्णनकिया है(9) राजभवन(10)में विशाल सभा भवन थे जिनके खम्भे लकडी के थे जिन पर रजत एवं स्वर्ण की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है।

1- पाण्डेय उमा'वाराणसी' पृ0 68,वाराणसी संग्राहलय सं0 RDA 7
2- स्मिथ वही पृ0 18 तथा उसी का फुटनोटसं0 1
3- हिन्दुस्तानी पत्रिका जनवरी 1938 पृ0 17-27
4- लखनउ संग्राहलय सं0 72 : 1,शर्मा आर0 सी0 मथुरा कला शैली का अनूठी देन बी0 एम0 ए0 यू0 पी0 भाग 11-12 पृ0 21-29
5-लखनउ संग्राहलय सं0 44,4239,56: 4239,4245,39: 2868,40: 2881, शर्मा रमेश चन्द्र मथुरा कलाशैली की अनूठी देन बी0एम0ए0यू0पी0 भाग11,12 पृ0 21-39
6- सं सिंह राजकिशोर वही पृ0 87,कनिधम आरकेलोजी सर्वे आ.प. इंडिया भाग 20 पृ0 41
7- गुलाबराय 'भारतीय संस्कृति' पृ0 213
8- रैपसन वही, पृ0 619
9- माइक्रिडंल एनसियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाइ मैगस्थनीज एण्ड एरियन पृ065-67, लाहा विमल चारण'प्राचीनभारत का इतिहासिक भूगोल पृ0418-19
10- परषी ब्राउनहिन्दू एण्ड बुधिस्ट आर्टीटेक्चर पृ0 6, सिंह राजकिशोर वही पृ0 87

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निर्मित पक्षी फूलों के गुच्छे और अंगूर की लतायें मंडित थी । चन्द्रगुप्त का राजभवन एशिया के प्रसिध्द "सूसा" और "बताना" के भवनों से भी अधिक अच्छे समृध्द तथा आली शान थे । फाह्यान हेनसाग ने अपनी यात्रा के मध्य राज महल का वर्णन किया है(1)। यह भवन इतना सुन्दर था कि अमानवीय शिल्पियों द्वारा निर्मित समझा जाता था।

संगीतकला को चन्द्रगुप्त मोर्य ने प्रोत्साहन दिया जो कोमदी महोत्सव के रुप में मनाया जाता था जहाँ नाच रंग तथा ताल का सांमजस्य दसोदिशाओं को गूंजीत कर देता था। अर्थशास्त्रमें (2)संगीत के दोनोरुपों कंठ एंव वाध का उल्लेख है । गीत,वाद्य कुशीलव, शिल्प, कारिका शिल्प वत्य स्त्रियाँ" नट नर्तक गायन वादन , वेणु, नृत्य, वीणा, मृदंग एवं नाट्य शाला का उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है। स्पष्ट है कि विविध कलाओं का प्रचुर विकास था।

हर्टल(3) को मथुरा के सोंव नामक स्थान से मोर्य कालीन सिर प्राप्त हुये है तथा साथ ही शुगं कालीन अलंकृत सिर भी प्राप्त हुआ है(4)शुंग-कालीन कलाकृतिया अप्रितम ही है कुछ औरतों की भी मूर्तियां प्राप्त हुई है जो मथुरा सग्रंहालय में सुरक्षित है(5)। सौन्दर्य सजावट, चाल, मुद्रा, केशविन्यास को देखकर यह कहना युक्तिसंगत न होगा कि दस्तकारी से उँचे श्रेणी की कला का स्थान तथा पद शुंगकालीन= कला को ही मिल सका(6)। श्रावस्ती (कौशाम्बी) बहुत ही वैभवशाली एवं अवव्याहरिक नगरी थी । स्पष्ट है कि विवेच्य युग कला की दृष्टि से सोन्दर्य (7) सम्पन्न एवं वैभवशाली था। मथुरा अहिच्छत्रा ,सारनाथ ओसी", कौशाम्बी भीरा कलाकृति के केन्द्र थे (8)

आर्थिक दशा

आर्थिक सम्पन्नता का युग था जीवीकोपार्जन का प्रमुख साधन कृषि था मेगस्थनीज(9) ने फलों से लदे वृक्षो, उपजाऊ , मैदानों तथ सरिताओं की मुक्ति कंठ से प्रशंसा की है।

1- लेगो "ट्रवलस आफ फाइयान पृ० 77-78, वाटर्स ओन हेनसांग ट्रवल्स भाग2पृ० 87

2- अर्थशास्त्र 1/12, 21, 2/1, 2/27, 1/16,

3- हवर्ट हर्टल "एस्कवेशन आफ सख वी०एम०श०द० पी० भाग2 पृ० 4

4- वही पृ० 4 (5) शर्मा रमेश चन्द्र "मथुरा शैली कला की अनूठी देन वी०एम०श०यू०पी० भाग 11-12 पृ० 21से29

6) वासुदेव उपध्याय(प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ० 35

7) माइक्रिन्डल एनियेंशट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ०70

8) वाजपेयी के०डी० इन्डियन न्यु मेटिक स्टडीज अध्याय 12 प्लेट 6

9) घोष एण्ड के०सी० पनिगृह डिर ट्रिक आफ नार्दन ब्लेक फालिस्ड वेयर "एन्सियेंशट इंडिया बुलेटिन आफ आर्कलोजिकल सर्वे आफ इंडियाभाग1 जनवरी 1946 पृ० 57

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कौटल्य (1) ने चावल ,दाल,,उडद, मूँग, मसूर, जौ, सरसों,मटरा, तैल अलसी गन्ना आदि का उल्लेख किया है। सामूहिक खेती की जाती थी कोदों, तिल वर्षा के मध्य ही बो दिये जाते थे। धान के बीजों को सातदिन तुसार पायन के लिये, सातदिन धूप में फैलाते थे मूँग उडद के बीजो को भी उओसं धूप में सुखाये जाते थे । आम कटहल को जिस गड्डे में रोपना हो उसमें घास पूस से गर्मी पहुँचा देनी चाहिये। यह सिद्धांत कौटिल्य जैसे मस्तिष्क की ही देन है। नियार्कस(2) ने 400 व्यक्तियों के विश्राम की सामर्थ वाले घने पेड का उल्लेख किया है। मेगस्थनीज(3) ने लिखा है कि जीवन के प्रचुर साधन सम्पन्न होने के कारण इस प्रदेश के निवासी उँचे डीलडौल वाले होता है।गन्ने का बिना मधुमक्खियों वाला शहद देने वाला सरकंडा कहा है। नियार्कस(4) ने यह भी लिखा है कि वृक्ष की छाल के बढिया वस्त्र बनाये जाते थे । हेराडोटस ने बाजरे का तथा नियार्कस ने जौ की बहुतायत का उल्लेख किया है।

सिचाईः-

वर्षा जल पर ही किसान निर्भर थे। हर वर्ष गर्मियों में काफी नियमित वर्षा होती थी (5)। वर्षा के अच्छा बुरा सवंत्सर होने में वृहस्पति की मेधादि राशियों में नयन, गर्भाधान, शुक्रगृहण के उदय, अस्त एवं संचार एवं भूमि की प्रकृति तथा मजुलाविष्टन आदि पर विकृत धारणा होतीथी कृषि हल तथा बैलों की सहायता से की जाती। अर्थशास्त्र(6) से विदित होता है कि विभिन्न प्रकार की खादों का प्रयोग होता। अन्न तैयार होने पर पुआल सहित घर ले जाया जाता। अर्थशास्त्र में उल्लिखितकृषि यंत्रो तथा कृषि विषयक जानकारी शिक्षा अनूठा वैज्ञानिक अनुसंधान था।

1- कोटिल्य अर्थशास्त्र 2/24, रेपशन वही भाग। पृ0 414

2- स्ट्राबो 1929/1 (माइकिक्रडल एनशियेइट इन्डिया एज डिस्काइब्ड बाई मेगस्थ 26-27, एरियन, 'माईकिक्रडल एनशियेष्ट इडिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ210

3- क्रेग (इकिक्रडल एनसियेण्ट इडिया एज डिस्काइब्ड बाई मैगस्थनीज एण्ड एरियन पृ0 31-54 55

4- स्ट्राबो ~~1-272~~ 14/1/18 माइकिक्रडल 'एनशियेइट इडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकाल लिटरेचर पृ0 80

5- शास्त्री के0 ए0 नीलकण्ठ वही, पृ0 94

6- अर्थशास्त्र 2/24

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उद्योग धंधे :-

अनेक प्रकार के उधोग धन्धे पशुओं पर आधारित थे। पशुपालन हाथी, घोडा, चकोर, मोर, कोयल, आदि मंगलसूचक पशु पक्षीओं का वध नही किया जाता थां(1)। अर्थशास्त्र(2) में उल्लेख है कि घोडे के पालन में एवं सुरक्षा में काफी सतर्कता रखी जाती। हाथी का प्रमुख स्थान थां भारतीय पशुओं में युनानियों का ध्यान हाथी पर ही एवं प्रथम गया। हाथियों की आयु 200 वर्ष होती थी (3)। उपहार में हाथीयों का विशेष सम्मान था। ऐरियन(4) ने लिखा है कि जन सामान्य को बन्दरों के विषय में विशेष ज्ञान था। स्त्राबो(5) ले बडे बडे चीते के समान बन्दरों का उल्लेख किया है। आपने सौन्दर्य के कारण भारतीय बन्दर अन्य देशो के बन्दरों से अलग कर दिये जाते है(6)। नियार्कस(7) ने छोटे और विषेले सांपों को देखा जो छल्लेदार तथा तेजी से चलते थे। मेगस्थनीज(8) ने बारहसिंगा तथा बैलों को निगलने अजगर तथा उडने वाले सापों को भी देखा था। सिकन्दर को 150 साहसी कुत्तों का उपहार मित्र राज्यों से प्राप्त हुआ था(9)। मेगस्थनीज विशालकाय पालतूबाघ को भी देखा था(10)। कुत्ता भेड बकरी का भी उल्लेख युनानियों ने किया थां(11)। सिकन्दर भारतीय मोर की सुन्दरता से इतना प्रभावित हुआ कि उसने मोर को मारने वाले के लिये कठोर दंड की व्यवस्था की। अर्थशास्त्र में उल्लिखित है कि चर्म की अच्छी किस्में हिमाचल प्रदेश से ही आती थीं (12)। हाथी दाँत से बहुमूल्य अलंकारो का निर्माण किया जाता था।

---

1) अर्थशास्त्र 2/18 (2) वही 2/30

3) माइकिक्रडल.. एंशियेंट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाइ ममेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ0 42 स्त्राबो 14. 1, 42-43 माइकिक्रडल एंशियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासकल लिटरेचर पृ0 49-50

4) स्त्राबो 15/8/29 वही पृ0 36 (5) स्त्राबो 16/36 वही पृ0 703

6) ऐरियन 14 माइकिक्रडल एंशियेंट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ 218

7) स्त्राबो 14/1-45 वही पृ0 51-52

8) ऐरियन 17 और 16 माइकिक्रडल एंशियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड वाइ मेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ0 56-61

9) स्त्राबो 15/1-31-37 वही पृ0 38-46

10) ऐरियन 14 माइकिक्रडल एंशियेंट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड वाइ मेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ0 217, स्त्राबो 4/1/-67 वही पृ0 37/ प्रेग 14 के 18 वी माइकिक्रडल (11) एंशियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ0 न0 58-60

12) अर्थशास्त्र 2/2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वस्त्र उधोगः-

वस्त्रों का उधोग उन्नति पर थां मथुरा , काशी, वत्स, कपडा बनाने के प्रमुख केन्द्र थे । अर्थशास्त्र(1) से विदित होता है कि चोरी करने वाले को कठोर दंड दिया जाता था तथा वेतन लेकर जो तन्तुवाय कार्य न करें उसका अगूँठा काट लिया जाता था। स्ट्राबों (2) ने लिखा है कि भारतवासी सोने चाँदी के काम वाले वस्त्रों का प्रयोग करते थे । कपडे को रंगने की कला भी उन्नत थी (2)।

धातु उधोगः-

सोने चाँदी ताँबे आदि धातुओं का प्रचलन था। अर्थशास्त्र से यह भी विदित होता है कि सोने के प्रधान को सोनाध्यक्ष कहा जाता था तथा कारखानों में तैयार माल का क्रय विक्रय करने वाले अधिकारी को आकाराध्यक्ष कहा जाता था। खानाध्यक्ष की संरक्षता में समुद्र से विविध, मणी, मुक्ता, रत्न, सीप निकालने का कार्य किया जाता था। मेगस्थनीज(5) ने लिखा है कि सोना चाँदी इस प्रदेश में प्रचुर मात्रा में होता था ताँबा लोहा भी कम नही होता था सिकन्दर को सौटैलेट लोहा मालवो तथा मित्रों ने उपहार में दिया था।

काष्ट शिल्प भी महत्वपूर्ण था(6)। अर्थशास्त्र(7) में उल्लिखित है कि बनो से लकडी प्राप्त कर कृषि उपकरण, घरेलू पलंग, साजसज्जा के सामान बनाये जाते थे । रामपुरवा के अशोक स्तम्भ में लोहे की ठोस कील प्राप्त हुई है जिससे विशाल सिंह शीर्षक को स्तम्भ के ऊपर जोडा गया है(8) डायोडोरस(9) से विदित होता है कि अतिथियों के स्वागत के लिये राजनृत्यों की कतार सोने चाँदी के थालों और ताँबे के गिलासों तथा प्रक्षालन पात्रों को लेकर चलते थे जिन पर वैदूर्य , मणी और लाल जडे होते थे । आर्थिक जीवन उन्नत था व्यापार उन्नत था ईसा पूर्व चौथी सदी में मगध साम्राज्य का विकास

1- अर्थशास्त्र 1/23, 2/2 (2) स्ट्राबो 14, 1-54 'माइकिण्डल वही पृ0 69

3) अर्थशास्त्र 1/23 (4) 1/14, 2/13, 2/12, 2/18

5) फेग 1 (डायोडोरस 11, 36) पृ0 31, मोतीफेग 18 एल0 वी0 पृ0 62-114, माइकिण्डल एंशियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाइ मेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ0 202

6) ~~कनिंघम~~ आर्कोलोजी सर्वे रिपोर्ट आ0 पृ0 एनुवाल रिपोर्ट 1912-13 पृ0 53 शास्त्री के0 ए0 नीलकण्ठ नन्द - मौर्य युगीन भारत पृ0 300-301

7) 2/16 (8) शास्त्री के0 ए0 नीलकण्ठ वही पृ0 408 प्लेट

9) माइकिण्डल एंशियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड बाइ मेगस्थनीज एण्ड ऐरियन पृ0 69

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा संगठन और बढ़ा। मगध साम्राज्य की इतनी शक्ति बढ़ गई थी कि राजधानी राजगृह के स्थान पर पाटलीपुत्र को बनानी पड़ी। (1) बनारस, साकेत, श्रावस्ती हस्तिनापुर, कम्पिल, अहिच्छत्रा कोशाम्बी तथ मथुरा एवं शक्तिमती व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे जहाँ से माल एकदूसरे स्थान को आयात तथा निर्यात किया जाता था। अर्थशास्त्र(2) से विदित होता है कि माल की किस्म की जाँच के लिये गुप्तचर होते थे ये गुप्तचर राजाके कारखाने खेतों और खदानों से निकले हुये माल की जाँच करते थे उनको क्रय विक्रय सम्बन्धी नियमों का पालन करनापडता था। यूनानियों(3) ने भी दूरी का संकेत करने वाले स्तम्भों का उल्लेख किया है। ऐरियन(4) ने राजमार्गों पर पडने वाले पडावो का प्रमाणित खाते का उल्लेख किया है नगर के 6 प्रबन्धक बोर्ड द्वारा विदेशियों की खातिरदारी करता था(5)अशोक ने अपने आदेशो में छायादार पेडो, कुँओं, धर्मशालाओं तथा दूरी सूचना स्तम्भो के निर्माण का प्रसारित किया (6)।

विवेच्य युग में बडे बडे विकसित मार्ग थे महाजन पद मार्ग सेही शक, पल्हव सिकन्दर तथा सेल्यूकस ने भारत भूमि में प्रवेश किया था(7)।कुरूक्षेत्र से उत्तर होकर जानेवाले रास्ते पर हस्तिनापुर, अहिच्छत्रा, कुजाला, सेतव्या, श्रावस्ती आदि प्रमुख राजनैतिक तथा व्यापारिक केन्द्र पडते थे। गंगा के मैदान के दक्षिणी रास्ते पर मथुरा, कम्पिल, कन्नोज, , कन्नोज, सोरेय्या, साकेत कौशाम्बी तथा बनारस पडते थे (8)। महाजनपथ बुध्द के समान ही चलता था(9)। 1850 मील लम्बी सडक पाटलीपुर से पेशावर जाती थी (10)।

1- मोती चन्द्र सार्थवाह पृ0 70
2- शास्त्री श्याम पृ0 159, 161, 209-212, 232, 275, 278
3- मैकिक्रडल एनसियेण्ट इण्डिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ086
4- एरियन 2/1/9मुइकिक्रडल वही पृ0 50 (5) मैकिक्रडल एनसियेण्ट इण्डिया एज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एण्ड एरियन पृ0 87
6(चट्टान लेख 2,7, हुल्स वही भूमिका 9, 15, भाण्डारकर अशोक पृ0 276
7- मोतीचन्द्र सार्थवाह पृ0 70, रैप्सन वही पृ0 431 भाग।
8- मोती चन्द्र सार्थवाह पृ0 77
9- ए [illegible] वही पृ0 77
10- वाजपेयी के0डी0 प्राचीन भारत का विदेशो से सम्बन्ध पृ0 77

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेगस्थनीज इसी मार्ग से पाटलीपुत्र पहुँचा। विवेच्य युग में काशी का व्यापारिक महत्व बना रहा। कौटिल्य अर्थशास्त्र से स्पष्ट है कि मौर्य काल में काशी सूती तथा रेशमी वस्त्रों के लिये विख्यात (1)।था लम्बाई चौडाई तथा रंग में बराबर होने पर भी काशी का कपडा मथुरा के कपडे से भिन्न ही रहता कपडे का मूल्य गुणों पर ही आधारित था(2)। काशी, मथुरा,कोशाम्बी वस्त्रों के प्रसिध्द केन्द्र थे(3)।दूसरी शताब्दी की मथुरा से घोड़ा गाड़ी(चित्र संख्या 34 प.लक 6), शिकरम(प.लक7 चित्रसंख्या35) बैलगाडी (प.लक 7 चित्र संख्या 36) तथा मथुरा से ही अन्य बैलगाडी(प.लक4 चित्र संख्या22) प्राप्त हुई है जिसे विवेच्य युग के आवागमन साधनों का उल्लेख मिलता है।

पूर्व से पश्चिमः-

यह मार्ग महत्व का था।चम्पा से लेकर वाराणसी तक नावे जाती थी यहाँ से सहजाति तक और उधर यमुना से कोशाम्बी तक जाती थी ।

उत्तर से दक्षिण :-पश्चिम :- यह श्रावस्ती से गोदावरी के किनारे प्रतिष्ठान तकजाता था तथा उत्तरी तरफ उज्जयनी, विदिशा होते हुये पुनः श्रावस्ती तक पहुँचता था।

उत्तर से दक्षिण पूर्वः- यह श्रावस्ती से राजगृह जाता थां बीच में कपिलवस्तु, वैशाली, पाटलीपुत्र, नालंदा, महत्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र थे ।

उपरोक्त मार्ग(4)व्यापार के प्रमुख साधन थे।अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापार होता था। चीन से व्यापार होता था(5)मोती,सेहलपाव्य, पाक्ष,मानिक, लाल, चूर्ण ,बर्वर के समुन्द्र तट से आते थे (6)। चन्दन अगरवत्ती, की विदेशो में बहुत माँग है। दक्षिण कोशल से हीरे(7), उत्तरापथ से घोडे (8) तथा काम्बोजसिन्धु वालख भी घोडो के लिये प्रसिद्ध थे ।

जलमार्गों से भी व्यापार चलता था अर्थशास्त्र में नौकाध्यक्ष का उल्लेख मिलता है।व्यापारियों के कपडे, खनिज, मणि आदि के संध थे प्रधान मुख्यतय(9) शासक होता है यह प्रमुख होते थे उनके रीति रिवाजों का निवन्धन सरकारी रजिस्टरों में होता था ।

1- 1/191 (2) पाण्डेय उमा ' वाराणसी' पृ0 46
3- वाजपेयी के0डी0 ' प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 60
4- शास्त्री के0 ए0 नीलकंठ वही पृ0 305
5- शास्त्री श्याम वही पृ0 270
6- वही पृ0 75-77
7- वही पृ0 78
8- जनरल इण्डियन सोसाइटी आफ ओरियन्टिल आर्ट (जे0आई0 एस0 ओ0ए0)
1940 पृ0 83-84 शास्त्री श्याम वी पृ0 148
9- अर्थशास्त्र 1/1, 2/7, 3/1, 8/4

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समुन्द्र में चलने वाले जहाजों तथा नदी के मुहानो ,झालो आदि में चलने वाली नावों के खाते का उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है। राजा के निज के जहाज भी होते थे नौकाध्यक्ष का उत्तरदायित्व था कि वह जहाजों का ध्यान रखे उनको यह अधिकार था कि हाकेमार, पाखंडी, चोर ,तस्करी जहाजों को नष्ट करदे(1)। बिना पास-पोर्ट के कोई यात्रा नही कर सकता था(2)।यदि कोई अविहित वस्तुयें रत्न रथ, अन्न पशु लेने की कोशिश करता तो उसका माल जब्त कर लिया जाता। नावों पर माल लादने वाले नाविको तथा विदेशी माल लेने वाले के कर माफ कर दिये जाते थे ।(3)शहर में यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशालाये होती थी जंगली पशुओं, सेना, आग अथवा पानी से क्षतिग्रस्त होने पर कर माफ कर दिये जाते थे ।रास्ते में व्यापारी की मृत्यु हो जाने पर घर वालो को सूचित किया जाता था।व्यापारियो की सुविधा के लिये निर्जन प्रदेश में कुयें खुदवाना, बाडियाँ लगवाना,बाँध बनवाना तथा रहने की व्यवस्था की जाती थी (4)। आर्थिक उन्नत दशा थी व्यापार उन्नत-अवस्था में था जिसका प्रभाव गुप्तकाल पर पडा।

शिक्षा एवम् साहित्य

साहित्यकी नवीन धारा का प्रस्फुटन हुआ जहाँ महाकाव्य काल के समान शान्तीमय सागर नही अपितु कौटिल्य के विशद मस्तिष्क से निसृत जटिल एवे व्यवस्थित विधान ।

शिक्षा का दृष्टिकोण उँचा था।उपनयन संस्कार से विधा का प्रारम्भ होता था। कौटिल्य(5) ने मंत्रियों की योग्यता मे वेद वेदाओं की शिक्षा को अनिवार्य बताया है। इस समय साहित्यके प्रत्येक तत्व में ब्राहमण विधाओं का समावेश हो गया (6)। यधपि बौद्ध धर्म को राजाश्रय प्राप्त था परन्तु ब्राहमण धर्म समाज मे शक्तिशाली था। ब्राहमण विधा का सर्वत्र प्रचार था। अनेक भाषाओं का युग था जिसमें निम्न प्रमुख थी :-

---

1- मोती चन्द्र सार्थवाह पृ0 80
2- शास्त्री श्याम अर्थशास्त्र पृ0 157 5-58
3- मोती चन्द्र वही पृ0 161
4- वही पृ0 82 , 201
5- अर्थशास्त्र 2/1 , 3/10
6- शास्त्री के0 ए0 नीलकंठ वही पृ0 368

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृतः-
=====
यधपि बोध्द तथा जैन धर्मों ने संस्कृत की उपेक्षा की थी परन्तु उनका स्वरुप साहित्य एवं भाषा के रुप में वेसा ही बना रहा और अन्त में बोध्द तथा जैन धर्म को भी संस्कृत की महत्व के समक्ष झुकना पडा(1)पतंजली महाभाष्य(2) से स्पष्ट होता है कि संस्कृत केवल उच्च वर्ग की ही भाषा नही थी वरन सर्व साधारण की भाषा थी ।साहित्य में संस्कृत का प्रयोग सुव्यस्थित रुप से होता रहा।वर्तिकारो में सबसे महत्वपूर्ण कात्यायन, अमरनाथ, बररुचि है जिसे व्याकरण वार्तिकार कहा जाता था। कात्यायन नन्द राजाओं के समकालीन थे। वृहत्कथा(संस्कृत), हरिषेण कृत, जैन वृहत्कोष तथा वोध्द मजुश्री मूलकला में सुबन्धु का उल्लेख है। वासवदत्ता नाट्य धारा(3) तथा महाभाष्य इसी युग की महत्वपूर्ण कृति है।

आ प्राकृतः- कोशल में वोध्द तथा जैन ग्रन्थ अपने प्रारम्भ काल में रचे गये

वोध्द आगम पाली भाषा में थे जिसका पैशाची से धनिष्ट सम्बन्ध था ।प्राकृत की प्रमाणित सामग्री अशोक के आदेश लेखो तक ही सीमित है ।इन अभिलेखों में पूर्वी(भागधी) उत्तर पश्चिमी तथा पश्चिमी भाषा का प्रयोग हुआ है। कोटिल्य ने मौहूर्तिको, नैमित्तिको लक्षण विधा, अगार्कया आदि विधायों का उल्लेख मिलता है। (4) स्पष्ट है कि विवेच्य युग में इस भाषा का प्रचार था।

शिक्षा का सर्व साधारण में प्रचार था।युनानी लेखो से प्रकट होता है कि मार्गों पर स्तम्भ गडे थे जिनपर दूरी सूचक चिन्ह उत्कीर्ण रहते थे और साधारण जनता उनको पढ सकती थी ।

ब्रह्मण दार्शनिक उपत्यकाओं धने बनों में ज्ञान का दान कर देते थे । इन आश्रमों को राजा से सहायता मिलती (5) वाराणसी मथुरा शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे

1- शास्त्री के०ए० नीलकंठ वही पृ० 360

2) 2/4/466

3) इडियन हिस्ट्री क्वाटरली भाग 19, 1943 पृ० 69-71, अर्थशास्त्र 9/6

4) 1/12,4/3,4/3/13,13/1,1/5

5) नाईकिकृडल एंशियेण्ट इंडिया एज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिटरेचर पृ० 65

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ्य क्रम :-
=======

विवेच्य युग का पाठ्यक्रम अत्यधिक विस्तृत था। विधार्थी गुरुचरणों में बैठकर प्रथम दिन के भाग में हस्तिविधा, अश्वविधा, रथविधा अस्त्र शस्त्र का ज्ञान प्राप्त करता था। दिन के शेष भाग में वेद, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र तथा अन्य विधायें अध्ययन करता ।अर्थशास्त्र(1) से विदित होता है कि योगाभ्यास को प्रमुख स्थाना दिया गया।प्रजा को शिक्षित करने में समर्थ शासक एक छत्र राज्य का भोग करने का अधिकारी होता है।

वौध्द तथा जैन संघ एवं विधा विहार शिक्षा के केन्द्र थे जहाँ जैनधर्म तथा वौध्द धर्म की शिक्षा दी जाती । कात्यायन ने अष्टाध्यायी पर वार्तिक, विन्दूसार का मंत्री सुबन्धू का नाट्य धारा(2) संस्कृत का महाविध्दान बररुचि (3) , परगामी गृहसूत्रों(4) की रचना तथा महाभाष्य(5) सजने का काल था।

अशोक ने शिक्षा के क्षेत्र में अव्दितीय कर्म किया।पाटलीपुत्र में वौध्द धर्म के विकास हेतु तृतीय संगीत का आयोजन किया त्रिपटकों का संगठन जिस व्दारा अभिधम्मपिटक की कथावस्तु की रचनायें रचित हुई। जैन साधु जंबूस्वामी प्रभ्व, स्वयं प्रभव तथा विख्यात जैनधर्म का प्रसिध्द आचार्य भद्रवाहु इसी युग की देन है। जैनधर्म के आचारांगसूत्र, भगवती सूत्र, समवायंग सूत्र,, आदि महत्व-पूर्ण ग्रन्थों की रचना इसी काल में हुई। कौटिल्य (6) ने रोगहरण, रोगोत्पादन, सृति विज्ञान, शिशुपालन, कुमारभृत्या, कृषि तंत्र, विष निवारण आदि विषयों पर अपने विवेच्य पूर्ण विचारों का विवेचन किया है।(7) लेखनकला तथा ग्रन्थ जगत में भी विवेच्य युग अविस्मरणीय युग रहा है।स्पष्ट है कि विवेच्य युग साहित्य सर्जन का युग था जहाँ कवि साहित्यकार साहित्य आकाश में आजभी देदीप्यमान है।

1- कौटिल्य अर्थशास्त्र 1/6
2) वही 9/7, 13/2, इंडियन हि० क्वा० 021, 1943 पृ० 69-71
3) शास्त्री के०ए० नीलकण्ठ वही पृ० 372-73
4) अर्थशास्त्र 1/3
5) शास्त्री के०ए० नीलकंठ वही पृ० 373
6) अर्थशास्त्र 1/17, 1/18, 11/25, 11/2, 11/10/31, 11/12
7) अर्थशास्त्र 4/3, 4/7, रैप्सन वही पृ० 435

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धार्मिक व्यवस्था

वोध्द तथा जैन युग के उपरांत ऐसे युग का प्रादुर्भाव होता है जिसकी छाप आज भी जनजीवन पर अंकित है। आजभी प्रिय दर्शी अशोक का धर्म भारतीय तिरंगेध्वज के मध्य सत्यं शिवं सुन्दरं का का जयघोष सर्वत्र गुंजित कर रहा है। मौर्यो का उदय अन्धकार में प्रकाश के समान है। प्राकृतिक तथा भौगोलिक सीमाओं का निर्माता अशोक ने धर्म के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति उत्पन्न कर दी तथा शान्ती एवं विश्व वन्धुत्व के आधार पर नवीन धार्मिक धारा को धारावहित किया।

यधपि अशोक वोध्द का आश्रय दाता था परन्तु अन्य सभी धर्मों उसके सम्राज्य के अन्दर फलीभूत हो रहे थे।शैव वैष्णव, भागवत सभी सफलता की उँचाइयों का स्पर्श कर रहे थे।कलिंग विजय के उपरांत अपार नर संहार ने जीवन की धारा को पलट दी। अशोक ने धर्म के साथ व्याख्यानों का अनुमोदान किया। विनिपसमुक्से(विनय समुत्कर्ष),आलीय वासिणी(आर्य वंशानी), अनागत-मयानि, मुनिगाथा, भी नेयसुतेभोण्ये सूत्र), उपतिरपासेने(उपतिस्स प्रश्न), लघु ले वादे (राहलवाद), यह सामान्य धारणा है कि ये आगम अशोक के पहले ही ग्रन्थों में आ गये थे । इस प्रकार आलिस वासिनी की पहचान अंगुत्तर ।।" 27 से , अनायतममगोंनि की अगंत्तर ।।। 103 से , मुनीन गाथा की सुत्रानिपात के मुनिसुत्र से, मोनिये सुत्र की सुन्तनिपात के नालक सुत से (1-146,51)और लाघुलोवादे की माझिम के राहुल वादसत (1."414) से की गई है। वोध्द धर्म के सूत्रों को अशोक ने मागधी भाषा मे ही नाम दिये है। ब्राह्मण धर्म उच्च वर्ग राजा पुरोहितों तथा धनाढ्य लोगो में अपना अधिपत्य जमाये हुये था वोध्द जैन ब्राह्मण सभी अपने अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे परिणा स्वरुप मौर्य युगीन संस्कृति उस सागर के समान थी जिसमें विभिन्न धर्म एवं संस्कृतियोंरुपी नदियाँ आकर समाहित हो जाती है।

ब्राह्मण धर्मः- ब्राह्मण धर्म धनाढ्य तथा राजपरिवारों का धर्म था जिसमें वैदिक तथा गृहअनुष्ठानों का प्रधान्य था। मेगस्थनीज के कथन से विदित होता है कि दार्शनिको की संख्या समाज में कम थी फिर भी समाज में ब्राह्मणों का उच्च

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान था। भरद्वाज, वसिष्ठ, कश्यप, वामक, वामदेव, आंगिरस आदि महान विभूतियों को वैदिक मंत्रों के दृष्टा एवं रचियता के नाम से प्रसिद्ध थे। बौद्ध(1) ग्रन्थों में यह भी उल्लिखित है कि ब्राह्मण उपरोक्त महान भूतियों को अपना पूर्वज ही नही अपितु उनके द्वारा आलौकिक मार्ग पर चलकर समाज हित में सलग्न रहते थे। पालि पुस्तकों(2) में अटधारिस, निन्तोरिय, छंदो का वद्वरिज का निर्देश है। शार्दूलकर्णीव दान(3) तथा मझिम निकाय(4) में वैदिक साहित्य का विशद वर्णन है। अश्वमेध, नरमेध, राजसूय, वाजसनेयी आदि सूत्रों का विधान तथा उनके अनुष्ठान का विस्तृत उल्लेख है(5)। अभिजात एवं उच्च वर्गीय ब्राह्मणों में धर्म का एक बौद्धिक पहलू भी था। सिकन्दर ने दंडासीन ब्राह्मण साधु को मृत्यु का भय दिखाने पर भी अपने दरबार में न मिला सका (6)। वैदिक मूर्तियों ने चेतनशक्तिमय देवत्व के दर्शन किये। आन्तरिक्ष की विविध शक्तियों के साथ इन्हो ने सामंजस्य स्थापित किया तथा उसको देवत्व के रुप में गृहण किया। बौद्ध ब्राह्मण धर्म की शक्ति को देखकर पुष्यमित्र शुंग ह्रास होते हुये ब्राह्मण धर्म की (7) बागडोर अपने हाँथो मे लेकर उसके रुप को समुन्नत करने हेतु विशाल अश्वमेध को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया।

श्रमण आन्दोलनः-

तपस्वियों की सामान्य संज्ञा श्रमण थी बाद में बौद्धो ने श्रमण नाम पर एकाधिकार स्थापित कर लिया। यूनानी इन्हें समरनोज कह कर सम्बोधित करते थे। जंगलो में उपलब्ध कन्द मूल फल ही इनका आहार था(7)। परिव्राजको का भी प्रमुख स्थान था ये आचारशास्त्र, तत्वज्ञान, प्रकृतिवाद तथ रहस्य वाद के विशेषज्ञ होतो थे (8) दार्शनिक भी श्रमणों के समान तपस्या कर बौद्धिक चिन्तन करते।

1- मझिम निकाय 2/210, दीघ निकाय 1/128
2) दीघ निकाय 1/326
3) दिव्यवदान 33 (4) 1/342-44
5) संयुक्त निकाय पृ 299
6) शास्त्री के0ए0 नीलकण्ठ वही पृ0 111
7) वाजपेयी के0डी0 युगो युगो मे उत्तर प्रदेश पृ0 38
8) मेगा0 45 मैक्रिंडल वही पृ0 6
9) दीघ निकाय 3/36, दिव्यवदान पृ0 143

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महिला दार्शनिकों 'परिव्राजिका' कहा गया है । ये आश्रम ज्ञान एवं प्रकाश के आलौकिक स्त्रोत थे जहाँ ज्ञान की शक्ति धारा प्रवाहित होती थी । सभी धर्म एवं वर्ग के लोग यहाँ आकर अपनी ज्ञान लिप्सा को शान्त कर सकते थे ।

आजीविक तथा निग्रन्थ सम्प्रदाय:- गोलाल इस सम्प्रदाय का संस्थापक था। पाणिनी ने मस्कारियो की गणना परिव्राजकों में की है। बौद्ध तथा जैन ग्रन्थों में देववादी कहा गया है वे हेतुवादी को नही मानते(1) अशोक ने अपने आदेश लेख में आजीविकों के लिये सुदामा तथ लोमश ऋषि की गुफो को दान में दिया था।(2)

निग्रन्थ भी श्रमण ही थे इनका आजीविकों के साथ परस्पर सम्बन्ध था बौद्ध धर्म ग्रन्थों से स्पष्ट होता है कि निग्रन्थ सम्प्रदाय के संस्थापक महावीर थे। मेगस्थनीज (3) के अनुसार एक वर्ग दार्शनिकों का था जो आजीवन नग्न रहते थे इनका आहार पृथ्वी पर गिरे फल ही थे । समाज का बौद्धिक वर्ग होते हुये भी बौद्ध धर्म के समान शक्तिशाली न थे । निग्रन्थों का एक सम्प्रदाय आजीवकों से भी छोटा था परन्तु उनका महत्व काफी दिनों तक बना रहा आज भी उनका अस्तित्व समाज में विधमान है।

जैनधर्म :- ब्राह्मण धर्म के अलावा समाज में जैनधर्म का भी महत्वपूर्ण स्थान था(4) । मथुरा का कंकाली टीला जैन धर्म का प्रमुखकेन्द्र था(5)।नेमिनाथ , सुवृतनाथ, सम्भवनाथ अरिष्टनेमि आदि तीर्थंकारों की मूर्तियां प्राप्त हुई है।(6)इस कालका आयाग पट्ट मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित है(7) जिसको लवणशोभिका की लडकी वसु नामक वेश्या ने दान में दिया था। आचार्य बलदत्त की शिला तपस्विनी कुमार मित्रा ने तीर्थंकर की प्रतिमा स्थापित कराई। अहिंसा जैन धर्म प्रमुख स्थान है। (8)

1) डाइलाक आफ बुद्धा ।। पृ0 7। नागराज पत्तसूत्र
2) अशोक लेख 7 ,हुल्स वही पृ0 9-15
3) शास्त्री के0ए0 नीलकण्ठ पृ0 339
4) वाजपेयी के0डी0 ब्रज का इतिहास भाग । , पृ0 81-82
5) वाजपेयी के0डी0 ' मथुरा ' पृ0 76
6) वही पृ0 76-77
7) वही पृ0 80
8) उपाध्याय ए0 एन0 ' जैनिज्म एण्ड वेजीटेरियनिज्म पृ0 91

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रामिक जयदेव की पुत्रवधू ने शिलास्तम्भ का दान दिया था(1)।सावित्र दत्ता ने (2) वर्धमान प्रतिको कोग प्रतिस्थापित किया था। विवेच्युग की अनेकों कला-कृतियों का अध्ययन करने से विदित होताहै कि जैन धर्म का काफी प्रचार था।

बौद्ध मर्थः- आरम्भ में बौद्ध धर्म श्रमण अन्दोलन ही था। परन्तु कलिंग विजय के उपरान्त अशोक का हृदय नर संहार से द्रवित हो उठा और उसने विश्व विजय के स्थान पर धर्म विजय करने का बीड़ा उठाया। के-उपरान्त बौद्ध धर्म को अशोक ने राजाश्रय दिया मथुरा में बौद्ध संघ की स्थापना की गई। बुध्द निर्माण के 100 वर्ष पश्चात वैशाली में बौद्ध संगति हुई जिसमें मथुरा, कौशाम्बी, सकाशय तथा कन्नोज तक के संघो को आमंत्रित किया गया। मथुरा के पास उरमुंड पहाड़ी पर स्थित नटभट के विहार को काफी महत्ता प्राप्त थी।मथुरा अशोक से पूर्व ही बौद्ध धर्म का महान केन्द्र था।विस्तार के साथ ही इन संघो में फूट पड़ने लगी। अशोक ने फूट को प्रवृतियों को रोकने के लिये पाटलीपुत्र में विशाल बौद्ध संगति का आयोजन कियागया तथा बौद्ध के उपदेशो को त्रिपिटक के रुप में लिपि बध्द करवे।बौद्ध केन्द्रो के अधिकारियों को स्पष्ट निर्देशदिया गया कि बौद्ध संघों में फूट न पड़े।

अशोक ने अपने शिलालेख(3) में लिखा है कि अब शिकार एवं विहारकी यात्राओं के स्थान पर श्रमण, ब्राह्मणों के दर्शन केलिये यात्रायें आयोजित होगी अधिकारियों को आदेश दिया कि बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये कार्य करे(4) बौद्ध धर्म के प्रचारार्थअधिकारियों की नियुक्ति की गई (5)। सातवे अभिलेख (6)में अशोक ने बड़े सन्तोष के साथ कह मेरे व्यक्तिगत उदाहरण मेरे जीवन में ही फल देने लगे मुझसे जो सत्कर्म बन पड़े है उनका प्रजा ने अनुकरण किया तथा कर रहेहै।

1- मथुरा संग्रहालय संख्या 40 (2) वही 20

3) अभिलेख 7 हल्श वही भूमिका 9-15 मुखर्जी अशोक पृ० 13-14

4) अशोक लेख 4-1 हल्श वही भूमिका पृ० 9-15

5) शास्त्री के०ए० नीलकंठ वही पृ० 236-240

6) वही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राणियों के प्रति अहिंसा की भावना वोध्द धर्म के प्रभाव से अशोक ने सीखी। प्राणियों की हिंसा से बचना अच्छा है(1)। धर्म मंगल ही वास्तव में मंगल है(2) पशु वध/बंद करवा दिया, धर्म यात्राओं पर विशेष जोर दिया उसके लिये उसने कुंये खुदवाये, पेड लगवाये तथा दूरी सूचक स्तम्भों का निर्माण कराया(3)अशोक में जन कल्याण की भावना कूट कूट को भरी हुई थी ।

अशोक ने उपगुप्त के आदेश पर सभी वोध्द धार्मिक स्थलों की यात्रा की सर्व प्रथम लुम्बनी भगवान बुध्द की जन्म भूमि के दर्शन किये वहाँ स्मारक बनवाया तथा वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने धार्मिक कर माफ कर दिया(4)। अशोक ने लुम्बनी के अलावा कपिलवस्तु, वोध्द गया, सारनाथ, कुशीनगर एवं श्रावस्ती संकाश्य(4) आदि अनेक स्थानों की तीर्थ यात्रा की । 84000 बुध्द की भस्मीभूत पर विवेच्य क्षेत्र में स्तम्भ स्थापित कराये तथा उसपर अपने आदेश एवं उपदेश अभिलिखित कराये। अशोक का हृदय वोध्द धर्म की सादगी और सद्यता से द्रवित हो गया और उसकेविस्तार में तनमनं अर्पण कर दिया(5)।यधपि वह वोध्द धर्म का आश्रय दाता थां परन्तु उसने सभी सम्प्रदाय के लोगों के साथ सद्व्यवहार किया उसकी तीव्र इच्छा थी कि उसकी प्रजा सभी सम्प्रदायों का ज्ञान प्राप्त करें जिसे पारस्परिक सदभावना बनी रहे उसकी प्रजा आत्म निग्रह करें यही उसकी तीव्र इच्छा थी कर्तव्य की नितांत असंकुचित व्याख्या तथा सार्वभौमिक धर्म का सर्व प्रथम निरुपण का श्रेय अशोक को ही देना होगा। निश्चय ही

1- नलिनाक्ष दत्त कथ के०डी० वाजपेयी वही पृ0 299-305, 307
2- शास्त्री के०ए० नीलकंठ वही पृ 240-42
3- चट्टान लेख 2 हुल्स वही भुमिका प0 9-15
4- दिव्यवदान पृ0 389-90, वाजपेयी के०डी० 'मथुरा ' पृ0 76
5-लूनिया (प्राचीन भारत का इतिहास पृ0 118, मखर्जी राधा कुमुद 'अशोक पृ0 60-76
6- कनिंघम आर्कलाजी सर्वे आफ इंडिया भाग । 1862,63,64 65, पृ0 273

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अशोक वोध्द धर्मी था परन्तु अन्य धर्मों का विरोधी नही। शुंग कालीन बुध्द मूर्तियाँ भी प्राप्त हुई है जो वोध्द धर्म के प्रसार का प्रतीक है(1)

भक्ति अन्दोलनः-

वोध्द धर्म मे अब भक्ति भावना का उदय हो गया था भक्ति भावना का समावेश होकर जनमानस को आकृषित करने की शक्ति वोध्द धर्म में आ गई थी। वासुदेव कृष्ण का उल्लेख युनानियों (2) ने हेरकलीज के नाम से कीया है इस आन्दोलन का विशेष प्रचार मथुरा मे था। देवी देवताओं में उपराजित, अप्रतिहत, जयंत तथा अश्विनि की प्रधानता थी साथ ही वास्तुदेवत दिक देवता की भी पूजा हाती थी(3)।अग्नि, इंद्र, गंगा वनपर्वत राक्षसों तथा चैत्य पूज्य का प्रचार था। अर्थशास्त्र(4) से विदित होता है कि मन्दिरों में मूर्ति स्थापना का आदेश दिया है।

शिव पूजा का कापी प्रचार था। मीरा से प्राप्त उत्तर मौर्य कालीन लेखांकित शिवलिंग पर शिव की द्विभुज प्रतिमा (5) शुंगकालीन (6) शिवलिंग मथुरा कटरा नामक स्थान से 2' -6''× 6'' की प्राप्त हुआ है अतः स्पष्ट है कि शिवपूजा का प्रचलन था(7)

वैष्णवधर्म का कापी प्रचार था इस धर्म के मूल में नारायण नामक देवता थे।वैदिक काल में विष्णु का अस्तित्व सहायक देवता के रुप में माना जाता था। पुराणों में विष्णु प्रमुख देवता थे। विष्णु, वासुदेव तथा नारायण की समन्वित धार्मिक मान्यता वैष्णव धर्म के रुप में परिवर्तित हो गई। पाणिनी अष्टाध्यायी (8) से विदित होता है कि विवेच्य युग में वासुदेव भक्ति का प्रचार था। शुंगो के समय में वैष्णव भक्ति का कापी प्रचार था।

1- लखनऊ सं०सं० 44,3130,56,4239,56,4245

2- शास्त्री के०ए० नीलकंठ वही पृ0 347

3-अर्थशास्त्र 2/4

4- 1/6/28, 2/1, 2/6

5-लखनऊ संग्रहालय संख्या एच0 4

6- रमेश चन्द्र शर्मा, मथुरा कला शैली की अनूठी देन बी०एम० ए० यू०पी० भाग 11-12 पृ0 21 से 19 मथुरा संग्रहालय सं0 52-3625

7- वही संग्रहालय संख्या 52, 3625

(8) अष्टध्यायी 4/3/98

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चर्तुमुख यक्ष, वराह भीटासे चित्र संख्या80 फलक 14 चर्तुमुख यक्ष सिंह मानव मुख(फलक14 चित्र संख्या 81) प्राप्त हुई है (1ए) से विदित होता है कि यक्ष एवं वराह पूजा को महत्व दिया जाता था। ब्रह्मा, विष्णु महेश त्रिमूर्ति की पूजा शुंग काल में वैष्णव धर्म का केन्द्र बिन्दू बनी अतः अब वैदिक यज्ञ वेद का स्थान मूर्ति पूजा ने ले लिया(1बी)। मथुरा वैष्णव सम्प्रदाय का केन्द्र था। आधुनिक वैष्णव मत का जनक भागवत धर्म यही प्रतिप्रादित किया गया(2) अर्थशास्त्र (3) से भी वैष्णव धर्म के प्रचार का मत प्रतिपादित होता है। ईति भीतियों केय निवारार्थ अथवा मनोकामना पूर्ति के लिये लोग वाले तथा अदर्भ प्रदान करते थे(4)।मन्दिरों के देख रेख के लिये अध्यक्ष की नियुक्ति होती थी स्पष्ट है कि वीवेच्य युग में वैष्णव धर्म का काफी प्रचार था। सभी धर्मों का सामजंस्य एक अनुधान था जिसमे विभिन्न धर्म रुपी पुष्प प्रसन्नता से झूम उठे।

लोक तथा जीवन दर्शनः-

मौर्य कालीन जीवन दर्शन भारतीय परम्परा का ही दर्शन है। धर्मसूत्रो में जीवन के चार आश्रमों का वर्णन है ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान प्रस्थ, तथा सन्याश्रम ब्रह्मचर्य तथा गृहस्थ आश्रम में कर्म एवं ज्ञान का अद्वितीय संगम होताहै। अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना हृदय के अलंकार को ज्ञान ज्योति से प्रज्वलित की जाती हैगृहस्थाश्रम में प्राणियों के लिये हित है पितृ ऋण तथा देव, ऋण, गृहस्थाश्रम ही पूर्ण किये जाते है। वानप्रस्थ आश्रम में सन्तोष का विधान है वहां सन्याश्रम में सन्तोष त्याग तथा आत्म ज्ञान का विधान है ताकि परमश्रेष्ट की प्राप्ति है। पाणिनीअष्टाध्यायी(5) से विदित होता है कि उस समय पाराशर्य और कर्मन्द के सूत्र विधमान थे जिसमें भिक्षु जीवन के नियमों का विमाचन था। इस काल मे धर्म एवं ज्ञान एक सिक्के के दो पलडे थे। चारो आश्रमों में निर्दिष्ट नियमों का पालन करना अनिवार्य समझा जाता था। वेद उपनिषद की वेगमती सरिता ने हृदय को मंडित कर दिया था।

1- (ए) जोशी प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ0 26
1- (बी) गुलाबराय ' भारतीय संस्कृति पृ0 220

2- लाहा मिल चरण वही पृ0 181
3- वही 2/4, 1/6-18, 2/1, 4/11-6, 33, 36
4- शास्त्री के0 ए0 नीलकंठ वही पृ0 382
5- पाणिनी 4/3/110-1

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बौद्ध धर्म के उदय से पहले ब्राह्मण धर्म के भिक्षु तथा साधु होते थे कौटिल्य अर्थशास्त्र(1) में इन ब्राह्मण साधुओं का उल्लेख है। अशोक ने भी संघ के नियमों को तोड़ने वाले साधुओंकके लिये कठोर नियम बनाये थे। कौटिल्य ने उन सभी साधुओं के लिये कठोर दंड का विधान किया है जो अपने परिवार का बिना भरण पोषण किये बिना प्रव्रजित हो जाते थे (2)। कौटिल्य ने अनेक भिक्षुणियों को निर्देश किया (3)। ब्राह्मण धर्म में ब्रह्म वादिनियोंनिषेध न था यह बृहदारण्य कोउपनिषद से ही नहीं वरन पतंजली(4) ने भी काशकृसन की मीमांसा करने वाली महिलाओंका उल्लेख किया है परन्तु इस प्रकार की छात्राओं तथा तपस्विनियों की गिनती गिनी चुनी ही थी।

पदार्थ अर्थात शब्द के वास्तविक स्वरुप और अर्थ जैसे विषयों का भी शास्त्रार्थ होना था। बृहत्कथा का पंडित (पाटलिपुत्र) 35 वर्ष इसी काल में हुआ। दर्शनकी शाखओं के सम्बन्ध में कौटिल्य का निर्देश अधिक निश्चयात्मक है। आन्वीक्षि की में सांख्य, योग और लोकायत का सन्निवेश है(5) लोकायत भौतिकवादी दर्शन का ही सम्प्रदाय है। सांख्य सामान्य रुप से ज्ञान का धोतक है। धर्म सूत्र कार कर्मों पर विश्वास करते है अतःउनकेलिये गृहस्थाश्रम की महिता का प्रतिपादन स्वाभाविक ही है

शीलसदाचार एवं सर्वभूतहित तथा अंहिसा की भावना पर विशेष बल दिया गया। धर्म के अन्तर्गत पशु भी सम्मिलित है(6)। शील तथा सदाचारी व्यक्ति ही समाज के उत्थान का प्रमुख कारण है।दान देने की प्रवृति कल्याणमयी थी। धर्मंडी, झूठा, हिंसावृतिका, असंयमी व्यक्ति का दान पूर्णतः बेकार है। वह पतित तथा अधम है(7) अतिथि सत्कारकी भावना ने मानव हृदय को इतना प्रभावित कर लिया थी कि अपना सब कुछ धर्म परअर्पण कर दिया था।

1- वही 1/10-11, 12, 1/12, 3/16, 11/2, 11/34
2- वही 11/9, 28
3- 1/12, 3/3, 4
4- 4/1/14
5- अर्थशास्त्र 1/2
6- नलिनाक्ष दत्त तथा केoडीoएवाजेपेयी वही पृo 399-307
7- अशोकका शिला लेख 3 वही भुमिका 9-15

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीर्थ यात्राओं की विवेच्य में पूणतः महत्व था। अशोक ने भी सभी वोद्ध तीर्थों की यात्रा की(1) । उस समय मनोरंजन यात्राओं के स्थान पर धर्म यात्राओं की प्रवृति जाग उठी थी ।हृदय परिवर्तन से ही मनुष्य में सुप्तावस्था में मं पडे गुणों को उजागर किया जा सकता है। नैतिकता मानवता का स्वर्गमय अलंकार है। नैतिकता, शील, सदाचरण एवं सचरित्र जीवन का सोदान है।

वोद्ध धर्म की अहिंसा वादी नीति ने क्षत्रियों को अपना वर्ण निहित कर्म से विरक्त कर दिया था वे निवृतिमार्गी होकर राज्य कर्म की उपेक्षा कर रहे थे इन परिस्थितियों में धन जन की सुरक्षा को ही नही वरन् देश की संस्कृति सभ्यता एवं धर्म को भी संकट में डालदिया थां। वोद्ध संघो में अनियमता से भृष्टाचार बढ़रहा था परिणाम स्वरूप कोटिल्य को संघ प्रवेश पर कुछ प्रतिबंध लगाने पडे। राज्य व्यवस्था में उथुवल आगया परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण राज्यसत्ता कुषाणों हाथों में चली गई ।

दार्शनिक पक्ष निर्माण प्राप्ति को मनुष्य का चरम लक्ष वताता था। परन्तु लौकिक पक्ष में स्वर्ग प्राप्ति ही उनका अभिष्ट था। अशोक के लेख जो सर्व साधारण के लिये उत्कीर्ण कराये गये हैं, स्वर्ग का ही उल्लेख करते हैं उनमें निर्वाण का नाम एक स्थान पर भी नही आया है। लौकिक आचार्य विचार पूर्व परम्परा से चले आते विधानो के प्रति श्रद्धा थी । अन्धविश्वास एवं पाखण्डीय विश्वासों के प्रति मान्यता ।वेद वेदांग, उपनिषद, रामायण, महाभारत में लिखित सभी विधानों के प्रति लोगों में श्रद्धा एवं विश्वास था। इतना तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि मौर्य शुंग कालीन संस्कृति भारतीय संस्कृति का एक अद्वितीय सोपान है। जहाँ धर्म का एक ऐसा श्रोत प्रभावित हुआ कि कल कल करती शान्ती मय रस धारा मां कर्ण कहरों को गुंजित कर रही है और करती रहेगी ।

1-दिव्यवदान पृ0 389 -96

2- वाजपेयी के0डी0 मथुरा पृ0 76

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

-: कुषाण युग की सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था :-

अध्याय 7

कुषाण काल भारतीय इतिहास के रंगमंच पर कुशल अभिनेता के रुप में प्रस्तुत हुआ । विदेशी आक्रमणों के फलस्वरुप विदेशी जातियों ने भारतीय समाज में उथल पुथल मचा दी (1) तथा अनेकों झंझावटों के बाद हमारी संस्कृति ने सभी विदेशी संस्कृतियों को अपने अंक में समाहित कर लिया सभी विदेशी आक्रांताओं ने समयानुसार भारतीय धर्म में श्रध्दा तथा विश्वास व्यक्त किया । इस समय के शास्त्रकारों तथा समाज के नेताओं ने विदेशी जातियों को जिस शीघ्रता और सरलता के साथ अपने समाज में पचाकर आत्मसात कर लिया एवं विदेशियों को हिन्दू तथा बौध्द धर्म का उपासक बना लिया वह वास्तव में भारतीय इतिहास का एक अतीव आश्चर्य जनक तथ्य है । व्यापार की वृध्दि के कारण इस समय नये नगरों तथा बन्दरगाहों का विकास हुआ तथा सामाजिक दृष्टिकोण में उल्लास तथा आमोद प्रमोद का प्राचुर्य है (2) ।

सामाजिक संरचना :- हिन्दू समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्णों में बांटा जाता था । चतुर्वर्ण्य व्यवस्था भारतीय सामाजिक जीवन की आधार शिला मानी जाती थी ।

ब्राह्मण :- मनु तथा याज्ञवल्क्य ब्राह्मणों को तीन वर्ग में श्रेष्ठ ही नहीं अपितु सृष्टि की समस्त वस्तुओं में सर्वश्रेष्ठ बताते है (3) । ब्राह्मणों का कर्म वेदाध्ययन, यज्ञ एवं दान लेना तथा देना था । ब्राह्मण सबसे ऊँचे, सुयोग्य और प्रतिष्ठा के पात्र समझे जाते थे ।

क्षत्रिय :- ब्राह्मणों के उपरान्त समाज में क्षत्रियों का स्थान था । समाज एवं राज्य के कल्याण हेतु कार्य करना ही इनका कर्तव्य था । निम्नजाति का व्यक्ति यदि अपने को क्षत्रिय बताता तो उसको कठोर दंड दिया जाता था । क्षत्रिय नाम के अंत में वर्मा तथा वैश्य के अंत में पालित शब्द का प्रयोग होता था जैसे :- इन्द्रिय वर्मा क्षत्रिय का तथा इन्द्र पालित वैश्य का होता था ब्राह्मणों का नाम इन्द्रदत्त होता था ।(4)

वैश्य तथा शूद्र :- समाज में वैश्यों तथा शूद्रों का स्थान क्षत्रिय तथा ब्राह्मण के बाद आता ।

1- जनरल आफ बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी 1928 पृ0 402, 14
2- वेदालंकार हरिदत्त प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पृ0 572
3- मनुस्मृति 1/96, 10/3, याज्ञवल्क्य 1/118-19
4- याज्ञवल्क्य 8/2/83

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनु याज्ञवल्क्य आदि व्यवस्थाकारों के अनुसार इस समय भी वैश्य वर्ग का मुख्यकार्य वेदाध्ययन, यजन और दान के अतिरिक्त इनका विशेष कार्य खेती पशुपालन था। रुपया सूद पर देना और व्यापार करना था। देश की आर्थिक व्यवस्था का उत्तरदायित्व वैश्यों के उपर ही था। आपत्तकाल में धर्मरक्षा तथा वर्णसंकरता को रोकने के लिये अस्त्र भी धारण कर सकते थे। शूद्र इस समय भी पतित निम्न तथा दास माने जाते थे। द्विजाति की सेवा करना ही इनका प्रमुख कार्य था। पूर्व व्यवस्थाकरों के बनाये गये नियम इतने जटिल एवं नियम बद्ध थे कि इनको बदलना अत्यधिक कठिन था। पतंजली ने (1) दो प्रकार के शूद्रो का उल्लेख किया है कर्म शूद्र- जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य अपने शस्त्र विहित कर्तव्यों का पालन न करते हुये शूद्रवत जीवन व्यतीत करते थे। यह अशिक्षित वेदाध्ययन न करने वाले, सन्ध्या अग्निहोत्ररहित असंयमी ब्राह्मण भी शूद्र समझे जाते थे। (2) जन्म शूद्रः- ये शूद्र माता पिता से उत्पन्न व्यक्ति थे, आभीर, धीवर, रथकार, कुम्भकार, नाई, लुहार, धोवी, चमारों के अलावा शक यवन क्रौन्च्य, किष्किन्धयादिक भी शूद्रो के अन्तर्गत आते थे। शूद्र निरवासित तथा अनिर्वासित दो प्रकार के होते थे(2)।

वर्ण संकर जातियाँः- अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाहों से अम्बष्ठ, मल्ल, लिच्छिवि, खस, सूत, वैदेहक, चान्डाल, मागध, आयोगव अनेक प्रकार की वर्ण संकर जातियाँ थी। हिन्दूसमाज में विदेशी जातियों को खपाना आसान हो गया इस समय यह कल्पना की जाने लगी कि शक यवन, पहलव आदि जातियाँ पहले क्षत्रिय थी किन्तु शनैः शनैः वैदिक कर्मकाण्ड के न करने के कारण इनका पतन हो गया (2) परन्तु शासक होने के कारण इनको क्षत्रिय का दर्जा देना पडा लेकिन वैदिक कर्मकांड न करने के कारण शूद्रो की श्रेणी में पतित क्षत्रिय माना गया। जाति प्रथा को समान्यतः जन्म मूलक समझा जाता था इसलिये इसमें किसी जाति की स्थिति में कोई परिवर्तन संभव नही है किन्तु युग युग की जाति प्रथा में कुछ लचकीलापन था वर्ण संकर जातियों कीसामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो

1- 1- महाभाष्य 4/1/14 (2) वही 2/4/ 10

3- मनुस्मृति 10/43-4

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो सकता था इसमें किसी संकर जाति को उसका मूल वर्ण भी प्राप्त हो सकता था और उसका अधःपतन भी हो सकता था । इसलिये स्मृतिकारों ने जात्युत्कर्ष (जाति में उत्थान) और जात्यपकर्ष (जाति की स्थिति में पतन) के सिध्दान्त का प्रतिपादन किया (1) । इस सिध्दान्त से जाति व्यवस्था की कठोरता कुछ अंशों में कम हो गई(2) चारों वर्णों के अलावा अन्यवर्ग के भी उल्लेख मिलते हैं जो सरकारी नौकरी तथा व्यवसाय के आधार पर बने हुये थे महाभोज, मरहठी और महासेनापति सबसे उँचा वर्ग माना जाता था(3) अमात्य, महामात्र, भाण्डागारिका आदि सरकारी नौकरी और नेगम(श्रेष्ठगण) सार्थवाह(व्यापारीगण), आदि गैर सरकारी वर्ग भी बनता था उसका दूसरा स्थान था । तीसरे वर्ग में लेखक, वैद्य, सुवर्णकार, गान्धिक, हालकीय(कृषक) इत्यादि सम्मिलित थे । चौथे वर्ग में वर्धकि, दासक(मछुआ), लोह, वाणिज(लुहार) आदि शामिल थे समाज की इकाई कुटुम्ब था इनके प्रधान को कुटुम्बिन कहते थे(4)

आश्रम धर्म :- इस युग में शक, कुषाण आदि विदेशी जातियाँ भारत आई और वे शीघ्र ही भारतीय परम्पराओं, धर्म, भाषा, रीति रिवाजों को ग्रहण करके भारतीय बन गई । यवन यूनानी, शक, कुषाण आदि जातियाँ भारतीय समाज का अंग बन गई । इनके वैवाहिक संबंध सुप्रतिष्ठित भारतीय राज कुलों में होने लगा क्षत्रिय राजाओं की कन्याओं का विवाह सातवाहन और इक्ष्वाकु राजवंशों में होने लगा वीर पुरुषदत्त की पटरानी रुद्रभहारिका उज्जयिनी के शक राजा की कन्या थी(5) ।

संस्कार :- पुरानी स्मृतियों का अनुसरण करते हुए गर्भाधान, जातकर्म, उपनयन, विवाह आदि संस्कारों का महत्व था । ब्राह्म, आर्ष, प्रजापति, देव, असुर, पिशाच एवं गन्धर्व विवाह का उल्लेख स्मृतिकारों ने किया है । ब्राह्य विवाह की प्रतिष्ठा थी । वर्ण संकर जातियों की बहुलता के कारण गन्धर्व विवाह का विशेष प्रचलन था । अन्तर्जातिय विवाह होते थे । आन्ध्रवंशीय राजा ब्राह्मण थे उनमें से प्रथम शतकर्णि ने क्षत्रिय वर्ग के अंगुकलीय महारठी की कन्या नागानिका और वसिष्ठ पुत्र पुलुमावी ने महाक्षत्रप रुद्रदायन की लड़की से विवाह किया । वात्सायन(6) ने उल्लेख किया है कि वर को अपने से 3 वर्ष छोटी कन्या से विवाह करना चाहिये । विवाह वयस्कावस्था में होते थे(7)

1- मनु 10/64 याज्ञवल्क्य 1/96, इंडियन ऐंटीक्वरी 1911 पृ० 11
2- पी०वी० काणे धर्मशास्त्र का इतिहास हिन्दी अनुवाद खंड 1 (3) पाण्डेय राजबलि 'प्राचीनभारत' पृ० 2
4- इंडियन ऐंटीक्वरी जिल्द 47 (1918) पृ० 149 भंडारकर डी० आर० कोलेख 'डेकर आफ दी सातवाहन पीरियड) जिल्द 48 पृ० 98
5- वेदालंकार हरिशंकर वही पृ० 601, (6) वात्सायन 3/1-2
7- वेदालंकार हरिशंकर वही पृ० 613

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो सकता था इसमें किसी संकर जाति को उसका मूल वर्ण भी प्राप्त हो सकता था और उसका अधःपतन भी हो सकता था । इसलिये स्मृतिकारों ने जात्युत्कर्ष (जाति में उत्थान) और जात्यपकर्ष (जाति की स्थिति में पतन) के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया (1) । इस सिद्धान्त से जाति व्यवस्था की कठोरता कुछ अंशों में कम हो गई(2) चारों वर्णों के अलावा अन्यवर्ग के भी उल्लेख मिलते हैं जो सरकारी नौकरी तथा व्यवसाय के आधार पर बने हुये थे महाभोज, महरठी और महासेनापति सबसे ऊँचा वर्ग माना जाता था(3) अमात्य, महामात्र, भाण्डागारिका आदि सरकारी नौकरी और नेगम(श्रेष्ठगण) सार्थवाह(व्यापारीगण), आदि गैर सरकारी वर्ग भी बनता था उसका दूसरा स्थान था । तीसरे वर्ग में लेखक, वैद्य, सुवर्णकार, गान्धिक, हालकीय(कृषक) इत्यादि सम्मिलित थे । चौथे वर्ग में वर्धकि, दासक(मछुआ), लोह, वाणिज(लुहार) आदि शामिल थे समाज की इकाई कुटुम्ब था इनके प्रधान को कुटुम्बिन कहते थे(4)

आश्रम धर्म :- इस युग में शक, कुषाण आदि विदेशी जातियाँ भारत आई और वे शीघ्र ही भारतीय परम्पराओं, धर्म, भाषा, रीति रिवाजों को ग्रहण करके भारतीय बन गई । यवन यूनानी, शक, कुषाण आदि जातियाँ भारतीय समाज का अंग बन गई । इनके वैवाहिक संबंध सुप्रतिष्ठित भारतीय राज कुलों में होने लगा क्षत्रिय राजाओं की कन्याओं का विवाह सातवाहन और इक्ष्वाकु राजवंशों में होने लगा वीर पुरुषदत्त की पटरानी रुद्रभट्टारिका उज्जयिनी के शक राजा की कन्या थी(5) ।

संस्कार :- पुरानी स्मृतियों का अनुसरण करते हुए गर्भाधान, जातकर्म, उपनयन, विवाह आदि संस्कारों का महत्व था । ब्राह्म, आर्ष, प्रजापति, देव, असुर, पिशाच एवं गन्धर्व विवाह का उल्लेख स्मृतिकारों ने किया है । ब्राह्म विवाह की प्रतिष्ठा थी । वर्ण संकर जातियों की बहुलता केकारण गन्धर्व विवाह का विशेष प्रचलन था । अन्तर्जातिय विवाह होते थे । आन्ध्रवंशीय राजा ब्राह्मण थे उनमें से प्रथम शतकर्णिने क्षत्रिय वर्ग के अंगुकलीय महारठी की कन्या नागानिका और वसिष्ठ पुत्र पुलुमावी ने महाक्षत्रप रुद्रदामन की लड़की से विवाह किया । वात्सायन(6) ने उल्लेख किया है कि वर को अपने से 3 वर्ष छोटी कन्या से विवाह करना चाहिये । विवाह वयस्कावस्था में होते थे(7)

1- मनु 10/64 याज्ञवल्क्य 1/96, इंडियन ऐंटीक्वरी 1911 पृ० 11
2- पी०वी० काणे धर्मशास्त्र का इतिहास हिन्दी अनुवाद खंड 1 (3) पाण्डेय राजबलि 'प्राचीनभारत' पृ० 21
4- इंडियन ऐंटीक्वरी जिल्द 47 (1918) पृ० 149 भंडारकर डी० आर० कोलेख 'डेकन आफ दी सातवाहन पीरियड) जिल्द 48 पृ० 78
5- वेदालंकार हरिशंकर वही पृ० 601, (6) वात्सायन 3/1-2
7- वेदालंकार हरिशंकर वही पृ० 613

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समाज में नारी:- विदेशी आकृताओं के बावजूद भारतीय समाज में नारी की स्वतंत्रता एवं सम्मान देने की परम्परा इससमय भी कायम रही। नारी पुरुष की सहचरी थी तथा पुरुषो के साथ ही धार्मिकतथा सामाजिक समारोहोमें में भाग लेती थी । बुद्ध के प्रतीको की अचर्ना करते हुये , वाध यन्त्र बजाते हुये धर्मिक यात्रा में पुरुष के साथ जाते हुये दृश्यों में अंकित नारी मूर्ति (1) का अवलोकन कर यह स्पष्ट हो जाता है। कि नारी का समाज में आदर था। बाल्यावस्था में कन्या माता पिता के संरक्षण में रहती, यौवनावस्था में पति के संरक्षण में रहती। प्रमुख कर्तव्य पति सेवा ,पतिवृत्य धर्म का पालन था। साध्वी पत्नी दुःशील,स्वच्छंदगामिनी,गुणशून्य पति की सेवा देवता की तरह करे पुरुषो के लिये एक पत्नीवृत का होना आवश्यक नही था सतीत्व का यह एकांकी आदर्श इस युग मे हिन्दू समाज में लोकप्रिय हुआ।पत्नीरूप में समाज में/सम्मानीय स्थिति थी वैदिक यूगीन नारी की स्थिति के समान अतिशोभनीय नही थी ।माता के रुप मेंआदर था।

स्मृतिकार मनु की स्त्रियों के लिये ब्रह्मचर्यपूर्वक आमरण वैधव्य का जीवन बितानेकी व्यवस्था सर्वमान्य होने लगी इस कारण समाज में विधवाओं की संख्या बढने लगी। याज्ञवल्क्य(3)पहला स्मृतिकार है जिसने विधवा को पुत्रों के अभाव में पति की सम्पत्ति का स्वामी बनाया। विधवायें कठोर एवं संयम पूर्वकजीवन व्यतीत करती थी और विधवा का सती होना एक स्पृहणीय और उच्च आदर्श समझा जाता था(4)।

वेश्याओं का अस्तित्व था वे स्त्रियां अपने गुणों तथा कार्य कुशलता के कारण समाज में सम्मान पाती थी। सभी कला प्रेमी इनकी कला कुशलता,सुरुचिसम्पन्नता,साहित्यिक प्रतिभा पर मुग्ध होते थे इन्हें विवाहित होने वाली स्त्रियों की अपेक्षाकलाओं के तथा शास्त्रों के अध्ययन का अधिक अवसर मिलता था। अतः उस समय के नागरिक अपनी पत्नियों के होते हुये भी गणिकाओं के कलाकौशल और बुद्धि वैभव से इनकी ओर आकृष्ट हुआ करते थे तथा विवाह भी कर लेते थे वसंत सेना जैसी गणिका से चाद चारुदत्त ने अपनी साधवी स्त्री के होते हुये विवाह किया।वसंत सेना जैसी गणिकाओं की स्थिति वही थी जो पैरीकालीन के युग में यूनान में कलाओं से सम्पन्न हितीरा नामक गणिकाओं की

1- मथुरा संग्राहलय संख्या 56,4077, 61, 5390, 59, 3505, 67 207, 67, 184, 58, 4555, शर्मा रमेश चन्द्र मथुरा कला शैली की अनूठी देन बी०एम०ए०यू०पी० भाग 11-12 पृ० 21-29, 1972

2) याज्ञवल्क्य स्मृति 1/135-36

3) वेदालंकार हरिदत्त हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास, पृ० 326-52

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थी जिनके सम्पर्क में आना सुकरात जैसे दार्शनिक बुरा नहीं समझते थे।

आमोद प्रमोद के साधनः- परिवार रक्तसम्बन्ध पर आधारित था अर्थात एक ही जन से मिलकर बनता था। परिवार संयुक्त था घर का मुखिया ही समस्त समपत्ति का मुखिया होता था। समाज में अनेक प्रकार के मनोरंजनो का प्रचलन था पतंजली ने सामूहिक मनोरंजनो को समाज कहा है। समाज में नृत्य वादन, अभिनय तथा गायन आदिमनोरंजन होते थे(1) समाजमें एक प्रकार का सामाजिक महोत्सव होता था। हर पखवाड़े में एक निश्चित दिवस पर नागरिक विधा और कलाओं की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती के मन्दिर में एकत्र हुआ करते जहाँ नृत्य, गान तथा लय के संगम से दशों दिशायें गुंजित हो जाती नृत्य की विभिन्न मुद्राओं का प्रचलन था। मथुरा संग्रहालय(2) में नृत्य मुद्राओं वाली स्त्रियों की मूर्तियां संरक्षित है। मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त शाल भंजिकायें, वैदिका स्तम्भ फलक, पट्टियाँ, एवं आयाग पटों पर नर्तक नर्तकियों को नृत्य करते अंकित किया गया है नीलांजना की नृत्य फलक(3) तथा नंद सुन्दरी(4) के फलक विवेच्य युग की नृत्य कला पर विशेष प्रकाश डालते है। नृत्य केराजकीय मनोरंजन का(5) देवताओं के सम्मुख किये गये नृत्य को ताण्डव या मार्गी कहा जाता था(6)पारिवारिकतथा समाजिक उत्सवों में नृत्य विशेषतः मनोरंजन का साधन था गोष्ठी भी मनोरंजन का साधन थी। अपनी विधा कला और रसिकता के कारण सम्मानित दृष्टि से देखी जाने वाली नर्तकियें भी इन गोष्ठियों में निमंत्रित होती। इसमें नागरिक अपनी बौद्धिक तथा साहित्यिक कला का प्रदर्शन किया करते। इन गोष्ठियों में वादविवाद, संगीत, नृत्य तथा विविध कलाओं की प्रतियोगिता होती(7)।

~~उद्यान यात्रायें~~:-

उद्यान यात्रायें:- उद्यान यात्रा भी मनोरंजन का साधन था इन यात्राओं में कुमारी एवं विवाहित महिलायें भी जाती थे (8) यहाँ मेढ़ो और तीतर बटेरो की लड़ाई होती

1- महाभाष्य अध्याय 5 पृ० 158 (2)मथुरा संग्रहालय सं० जे० 4, 12, 186

3- लखनऊ संग्रहालय सं० जि० 626 (4)लखनऊ संग्रहालय सं० 12• 186

5)श्री रानी कुषाण कालीन शिल्प कलायें नृत्य, जी. एस० ए० यू० पी० भाग 14 पृ० 38 1968

6- भारत नाट्यक अध्याय4 ~~'भारतीय-कला- पृ०-30-2~~ श्लोक 259 -60

7- अग्रवाल वासुदेव शरण, 'भारतीय कला पृ० 312

8- वेदालंकार हरिदत्त ' प्राचीन भारत का राजनतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पृ० 620

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोनों पक्षों का काफी मनोरंजन होता । उद्यान यात्राओं में जलक्रीडाके भी मनोरंजन किये जाते । इन यात्राओं में नायक नायिकाओं के आपस में मिलने तथा प्रणय के अवसर प्राप्त होते थे ।

पर्व तथा क्रीडायें :- विवेच्य युग में यक्षरात्रि (दीपावली), कौमुदीजागर(रातभर जागकर मनोविनोद होते थे), सुवसन्तक(होली), यह प्रमुखपर्वमनाये जाते । इन पर्वों में सम्पूर्ण समाजों में आनन्द की धारा प्रवाहित होने लगती कामसूत्र (1) से विदित होता है कि सहकार भंजिका (आम तोड़कर खाना), आयूषाखादिका(होले आग मेंभूनकर खाना), विसखादिका (सरोवर से तिस को उखाड़ कर खाना), उदकवेडिका(पिचकारी से रंग खेलना), एकशाल्मली(पुष्पों से अलंकरण बनाना), कुदम्ब युध्द (दो दलों में प्रतियोगिता) आदि क्रीडाओं का वर्णन किया है ।

कन्याओं के मनोरंजन :- मालायें गूँथने, घरोंदे बनाना तथा गुड़िया के साथ खेलने में आनन्द लेती थी । विवेच्ययुग में विभिन्न प्रकार के मनोरंजन प्रचलित थे ।

वेशभूषा :- कुषाण कालीन मूर्तियों का अवलोकन कर विवेच्य युग की वेशभूषा का ज्ञान होता है । वस्त्रों की कटाई बुनाई, रंगाई तथा सिलाई का पूर्ण ज्ञान था । कपास की मृदुता के लोग कायल थे(2) दिव्यावदान(3) से विदित होता है कि कपास को बाजार से खरीद कर धुन ली जाती तथा उसको तैयार किया जाता था । रेशमी वस्त्रों का काफी प्रचलन थ । वस्त्रों पर हाथियों की पंक्तियाँ, पेड़,पौधे, मनुष्य आकृतियों और चिड़ियों का भी अलंकरण होता (4) । रेशमी कपड़े मुजिरिस, नेलिकिंडा तथा मालावार के बाजारों में गंगा के मुहाने के किनारे से तथापूर्वी समुद्र के किनारे से पहुँचते थे(5) चीन से रेशमी वस्त्र ब्राह्मपुत्र की घाटी, असम और पूर्वी बंगालभी होकर आते(6) । ऊनी कपड़े का साधारण बोधक शब्द कम्बल थे । ऊनी कपड़े के लिये दूष (आधुनिक धुस्सा)

1- वात्सायायन कामसूत्र सं० 4 पृ० 58

2- मोतीचन्द्र 'प्राचीन भारतीय वेशभूषा' पृ० 93, (3)पृ० 83 पृ०212;388;276

4- व्राट (इंडियन आर्टिस्ट देहली एक्जिबिशन पृ० 256-259

5- वार्मिंगटन कामर्स बिट्वीन दी रोमन एम्पायर एंड इंडिया पृ० 176

6- वाट 'डिक्शनरी आफ एकोनामिक प्रोजेक्ट्स आफ इंडिया पृ० 998 एण्ड 16

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शब्द का प्रयोग होता थां(1)। क्षौम, शण, हिरि वस्त्र(सुनहरे वस्त्र)4पाडुव्दकूल(सफेद कपड़ा, काशीक वस्त्र (बनारस का कपड़ा) का प्रयोग किया जाता थां(2)।साधुलोग फलक,वल्कल, मूंज, दर्भ के बने कपड़ें ऊँ तथा बकरे के बालों का कंबल पहनते थे(3) भारतीय प्रायः स्वच्छ धोती जिसका अधिकहिस्सा कमर में लिपटा होता था(4)(चित्रसं0 4 फलक 2) दुपट्टा पहना जाता था जिसका एक सिरा बाँये से पीठ पीछे होता हुआ दाहिने धुटने को ढाकता हुआ फंदे के आकार का होकर बाँयी कलाई में स्थित हो जाता था।(5)कभी कभी रस्सी की तरह बंटा कमर बंद ढीली तरह से पहना ताता थां(6)(चित्र सं0 7 फलक 2) कमरबंद कई फटों से बंधी लुंगी धुड़सवार, सईस इत्यादि पहनते थे(7)।

पगड़ियाँ :- पगडियों का प्रयोग होता थां। पगड़ी कलगी से सुशोभित रहती थी (8)। माट(मथुरा) के पास से प्राप्त कनिष्क की वेसिर वाली मूर्ति से प्रमाणित होता है कि वेश-भूषा अत्यन्त सुन्दर एवंसुसज्जित था(9) मथुरा से हीजूता एवं वस्त्र से युक्त मूर्ति प्राप्त हुई है(10)।पगडी मुस्तक पर जूडे के चारो ओर लपेट ली जाती थी(11)कभी कभी यह चमकनदार और बदामीदार के होते थे (फलक 2 चित्र सं05)। विवेच्य युग में कंचुक भी पहना जाता था(12)तथा कलंगी भी लगी रहती थी(फलक 2 चित्रसंख्या 6)।मथुरा से प्राप्त सू सूर्य प्रतिमा कंचुक पहने प्राप्त हुई है(13)। गहरे काम चोली वालीकंचुक पहने जाते थे(14)।किरचोली के अलंकार महरावदार खानों से बने है(14)। मथुरा संग्रहालय में 13 मूर्तियोंमेंउत्तरीय दिखाई पड़ता है बँटी हुई मोटी रस्सी फेंट के समान कमर मे बंधा है(15)

1- दिव्यवदान पृ0 215 सं 27-29, पृ0 316, [illegible] - 23-26
2- मोती चन्द्र 'प्रचीन भरतीय वेशभूषा पृ0 97 (3) दिव्यवदान पृ0 21 पंक्ति 4-5
4- पेचेल ला स्कलर्व्यर द मथुरा प्ले0 7 , सी0डी0 (5) वही प्ले0 35 बी0
6- वही प्ले 21 बी0 (7) वही प्ले0 8बी0 , इ0एस0आई, एन0 रि0 1911-12प्लेट57
8- स्मिथ - जैन स्तूप आफ मथुरा प्लेट 64, कनिंघम मरहुता प्लेट सं0 33/3,4/24 2357
9- इ0एस0आइ0 ऐन0 रि0 1911-12 पृ0 122 प्लेट 53.3
11- वही पृ0 124 प्लेट 54-56 (12) इ0एच0आइ0एन0 रि0 1911-12पृ0 122 प्लेट 55-78
13- फोमिल वही प्लेट 33बी0
14- मोती चन्द्र वही पृ0 119

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फेंटा के समान कमर में बँधा है । (1)

कटिसूत्र प्राचीन भारतीय वेशभूषा का अनिवार्य अंग था । यह कमर में बँधी चौड़ी पट्टी होती थी जो दाहिनी जाँघ पर लटकती रहती थी(2) यज्ञोपवती मथुरा संग्रहालय में विष्णु यज्ञोपवीत धारण किये हुए है । उधोवस्त्र पहनने का भी रिवाज था । वेशभूषापर विदेशी प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है मथुरा से एक मूर्ति का सिर कुलाहनुमा टोपी पहने है(चित्र संख्या 8 फलक 2) तथा मथुरा से दिल्ली वाली पगड़ी नूमा टोपियाँ पहने भी मूर्ति प्राप्त हुई है(3)

स्त्रियों की वेश भूषा :- साड़ी पहनने का विशेष रिवाज था । दुपट्टे तथा करधनी पहनने का शौक था । कमरबंद को (फलक 4 चित्र संख्या 13) खुबसूरती से बाँधा जाता था (4) मथुरा से एक मूर्ति प्राप्त हुई है जो कंचुक पहने है साड़ी का एक भाग कमर में लपेट कर दूसरा भाग वक्षस्थल को ढांकते हुये कन्धे पर पड़ा हुआ है(5) । पटला पहनने का ढंग बहुत सुन्दर था(फलक 7 चित्रसं० 15) बच्चे जाँघिया तथा कमरबंद पहनते थे । कभी कभी धोती पर रूमाल भी बँधा होता था जिसका छोर हवा में लहराता था(6) । विवेच्य युग में सौन्दर्य प्रसाधनों पर ध्यान दिया जाता था तरह तरह के इत्र, अंग राग के साथ ही घर को भी सुन्दरता से सजाया जाता पक्षी पालतू होते थे(7) । प्रातःकाल ही सुवसित दातौन, कस्तूरी, अगर, केसर इसको कलई के साथ तैयार किया हुआ उपलेपन, सुगन्धित पानी से स्नान, अलंकृतित वस्त्र तथा माला तथा सुरमें का प्रयोग कर अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करता । ताम्बुल तथा सुरभित मसालों से मुँह को सुवसित करता था स्त्रियाँ केशों को बनाये तथा होंटों को लालरंग से रंगती थीं(8) स्पष्ट है कि विवेच्य युग में प्रसाधान का शौक था ।

आभूषण :- स्त्री पुरुष दोनों ही आभूषणों का प्रयोग करते थे पतंजी(9) ने रुचर (हार) कड़क(कंगन) स्वस्तिक तथा कुंडल आदि आभूषणों का उल्लेख किया है । डा० बाजपेयी ने विवेच्य युग के हार, कुंडल, करधनी (फलक चित्र सं० 14) आदि आभूषणों का उल्लेख किया है । मथुरा संग्रहालय में एक स्त्री प्रतिमा है जो हाथों में कंगन डाले, गले में माला

1- मथुरा संग्रहालय सख्या 15: 596, 933, 915, 948, 956, 28· 1729, 34· 2520, 34· 2487, 42· 3024, 49· 3502, 56· 4225

2- वही 15· 948, 28· 1729, 50655 (3)मोतीचन्द्र प्राचीन भारतीय वेषभूषा पृ० 119; 222

4- जोगेल वही प्लेट 6 अ० और बी० प्लेट 17 ए० (5) वही प्लेट 60 बी०

6- मोतीचन्द्र वही पृ० 135 (7) मजूमदार आर० सी० ''एंशियेण्ट इंडिया'' पृ० 218

8- वेदालंकार हरिदत्त प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पृ० 616-17

9- बाजपेयी के०डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश फलक संख्या (11)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा कानों में कुडल पहने है(1)।अलंकार धारण किये कुषाण कालीन स्त्रियों की अनेको प्रतिमायें प्राप्त हुई है(2)पुरुषो का अलंकार धारण किये मूर्तियां प्राप्त हुई है। जिनसे ज्ञात होता है कि विवेच्य युग में स्त्री पुरुष दोनो आभूषण पहनते थे (3) ।वेदिका स्तम्भ पर उत्कीर्णमुक्ता, ग्रथित ,केशपाश, कर्णकुंडल, मौकतिकएकावली, गुच्छक हार, केयूर,कटक, मेखला, नूपर आदि धारण किये स्त्रियों का सौन्दर्य देखते ही बनता है यह स्त्रियां विविध क्रीडाओं में सलग्न है।(4)। किसी के हाथ में वीणा अथवा किसी के वंशी है। कोई सुन्दरी स्नानागार से निकलकर अपने बाल निचोड रही है और पानी की बूँदों को मोती समझकर नीचे हंस चोंच खोले खड़ा है(5)। यह वेदिका स्तम्भ श्रृंगार तथा सौन्दर्य के जीते जागते नमूने है। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में विभिन्न सौन्दर्य प्रसाधन तथाअलंकार प्रियता का विशेष चाव था।

ललित कलायें:- विवेच्य युग कालीन ललित कालओं का युग था विविध कलाओं का विकास हुआ। सजीवता,कलात्मकता, अलंकारिता ही कला की विशेषता थी ।

संगीत कला:- इस युग में संगीत कला की विशेष उन्नति हुई नृत्यकी विविध मुद्राओं का अंकन हुआ जो मथुरा संग्रहालय, राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित मूर्तियो का अंकन करने से प्रमाणित होती है(6)।

हस्त मुद्रायें:- पताका हस्त(हथेली खुली),मृगशीर्ष(तर्जनी उँगली खड़ी),उर्धचन्द्र,कर्तरि हस्त की नृत्य मुद्रा में मथुरा (8) कला शैली में अवलोकनार्थ मिलती है(7)। भरतनाट्य शास्त्र से विदित होता है कि दोलहस्त,करिनृत्यहस्त की मुद्राओं का प्रयोग होता था(प.लकS चित्र संख्या 16,17,18,19,20,21,22,23,29,30,31,32)

1-कु- मथुरा संग्रहालय सं0 6714,60,4866,56,4077,63,5390

3- मथुरा संगंहालय सं0 67,184,58,455,67,161,67-155

3- मथुरासंग्रहालय 59,48 41, 61,5317

4- मथुरा संग्रहालय जे0 61,2325, जे0 4, जे060

5- वही संख्या 1902

6- मथुरा सं0 संख्या जे0 4,15सी0, राज0 सं0 संख्या लखनऊ जे0 533

7- भरतनाट्य अ0 92 श्लोक 18, लखनऊ संग्रहालय सं0 जे0 255,268,(7,656

=8- मथुरा संग्रहालय सं0 281

8- भरतनाट्य अध्याय 9 श्लोक 138-139, 192

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लखनऊ संग्रहालय (1) में प्रद्योतक नृत्य, लवनीनृत्यहस्त, नर्तकी का हाथ पताका भाव में दूसरा अर्द्धचन्द्र भाव में कटिहस्त होत है। नृत्य में गति देने के लिये नर्तकी के शरीर में कई प्रकार का झुकाव देना होता था जैसे अभंग, अतिभंग, और त्रिभंग। स्पष्ट है कि नृत्य कला का काफी विकास था।

<u>मूर्ति कला:-</u> कला के स्वरूप को सवारने हेतु मानवजीवन को आवश्यक थे अंग प्रत्यंगो सूक्ष्म अंकन विवेच्य युग की प्रमुख विशेषता थी। अलंकरणों के प्रवृति वस्त्रों की सिलवटे, झीनेवस्त्र एवं झाँकता सौन्दर्य ही इस युग की विशेषता है दिव्य दीप्ती तथा अध्यात्मिकता के स्थान पर अंग सौष्ठव की सूक्ष्मता तथा भौतिक सौन्दर्य पर अधिक ध्यान दिया गया है। कौशाम्बी सारनाथ मथुरा से विवेच्य युग की मूर्तियां प्राप्त हुई है(2)। मथुरा कला संकोख की अनोखी कला है जहाँ से असंरुप जीवन वृतांत सम्बन्धी(3) तथा वोधिसत्व(4) एवं बुध्द मूर्तियाँ (5) प्राप्त हुई है। यह मूर्तियाँ इतनी सजीव है कि हाथ से निर्मित प्रतीत न होकर मशीनो से तैयार की गई प्रतीत होती है हेमपाद मुद्राओं का भी आकर्षक रुप मिलता है(फलक चित्र संख्या 24, 25, 26, 27, 28) मानव की प्रकृति का सूक्ष्म पृष्ट भूमि में दिखाया गया है।

1- लखनऊ सं० संख्या जे० 255, 268, 626, श्रीवास्तव रानी 'कुषाण कालीन शिल्पकला मे नृत्य मुद्रायें' वी० एम० एस० यू० पी० 1974 भाग 14 पृ० = 38 से 46

2- गोस्वामी 'ऐपीग्राफिकी भाग 24, 1938 पृ० 210-12, शर्मा आर० सी० 'प्रिय कनिष्क बुधिष्ट इकनोग्राफी' वी० एम० एस० यू० पी० भाग 5-6, 1970 पृ० 15, अग्रवाल आर० सी० सम कुषाण स्कपचर्स इन नेशनल म्यूजियम' वी० एम० एस० यू० पी० भाग 3, 1969 पृ० 23-24

3- मथुरा सं० संख्या 60, 4956, 57• 4260, 47• 3367, 61• 5304, 17, 44• 3118, शर्मा आर० सी० एण्ड मिश्रा शिवधर 'कुषाण एक्वसीटिशन । इन मथुरा संग्रहालय ड्यूरिंग द लास्ट डीकेट' वी० एम० एस० यू० पी० भाग 4, 1969 पृ० 52

4- मथुरा सं० सं० 9• 3501, 49• 3507, 47 3371, 63• 1, श्रीवास्तव वीरेन्द्र 'मथुरा की नवीन अभिलिखत बुध्द मूर्ति' व० एम० एस० यू० पी० भाग 4, 1969 पृ० 19

5- मथुरा सं० सं० 73• 42, 71• 105, 39• 2866, 47• 4238, 47• 4239, 39• 2377 44• 3177, 47• 3366, 52• 3613, 53• 3680, 3651, 55• 2876, 57• 3613, 53• 3650-1, 55• 2876, 57• 429, 56• 4240, -41, 47, 57• 4820, 58• 4482, 58• 4554, 59• 4836, 60• 4855, 73• 20, 42• 2919, 47• 3287, 61• 5329-43-54 76, 79, 67• 131, 44• 3153, 44• 3120, 33, 39• 2831, 53• 3654, 78, 40• 2878 50• 3533, 40• 29060, 47• 3101, 44• 3108, 45• 3260, 6, 47• 3264, 44• 2110 47• 327, 50• 3520, 52• 3622

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टथ्ठ

अहिच्छत्रा से विवेच्य युग में स्त्री पुरुषों की मूर्तियां प्राप्त हुई है, जो/मथुरा कला की शैली की है(1) एकअन्य स्त्री का सिर भी उपलब्ध हुआ है जिसके पिछे की ओर संवारे बाल एक रिबन से बंधे है।(2)।एक यक्ष प्रतिमा अहिच्छत्रा से प्राप्त हुई है जो कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है(3)। विवेच्य युग को पाषाण तथा मिट्टी की मूर्तियाँ बड़ी संख्या में प्राप्त हुई है। वोधिसत्व मैत्रेय की कलापूर्ण अभिलिखित मूर्ति अहिच्छत्रा से ही प्राप्त हुई है मथुरा से लाई दो बुध्द प्रतिमा भी अहिच्छत्रा से प्राप्त हुई है ये दोनो लाल बलुये पत्थर का है साथ ही कुछ मृण मूर्तियां , पशुपक्षी वर्तन आदि भी प्राप्त हुये है(4) ।काम्पल से विवेच्य युग की कनिष्क द्वारा बनवाई गई लाल मिट्टी का पुरुष मस्तक प्राप्त हुआ है जिसका मुंह खुला है प्राप्त हुआ है(5)। सारनाथ से मानवासिर भी प्राप्त हुये है आँखे खुली हुई हैमूछें बैठी हुई है(6) राजघाट की खुदाई में विवेच्य युग के स्त्री सिर भी मिले है सुन्दर केश विन्यास है(7) ।

खुदाई में कुषाण कालीन वेदिका भी प्राप्त हुई है जो मथुरा

1- वाजपेयी के०डी० युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ० 35

2- वाजपेयी के०डी० तथा एस० विधालंकार " अहिच्छत्रा " उत्तर प्रदेश कोसर क्रविक केन्द्र पृ० 10

3- युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ० 33

4- वाजपेयी के०डी० तथा एस० विधालंकार 'अहिच्छत्रा ' पृ० 14

5- सूर्य वंसी भगवान सिंह भारत में काविल पृ० 80 से 82

6- पाण्डेय उमा वाराणसी पृ० 61

7- मदन मोहन नागर सारनाथ का संक्षिप्त परिचय पृ० 42

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संग्रहालय में सुरक्षित है(1)। मथुरा से तीर्थंकरप(2) तथा पुरुष मूर्तियां(3) भी प्राप्त हुई है तीर्थकारों की मूर्तियाँ पूर्वतः भारतीय है इन मूर्तियो में तलके, हथेलियों तथा वृक्षस्थल के मध्य मंगल चिन्ह बने है उनमें केश दाहिनी तरफ मुडे हुये छोटे छोटे और धुधराले है। वाराणसी में भी मूर्तिकला का विकास हुआ मथुरा से दूर श्रावस्ती, कोशाम्बी, सारनाथ में मथुरा कला शैली की मूर्तियाँ प्राप्त हुई है । (4) काशीके कला भंवन मे एक स्त्री की मूति सुरक्षित है इसका मुख गंभीर प्रसन्न व सुन्दर है नेत्रो में चंचलता है(5) कोशाम्बी से बोधिसत्व की मूर्ति प्राप्त हुई है जो मूतिकला का सुन्दर नमूना है(6) कुषाण कालीन संगीतज्ञों की मूर्तिया भी प्राप्त हुई जो मथुरा कला की अनुपम विशेषता है(7)। लखनऊ से हुविष्क का मथुरा अभिलो तथा सारनाथ से बुध्दि प्रतिमा पर उत्कीर्ण कनिष्क का अभिलेख प्राप्त हुआ है(8)। विवेच्य काल की कलकत्ता संग्रहालय द्वारा एकत्र की गई पत्थर की मोहर भी प्राप्त हुई है(9)। मथुरा की कुषाण कला विशेष महत्व रखती है(10) तत्कालीन एशिया तथा योरप की संस्कृति के अनेक उपादान मथुरा कला के साथ धुलमिल गये(11)। बुध्द प्रतिमाओं के निर्माण में भारतीय मूर्तिकला महान क्रान्ति का सूत्रपात हुआ(12 जो विवेच्य युग में कला महत्वपूर्ण देन माना जायगा।

1- मुथरा सं०सं० 67, 149, 60• 5057, 67• 153
2- वही 67• 177, 57• 5265, 45• 3208, 46• 3223, 48• 3385, 47• 333, 54• 3769, 60• 4845, 45• 3214
3- वही 59• 4841, 61• 5316, 61• 5323, 48• 4478, 40• 2893, 40• 2893, 46• 3227 59• 4831, 58• 4739, 40• 2902, 42• 2955, 45• 3201, 46• 3228, 48 3445, 50• 3516, 3552, 58• 4556
4- पाण्डेय उमा वाराणसी पृ० 69, मोतीचन्द्र 'काशी का इतिहास पृ० 70
5- विधालंकार सत्यकेतू 'भारतीय संस्कृतिऔर उसका इतिहास पृ० 308
6- पाण्डेय उमा वही पृ० 70
7- मथुरा सं सं० 47• 3292, 50• 3535, 52• 3624, 58• 4099
8- श्रीवास्तव ए० के० 'लखनऊ एज नोन थ्रू द क्वाइस वी०एम०ए०यू०पी० भाग। , 1968 पृ० 38-42
9- थैप्याल के०के० 'कुषाण सील आफ रेयर आर्टीस्ट्री एवं०एम०ए०यू०पी० भाग4 पृ० 8
10- नलिनाक्ष दत्त तथा वाजपेयी के०डी० वही पृ० 283, गुलाबराय भारतीय संस्कृति पृ० 238
11- वाजपेयी के०डी० मथुरा पृ० 33 से 35
12- वेदालंकार हरिदत्त प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पृ० 418

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनोहर चित्रितताओं को सजीव करने वाली विवेच्य युग की कला अनोखी ही है। मथुरा वेदिका स्तम्भ पर अंकित मनोहारी आकृतियाँ कला की अनुपम देन है। भारतीय सांस्कृतिक की धार्मिक परम्परा में स्वास्तिक चिन्हों का विशेष महत्व है ये शुभ चिन्ह सूर्य कमल नन्दीपाद, त्रिरत्न, सूर्यपहिया, मछली का जोड़ा, पेड़ आदि वस्तुये है। ब्राह्मण, जैन बोद्ध धर्मों में इन स्वास्तिक मंगल चिन्हों को विशेष महत्वपूर्ण स्थान दिया गया आहत सिक्कों कापस पर भी सूर्य पहिया तीर मछली का जोड़ा द्रष्टव्य है((1) स्नान करती नारी, झांकता सोन्दय, टपकती बूँदे एवं सोलवट कला के सूक्ष्म परिचायक है। चित्रकला के साथ ही लेखन तथा साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ।

आर्थिक स्थिति:- मानव जीवन मे अर्थ का प्रमुख स्थान है। प्राचीन भारतीय विचारको में मनु, शुक्र, कामन्दक तथा भीष्म आदि ने मानव जीवन में अर्थ को आवश्यकता को स्वीकार किया है।।

कृषि:- कृषिका प्रमुख स्थान था। भूमि को साफ करना, बोना, जोतना, निराई मेड बन्द, पशु तथा पक्षियों से कृषि की रक्षा को जाती थी (2) पिल्नी ने भारत को धान जौ, सरसो का उल्लेख किया है(4)। धान की अनेको किस्में प्रचलित थी। वासमती चावल बढ़िया प्रकार का थां जो केवल राजाओ के उपभोग की वस्तु थी (5)। पिल्नी के (6) साहित्यक उल्लेख से विदित होता है कि इस समय काली मिर्च, इलायची गुग्गुल तथा कुठ का उल्लेख किया है। कृषि में सिंचाई का महत्व था 3 वर्ष में वर्षा होती थी (7)। पिप्रावा से शाक्यों द्वारा निर्मित प्राचीन स्तूप प्राप्त हुआ है इसका व्यास 116 फुट तथा उचाई 21 फुट है इसमें 16'' लम्बी तथा 10'' चौडी ईटों का प्रयोग किया गया है(8)?

मिर्जापुर में विजयगढ किले के मार्ग पर एक चटटान पड़ती है जिसपर योध्दा तथा शेर को आकृति को सुन्दर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है यह चित्र कला का सुन्दर नमूना है(9) मथुरा से हवर्टहील की खुदाई में कुषाण कालीन अभिलेख प्राप्त हुआ है(10) कनिंघम ने मथुरा से प्राप्त कनिष्क तथा हुविष्क के लेख का उल्लेख किया है(11)

1- मुखर्जी बी०एन० 'स्वास्तिक सिम्बाइज आन अर्ली इन्डियन क्वाइंस, बी०एम०ए०यू०पी० भाग 14, 1974 पृ० 5
2- आशुतारा म्यूजियम कलकत्ता संग्रहालय संख्या 23,12,1974 मजूंदार ऐंशियेण्ट इंडिया पृ० 290 (3) वेदालंकार हरिदत्त वही पृ० 517
4- पिल्नी 12/4, 18/90/13 नेचुरल हिस्ट्री (5) वेदालंकार हरिदत्त वही पृ० 518
6- पिल्नी 'नेचुरलहिस्ट्री' पृ० 11 (8) मिलिन्द प्रश्न पृ० 114
9- वाजपेयी के०डी० युगों युगों में उत्तर प्रदेश' पृ० 41
10- वही 46 (11) ल्यूर्ड हटले बी०एम०ए०यू०पी० भाग1, 1968 पृ०4
11- कनिंघम 'आर्कलाजी सर्वे आफ इंडिया भाग 3 - 1971-72

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परन्तु वह कृषि के लिये पर्याप्त नही था अतः सिंचाई की व्यवस्था विशेषरुप से की जाती थी । खेतों के लिये रजिस्टरी कराई जाती थी। पूर्व व्यवस्थाकरों के बनाये नियमों के अधार पर कृषि व्यवस्था प्रचलित थी ।

पशुपालनः- पशुपालन भी वैश्य समाज का परम्परागत कार्य समझा जाता था गाय बैल बकरी भेड़ घोड़ा , हाथी , बैल पाले जाते थे ।

शिल्पियों तथा व्यापारियों के अनेको संघ भी होते थे ।जनता इन निकायो और श्रेणी संगठनों पर पूर्ण विश्वास रखती थी । नासिक अभिलेख में जुलाहों के दो निकायों का वर्णन है । एक निकाय में 2000 कार्षापण(चाँदी के सिक्के)जमा किये इन पर एक प्रतिशत प्रति माह के हिसाब से व्याज मिलता थादूसरे निकाय में उचौथाई प्रतिशत मासिक व्याज की दर पर 1000 कार्षापण जमा किये गये(1)कुम्हारों, अनाजों का धंधा करने वाले, वांस का काम करने वाले,तेलियों, पनचक्की चलाने वाले आदि का उल्लेख मिलता है। ये निकाय सार्वजनिक हित के कार्यों मेंयोगदान देते थे ।मथुरा से प्राप्त एक लेख के अनुसारवहाँ की पुण्यशाला के लिये किसी धार्मिक व्यक्ति ने 550 - 550 चाँदी के सिक्के की दो धन राशियाँ दो निकायों में अक्षय नीवी (स्थाई मूलधन) के रुप में जमा कर दी(2)। इस धन से प्राप्त होने वाले व्याज दीन दुखियों का नित्य पोषण करने के अतिरिक्त प्रत्येक मास में एकादिन 100 ब्राह्मणो को भोजन कराया जाता याज्ञवल्क्य स्मृति(3) ने भी इन निकायों का उल्लेख मिलता है मसान से कुषाण कालीन मुद्रायो प्राप्ति हुई है जिनसे विदितहोता है कि व्यापारिक दशा उन्नत थी (4)। आर्थिक दशा क उन्नत होने का प्रभाव प्राप्त हुई स्वर्ण मुद्राओं से होता है। उन्नाव जिले से 3 सोने की मोहर कनिष्ककी प्राप्त हुईं है(5)।स्वर्ण का वाहुल्य थां। जौनपुर जिले के धौलपुर ग्राम से 33 स्वर्ण मुद्राओ का खजाना प्राप्त हुआ है(6)। वाजपेयी के०डी० के अनुसार विवेच्य युग के भडावर से अनेको सिक्के प्राप्त हुये है जो इस बात का प्रतीक है कि व्यापार उन्नत था(7)।कुशीनगर से विवेच्य युग का तांबे का सिक्का भी प्राप्त हुआ है(8) कुशीनगर में ही विशाल स्तूप के निकट पूर्व की ओर एकविशाल चोकोर स्तूप है इसके निकटही कुषाण काल के 12 ताँबे के सिक्के प्राप्त हुये है इसमें 4 विम के तथा 8 कनिष्क के है(9)

1- नासिक अभिलेख सं0 13, 1165, पाण्डेय उमा वाराणसी' पृ0 46
2- मथुरा सं0सं0 1973 (3)2/264, 2/186-192, मोतीचन्द्र 'काशी का इतिहास पृ0 81-82
4-नारायण आर0बी0 'एक्सकेवेशन आफ मसारन' बी0एम0ए0यू0पी0 भाग1, 1962, पृ0 21
5-श्रीवास्तव ए0के0 कुषाण गोल्ड कायस फ्राम उन्नाव डिस्ट्रिक्ट बी0एम0ए0यू0पी0 भाग5-6 1970 पृ0 31-3
6-श्रीवास्तव ए0के0ए होर्ड आफ कांइस फ्रोम जौनपुर, बी0एम0ए0यू0पी0, भाग 4, 1969 पृ0 26-30 (7) युगो 2 युगों में उत्तर प्रदेश पृ0 33 (8)आगरामदन मोहन कुशीनगर उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक केन्द्र पृ0 5 (9) वही पृ0 10

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वस्त्र उद्योग उन्नत था । पूर्व युगों के समान एवं असली ऊन रेशम (1) के वस्त्र बनाये जाते हैं। काशी के वस्त्र बहुत ही बारीक एवं अच्छे होते थे। सबसे अच्छी मखमल गैंगेटिक' गंगा के पार बनती थी(2) भवन निर्माण उद्योग को काफी उन्नतावस्था में था। कौशाम्बी से इमारती पत्थर प्राप्त हुआ जिससे स्पष्ट है कि यहाँ के करीगर इमारतों को बनाने में कुशल हस्तकार थे (3) अहिच्छत्रा से इमारतों के भग्नावेश प्राप्त हुये हैं यहाँ की निर्माण शैली आम स्थानों की अपेक्षा भिन्न थी (4) ।

अनेक प्रकार के उद्योग धन्धों का प्रचलन था । धातु उद्योग चर्म उद्योग कुल्य उद्योग आदि का व्यापार पूर्व परस्पर के अनुसार प्रचलित था । रोम साम्राज्य दास दासियाँ (5) बनस्पतियाँ धातुयें तथा चीनी वस्त्र भारत को आते थे(6) । मथुरा संग्राहलय में आसवपायी कुबेर की युनानी वेश भूषा से युक्तउनकी स्त्री द्वारा मद्य पान का दृश्य बहुत ही मनोरंजक है(7) भारतीय वैसे बड़ी संख्या में पश्चिम को भेजे जाते थे तीतर, गरुण, बाज़ चकोर तथाअनेक प्रकार के पहाड़ी पक्षियों की माँग थी(8)। इस काल में कुषाणों तथारोमन साम्राज्य से सम्बन्ध दृढ हुआ कुषाणों के अधिक्रत राजमार्गों से चलते हुये चीनी बर्तन चीन के बने रेशमी कपड़े, हाथी दाँत कीमती रत्न मसाले सूती कपड़े रोम को जाने लगे और रोमन साम्राज्य का सोना कुषाण सम्राज्य में आने लगा (9)। शीशम चन्दन आदि पेडों की लकड़ियाँ आदि औषदि्धयों के पौधे गोंद रंग पैदा करने वाले पौधे मिश्र तथा रोम साम्राज्य को जाते थे। विवेच्य युग में गुलाब एवं कमल के फूलों की माँग विदेशों में बहुत थी भारतीय तलवारें पश्चिमी जगत के लिए वरदान ही थी(10)।

इस युग की विशेषता थी कि भारतीयों ने नयी भूमि का अन्वेषण किया गिरिशमान (11) के अनुसार कनिष्क का साम्राज्य उत्तर भारत उसका राज्य पटना तक था।

---

1. मोती चन्द्र ' प्राचीन भारतीय वेशभूषा पृ0 93, 94, वाजपेयी के0डी0 उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 35 (2)
2. पाण्डेय उमा वाराणसी पृ0 47 (3) वाजपेयी के0डी0 यूगो/में उत्तर प्रदेश पृ0 3।
4. वाजपेयी के0डी0 एवं एम0 विद्यालंकार' अहिच्छत्रा पृ0 14
5. स्मिथ कार्मस आफ एसोसियेन्ट इण्डिया पृ0 .400-40।
6. वाजपेयी के0डी0 प्रचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 89
7. मथुरा संग्राहालय सा सा 2,15। के0 9, 264, 424, 311।
8. वाजपेयी के0 डी0 प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 87
9. मोती चन्द्र , सार्थवद पृ0 97
10. वाजपेयी के0 डी0 ' प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 87
11. आरगिरिशनाथ' दे कुषा0 संख्या पृ0 145 पारी 1946

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तारीम की दुनों भी कनिष्क ने अपने अधिकार जमाया क्यों कि इसी प्रदेश में वे दोनो मार्ग से को चीन को पश्चिम से जोडते थे और जिनपर होकर व्यापारी और उपदेशक चला करते थे इस मार्ग पर फैले हुये आपस में राजा लडा करते थे उसकी कमजोरी का लाभ उठा कर कनिष्क ने उस पर अधिकार कर भारतीय उपनिवेश बसाये इस तर दोनो कोषेय पथों पर कब्जा कर बैठे । काशगर से चलने वाले उत्तरी कौशर्य मार्ग पर सुग्ध तक कनिष्क ने उपनिवेश वसाये (1) इस प्रकारकनिष्क ने भारतीय व्यापार को दूर दूर तक फैलाया नये नगरों के भारतीय नाम मथुरा, अयोध्या, कौशाम्बी, आदि रखे थे । शीघ्र ही यह प्रदेश भारतीय संस्कृति के रंग में रंग भारत की जय जय कार करने लगे। उनकी गणना वहत्तर भारत में की जाने लगी(2) मिश्र, रोम सम्राज्य, मध्य ऐशिया चीन(4) इत्यादि कनिष्क काल में तेजी से व्यापार होता था।

<u>स्थल मार्गः-</u> विवेच्य क्षेत्र के बडे बडे व्यापारिक नगर महापथ से जुडे हुये थे । इतिहास में पहलीवार गंगा से मध्य ऐशिया तक जाता हुआ यह महापथ एक राजसत्ता के अधीन हो गया। इस महापथ का एक टुकडा कुषाणो की नई राजधानी पेशावर से होकर खेबर तक जाता था। तक्षशिला में सरसुख पर कुषाणों ने एक नई नगरी बनाई परन्तु महापथ के रुप में विशेष परिवर्तन न हुये (5)।

विवेच्य युग की यह भी विशेषता थी कि पेशावर से पाटलीपुत्र और शायद ताम्रलिप्ति तक का महापथ और मथुरा से बनारस तक का रास्ता तो मघों तथा यौधेयों के अधिकार में आ गया पर उसके बाद का रास्ता मुरंडो के हाथ मे रहा। मथुरा, उज्जैन भडौच वाली सडक पश्चिमी क्षत्रपों के अधिकार मे थी । परन्तु इससे व्यापार पर किसी प्रकार का प्रभाव न पडा।

1- मोती चन्द्र सार्थवाह , पृ0 96-97
2- वाजपेयी के0डी0 'प्राचीन भारत का विदेशो से सम्बन्ध पृ0 92
3- मैक्रिंडल - ऐंशियेन्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इनक्लासिकल लिटरेचर पृ0 117
4- वाजपेयी के0डी0 'प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 84-85
5- मोतीचन्द्र सार्थवाही पृ0 97

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यापार की वृद्धि हेतु विवेच्य युग में पोत निर्माण कला में काफी उन्नति हुई । छोटे-छोटे जहाज और नावें भारतीय नदियों में अथवा समुद्र के किनारे किनारे चलती थी । जहाजों की सुविधा के लिये ज्योतिस्तम्भों का निर्माण किया जाता था एक ऐसा स्तम्भ कावेरी नदी के तट पर स्थित था उँची मीनार या ताड़ के बड़े खम्भों पर तेल का बड़ा दीपक जलता था (१) विदेशी व्यापारी भारतीय माल मसालों की खोज में यहां आने लगे तथा भारतीय व्यापारी और सार्थवाह सोना, रत्न, मसाले तथा सुगन्धित द्रव्यों की खोज में मलेशिया की पहले से भी अधिक यात्रा करने लगे अतः स्पष्ट है कि विवेच्य युग में आर्थिक दशा उन्नत थी ।

शिक्षा एवं साहित्य

पूर्व व्यवस्था कारों द्वारा अनुमोदित वेद, वेदांग, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, इतिहास, पुराण आदि पाठ्यक्रम में सम्मिलित था । शिक्षा का प्रारम्भ उपनयन संस्कार से किया जाता थां । शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास कर हृदय अंधकार को ज्ञान की ज्योति से प्रज्वलित करना था विद्यार्थी गुरु चरणों में बैठकर निष्ठापूर्व तनमन अर्पण कर अध्ययन करता था , ज्ञान विज्ञान की धारा मथुरा, काशी से प्रस्फुटित होकर अयोध्या, कौसाम्बी आदि सभी विवेच्य क्षेत्रों में प्रवाहित होकर ज्ञानकी ज्योति पताका फहराती रही ।

यह युग साहित्यिक क्रियाशीलता एवं साहित्य चेतना का युग था इस युग में विशुद्ध साहित्यिक ग्रन्थों के सृजन के अतिरिक्त दर्शन और चिकित्सा ग्रन्थों की प्रचुर मात्रा में रचना हुई । अश्वघोष, नागार्जुन वसुमित्र, चरक आदि विद्वान कनिष्क के राज्य दरबार को देदीप्यमान कर रहे थे । इन विद्वानों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अश्वघोष थे उनकी प्रतिभा दर्शन, साहित्य नाट्य एवं धर्म के क्षेत्र में एकाधिकार रखती थी । उन्होंने बुद्ध चरित्र, सौन्दर्यानन्द तथा सारिपुत्र ग्रन्थों की रचना की (1) धार्मिक ग्रन्थ है सौन्दर्यानंद (2)

इस युग में साहित्य पर विदेशी संस्कृतियों का प्रभाव काफी मात्रा में पड़ा । ग्रीकों ने भारतीय रंगमंच को प्रभावित किया यवनिका शब्द प्रदान किया और सम्भवत/ शूद्रक का मच्छ-कटिक नाटक भी ग्रीक प्रभाव से प्रभावित हुआ । यह युग संस्कृत नाटकों के विकास की दृष्टि से भी उल्लेखनीय है (3) भारत के नाट्यशास्त्र की परम्परा बहुत प्राचीन थी । ज्योतिष विद्या के

---

1 अ- विद्यालंकार जयचन्द्र ' भारतीय इतिहास की रुप रेखा खंड 2 पृ0 1142

1 बी- वेदालंकार हरिदत्त वही, पृ0 309-310

2- सौन्दर्यानन्द 18/63

3- कील संस्कृत साहित्य का इतिहास, डा0 मंगलदेव कृत अनुवाद पृ0 639

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरु थे फलतः भारतीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्परा पर काफी प्रभाव पड़ा । विज्ञान ने ग्रीकों का राशि चक्र ज्यों का त्यों ले लिया समन्वयशीलता इस युग की प्रमुख विशेषता थी । सूर्य के चारों ओर घूमने वाले मंगल, बुद्ध, वृहस्पति, शुक्रादि सातों ग्रहों को भूमि से आपेक्षिक दूरी के हिसाब से गिनने की और उसके नाम से सप्ताह के मंगलवार बुधवार, आदि दिनों का नाम रखने की पद्धति का विकास हुआ इस समय एक बार का स्वामी एक गृह माना गया ।

हाल का सातवाहन गाथकोष का वर्णन वाण ने हर्ष चरित्र में किया है तथा ग्रन्थ गाथा सप्तशती को अविनाषी विशुद्ध जाति के रत्नों का कोष कहा है । इस समय संस्कृत तथा प्राकृत को महत्व दिया गया था ।

भाषा :- प्राकृत भाषा का प्रयोग अधिकांशतः होता था जनसाधारण में पाली तथा प्राकृत भाषा का प्रयोग अधिकांशतः मिलता है । पतंजली ने पाणिनी के सूत्रों का विस्तृत उल्लेख महाकाव्य में किया है । कुषाणों ने यूनानी नकल के सिक्कें पर यूनानी लिपि का प्रयोग किया परन्तु उनके सभी लेख प्राकृत भाषा में है जिससे विदित होता है कि वे स्वयं भी यूनानी भाषा नहीं जानते थे और उनके समय तक यह भाषा पूर्णतः मृत हो गई थी । दूसरी तरफ खरोष्टी लिपि एवं प्राकृत भाषा के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि जन साधारण यूनानी भाषा नहीं जानता था ।

-: धार्मिक अवस्था :-

ई0 सा0 पूर्व छटी सदी से वैदिक संस्कृति के साथ साथ जैन तथा बौद्ध विचार धारा का विकास भारत में हुआ इसके फलस्वरुप कर्म ज्ञान तथा भक्ति का समन्वय हुआ और समन्वित जीवन दर्शन के निर्माण में सहायता मिली । विकसित जीवन के लिये जहाँ एक ओर ब्राह्म आत्मनिर्भरता अपेक्षित है वही आन्तरिक शान्ति के लिये वैचारिक उत्थान भी आवश्यक है । विविध संस्कृतियों के समन्वय से ये दो पक्ष पुष्ट हो गये और एक संश्लिष्ट भारतीय संस्कृति का निर्माण सम्भव हुआ । अयोध्या, मथुरा, काशी, कम्पिल, अहिच्छत्रा आदि स्थान धार्मिक केन्द्र थे जहाँ वैदिक धर्म तथा विविध धर्मों का विकास हुआ ।

वैदिक धर्म :- भारतीय धर्मों में सबसे प्राचीन वैदिक धर्म ही है इस धर्म का स्वरुप वैदिक ऋचाओं से प्रकट होता है । ऋग्वेद की भावना गतिशीलता और उदारता से अद्भुत मिलती है । वैदिक ऋषियों में चेतन शक्तिमय देवत्व के[1] दर्शन किया । पृथ्वी आकाश

1- पाण्डेय राजबली 'प्राचीन भारत' पृ0 22।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और वायु मंडल की विविध शक्तियों को उन्होने देवता के रुपों ग्रहण किया। मनो-कामना पूर्ण हेतु विविध दैनिक, सन्ध्याहोत्र, एवं अश्वमेध जैसे विशाल यज्ञो का आयोजन गृहस्थो के द्वारा किया जाता था यज्ञो में जटिलता अन्धविश्वास तथा हिंसा का बोल वाला था। यधपि कनिष्क बोध्द धर्म का आश्रयदाता था परन्तु उसने सभी धर्मों के साथ सहिष्णुता की नीति अपनाई। यज्ञ निरन्तर होते रहे वैदिक धर्म कांड की प्रधानता कालान्तर में कम होने लगे अब लोगो का ध्यान ईश्वर आत्मा जीव संसार की ओर आकृष्ट हुआ फलस्वरुप दार्शनिको का दृष्टि कोण उपनिषदों के रुप में उद्भूत हुआ। वैदिक धर्म के कर्म काडो की प्रतिक्रिया के रुप में वैष्णव, शैव, शाकत आदि धर्म प्रकाश में आये।

वैष्णव धर्म :- सामाजिक जीवन के विकास के साथ वैदिक धार्मिक विश्वासो और कर्मकाण्डों के प्रति लोगो में आस्था कम हो गई। कालान्तर में धार्मिक विश्वासो ने सर्वथा एक नया रुप लिया जिसमें इष्ट देव की कल्पना उभरी और वैष्णव शैव आदि धर्मों का उदय हुआ।

मथुरा के आसपास भगवान वासुदेव की पूजा का अत्यधिक प्रचार था। मथुरा कुषाणकाल भारतीय संस्कृतिक विचार धारा का प्रमुख केन्द्र विन्दु थी। विवेच्य युग की सोने चाँदी एवं तांबे की मुद्राओं पर शिवसूय कीर्तिकिये लक्ष्मी आदि देवताओ के तो दर्शन होते है किन्तु विष्णु की आकृति बहुत कम दिखाई पडती है क्यों कि कुषाण शासको का झुकाव वैष्णव धर्मकी ओर नही था परन्तु सामान्य जनता में विष्णु की विशेष लोकप्रियता प्राप्त थी इसका प्रमाण है एकमात्र मथुरा से ही 39 विष्णु प्रतिमायें प्राप्त हुई है(1)। विष्णु की गरुणासन की मूर्ति भी प्राप्त हुई है(2)यहाँ पर पंख पसारे हुये गरुण पर शंख चक्र के साथ विष्णु वैठे है। विष्णु के अवतारों में बराह, वामन, नरसिंह आदि की गणना सर्वमान्य थी।

1- मथुरा संग्रहालय संख्या 39·2856, 39, 2858, 4243, 30 26, 68-13, 68-11, 49·3507, 47·3258, 50·355550, 50·3902, 57, 5263, 57·4427, 57·4267 50·3350, 42-43, 3027, जोशी नीलकंठ कुरुक्षेत्र में कुषाण कालीन विष्णु प्रतिमायें पृ0 27·31, 1969

2- मथुरा संग्रहालय संख्या 56·4000

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बराहः- बराह की पूजा का प्रचार था जिसका प्रमाण मथुरा से प्राप्तएक बराह प्रतिमा इसके तथ्य की पुष्टि करता है(1) बराह मस्तिष्क विहीन हैपर गरदन का मोटापा, वृक्षस्थल पर श्रीवत्सकाचिन्ह गले की बनमाला तथा दांतों पर स्थित पृथ्वी के आधार पर उन्हे सरलता से पहचाना जा सकता है। नरसिंह- भीम से (2)विवेच्य युग की एक मूर्ति प्राप्त हुई हैजिससे विदितहोता है कि विवेच्य युग में नरसिंह पूजा का प्रचार था।जिसमें एक ओर बराह उकडू बैठा है सिंह बना है।

वामनः- विष्णु की एकप्रतिमा लखनऊ संग्रहालय (3) में है जो वामन अवतार से मेल खाती हुई है इसमें बुध्द तथा तीर्थंकर मूर्तियो के समानघुंघराले बाल है।वासुदेव कृष्ण की भक्ति का काफी बोलबाला था(4)कृष्णबलराम कोदेव रुप मानने का सर्व प्रथम शिलालेख चितौरगढ़ के समीप धोसुडी नामक स्थान में मिला है इसमें भगवान संकर्षण वासुदेव के लिये पूजा शिला तथा वेदिका के निर्माण का उल्लेख है(5)शक क्षत्रप शोडस के समय में वसुनामक व्यक्ति ने एक मन्दिर का तोरण व्दार और वेदिका का निर्माण कराया इसका पता तोरण के लगभग ढाई मीटर लंबे सिर दल पर उत्कीर्ण लेख से होता है तथा मथुरा जिले के मोरा नामक गाँव में दूसरा लेख मिला है जिसमें व्रष्णियों के पंच महावीरो का उल्लेख है(6) कटरा के शवदेव में वैष्णव मन्दिर विद्यमान था((7)। बलराम, अनरुध्द ,प्रद्युम्न की मूर्तियां बन रही थी। कृष्ण भक्ति का विशेष प्रचार मथुरा तथां आसपास के क्षेत्रों में था। मथुरा से एकाशिला पट्ट भी मिला है जिसपर बलराम, एकनशा तथाकृष्ण का अंकन किया गया है।कृष्ण का रुप चर्तुभुज है हाथों में चक्र, गदा शंख है। एक तीर्थं कर की मूर्ति पर भी कृष्ण का अकन हुआ है(8)।बलराम की विवेच्य युग की 18 मूर्तियाँ प्राप्त हुई है जो मथुरा संग्रहालय मे है(9)। बलराम के आयुध पर सिंह मुख बना है।इससे स्पष्ट है कि विवेच्य युग में बलराम की पूजा का भी काफी प्रचार था

1- मथुरा संग्रहालय 65·15

(2)मैक्डोनिल ए0ए0वैदिक माइथालाजी,वैदिक पुराण का शास्त्र पृ073-5, शु, जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ017

3- लखनऊ संग्रहालय सं0 जे0610 हरिवंश(गीता प्रेस)हरिचन्द 24, 22-23,पृ0140 विष्णु 48-23 पृ0 395

4) जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम वही पृ0 88

5) सरकार दिनेश चन्द्र सलेकर इंसक्रीपशन कलकत्ता 1942

6) वाजपेयी के0डी0 'मथुरा पृ0 83

7- मित्तल प्रभुदयाल 'वृज का सांस्कृतिक इतिहास' मथुरा, 1966 पृ0 155,अग्रवाल वासुदेव शरण - भारतीय कला ' वाराणसी 1966 पृ0 307,मथुरा संग्रहालय सं0 17·1344,

8- टेरीकोटा इन वीकानेर म्यूजियम ललित कला नं0 8 'अक्टूबर 1960 प्लेट 21, चित्र21-2

8- लखनऊ संग्रहालय सं0 जे0 47

9- मथुरा संग्रहालय सं0 सी0 19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वैष्णव धर्म के मूल में नारायण नामक देवता है। वैदिककाल में विष्णु का अस्तित्व सहायक देवता के रूप मे ही था पुराणो में विष्णु को प्रमुख देवता माना गया तथा नारायण को समन्वित विचार धारावैष्णव भक्ति के रूप में प्रस्फुटित हो गई, स्पष्ट है कि राजकीय धर्म न होते हुये जन सामान्य का धर्म वैष्णव धर्म ही था। जो हृदय को भक्ति रस में डुबो कर अमृत रस का आस्वादन कराता है।

शैव धर्मः- वैष्णव धर्म के समान शैवधर्म का भी जनता में काफी प्रचार था शैव-धर्म का उदय एवं विकास का प्रमुख आधार लोक विश्वास तथा आस्थायें ही है। वैष्णव धर्म में जहाँ भक्ति की प्रधानता है वही शैव धर्म में साधना, तपस्या एवं वैराग्य की प्रधानता थी। अन्य धर्मों में दुख के अन्त को मोक्ष माना गया है परन्तु शैवधर्म में दुख के अंत के साथ साथ आलौकिक शक्तियो प्राप्त होने की बात कही गई है।

शैवधर्म में शिव प्रमुख देवता है उन्हें अमानवीय शक्ति से युक्त माना गया है पुत्र स्कन्द और गणेश तथा गणो के साथ कैलाश पर्वत पर निवास करतेहै। शैवधर्म को काफी प्रोत्साहन मिला। लखनऊ संग्रहालय(1) में एक प्रतिमा प्राप्त हुई है। मथुरा से शिवलिंग प्राप्त हुआ है उत्तर के सिरे से वर्तुलाकार है जिसपर लिंग मुख का आकार स्पष्ट है लिंग के चारो तरफ एक पुष्प माला है जिसपर आठ पंखुडिया है(2)। सोरव सेविविच्य युगा का एक शिवलिंग प्राप्त हुआ है यह चेहरा बहुतसजीव है तीसरी आँख माँथे के मध्य है(3)। मथुरा से अनका शिवलिंग प्राप्त हुय है(4)साथ ही मानव-शिवमूर्ति (5)मिली जुली शिवमूर्ति(6) भी प्राप्त हुई है। वम, वासुदेव (हविष्क(फलक 14 चित्र सं0 86) आदि कुषाण शासको की मुद्राओं पर त्रिशूल परशु के संयुक्त दर्शन होते है(6)(फलक 13 चित्र सं0 73)। शैव प्रतिको के दो मुहरो पर भी थी(8) एक खंडित मूर्ति पुरातत्व संग्रहालय मथुरा में है जिसमें वासुदेवशरण अग्रवाल ने शिव के रूप में पहचाना है।(9)

1- शुकला एस0पी0 सम इंटेस्टिंग कुषाण टेरीकोटा इन स्टेट म्युजियम लखनऊ भाग4, 1969, पृ0 33 बी0एम0ए0यू0पी0
2- जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम 'कुछ अप्रकाशित कलाकृतियाँ बी0एम0ए0यू0पी0 भाग1, 1969पृ0 11
3- इयूट इर्टल ऐस्कवेशन आफ सोरव बी0एम0ए0यू0पी0 भाग 3, 1969 जन. पृ0 6, देहली संग्रहालय सं एल0 66.8 (4) मथुरा सं0 सं0 39• 20 39
4- मथुरा संग्रहालय सं40• 2885, 61• 5342, 62• 8, 47• 3326
5 - मथुरा सं0 सं0 44, 3122, 71• 90, 67• 411 (7) डी0एस0 के0 (रोसेनफील्ड, जे0एम0 द डाइनेस्टिक आर्ट आफ द कुषाण कैलिफोर्निया 1967) पृ0 118प्लेट1, सं0 16
8- डी0ए0के0 179, 184
9- के0डी0 जे0 यू0पी0 एच0 एस0 22 पृ0 117 (जनरल आफ यू0पी0 हिस्टारिकल सोसाइटी लखनऊ)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य युग में अर्द्धनारीश्वर का रूप सर्व प्रथम मथुरा कला में मिलता है यह स्वरूप द्विभुज है तथा हाथों में कोई अस्त्र नही है। मथुरानगर शैवधर्म का भी केन्द्र रहता आया है यादवों ने जिस समय द्वारिका के लिये प्रस्थान किया उस समय शिवलिंग का पूजन किया गया (1) उस समय शिवलिंगा का का पूजन किया गा मथुरा के प्राचीन शिव स्थाना में गोकलेश्वर, भूतेश्वर, रंगेश्वर एवं पिप्पलेश्वर है जो नगर के संरक्षक या क्षेत्र पालमाने गये है(2) यही कारण है कुषाणों के समय में मथुरा शैवधर्म का भी केन्द्र हो गया। भीटा से(3) एकशिवलिंग प्राप्त हुआ है लिंग के ऊपर द्विभुज शिव की कमर तक की प्रतिमा बनी है दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है और वाये में घट है(5) स्पष्ट है कि विवेच्य युग में शैवमत का काफी प्रचार था। कौशाम्बी से चतुर्मुखं लिंग (फलक 14 चित्र सं० 42-43) प्राप्त हुआ है(4) मूसानगर कानपुर से बैठे शिव ((फ० 14 चित्र सं० 85) तथा गदाधारी शिव मूर्ति (फलक14 चित्र सं०84)प्राप्त हुई है(6)

कार्तिकेय उपासना:- शैवधर्म में कार्तिकेय तथा गणेश का सम्बन्ध शिव से उनके पुत्र के रूप में है। कुषाण मुद्राओं पर स्कन्दकुमार एवं विशाख के रूप में इस देवता का अंकन मिलता है। मुरगा स्कन्धका खिलौना है सूर्य के सारथी अरुण(7) अथवा दूसरे मतानुसार समुन्द्र (8) के द्वारा इन्हे दिया गया था। कानपुर जिले से प्राप्त हुये लालाभक्त स्तम्भ पर बड़े ही सुन्दर कुक्कुट स्तम्भ के दर्शन होता है(9)। लखनऊ संग्रहालय में स्कन्द प्रतिमा के यज्ञोपवीत के भी दर्शित होता है(10)। मथुरा (11) से अनेक स्कन्द प्रतिमाये प्राप्त हुई है जिनसे विदित होता है कि विवेच्य क्षेत्र में स्कन्द पूजका प्रचार था।

1- हरिवंश, हरिवंश पर्व 25-21 पृ0 135, मित्तल प्रभुदयाल वही 153-57
2 जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम वही पृ0 48
3- मार्शल ऐस्कवेशन एट भीटा एस0 आर0 ए0 एस0 आई 1911-12 पृ0 29-14
4- इलाहाबाद सं0 636 (5) जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम वही पृ0 35
6- डी0एस0के0 प्लेट 4 192-94 पृ0 99 (7) स्कन्द पुराण अवन्तिखंड45-70-72पृ0 15 1/5
8- वही महेश्वर खंड 30-41 पृ0 359-60
9- ए0 एस0 आई0 ए0 आर0 (आर्कलाजी सर्वे आफ इंडिया एण्ड लिटरेचर)1929-30 पृ0 132-33
10- लखनऊ संग्रहालय सं0 921
11- मथुरा संग्रहालय सं0 22·2270, 58·4722, 56·4169, 62-15, 73-6, 62, 29, 71·94, 47·3364, 67·26, 58·4182

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गणेश:- शिवपुत्र के रुप में नही अपितु प्रत्येक शुभ कार्य गणेश जी के नाम से ही सम्पादित होता है। मोदकपात्र तथा दो हाथों के अतिरिक्त अलंकार शून्यता एक ही दांत का दिखलाया जाना, तथा सांप का जनेऊ धारण करना गणेश जी की विशेषता थी। मथुरा से कुषाण कालीन मूर्तियां 3 प्राप्त हुई है (1) संकिसा से मिले द्विभुज खड़े गणेश जिनके बांये हाथ में मोदक पात्र यह है जिसपर गणेश की घूमी हुई सूंड टिकी है(2)। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में गणेश पूजा का काफी प्रचार था।

सूर्योपासना:- सूर्योपासना की महत्ता वैदिक काल से ही थी परन्तु कुषाणों के समय मे कई परिवर्तन आ गये थे। शिव विष्णु एवं शक्ति के साथ सूर्य तथा गणपति को भी स्थान मिला और पंच देवोपासना के रुप मे ये सभी उपासनाये समष्टी रुप में दृढ़मूल हो गई पूजक अपनी रुचि सेपंचायतनो में से किसी एक को चूने(3)। सूर्य की सबसे प्राचीनमूर्ति मथुरा संग्रहालय मे है(4) इसकी चरण चौकी ईरानी ढंग की है(5)। मथुरा से (6) सूर्य की अनेको प्रतिमाये प्राप्त हुई हैं। लखनऊ संग्रहालय(7) में चपटी टोपी तथा मूंछ वाले सूर्य की प्रतिमा उपलब्ध है। मथुरा संग्रहालय(8) में एक सूर्य के दाहिने हाथों में कमल की अर्द्ध विकसित कलियां है। चार घोड़ों वाले रथ पर बैठी हुई एक सूर्य प्रतिमा विवेच्य युग कीप्राप्त हुई है(9) स्पष्ट है कि सूर्योपासना का प्रचलन था।

1- मथुरा संग्रहालय संख्या 15-758, 15-792, 15· 1064
2- गेरी ऐलिस गणेश ' आक्सफोर्ड प्लेट 2अ
3- जोशी नीलकंठ पुरषोत्तम वही पृ० 168-169
3- एच०डी० सी० एस० (हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र) भंडार का ओरियन्टल रिसर्च इंसीटियूट पूना, काते पी०वी० , भाग 2 प्लेट 11 पृ० 717
4- मथुरा संग्रहालय सं० 12· 269
5- जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम वही पृ० 158
(6) मथुरा सं०सं० 56· 4272, 70· L.18, 4243, 3012, 39· 2841, 47· 3365, 55· 4016
7- लखनऊ संग्रहालय सं जे० 668, बी० 208, मथुरा सं सं० 12· 269
8- ~~लखनऊ~~
8- मथुरा संग्रहालय संख्या 12· 269
9- मथुरा संग्रहालय संख्या 15· 894, 1269, लखनऊ सं सं० बी० 208

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कनिष्क के सिक्कों पर सूर्य चन्द्र अग्नि तथा युध्द देवता के चित्रअंकित मिलते है जिससे स्पष्ट है कि विवेच्य युग में सूर्य को महत्व दिया जाता था(1)।

सप्त मातृ काओं की उपासना:- जिस समय शिव बलवान राक्षस अन्धाकासुर से युध्द कर रहे थे उस समय सभी देवताओ ने अपनी अपनी शक्तियो छोडी ये शक्तियाँ ही सप्त मातृ काओं के नाम से प्रसिध्द हुई(2)। ब्रह्मा कीब्रह्माणी, विष्णु की वैष्णवी, शिव की रुद्रानी, बराह की बराही इन्द्र की इन्द्राणी तथा यम की शक्ति चमुण्डा कहलाई। हुविष्क की एक मुद्रा के पर शिव के साथ जाना(3) तथा दूसरी पर शिव के साथ(4) उमा के दर्श होता है।कनिष्क की मुद्रा पर वह त्रिभुज है(5) तथा वासुदेव(6) की मुद्रा पर भी मूर्ति चर्तुभुज है। देवियों की महत्ता थी।

लक्ष्मी:- सभी प्रकार के वैभव को प्रदान करने वाली है। मथुरा संग्रहालय(7) में कमल लिये आर्कषण बैठनेने की स्थिति (8) सेवको के साथ(9)माता के रुप में(10) लक्ष्मी मूर्तियों का अवलोकन कर स्पष्ट हो जाता है कि विवेच्य युग में लक्ष्मी का महत्वपूर्ण स्थान था।एम मात्र मथुरा के विभिन्न स्थानो से लक्ष्मी (11) तथा गज लक्ष्मी (12) की प्रतिमाये प्राप्त हुई है जिससे विदित होता है कि विवेच्य युग में लक्ष्मी पूजन की महत्ता थी।

वसुधारा:- विवेच्य क्षेत्र में वसुधारा देवी का खूब प्रचलन था जिसका प्रमाण है मथुरा संग्रहालय (13) की प्रतिमायें। बाद में यह देवी पूर्णतः लुप्त हो गई?

1- इंडियन ऐन्टीक्यूरी - ए० जनरल आफ ओरियन्टल रिसर्च भाग 1, 1872 पृ075
2- मिश्र इन्दुमती 'प्रतिमा विज्ञान' पृ018। (3)डी०ए०के० प्लेo 8, 165
4- वही 166 (5) वही 7 134 पृ0 83
6- वही 7, 143 (7) मथुरा सं०सं० 15,878
8- मथुरा सं० सं० 14"410 (9) मथुरा सं० सं०59,4771
10- वही एक 26, 35
11- वही 50,3573,50, 3575,59,4771,45,3246,57,"4349
12- मथुरा संग्रेहालय सं० 45-4238
13- मथुरा सं० सं० 42"2943,26,4207,56"4176

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एकनशा:- वसुधारा के समान देवी एकनशा देवी कुषाण काल से ही लोक प्रिय रही जगन्नाथ की तीन मूर्तियों के बीच वाली मूर्ति आज सुभद्रा के नाम से जानी जाती है। नन्दपुत्री एकनशा यादव राजकुमारी के रुप में चिरकाल तक जीवित रही(1)।आगे चल कर यही विन्ध्यवासिनी के नाम से प्रसिद्ध हुई(2)। नन्द गाँव से मिली शिवलिंग के निचलेभागर पर बनी है। विवेच्य युग की एकनशा की मूर्तियों में तो द्विभुज देवी की प्रतिमा बनी है तथा उसके दाहिनी ओर सिंह मुख हल और मूसल धारी बलराम है एवं बायी ओर चतुर्भुज वासदेव तथा श्री कृष्ण बने है(3)।कुषाण कालीनशिला पर 7 1/2 उंचाई की देवी एकनशा की मूर्ति तथा लाल चित्तेदार छोटी सी एक मूर्ति प्राप्त हुई है। (4) (जोशी एन०पी० देवी एकनशा की कुषाण कालीन मूर्तियाँ 'बी०एम०स०यू०पी० भाग। पृ० 24-29, 1968)बादामी की गुफाओं में एक स्थान पर गजलक्ष्मी एवं एकनंशा के दोनो रुप मिलते है।मातृकायें:- इस समय मातृ सूत्र का प्रचार था अब वह लोक धर्म की देवियाँ बन गई थी। मथुरा संग्रहालय(4) में सुरक्षित मातृकाओं की अनेक मूर्तियाँ है। मातृकायें:- अबतक कुषाण कालीन 32 मूर्तिया ज्ञात है(5) उनका वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है( ) अकेली आसनस्था अथवा शिशु के साथ, एक पंक्ती में बैठी हुई माता( ) लखनउ संग्रहालय में स्वतंत्र रुप से खडी मातायें पक्षी मुखवाली मातायें(6) कुबेर के साथ तीन मातायें,(7) कीर्तिकेय के साथ व्याघ्र मुखी मातायें(8) हर्वा हुर्लन(9) की खुदाई में प्राप्त काष्ठ प्रतिमा भी व्याघ्र मुखी माता माना है(डा० वासुदेव शरण अग्रवाल ने लोक देवियो का उल्लेख किया है(10) अतः स्पष्ट है कि विवेच्य युग में मातृ पूजा का प्रचार था।

पंचमुखी या षष्ठी: विवेच्य युग में यह देवी विशेष लोक प्रिय रही देवी का शिरोभाग 5 उपदेवियो या उनके मस्तको से अंकित रहता है(11) पाँचो उपदेवियाछतरी के उपर उद्भुद होती दिखाई पडती है(12)कही छतरी के उपर तक ही रहीहै।

1- वायु पुराण (गौर प्रति)96, 212-13पृ० 78 (2)हरिवंशपुराण 4• 36पृ० 224, 4• 46 पृ० 225
3- जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम 'कुषाणकालीनप्रतिमाये बी०एम०स०यू०पी०अंक।मार्च1968पृ० 24-29
मथुरा स० स० ए० 45, 15• 912 तथा67• 529
4- मथुरा स० स० डी० 2, डी० 3, डी० 5, एफ26, एफ30, जी० 10, 11, 277, डी० 19, एफ० 29, 434
15,• 1002, 33, 2331, 15• 929, 60• 50जी०, 70• 131, 4854
5-मथुरा स०स० 29, कलकत्ता (आ० ए०स०)1, लखनउ स० 3
6- लखनउ स०स० 7• 168 (7)वही जी० 241
8)वही जी० 250 (9) 'न्यु कुषाण फाइन्स फ्राम सोंख' बी०एम०स०यू०पी० न० 3, 1969 पृ० 71-72
10- अग्रवाल वासुदेवशरण प्राचीन भारतीय लोकधर्म पृ०7, 14,
11- जोशी एन०पी० 'देवी षष्ठिमुखी अस्टि' बी०एम०स०यू०पी० भाग 3, 1969पृ० 39-40,
जोशी एन०पी० देवी एकनशा कुषाण कालीन बी०एम०स०यू०पी० भाग। 1968पृ० 24-29
12- मथुरा स०स० एफ० 54, 3783, लखनउ स०स० जी० 64

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

षष्ठीः- यह देवी विवेच्य युग में काफी लोक प्रिय थी मथुरा कला में आठ मूर्तियां प्राप्त है(1)।

दुर्गाः- प्रारम्भ काल से ही दुर्गा का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।मथुरा से दुर्गा देवी की अनेको मूर्तियां प्राप्त हुई है।इनको पूजा पद्धति में प्रचलित बलिदान।मधुमाँस का अर्पण आदि वाले शिव सूर्य विष्णु की पूजा से भिन्न है ।स्पष्ट है कि विवेच्य युग में दुर्गा पूजा का प्रचलन था।

महिष मर्दनीः- महिषासुर का मर्दन करने वाली दुर्गा मूर्तियो की उपलब्धी कुषाणकाल से होने लगी है(2)। सिंह सवारी है।।4 हाथो के अलावा दुर्गा देवी के 6 हाँथो का भी अंकन हुआ है( )। जिसको कलकत्ता संग्रहालय में अवलोकित किया जा सकता है(3)।ह्वर्ट हर्टल को(4) सोंख से खुदाई में चार हाथ तथा त्रिसूल वाली प्रतिमा भी प्राप्त हुई है। मथुरा से मिली मूर्तियों से उपरी हाथो में त्रिसूल और खड्ग मिलते है(5)कुमार स्वामी द्वारा प्रकाशित एक माथुरी मूर्ति के उपरी दो हांथो में खड्ग और त्रिसूल तथा सामान्य में दाहिना अभय मुद्रा में तथा वांक कटि विन्यस्त है(6)।एक महाकाल? अंकित देवी तलवार तथा ढाल लिये है(7)।[illegible] संग्रहालय में निहित एक कुषाण कालीन मृतफलक पर चतुर्भुज महिष मर्दिनी बनी है।जिसके पैरो के पास सिंह है तथा नीचे तीन वहिमुख दीपक बनी है। स्पष्ट है कि विवेच्य क्षेत्र में महिष मर्दिनी पूजा का प्रचार था/पार्वती एवं अन्य देवियाँ

पार्वती अचल सौभाग्य प्रदान करने वाली देवी है। शिव के साथ पार्वती की मूर्ति तो प्राप्त है परन्तु स्वतंत्र रूप से तपस्या में वनो पारवती जी की एक ही प्रतिमा उपलब्ध है जो मथुरा संग्रहालय मे है(8)।कानपुर जिले के मूसानगर से विवेच्ययुग की एक मुक्ता देवी की मूर्ति भी उपलब्ध हुई है(9)।गंगा यमुना को देवी के रूप में पूजित माना गया इनकी मूर्तियां मथुरा संग्रहालय में है(10) मथुरा के कंकाली टीले से सरस्वती प्रतिमा भी प्राप्त हुई है(फलक 233 चित्र संख्या 74)।?कपिल से दोनो हाथों में पशु को पकड़े तथा चतुर्भुज दुर्गा की मूर्ति प्राप्त हुई है(11)(12)

ब्रह्माः- सृष्टि ,लय और स्थिति इन तीन प्रमुख कार्यों में प्रथम का

1- ~~मथुरा सं० सं० 33~~ जोशी एन०पी० 'प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ०।32
1-डी- मथुरा सं०सं० 32• 2947, 65• 1, 49• 3147, 6•8, 72• 26, 70• 364, 70• 362
2- मथुरा सं०सं० 33• 2317, 37 215, 15• 582, 724
3- कलकत्ता सं०सं० आर०एम०सी०एस० 24238
4- ह्वर्ट हर्टल एसकवेशन आफ सोंख वी०एम०एस०यू०पी० भाग3, 1969 पृ०71।
5- मथुरा सं० सं० 33, 2317, 65• 1 (6) कुमार स्वामी ए०के० 'कटेलाग आफ इन्डियन कलेक्शन पार्ट।, प्लेट3 नं० 21, 1709 पृ०46
7- मथुरा सं०सं० 37• 2715
8- वही 15• 879
9- सिंह आर०सी० 'एनटीक्यूटीज प्राम मूसानगर वी०एम०एस०यू०पी० भाग5,6 1970 पृ०89-94
10- मथुरा सं०सं० 56• 4275, 73• 14
11- सूर्य वंशी भगवान सिंह 'भारत में कपिल पृ० 82
12- लखनऊ सं० सं० जे० 24

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तरदायित्व वंह्मा के कंधो पर है । यह रजोगुण के प्रतीक है। पहले व्रह्मा विष्णु महेश तीनो का महत्व थां परन्तु धीरे धीरे व्रह्मा का स्थान निम्नतम होता गया। विवेच्य युग की मथुरा संग्रहालय(1) मे है इनके चारो मुखो से वेद चतुष्टम का प्राकट्य परिकल्पित है। हंस/इनका वाहन है। पितामहके रुप में व्रह्मा का विवेच्य युग में हतत्व परलक्षित होता है।

इन्द्रः- वेदिक संध में इन्द्र का स्थान बहुत उंचा था पोणरिक काल में इन्द्र देवो का अधिपति तथां स्वर्गलोका का स्वामी थां। विवेच्य युग में इन्द्र की प्रतिमायें ज्ञात नही है परन्तु महामाया की कोख से जन्म, संकीसा में बुध्द का स्वर्ग से अवतरण, धर्म चक्र प्रवर्तन के लिये बुध्द की प्रतिमा आदि वोध्द कथाओ का अंकित करने वाल दृश्यां सा इन्द्र के प्रचुर दर्शन (2) होत है। अग्नि, बरुण तथा यमः- विवेच्य युगमें अग्नि पूजा की महत्ता थी इसका प्रमाण ह मथुरा(3)तथां लखनउ(4) संग्रहालय मे विवेच्य क्षेत्र की विभिन्न स्थानो से प्राप्त मूर्तियां। यहा अग्नि को विशुध्द मानव रुप में ~~तुन्दिल~~ वांहमण के समान अंकित किया गया है मस्तक पर जटायें बंधी है तथां जनेऊ है। वरुण स्वं यम का सामाजिक क्षेत्र में महत्व थां। कुबेर धन का स्वामी था उसके हाथ में मद्य पात्र(5) तथां संगीत का रस माधुर्य का आनन्द(6) लेते हुये विवेच्य युग में कुबेर की मुद्रायें उपलब्ध होती है। मथुरा(7) से कुबेर की अनेको प्रतिमाये उपलब्धहई है।

यक्ष भक्षीः- मथुरा से यक्षकी अनेको प्रतिमाये उपलब्ध हई है(8) इनका शताब्दियों

1- मथुरा सं0 सं0 56,4275,73-14
2- जोशी नीलकंठ 'पुरुषोत्तम' प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान' पृ0 176
3-मथुरा सं0सं0 40,2880,40,2883,44-3170
4-लखनऊ सं0 सं0 जे0 123 (5) मथुरा सं0 सं0 सी 25, 26, 31
6- मथुरा सं0 सं0 18-1538
7- मथुरा सं0सं0 61,5371,72-16,44-3145,58,4569,54-3814
8- मथुरा सं0 सं0- 67-6,72-7,56,4012,70-4,42-295,60,4860,56,4248, 58-4549,58,4669,54,3822,72,19,44-3104,44,4136

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से पर म्परागत पूजन हो रहा है। एक यक्ष प्रतिमा अहिच्छत्रा से प्राप्तहुई है जो कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है(1)। काशी में यक्ष पुजाका विशेष प्रचार था वाराणसी के वरुण, वीर आ बीर इसी यक्ष पूजा के अवशेष है(2)। यक्षो तथा नागो की अनेक मूर्तियां वाराणसी से प्राप्तहुई है। राजघाट की खुदाई से मिट्टी की मूर्तियां प्राप्तहुई है(3)। यक्षी प्रतिमा भी मथुरा संग्रहालय में है(4)

विवेच्य युगमें नाग नागी गरुण(5) का महत्व था मथुरा संग्रहालय में विवेच्य युग की अनेको प्रतिमाये प्राप्त हुई है। साप कुडंली मारे लपलपाती जीभ वाले(6) नाग दिखाये है सोरव की खुदाई में(7) नागमूर्ति प्राप्त हुई है जिसके पुरुषाकार नाग के मस्तक के पीछे नाग फणन दिखाकर उसका समूचा मुख ही नाग दिखाया है। विद्याधर की मूर्ति (8)प्राप्त हुई है जिसे विदित होता है कि विवेच्य युग में इनका महत्व थां।

बोध्द धर्मः- गोतम बुध्द ने उत्तर प्रदेश के अंक में ही अपने धर्म का प्रचार किया वास्तुकला, चित्रकला, तथा मूर्तिकला के माध्यम से वोध्द धर्म का विकास भारत में ही नही अपितु संसार के कोने कोने में हुआ अशोक के उपरान्त कनिष्क ने वोध्द धर्म के संरक्षण प्रदान कर उसके रुप को सजाया सवांरा। उसने बोध्द अस्थियों को विशाल स्तुपो में रखवाया। नागार्जुन, आर्यदेव, असग वसुवक्र आदि विख्यात दार्शनिको ने वोध्द दर्शन को इस रुप में प्रतिवादन किया कि वह तत्कालीन बुध्दिवादियो बड़ा रुचि कर और ग्राह प्रतीत हुआ है।

1- वाजपेयी के०डी० युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ० 35
2- पाण्डेय उमा ' वाराणसी पृ० 56, अग्रवाल वासुदेव शरण' काशी का इतिहास भूमिका107
3- पाण्डेय उमा वही पृ० 70
4- मथुरा सं० सं० 40·2887, 66·6, 61·5355, 4243, 3005
5- मथुरा सं०सं० 40, 2886, 63·547., 4363, 67, 443, 12, 67·20468·1361·6, 40, 2875, 67-29, 54, 3663, 53, 3668, 61, 5399, 41, 2910, 72·13, 41·2915
6- जोशी नीलकंठ पी० यूस आफ आसतपियस सिम्बाइल इन कुषाण आर्ट एट मथुरा, डा० निराशी फिलीसिटिऐशन एम नागपुर 1965 पृ० 311-17
7- क्वर्ट हर्बर्ल कुषाण नाग द्राविल ऐट लेब बुलेटिन आफ म्युजियम अ आर्कलाजी इन यू०पी० सं० 11-12, 1973 पृ० 1-6
8- मथुरा सं०सं० 58·4479, 60, 4846, 57·4375

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बोध्द धर्म की जटिलता एवं समस्याओं का समाधान करने हेतु कनिष्क ने बोध्द संगीति का (काश्मीर (कुंडलवन) का आयोजन किया इस अधिवेशन के परिणाम स्वरुप विशिष्ट साहित्यक , रचनाओं का प्रणयन हुआ बडे बडे भाष्य सम्पादित हुये । जिनको रक्त ताम्र की चादरो पर खुदवा कर एक स्तूप से सुरक्षित किया गया (1)लोक प्रवृत्ति धर्माचार्यों का मार्ग दर्शन तथा शासकीय आज्ञा इन तीनो के संयोग से मथुरा में बुध्द प्रतिमाओं का विशेष निर्माण हुआ (2) ये प्रतिमाये मथुरा संग्रहालय(3)में अवलोकित है। अहिच्छत्रा से दो बुध्द प्रतिमाये प्राप्त हुई है ये दोनो लाल बलुये पत्थर की है(4) । मथुरा से ही बुध्द जी बन से सम्बन्धित असख्ये वोध्द मूर्तियां प्राप्त हुई है(5)। कुशीनगर से भुमि स्पर्श मुद्रा में एक बुध्द प्रतिमा प्राप्त हुई है(6) कनिष्क ने मथुरा मे वोध्द रेलिंग का निर्माण भी कराया था(7)।सारनाथ से(8) भी वोध्द प्रतिमा विवेच्य युग की प्राप्त हुई है। जिससे विदित होता है कि कनिष्क ने वोध्द धर्म के प्रचारार्थ बुध्द मूर्तियों का निर्माण प्रचुर संख्या में कराया । विवेच्य काल की एक वोधिसत्व की मूर्ति श्रवस्ती (सहटमहट) से भी प्राप्त हुई है(9) निरन्तर ध्यान मग्न रहने के कारण ध्यानी बुध्द कोई सांसारिक व्यापार नही करते उस कार्य का सम्पादन करने के लिये प्रत्येक के एक वोधिसत्व की कल्पना की गई जिसका प्रमाण है---

1- पाण्डेय राजबली प्राचीन भारत पृ0 166 (2)जोशी नीलकंठ वही पृ0 196 गुलाव राय वही पृ0 235

3- मथुरा सं0 सं0 73- 42,71- 108,39- 5866,57,4238,57,4238,39,3266,44, 3166, 52,3613,53,3650,53- 3651,57,4249,58,4554,59- 4554, 59- 4836,60,4855,73- 20, 42,2919,46,3257,61- 5329,81,5329

4- वाजपेयी के0डी0 तथा एम विघालंकार अहिच्छत्रा पृ0 50,

5- शर्मा आर0सी0 एवं विघाधर मिश्रा कुषाण ऐक्यूलिटेशन इन मथुरा संग्रहालय ड्युरिंग द लास्ट डिकेट 4 बी0एम0एस0यू0पी0 भाग 4, 1969, पृ0 52, श्रीवास्तव विरेन्द्र मथुरा की नवीन अभिलिखित बुध्द मूर्ति बी0एम0एस0यू0पी0 भाग 4, 1969 पृ0 19

6- नागर मदन मोहन ' कुशीनगर' पृ0 8

7- कनिंघम आर्कलाजी सर्वे आफ इंडिया भाग1, 1862, पृ0 231

8- लखनऊ सं0 सं0 ओ0 71

9- कनिंघम - आर्कलाजी सर्वे आफ इंडिया भाग 1, 1862, पृ0 330

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वेदिका स्तम्भ पर मैत्रेय की एक सुन्दर प्रतिमा(1) अवलोकित, लोकनाथ लोकेश्वर की बौध्दो में बड़ी मान्यता थी जिसकी प्रतिमा सारनाथ संग्रहालय(2) तथा लखनऊ संग्रहालय(3) में अवलोकित की जा सकती है। बोधिसत्व की मान्यता की पुष्टि में मथुरा से प्राप्त अनेक मूर्तियों से होती है(4)। मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित(5) विवेच्य काल के बौध्द स्तूपों का अवलोकन कर इस तथ्य की पुष्टि होती है कनिष्क के समय में बौध्द धर्म का काफी प्रचार हुआ मथुरा (6) के उत्खनन कार्य में अनेको बौध्द मूर्तियाँ उपलब्ध हुई है।कोशाम्बी से बोधिसत्व की मूर्ति की मूर्ति भी प्राप्त हुई है जिसे भिक्षुवत्त ने प्रतिष्टित कराया था(7)। इस समय न केवल कुषाण राजाओ ने बौध्द धर्म को राजाश्रय प्रदान किया बल्कि सातवाहन और इक्ष्वाकु राज्य तथा पश्चिमी राज्य भी बौध्द धर्म के महान पोषक थे।अमरावती तथा नागार्जुन कोण्डा के अभिलेखो से यह प्रगट है कि बौध्द धर्म का काफी प्रचार था। विदेशो में भी बौध्द धर्म का काफी प्रचार हुआ ।

जैनधर्म:- केवल बौध्द धर्म का ही नहीं अपितु इस युग में जैन धर्म का भी काफी प्रचार हुआ। सभी धर्मो के प्रतिसहिष्णुता की नीति एवं समन्वय नीति विवेच्य युग की विशेषता थी ।

1- लखनऊ सं० सं० बी० 82,208 (2)514 (3)जी० 224,जी० 219

4- मथुरा सं०सं० 49,3501,49•3507,47,3371

5- वही 67, 149, 60,5057,67,153

6- मथुरा सं० स० 7342,71•105,39•2886,57,4238,57,4239,60,4855, 73•20,422919,61,5379,39, 2366,44, 6166,57,3366,52,3613, 53,3650, 53,5651,55,3876,57,4249,56,4240,56,4241,56,4247 शर्मा रमेशचन्द्र ' मथुरा कला शैली की अनूठी देन, वी०स०ए०स०यू०पी० अंक 11-12 1973 पृ० 21-29

7- पाण्डेय उमा वाराणसी पृ० 70

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मथुरा मे विभिन्न स्थानों से(1) जैन मूर्तियां प्राप्त हुई है। जैन तीर्थकारोंने भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया(2)। लखनऊ संग्रहालय (3) में विवेच्य युग के सुन्दर आयाग पट्ट उपलब्ध है। विवेच्य क्षेत्र के अनेको स्थान परबकरोके मुख वाला नेगमेश या हरिनेश में शिव की पूजा का ढ़ंग में काफी प्रचार था(4) रेवती ही नेगमेष की शक्ति है। इसका मुख भी बकरे का होता है(5) जैन कला में सरस्वती(6) चक्रेश्वरी(7), अम्बिका(8) पद्मावती(9), क्षेत्रपाल(10)गोमभ्रदेश्वर(11), ज्वालिका(12) का महत्वपूर्ण स्थान है, सभी वर्गों के और श्रेणियो के श्रद्धालु उपासक जैन धर्म के लिये दान दिया करते थे। इसी प्रकार से अनेको मूर्तियों आयागपट, स्तूपों का निर्माण हुआ। स्मिथ(13) ने लिखा है संध के विविध अंगो गुणा, कुलो तथा शाखाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। कम्पिल तेरहवे, तीर्थकर विमलनाथ की शुभ धटनाओ से गौरांवित था अतः विवेच्य काल में यह प्रमुख जैन तीर्थ था (14)तथा सातवे तीर्थकर का मथुरा(15) से धनिष्ट सम्बन्ध रहा है अतः यह जैन कला धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है।स्पष्ट है कि विवेच्य युग में जैनधर्म का भी प्रचार था।

1- मथुरा संग्रहालय संख्या 48,3426,61·5361,61·5333,56·3213,51·3597, पूँछ 45,3212,44,3169,44,3135

2- मथुरा संग्रहालय संख्या 67,170,5265,45,3208,46,3223,48·3385,47·3333 54·3769,60·4845,45,3214

3- लखनऊ सं० सं० बी० 248,250,252,253 (4)वही जे 626,मथुरा संग्रहालय34, 2547,15·1115

5-मथुरा सं०सं० डी०4,34·2502,लखनऊ सं०सं०जे 47, 2-4

6- लखनऊ सं० सं० जे० 24,

7- शाह यू०पी०,इकनोग्राफी आफ चक्रेश्वरी' जनरल आफ ओरियन्टल इंस्टीट्यूट बीस सं 3, मार्च 1971, पृ० 280-313

8) लखनऊ सं०सं० जी- 312, (9) वही जी 316

10- मथुरा सं०सं० 60,486

11- घोष अमलानन्द जैन आर्ट ऐंड आर्चटिकटर भाग 1, 1974 प्लेट 11बी०

12- लखनऊ सं० सं० जे333 (13) स्मिथ जैन स्तूप पृ० 6

14- लाहा विमल चन्द्र 'प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल पृ० 156, जैन ज्योती प्रसाद 'उत्तर प्रदेश और जैनवली पृ० 41

15- अगर चन्द्र नाहटा ' अभिनन्दन ग्रन्थ' 1977, प्रथम संस्करण पृ० 25

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोक धर्म तथा दर्शन

विवेच्य क्षेत्र में वैदिक उद्भावनायें(1) स्थापित हुई थी उन्हीं का प्रतिपादन विभिन्न सम्प्रदाय वादियों ने अपने ढंग से किया। भारतीय दर्शन का मूल उपनिषदों(2) में प्राप्त होता है। तत्कालीन दार्शनिक विचारों को परवर्ती काल में सूत्र रूप में प्रतिपादन किया गया उन्हीं सूत्रों की परवर्ती कालों में भाष्य उपस्थित किये गये। सूत्रों की व्याख्या और भाष्य के अनुसार भारतीय दर्शन का विकास 6 स्वतंत्र धाराओं में हुआ इसके व्यवस्थाकारों के रूप में कणादि, गौतम, अक्षपाद, कपिल, पतंजली, जैमिनी आदि उल्लेखनीय है। ये दर्शन न्याय तथा वैशेषिक, सांख्य योग, पूर्व मीमांसा, पूर्व मीमांसा, उत्तरमीमांसा जैन तथा बौध्द दर्शन है।

न्याय और वैशेषिक3:- दर्शन एक दूसरे से स्वतंत्र चिन्तन के परिणाम थे अथवा उनका प्रादुर्भाव एक साथ हुआ दोनों में इतना अधिक साम्य है कि परम्परा में उन्हें भिन्न नहीं माना जा सकता। ये दोनों दर्शन आत्मा ईश्वर ब्रह्म के अस्तित्व में विश्वास करते है उनकी दृष्टि में संसार पृथ्वी जलवायु अग्नि का समूह ही आकाश और काल दोनों विभाज्य नहीं है। उनका विभाजन विचारों में किया जा सकता है। आत्मा तथा ईश्वर की प्रमुख सत्ता है। ईश्वर के द्वारा ही संसार की वस्तुयें रची गई है न्याय दर्शन के प्रतिपादक वात्स्यायन मुनि माने गये है उन्होंने बौध्द दार्शनिक नागार्जुन के विचारों का खंडन किया है।

सांख्य और योग दर्शन :- दोनों पूरक है सांख्य बौध्दिक दर्शन है योग मानसिक है। सांख्य दर्शन के अनुसार जीव तीन प्रकार के दुखों से त्रस्त है पहले प्रकार का दुख मनुष्य के अपने शारीरिक एवं मानसिक विकास से उत्पन्न है रोग तथा कष्ट ऐसे ही विकास है दूसरे प्रकार का दुख बुराई है यह अन्य मनुष्यों तथा पशुओं द्वारा होता है। तीसरे प्रकार की दुख प्राकृतिक तत्वों आग वायु और जल से प्राप्त होता है जैसे तूफान एवं आग से सम्पत्ति का विनाश। संसार की रचना मूल प्रवृत्ति से हुई उसके 3 गुण है।

1- भारतीय संस्कृति का विकास पृ0 69
2- वाचस्पति गैरोला भारतीय दर्शन पृ0 190 से 220
3- विन्टर नित्स प्राचीन भारतीय साहित्य पृ0 195

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सत्व, रजस और तमस ।ये गुण हर वस्तु मनुष्य और पशु ,जीव, निर्जीव तथा मनुष्य धर्म में निहित है प्रकृति के अतिरिक्त असंख्य आत्माये जिन्हे जीव कहा गया है संसार बुध्दि आत्मचेतना, मस्तिष्क ध्यान पंच कर्मेन्द्रियाँ, पंच ज्ञानेन्द्रिया तथा पंच तत्व आदि के रूप में प्रकृति और पुरुष सहित पच्चीस तत्व है।

पूर्व मीमांसा तथा उत्तर मीमांसाः- की न्याय, वैशेषिक योग संख्या आदि दर्शनो की विचारधारा से समानता नही है इसकी एकता अथवा समानता उनके मूल सिध्दांत मे ही है। परवर्ती काल में मीमांसा दर्शन उत्तर और पूर्व मीमांसा के रुप में विभक्त हो गया। दोनो दर्शनो ने वैदिक साहित्य ब्राह्मण और उपनिषद की व्याख्या उपस्थिति करने का प्रयास किया उन्हों ने ज्ञान साधान के रुप में वेद को समस्त दर्शनों का आधार माना गया वे दर्शन ईश्वर की आवश्यकता को अस्वीकार करतेहुये धर्म कर्म पर जोर देते है।

वैष्णव दर्शनः ज्ञान की अपेक्षा मोक्ष साधन में भक्ति को ही प्रधानता दी गई। भगवान का साकार, सगुण, सविशेष भाव ही मान्य है। भगवान अनन्त कल्याण निकेतन है तथा भक्ति से परवश होकर विग्रह धारण करने वाले है। नारायण ही वैष्णव भक्ति के मूल स्त्रोत है ।श्री वैष्णव सम्प्रदाय, रुद्र सम्प्रदाय, ब्रह्म सम्प्रदाय तथा सनक सम्प्रदाय ये चार वैष्णव धर्म के सम्प्रदाय है(1)। नारायण की अनुग्रह शक्ति का उदय भक्तो की दीन दशा के निरीक्षण से अपने आप होता है। विवेच्य युग में वैष्णव धर्म मेंा का काफी प्रचार था।

पंचरात्रि की प्राचीनता की —की दृष्टि से वैष्णव आगमों का प्रतिनिधी है। महाभारत(2) में
पंचरात्र के सिध्दांतो का उल्लेख। पंचरात्र का सम्बन्ध वेद की एकायन शाखा से है(3) नारायण ऋषी इस मत के प्रवर्तक थे इसमें वैदिकतत्व को लेकर श्री वैष्णव आचार्यो ने सूक्ष्ममीमांसा की है। वासुदेव से सकर्षण(जीव) और संकर्षण से प्रद्युम्न(मन) की और प्रद्युम्न से अनिरुद्र (अहंकार की उत्पत्ति हुई है ।

शैव दर्शनः- वैदिक काल से महत्वपूर्ण दर्शन रहा है। यजुर्वेद तैत्तिरीय(4) आख्यान में समस्त जगत को रुद्ररुप बताया है महाभारत में शिव का उल्लेख है वामन पुराण में

1- उपाध्याय बलदेव ' भारतीय दर्शन पृ0 8 459
2- शान्ती पर्व 335 (3) ईश्वर संहिता 1/43
4- 10/18

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शैवों के चार विभिन्न सम्प्रदाय बताये है शैव पाशुवत, कालदमन, तथा कापालिका। इन धार्मिक मतो के मूल ग्रन्थो को शैवागम नाम से पुकारते है। शैवतंत्र की वैदिकता के विषय में प्राचीन ग्रन्थों का विवेचन है।

पाशुपत मतः के संस्थापक लकुलीश है इविष्क के सिक्को पर इनकी आकृति मिलती है। पाशुपतो का सम्बन्ध न्याय वैशेषिक सिध्दांत से घनिष्ट है। मधवाचार्य ने सर्व दर्शन संग्रह में लकुलीश पाशुपत नाथ नाम से इसी मत के आध्यात्मिक सिध्दान्तो का वर्णन किया है। शाक्त दर्शन के तंत्रो की संख्या बहुत अधिक है। शाक्त पूजा पध्दति के नितान्त गोपनीय तथा गुरु मुखैकगम्य होने के कारण शाक्तों की यह धारणा अनेकांश में सत्य है कि शाक्त तंत्रों के प्रकाशित होने पर अनर्थहीन की अधिक सम्भावना है इसलिये शाक्त तंत्रों का विवेच्य युग में प्रकाशन कम हुआ । बौध्द दर्शन का अपना अलग ही महत्व था(3) विवेच्य युग में बोध्द दर्शन को विशेष प्रोत्साहन मिला विवेच्य युग में बोध्द धर्म के प्रचारार्थ बोध्द संगीति का आयोजन काश्मीर में किया गया (1) बोध्द दर्शन को संस्कृत में सूत्र-बद्ध किया गया । कनिष्क ने बोध्द धर्म के प्रचारार्थ धर्म यात्रायें, स्तूप , चैत्य विहारों तथा बडी संख्या में मूर्तियो का निर्माण कराया (2)

विवेच्य युग में जैन दर्शन का भी कम महत्वपूर्ण स्थान नही है। वस्तु स्थिति पर विचार करने से प्रत्येक ज्ञान का सापेक्ष होना न्याय संगत है। जीव चैतन्यमय है ज्ञान उसका साक्षात लक्षण है पर कर्मो के आवरण के कारण उसका शुध्द चैतन्य रुप हमारी दृष्टि से सदा ओझल रहता है पर सम्यक चरित्र के सेवन से जीव अपने शुध्द रुप को फिर से पा सकता है। जैन सिध्दान्तो की संख्या 45 है जिनमें 11अंग, 12 उपंग, 10प्रवीण, 6 सूत्र, 4 मूल ग्रन्थ है। इन आगमों में जीव पुद्गल आदि दार्शनिक सिध्दांतो का विवेचन इन आगम ग्रन्थो में मिलता है।

उपरोक्त तथ्यों का अवलोकन कर ज्ञात होता है कि विवेच्य युग में समन्वय विचारधारा की प्रवृति विशेष रुप से परिलक्षित होती है । विवेच्य क्षेत्र में विभिन्न संस्कृतियो, भावनाओं , एवं धर्मो का समन्वय इस प्रकार हुआ कि भारतीय सस्कृति ने खुले हृदय से अंक में समेट कर समुन्द्र के समान मन्थर गति से प्रवाहित

1- गैरोला वाचस्पति ' भारतीय दर्शन ' पृ0 131

2- गैरोला 'भारतीय संस्कृति और कला ' पृ0 150 से 160

3- उपाध्याय भरत सिंह ' बौध्द दर्शन तथा भारतीय दर्शन ' पृ0 105 से 120

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होने लगी। अपने राज्याभिषेक वर्ष में कनिष्क ने 'शक' सम्वत चलाया जो आज भी प्रचलित है।

सहिष्णुता की प्रवृति ने सभी संस्कृतियो को यथा योग्य सम्मान एवं स्वतंत्रता दी। यदि एक ओर वोध्द धर्म को राजधर्म बनाया गया तथा अनेक वोध्द स्तूपों, मूर्तिया तथा मठों का निर्माण हुआ वहीं दूसरी तरफ मथुरा कम्पिल4 अहिच्छत्रा। आदि विभिन्न स्थानों पर जैन स्तूपों आयाग पटों तथा तीर्थंकारो की प्रतिमाओं का निर्माण हुआ। शिव, पारवती, दुर्गा, विष्णु आदि हिन्दू देवी देवताओं का निर्माण प्रचुर मात्रा में हुआ मथुरा कला शैली में ढाली गयी मूर्तिया कलात्मक, सौन्दर्यात्मक तथा भावों की सजीवता लिये हुये है। कनिष्क तथा हुविष्क के सिक्कों (1) पर शिव चिन्हों को अंकित युनानी लिपि में कराये गये। वासुदेव के सिक्को पर नंदी, वैल, शिव की मूर्ति मिलती है(2)। पौराणिक धर्म का प्रचार विवेच्य युग में मिलता है(3)।भारतीय संस्कृति के विकास में महत्व योगदान इन विदेशी शासको से मिला तथा ऐसे रंगमंच का निर्माणा विवेच्य युग में हुआ जो भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर स्वर्ण युग के नाम से अंकित है।

---

15 आ0पी0 व्हाईटहेड ' केटालाक आफ कायंस इन पंजाब म्युजियम लाहौर आक्सफोर्ड 1914 पृ0 186-87

2- वही पृ0 208-11

3- राजेन्द्र कुमार ' काव्य साहित्य' पृ0 57, गुलाबराय 'भारतीय संस्कृति पृ0 233

4- वाजपेयी के0डी0 उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 32

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्तकाल की सामाजिक तथा धार्मिक अवस्था

अध्याय -- 8

गुप्त काल का उदय भारतीय इतिहास के रंग मंच पर जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप मे हुआ जिसके प्रादुर्भाव से एक नवीन संस्कृति का आविर्भाव हुआ । कनिष्क अथवा कुषाण युग के उपरान्त गुप्त काल के प्रादुर्भाव से छोटी छोटी शक्तियों का ह्रास हो गया तथा एक छत्र साम्राज्य की स्थापना हुई।

सामाजिक सरचंनाः- हिन्दू धर्म के उत्थान के कारण चारो वर्गों की पृथकता और गहरी हो गई थी । वैदिक युग में जिस वर्ण व्यवस्था की नीव पड़ी वह इतनी गहरी थी कि विदेशी आक्रमणों तथा जैन तथा बौध्द धर्म के काल में अनेक झंझावट आये परन्तु जनजीवन में इतनी गहरी जड़े जमी हुई थी कि उसकी नीव हिल भी न सकी। कालिदास(1) ने चारो वर्गों का उल्लेख किया है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। व्याध, चंडाल तथा मछली मारने वाले वर्ग पाचवें वर्ग का उल्लेख शकुन्तला (2) में मिलता है। यधपि विदेशी जातियां भारतीय संस्कृति के रंग में डूब गई थी परन्तु उन्होने अपना अलग अस्तित्व बना लिया था(3)। विवेच्य युग में जाति बन्धन विदेशियों के कारण जटिल नही थे (4)।

ब्राह्मणः- ब्राह्मण तीनो वर्गों में श्रेष्ठ थे । ब्राह्मणों का कर्तव्य अध्ययन, अध्यापन भजन, दान तथा प्रतिगृह था(5) व्यवस्थाकारो द्वारा निर्धारित कर्म से ब्राह्मण यदि अपनी जीविका नही चला पाता तो वह क्षत्रिय कर्म भी कर सकता था(6) उसको दंड एवं कर से मुक्त कर दिया जाता था। उनके प्रति साधारण जनता की श्रध्दा भी अपरिमेय थी उन्हे स्मृतियाँ महापातक करने तथा, प्राण दंड का भागी होने पर भी केवल निरवासन के दंड का विधान करती है। शूद्रक के मच्छकटिक(7) में ब्राह्मण को चारुदत्त को हत्यारा सिध्द कर दिया जाने पर भी उसे ब्राह्मण होने के कारण न्यायाधीश प्राणदंड से मुक्त कर देता है। दशकुमार चरित्र में ब्राह्मण मंत्री राजद्रोही होने पर भी प्राण दंड की वजाय,

---

1- कालिदास रघुवंश 18/12, वात्स भाग । पृ 168
2- शकुन्तला पृ 56, 183
3- पाण्डेय राजबली 'प्राचीन भारत' पृ 279
4- गुप्त परमेश्वरी लाल ' गुप्त साम्राज्य ' पृ 413
5- मनुस्मृति 10/ 75 'कालिदास ' वासिया ' । पृ 168 , वाण दृष्टि चरित्र पृ 18
6- मनु स्मृति 10 /81
7- अंक 9

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्धाकार दिया जाता था। ब्राह्मण दस्यु की बस्ती विन्ध्याचल के बनो में बस गई थी (1) फिर समाज में ब्राह्मणो का महत्वपूर्ण स्थान था।

क्षत्रिय :- क्षत्रिय पुत्र धर्नुविद्या की शिक्षा के उपरान्त (2) अंजलीवद (3) हाथी के मध्य(4)क्षत्रिय चिन्ह धनुष को रखकर बड़ो के अभिवादन करने का विधान मिलता है। क्षत्रियों का प्रमुख कर्तव्य अध्ययन, भजन तथा प्राणियो की सुरक्षा थी यह प्रायः सैनिक तथा शासक होते थे।

वैश्य:- वर्ण व्यवस्था का तीसरा वर्ण वैश्यों का था। इनका कर्तव्य अध्ययन, भजन, दान, कृषि और वाणिज्य था। कालिदास(5) ने वैश्यो के श्रेष्टी, सार्थवाह, वाणिज्य आदि शब्दों का प्रयोग किया है। किसान, सुनार, तेली, धुनकर, व्यापारी आदि वर्ग वैश्यों मे सम्मिलित थे। यह वर्ग भी प्रतिष्ठित वर्ग था देश की आर्थिक बागडोर इन्ही के अधिकार में थी। न्याय सभा का सदस्य भी वैश्य वर्ग होता था।

शूद्र :- ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्यों का निम्नतम स्थान था शूद्र वर्ग का कर्तव्य अन्य वर्णों की सेवा, वार्ता शिल्प कर्म आदि था। इनको पंच महायज्ञ करने की स्वतंत्रता थी (6) सूर्योदय से पहले तथा बाद मेंनगर में नही जाते थे। पशु मारकर मांस बेचने वाले, किछा उठाने वाले, प्राण दंड देने वाले नगर के बाहर ही रहते थे (7)। कादम्बरी(8) चंडाल, कन्या के वांस बनाने तथा मुद्रा राक्षस(9) में दो चंडालो की प्राण दंड देने का उल्लेख मिलता है। हेनसांग (10) के अनुसार चारो वर्ण अपने अपने वर्णों में विवाह करते। चारो वर्ण के मुहल्लो का उल्लेख वराहमिहिर ने किया। कालिदास के रघुवंश (11) से विदित होता है कि राजा स्वयं चारो वर्णों तथा आश्रमो का रक्षक है। शकुन्तला(12) में उल्लेख है कि चारो वर्णों को अपना अपना धर्म पालन करने मेंसहायता प्रदान करे।

1- उपाध्याय भगवत शरण " गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 203
2- कालिदास विक्रम0 पृ0 1 [illegible] वंसि भाग । पृ0 151 (3) कालिदास "रघुवंश" 1/64
4- कालिदास विक्रम पृ0 117
5- कालिदास विक्रम0 पृ0 13, शकुन्तला पृ0 219, वंशि भाग । पृ0 147
6- विष्णु स्मृति 5/9 (7) लीव लाइफ आफ हेनसांग(वृतांत)1/147, अंक 10, अंक7
8- अंक 10 (9) अंक 7
10-वृतांत 1/168 (11) 53 -70-91
12- 5/19, 14/67, 3/23
13- पृ0 162

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह स्वयं भी वर्णों के नियमों का उल्लंघन नहीं करता (1)। राष्ट्र परिवारों में यह अतिक्रमण प्रायः साधारण आचरण हो गया था। अनेक वर्ण एक दूसरे के पेशे को करने लगे थे। परशुराम के लिये कहा गया है कि ब्राह्मण पिता के अंश रूप जनेऊ तथा क्षत्रिय माता का अंश रूप धनुष धारण किये हुये थे (2)। ब्राह्मण भी हल चला सकता था(3) हेनसांग(4) ने सूअर, मछली मारने वालों का शहर के बाहर रहने का उल्लेख किया है। जाति व्यवस्था पूर्ववत थी (5)। ब्राह्मण पांचवी शती के अभिलेख से स्पष्ट है कि दो कायस्थ व्यापारी उपरी गंगा घाटी पर स्थिति शहन में रह रहे थे (6)। हेनसांग ने विवेच्य क्षेत्र के सामाजिक स्तर को ऊंचा बताया है(7) अनेक मिश्रित वर्ण थे (9) विवेच्य युग में चांडाल दिन के उजाले में नगर में प्रवेश नहीं कर सकते थे तथा शहर के बाहर भी विशेष चिन्ह से युक्त रहते थे (10)।

आश्रम :- विवेच्य युग में वर्ण व्यवस्था के साथ साथ आश्रम व्यवस्था का भी अस्तित्व था। ये आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, तथा सन्यासाश्रम है। कालिदास ने भी चारों आश्रमों का उल्लेख किया है। ब्रह्मचर्याश्रम में विद्यार्थी गुरु चरणों में बैठकर विद्याध्ययन करता था। विद्याध्ययन समाप्त करने के बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर सर्वभुतहिताय के कार्य करता तथा लोक कल्याण के वशीभूत होकर अपने दायित्वों को पूर्ण कर सभी कर्तव्यों की पूर्ति करके वानप्रस्थ तथा सन्यासाश्रम में प्रवेश करता था।

1- रघु 3/23 (2) रघु 11/84
3- बील वृतांत पृ 73, कालिदास मालविका 33.88
4- वाटर्स थामस आन युवान च्वांग ट्रेवल्स इन इंडिया भाग। पृ 147, बील वही पृ 73-74
5- वाटर थामस वही भाग 2, पृ 542, एकएक
6- मजूमदार आर0 सी0 (सम्पादक)कलासिकल ऐज III भाग पृ 556
7- वार्टर्स भाग 1 पृ 140
8- वही पृ 168
9- मजूमदार आर0 सी0 (सम्पादक) कलासिकल ऐज भाग 3 पृ 557
10- वार्टर्स भाग 1 पृ 147

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संयुक्त कुटुम्बः- परिवार संयुक्त था पिता अथवा ज्येष्ट व्यक्ति के हाथ में सम्पूर्ण परिवार का उत्तरदायित्व रहता था। पिता की मृत्यु के उपरान्त परिवार के सदस्य मिलकर रहते थे। सभी अपने बड़ों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते थे । रघुवंश(1) से विदित होता है कि प्रणाम नमस्ते अथवा कुमार सम्भव(2) में वन्दे छोटे व्यक्ति बड़ों से करते थे। आचार्य माता पिता एवं आदरणीय वृद्धों का चरण स्पर्श या साष्टांग प्रणाम करने का उल्लेख कालिदास(3) की कृतियों में मिलता है। बड़े अपना आशीर्वाद देकर उनका अभिवादन लौटाते थे । बड़ों से बात करते समय झुक कर बात करतेथे (4) । परिवार में अतिथि का पूर्ण सत्कार होता (5)। उच्च घरों के बच्चों का पालन पोषण धाईया करती थी (6)। परिवार के वृद्धजन अथवा नेता की बुराई करने वाला व्यक्ति निन्दनीय समझा जाता था (7)। विवेच्य युग में संयुक्त परिवार का आपस में एक दूसरे के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास था । परिवार भाइयों बहनों ,पति पत्नी ,सास, ससुर और पुत्र बधुओं का होता था। सबके बीच स्नेह का सम्बन्ध होता था(8)। चाचा ,भतीजे, मामा, भान्जे भी कुटुम्ब के अपने थे (9)।

संस्कारः- सभी संस्कारों का धार्मिक महत्व था।नामकरण संस्कार का महत्व था। हर्ष का नामकरण संस्कार अत्यधिक धूमधाम से मनाया गया जन्मोत्सवमेंसभी लोगों का उत्साहपूर्वक से भाग लेने का उल्लेख बाण ने किया है(10)। इस अवसर पर स्त्रियां विशेष रूप से अलंकृत होती थी (11)।सभी संस्कारों में विवाह संस्कार का विशिष्ट महत्व था।

1- रघु 14/13/60 , 15,29 (2) 3/62

3- रघु 8/12,11/89,13/70,,14/2/60,,1/57,11/7, कुमार सम्भव 7/27 कुमार सम्भव 6/27

4- उपाध्याय भगवती शरण, इंडिया इन कालिदास पृ 209-10

5-रघु 1/55,5/83,12/35, कुमार 5/31

6- रघु 3/25

7- शकुन्तला पृ 38,46,156, रघुवंश 5/2,14/82

8-उपाध्याय भगवत शरण अग्रवाल गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास पृ 138

9- उपाध्याय इंडिया इन कालिदास पृ 310

10-बाण ' हर्ष चरित्र' 130,133, अग्रवाल वासुदेव शरण' हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन' पृ 65-67

11- वही पृ 143 (12) रघु 3/30,5/20-21

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वधू का चुनाव :- विवेच्य युग में विवाह विषेयक बात करना कुल पुरोहित या ब्राह्मण का काम था (1) यह चुनाव बर की इच्छानुसार करते थे (2) कभी कभी स्वयं बर भी बधू के मन को जीतकर विवाह करने का उल्लेख मिलता है (3) साधारणतः अभिभावक ही विवाह निश्चित करते थे (4) ।

विवाह प्रकार:- प्राचीन व्यवस्थाकारों ने आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख किया है: 555-------

ब्राह्मण, आर्ष, देव, प्रजापति, असुर, पिशाच, राक्षस तथा गन्धर्व विवाह। कालिदास (5) ने गान्धर्व, असुर(6)'' प्रजापत्य विवाहों (7) का उल्लेख किया है।

प्रजापत्य:- कालिदास इस विवाह को सर्व श्रेष्ठ मानते हैं। शुक्ल पक्ष में पड़ने वाले किसी भी शुभ तिथि में कन्या का पिता अपने सम्बन्धियों के साथ विवा ह की तैयारी प्रारम्भ करता (8) ऋग्वेद के दसवें मंडल में सूर्य -सोम की जो विवा-ह पद्धति है वही कालिदास के रघुवंश अथवा कुमार सम्भव में अज और इन्दुमती अथवा शिव उमा की है (9) । कुमार सम्भव (10) में उल्लेख मिलता है कि सगे सम्बन्धी कन्या को भेंट देते हैं।

प्रारम्भिक तैयारियाँ :- शुभ तिथि पर कार्य प्रारम्भ किया जाता। बधू की ओर जाने वाली सड़कों के दोनों ओर चीनी रेशमी झाड़ियाँ लगा दी जाती तथा सुनहरे फूलों से तोरण बनाने का उल्लेख कुमार सम्भव में मिलता है स्नान प्रसाधन का कार्य सधवा एवं पुत्रवती स्त्रियों के द्वारा होता था स्नान के उपरान्त श्वेत वस्त्र धारण करके वेदी के पूर्व की ओर मुँह कर बैठाने के उपरान्त अलंकृत कर दी जाती तथा बड़ों से शुभ आशीर्वाद प्राप्त करने का उल्लेख मिलता है (11)। बधू पक्ष के लोग हाथियों पर चढ़कर

1· कुमार 6/61 , 65, 78-79
2· कामसूत्र 3/1/4-21
3· वही 3/1/44
4· मजूमदार आर०सी० 'क्लासिकल ऐज पृ० 580
5· शकु० 3/20, पृ० 295
6· रघु० 11/38, ~~15, 20, कुमार 7/73/79~~
7· रघु० 7/13, 15/20 कुमार 7/73/79
8· कुमार 7/1
9· कुमार 6/ 48 10· 7/11
11· कुमार 6-27 उपाध्याय भगवती शरण वही पृ० 212

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फूल माला बरसाने का, अक्षत बरसाने का तथा छत पर चढ़कर बरात का अवलोकन करने का उल्लेख कुमार सम्भव (1) में कालिदास ने किया है। मंडप में विवाहादि क्रियायें सम्पन्न होने के उपरान्त लौकिक क्रियायें सम्पन्न होती (2) कुमार सम्भव से यह भी विदित होता है कि सोहाग रात्रि के उपरान्त बर बधु को अपने घर ले जाता (3) विदा के समय कन्या को अनेक प्रकार का दहेज तथा शुभ आर्शीवाद प्रदान किया जाता (4) इस प्रकार से यह विवाह सम्पन्न होता।

गान्धर्व विवाहः- शकुन्तला (5) से विदित होता है कि गन्धर्व विवाह का प्रचलन था इस विवाह को प्रशंसा की गई है।

आसुर विवाहः- आसुर विवाह में कन्या के पिता को शुल्क देना पड़ता था ऐसी व्यक्तियों का सामाजिक मूल्य कुछ भी नही होता।

स्वयंबरः- रघुवंश (6) में स्वयंबर प्रथा का उल्लेख मिलता है। स्वयंबरमें कन्या की सुन्दरता एवं गुणो से प्रभावित होकर अपनी अपनी सेनाओ सहित पहुचते (7)। कालिदास ने सुन्दर एवं रोचक स्वयंबर गृह का वर्णन किया है स्वयंबर का अर्थ समाजिक अधिकारियो की स्वीकृति प्राप्त करना था(8) अपनी जाति में ही विवाह करना ठीक समझा जाता था। मनु लोम तथा प्रतिलोम विवाह होते थे (10) क्षत्रियनाग और ब्राह्मण वाकाटक राजकुलों में विवाह संबंध हुआ था। चन्द्र गुप्त की कन्या प्रभावती गुप्ता वाकाटक नरेश रूद्रसेन को ब्याही थी। ब्राह्मण कदम्ब राजकुल के काकुस्थ वर्मा की कन्याओं के विवाह गुप्त तथा अन्य राजकुलों में हुये जो ब्राह्मण न थे (9)।

1-7/52,55,63-69,567 2-73, बाण 'हर्ष चरित्र पृ0 142,20 ,278,145,149, अग्रवाल वी0एस0 प्रोवेशन आफ रीजेश्वरी में क्षेमि, जे0 ए0 आर0 एस0 अंकपन्द्रह 1973 पृ0 15-38
2- 77,78,79,85 अग्रवाल वासुदेव शरण देवी चरित्र एवं सांस्कृतिकपृ0 82-83
3- कुमार सम्भव 8/1, अग्रवाल वासुदेवशरण 'हर्ष चरित्र एवं सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 85
4-शकु0 4/27, 17/178, 5/27, 4/27, 125, 12(4133, 4/10, 19/19, रघु07/32
5- शकुन्तला 5/16, 5/24, मजूमदार भाग3 वही पृ0 56।
6-रघु 5/39, 64, 66, 7/13, अजकर एन0 कालिदास दर्शन
7- वही 5/40, 64, के0एस0यू0पी0 कालिदास दर्शन भाग। फलक । 1967 पृ0 16-24
8- वही 6/80- 83
9-उपाध्याय भगवत शरण वही पृ0 204
10-शकु0 पृ0 73 फल0 पृ0 9, सिंह राजकिशोर 'प्राचीन भरतीय कला और संस्कृति पृ0 205

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ह

र्ष वैश्य था और उसकी कन्या क्षत्रिय बल्मी नरेश से व्याही थी । वाकाटक नरेश देवसेन के मंत्री के पूर्वज ब्राह्मण सोम के ब्राह्मणी तथा क्षत्रिय दो पत्नियां थी । मृच्छकटिक के नायक चारूदत्ता ने वेश्या वसन्त सेना से विवाह किया और इसी नाटक के चोर ब्राह्मण ने वसन्त सेना की दासी मदानिका से विवाह किया । दशकुमार चरित्र के अुसार एक राजकुमार ने चम्पा की गणिका की कन्या से विवाह किया इससे स्पष्ट है कि विवाह सवर्ण होते थे परन्तु असवर्ण विवाहों का अभाव न था(1)।

समाज में नारी:- समाज में नारियो का सम्मान था। कुमार सम्भव (2) से विदित होता है कि पुत्रियां परिवार का जीवन थी तथा पुत्र के समान ही पालित किया जाता था। प्रत्येक धार्मिक कार्य में पति का सहयोग देती थी (3) पति तथा पत्नी का सहयोग रत्न औरस्वर्ण का सहयोग था पितृ ऋण से मुक्त तथा पुत्रप्राप्ति हेतु विवाह अनिवार्य था। वह आदर्श गृहणी थी तथा पति को देवता मानती थी (4)कामसूत्र(5) से विदित होता है कि पति के परदेश जाने पर सम्पूर्ण प्रसाधनो का परित्याग कर देती थी । विवेच्य युग में नारी अखंड सौभाग्य की आकांक्षा रखती थी (6)।

माता के रूप में वीर प्रसवनी थी तथा पुत्रवती को प्रशंसनीय समझा जाता था(7) नारी वंश चलाकर पूर्वजो का तपर्ण करती थी । पत्नी ही घर को स्वर्ग बनाने वाली थी । पुत्रहीन परिवार बेकार था(8)। राधाकुमुद मुखर्जी के(9) अनुसार स्त्रियों का सम्मान वैदिक युग के समान था।

बाल विवाह नही होते थे । स्वयंबर , गान्धर्व विवाह सुख शैया आदि उदाहरण व्यस्क विवाह के ही प्रमाण थे (10) । विवाह अध्ययन समाप्त होने पर किया जाता था।

1- मुंशी के0एम0 शाह की वही पृ0 559, वार्टर्स वही भाग । 168
2-कुमार 6/83,12, रघु0 1/29, माल0 पृ0 85
3-शकुन्तला पृ0 6/24, कुमार 6/13
4-रघु0 6/79,7/15,11/58, माल0 5/18, कुमार 6/86, शकु0 पृ0 274, मजूमदार वही पृ0 563
5- 835-37,2/12/19,210-18
6-कुमार 7/28,4/22, रघु0 10/55, माल0 पृ0 45
7- रघु0 7/34,1/4/35, माल0 5/16, शकु0 पृ0 172
8-रघु0 65//71,2/64, 69, शकु0 221,242, रघु0 1/69
9- मुखर्जी राधा कुमुद पृ0 176, मजूमदार वही पृ0 559
10-शकु0 1/30,5/10, कुमार 77, शकु0 पृ0 144

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्त्रियो के लिये शिक्षा की व्यवस्था थी । पर्दा प्रथा नही थी । हर्ष की माता राज दरबारियो से मिलती थी । वाण ने विलासमतीत का भिन्न भिन्न शकुन ज्योतिषियो, मन्दिर के पुजारियों एवं ब्राह्मणों से मिलना और महाकाल के मन्दिर में जाकर महाभारत की कथा सुनने का वर्णन किया है। राजश्री स्वयं हेनसांग से मिली थी । तत्कालीन नाटको में पर्दे का उल्लेख नहीं है(1)। सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवों में भाग लेने के अलावा सेवकी रखवाली, नदी स्नान राज्य कार्य करनेका उल्लेख विवेच्य साहित्य में मिलताहै(2)। जनसामान्य नारी लाज के कारण अपना मुख ढक लेती थी (3)।

समाज में एक पत्नी प्रथा को मान्यता प्राप्त थी परन्तु उच्च परिवार के लोग बहुविवाह करते थे (4)। कालिदास (5) के ने मालविका अग्निमित्र नाटक से प्रमाणित होता है कि सपत्नीयो के रहते वहअपने पति का आदर करती तथा शान्ती-पूर्वकर रहती थी ।

विधवा विवाह का प्रचलन था। चन्द्रगुप्त ने अपने भाई की विधवा ध्रुवदेवी से विवाह किया था। मालविका अग्निमित्र (6) से यह भी विदित होता है कि विवाह के शुभावसर पर विधवाओं के व्दारा मंगलाचार भी होता था। हर्ष की माता के जल मरने का वृतांत हर्ष चरित्र से मिलता है। हर्ष रचित प्रियदर्शिका में विन्ध्यकेतु के स्त्री के सती होने का वर्णन (9) तथा भानुगुप्त के सेना पति गोपसव की स्त्री के सती होने का उदाहरण मिलता है। (7) हेनसांग विधवा विवाह के विरुध्द था(8)

1- गुलाबराय 'भारतीयसंस्कृति पृ0 150
2-मेघदूत पृ0 33, रघु0 5/20, 1/32, 4/88, 16/24, 58/71, कुकरा1/59/4/7 7/6, शकु0 61/2, रघु0 1/32, 4/68, 16/24, 58/71, शकु0 6/12
3-शकु0 5/13, पृ0 168, 5/13
4-शकुन्तला पृ0 219, विक्रम पृ0 140, शाकु0 पृ0 105, रघु0 1/32 मालविका 2/14, 5/19
5- रघुवंश 1/32, मालविका 2/14, 5/19
6- 6/7
7, गुलाबराय वही पृ0 151
8-वासि 1 पृ0 168
9- अग्रवाल वासुदेवशरण ' हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 98

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रघुवंश से (1) विदित होता है कि गर्भवती महिला को सती होने का अधिकार नही था। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में सती प्रथा का अस्तित्व तो था परन्तु विशेष सम्मानित दृष्टि से नही देखा जाता था।

खान-पान:- विवेच्य क्षेत्र में माँसाहारी तथा शाकाहारी दोनो प्रकार के भोजनो का प्रचलन था।(यव, शालि, कलमा जाति के धान, तिल, शक्कर, मिठाई, मोदक, दूध, मक्खन, घी, दही, खीर आदि विविध व्यंजनो का उल्लेख मिलता है(2)।मांस का प्रयोग होता था (3)। भोजन मे मिर्च, इलायची, लौंग, मीठा आम, अनेक फलो को काफी पसन्द किया जाता था।भोजन चटपटा सुस्वाद था। मोदक सिहारिनी मधु, मांस का प्रयोग किया जाता था (4)। फाइयान(5) के अनुसार ब्राह्मण सुअर के बच्चे को नहीं पालते और जीवित मवेशियों को नहीं बेंचते बाजार में कसाई तथा मदिरा की दुकानें नहीं हैं। चाडांल ही मछली बेचते तथामाँस का विक्रय करते थे (6) बोध्द माँस नहीं खाते थे ब्राह्मणों को भी मांस मदिरा से परहेज था(7)। फलो का रस विशेष प्रिय था।

मदिरा:- विभिन्न वर्णों के लोग विभिन्न प्रकार की मदिरा का प्रयोग करते थे(8) सड़कों के किनारे मधुशालायें थीं(9)।मदिरा को आसत मधु, मदिरा, वारुणी, भी कहा जाता था(10)। मधु नारियल से गन्ने के रस से तथा पुष्पो से बना(मधूक)से बनाया जाता था(11)

1- 19/56 वाण हर्ष चरित्र पृ 168 मालविका पृ 99

2- रघु० 9/43, 7/27, 15/78, 17/5, 4/37, 2/63, मनु 10/16, 4/11, 10/51, 18/5 1/16, कुमार 5/47, शाकु पृ 94, विक्रम पृ75, 81, (3) शाकु० पृ 184, 206

4- रघु4/46, 4/7, 5/73, 11/69

5- लेगे फाइयान रिकार्ड आफ बुधिस्टिक किंगडम्स पृ 43

6-- वही (7) उपाध्याय भरतसिंह पृ 225, लेगे ट्रैवेल्स आफ फाहीयान पृ 21 तासि वही भाग। पृ 178

8- लेगे वही 1/178 (9) शाकु० पृ 188

10- रघु0 10/12/46, 8/68, ऋतु6/10, कुमार 3/38, 4/12 विक्रम 4/44

11- रघु0 4/42, 16/52, उ कुमार 3/38

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मद्य स्त्रियों को विशेषरूप से मंडित कर देती थी(1) मदिरा को सुवासित बनाने के लिये बीजकपुर की छालें काम में आती थी। दुर्गंध को रोकने के लिये पान खाया जाता था(2) विवेच्य युग में मद्यपान विलास की वस्तु थी (3)। भोजन के उपरान्त हाथ मुँह धोकर दातौन की जाती थी। हेनसाग ने(4) लिखा है कि क्षत्रिय अंगूर तथा गन्ने के रस की शराब, वैश्य तेजशराब तथा श्रमण एवं ब्राह्मण गन्ने के रस के शर्बत का प्रयोग करते थे। शूद्र हर प्रकार की शराब का सेवन करते थे। हेनसाग के विवरण(5) से यह भी ज्ञात होता है कि भोजन के उपरान्त वर्तन साफ करके रख लिये जाते थे। स्पष्ट है कि विवेच्य युग का भोजन आर्थिक सम्पन्नता का अति उत्तम उदाहरण है।

वेशभूषा:- साहित्य विवरणों, उत्खननकार्यों एवं अनुपमकला कृतियों से विवेच्य युग की वेशभूषा का ज्ञान प्रचुर मात्रा में होता है। मौसम के अनुसार ऊनी सूती रेशमी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था(6)। कालिदास की कृतियों (7) में मृगया, शकुन्तला तथा वृतधारियों की अलग अलग वेशभूषा का उल्लेख मिलता है। वेशभूषा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। कालिदास(8) ने श्वेत, कृष्ण तथा विविध रंगों के वस्त्रों का उल्लेख किया है। गर्मी में हलके वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था(9)। हैनसांग(10)ने दोलाली, रल्लक(कंबल) का उल्लेख किया है भिक्षुसन के बने लाल कपड़े पहनते थे। मथुरा की डोरिया(11)आसाम के रेशमी वस्त्र(12) तथा काशी के वस्त्र (13) प्रसिद्ध थे।

1- कुमार 3/38, 4/12, 8/80, 8/77, रघु, 8/68, 4/42, 2/42, माल० पृ० 49 शकु 5?/10, 1/3, शकु० पृ० 188, रघु० 3/11, 15-32

2- रघु० 4/42, पृ० 188, ऋतु 1/3, 4/11, 6/10, रघु० 2/42, 61, मेघ० 3/11/15-32

3- उपशकु० वही

4- रघु० 5/76 वाटर्स भाग 1 वही पृ० 140 152, 168, 178

5- वही भाग 1 वही पृ० 88-89

6- रघु० 5/76, 6/10, 9/50, -68

7- शकु० 68, 7/51, रघु० 9/50 विक्रम 68

8- रघु० 2/35/, 3/2 विक्रम 6-4/19, मेघ पृ० 41 विक्रम 6/17 वाटर्स वही भाग 1 पृ० 157

9 - मत्र 1/7/4/3

10- वाटर्स वही पृ० 140, 340

11- वाटर्स भाग 1, वही पृ० 30 1

12- वही पृ० 85, कोल का अनुवाद हर्ष चरित्र पृ० 214

13- वही भाग 1 पृ० 148 हर्ष चरित्र पृ० 85

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्रियों के वस्त्र विवेच्य युग में स्त्रियों के वस्त्रों में साड़ी तथा चादर के अलावा कूप सिक (चित्र संख्या 33 आ फलक6) तथा घाघरा (फलक 6-चित्र 33ब) बैकक्ष भी पहनती थीं (1) सावित्री के पहनावे का वर्णन करते हुये वाण कहते हैं कि उनके अंग पर एक शाल था और उसका वैकक्ष बायें कन्धे से होता हुआ दाहिने हाथ के नीचे से जाता हुआ यज्ञोपवीत की तरह एक योगपट्ट से बना था (2) । हेनसांग (3) ने श्री कंधों को ढकते हुये एक लम्बे वस्त्र का उल्लेख किया है। कालिदास की कृतियों से विदित होता है कि साधारण परिधान दो ही थे कूपसिक(चोली) तथा नीवी कंधा ने बँधा घाघरा (4) । वाण ने एक स्थान पर देवी को मलमल की चोली पहने दिखाया है जिसमें अनेकों प्रकार के पुष्प और चिड़ियों के नक्शे बने हुये थे जो मन्दवायु के झोंकों से तरंगित हो रहे थे (5) । मथुरा संग्रहालय (6) में भी अनेकों स्त्री प्रतिमा है जिसमें विवेच्य युग की वेशभूषा का आभास होता है। वेश भूषा सुन्दर तथा आकर्षक थी ग्रीष्म में हल्की साड़ी तथा बसंत में केसरिया साड़ी पहनने का शौक था (7) ।

पुरुषों के वस्त्रः- विवेच्य युग में राजा सादा पर रोबदार कपड़े पहनते थे। हर्ष चरित्र(8) में हर्ष को नेत्र सूत्र से मिश्रित धोती तथा सितारे टँके हुये दुपट्टा पहने दिखलाया है। राजा की सफेद धोती हँस मिथुन की नक्काशी की सी सुशोभित होती थी और उसके निकले सिरे चमर से निकली हवा से फहराया करते थे।

1- मोती चन्द्र 'प्राचीन भारतीय वेशभूषा पृ० 158
2- हर्ष चरित्र पृ० 6, 26। (3) वाटर्स वही भाग । पृ० 148
4- रघु 6/75, 11/4, कुमार 1/24, ऋतु 1/7, 4/3, 6/4- 19 विक्रम 3/12, 4/17, हर्ष चरित्र पृ 83
5- हर्ष पृ० 96
6- मथुरा संग्रहालय 44· 3167, 46· 3243, 50 35-38, 53, 3608, 57, 4336 शर्मा रमेश चन्द्र ' मथुरा कला शैली की अनूठी देन, 'बी०एम०स०यू०पी० भाग 11-12, पृ० 23-29 , 1973
7· मथुरा संग्रहालय 1/4, 6/4 मिश्र शिवनन्दन गुप्त कालीन अभिलेखों से ज्ञात तत्कालीन सामाजिक एवं आर्थिक दशा (डी०टी०टी०) भाग 3, 24, 34, 52, 59, 63, 75, 82 89, 136, 141, (8) हर्ष चरित्र पृ० 59, कादम्बरी पृ० 19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

युध्द क्षेत्र को जाते हुये हर्ष को धोती और हंस मिथुन से अलंकृत दुपट्टा पहने बताया है(1)। नायाधम्म कहा(2) में राजकुमार गोतम को अंशुक की धोती और दुपट्टा जो रंगीन, महीन और मुलायम थे जिनके किनारे पर सुनहरा काम था पहनने का उल्लेख हुआ है । सरस्वती ने जिस युवक को देखा वह धोती पहने हुये था(3अ) टोपी पहनने का रिवाज था इसीप्रकार की मूर्ति कोसम से प्राप्त हुई है (फलक 6 चित्र सं० 33स) (3ब) विवेच्य युग में पैदल सिपाही कृष्णागरु चर्चित कंचुक पहनते थे उनके सिर रूमाल से ढके रहते थे (4) तथा कटार दोहरे कमरबंद के फेंटे में खुसी रहती थी (5) युध्द क्षेत्र में जाने वाले योध्दाओं के सजीव का चित्रण करतेहुये वाण ने लिखा है कि उनकी जंघायें चित्रित और सुकुमार नेत्रसूत्र ढकी थी उनके पाजामे मोरों से काले थे । उनके कूर्पासक रंग विरंगे तथा चादरें हरे रंग की थीं तथा सिर केसरिया उत्तरीय सेथी ढके थे (6) नेत्र(7) कंचुक(8) वारवाण (9) चीनचोलक(10) कूर्पासक (11) नामक कपड़ो का प्रयोग किया जाता था।

जैन साधुओं के जांगिन, भंगिम, शाणता और वेतक कपड़े पहनावे कीअनुमति थी । जंगिम ऊँटके बालों से बना कपड़ा था(12) । कूतप को वीर्ण कहा गया है। किंह ऊन अथवा बाल से बनता था। जैन साधु ठीक नाप वाले (प्रमाणवत) समतल(सम) मजबूत (स्थिर) और सुन्दर वस्त्र पहनते थे । बड़े दिनो में ऊनी चादर पहनने का विधान वृहतकल्प भाष्य सूत्र से मिलता है। सूती धोतीनमिलने पर जैन साफ धोती एवं छालटी चादरों का भी उपयोगकर सकते थे केवल दो प्रकार के वस्त्र का प्रयोग किया जा सकता था(1[illegible]

1- वाण 'हर्ष चरित्र' पृ 196, (2अ) हर्ष चरित्र पृ 17-18
(3अ) - 1/3 (3ब) ए०एस०आई०एन०वार्ड० 1913-14, फ्लेट न०70•
4- मोतीचन्द्र वही पृ 80 (5) वाण 'हर्ष चरित्र' पृ 16
6- वही पृ 205
7- मोती चन्द्र वही पृ 160 (8)ए वहीपृ 161
9- रिचार्ड जेफरी का वोकाबुलरी आफ फारेन वर्ड्स इन कुरान गायकवाड ओरियंटल सीरीज 1926, कुरान में प्रयुक्त क्र 8, 30, 44, 53, 78-21
10- मोतीचन्द्र वही पृ 161 (10) उपाध्याय भरत सिंह वही पृ 228
11- वृहतकल्प भाष्य सूत्र 3, 2883
12- वही 4, 3881
13- वही 3, 2835, 4, 3867, 3870

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यद्यपि जैन साधुओं के लिये वस्त्रों के उपयोग का विधान मिलता है परन्तु मूलरूप से उनको यथाकृत वस्त्र ही निहित था। नागरिकों द्वारा व्यवहार में लाये गये वस्त्रों का प्रयोग साधु नहीं कर सकते थे। ये कृत्सनवत्‍ नाम स्थापना श्रेणि, ,द्रव्य, काल और भाव के अवसर छै श्रेणियों में बटे थे (1)। जैन साध्वियाँ सघात्री, अवग्रह, पद चलनि का अत वासिनी सारी वीहिर्निवसनों वस्त्रों का प्रयोग करती थी(2)।

साधु धोती और चादर के अलावा सूती कमरबंद (पर्यस्तक) जिनमें न तो रंग होता था और न नक्काशी, का प्रयोग करते थे (3) साधु गोपल कंचुक नामक विशेष वस्त्र पहनते थे (4) वाग ने केवल क्षौम का कोपीन तथा देश में पर्यबन्दय का उल्लेख किया है (4) पादकायें का भी पहनने का भी उल्लेख मिलता है।(5) कोयब, प्रावारक ,दाढ़ी वाले पूरिका विरलिका आदिचादरों का उल्लेख मिलता है(6) बौद्ध भिक्षु हाथ चौड़ी सकारी का प्रयोग करते थे जिसमें गले से 5 अंगुल हट कर एक चार अंगुल चौकोर कपड़ा जोड़ दिया जाता था इसके बीच में एक छिद्र होता था उसको बीच में रेशमी अथवा सूती फीते वाहर निकाल कर छाती पर बाँध दिये जाते थे (7) नाग राज की मूर्ति में तत्कालीन धोती पहनने का सुन्दर ढग मिलता है (8) सिक्कों पर समुद्र गुप्त अधवहियाँ कंचुक अथवा कोट पहने दिखाया है (9)। एक सिक्के में उसको चार कोने वाला कंचुक पहने दिखाया है (10) समुन्द्र गुप्त का पजामा ढीला न होकर चूड़ीदार है तथा सिर पर स्टकर बैठने वाली टोपी है जूते अर्ध जंघा किस्म के है(11)? चन्द्रगुप्त के धर्नुधारी चाँदी के सिक्के में राजा एक सा कंचुक कमर बंद से बधा पहनते थे(12)। एक सिंह प्रराक्रम भाँति के सिक्के में राजा कंचुक ,कमर बधं , धोती और चोटी दार फुन्देदार वाला टोप पहने दिखाया गया है। घोड़े पर सवार राजा कमर बंध से कसा कंचुक और

---

1. 1. वही 4. 3671,4,3673,1067,4. 2880,3881-85
2. वृहत कल्प भाषित 4,4082-85 (3) मोती चन्द्र वही पृ0 167 ,हर्ष
4. हर्ष चरित्र पृ0 49,86,263, (5) वही पृ0 265
6. मोतीचन्द्र वही 168 (7) वृहत कल्प भाष्य पृ0 72-79
8. रामचन्द्रन 'बुद्धिस्ट स्कल्पचर्स प्राम ऐ स्तूप नियर गोली विलेज प्ले 4 जि0 मद्रास 1929
9. ऐलन केटेलाक आफ क्वाइन्स आफ दी गुप्ता डाईनेस्टी एण्ड शशांक किंग आफ गाडं प्लेट । ।। लन्दन 1914
10. वही प्लेट 1, 5
11. मोतीचन्द्र वही पृ0 10 , 15, वाजपेयी के0डी0उत्तर प्रदेश क सांस्कृतिक इतिहास-पृ0 35 (12.) ऐलन वही प्लेट 6-9
13. ऐलन वही 7, 18, 8, 11, 8,13

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धोती भी पहने है। एक तांबे के सिक्के पर आराम से खड़े चन्द्रगुप्त को दोनों कंधों पर पड़ा दुपट्टा पहनने का उल्लेख मिलता है(1)। कुमार गुप्त के चांदी के सिक्कों में टोपी, पगड़ी प्रमुख है(2)। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में वस्त्र बहुत ही सुन्दर तथा नक्काशीन कढ़ार थे।

वर वधु विवाह के अवसर पर विवाहनेपथ्य परिधानों का प्रयोग करते थे। वस्त्रों पर हंस की आकृतियां छपी रहती थी (3) कुर्ती लाल रंग की होती थी। नर्तकियां लम्बे कुर्ते तथा कभी कभी सकरा पाजामा पहनती थी (4)। विवेच्य युग में लोग पगड़ी के बड़े शौकीन थे जो प्रायः मलमल की बनती थी।(5)

विदेशी नरनारियों के विविध परिधानों का अंकन भी विवेच्य युग के साहित्य मूर्तियों तथ चित्रण में समान रूप से मिलता है। मथुरा संग्रहालय के द्वारा पायोकुबेर की परिचारिका के रूप में जो यवनि मूर्ति हुई है उनके शरीर अस्तीनवाली जाकेट और पैरों पर गिरे चुन्नटदार घाघरे से मंडित है। पैरो में जूते है(6)। वहीं के रेलिंगस्तम्भ पर (7) दूसरी यवनी का चित्र अंकित है जिसके केश आधुनिक रीति से कटे है। वन्य जातियों, आदिवासियों और डाकुओं के परिधान की एक झलक मालविका अग्निमित्र(8) में मिलती है वे पीठ पर भरा तरकश, छाती पर तरकश के कसे पट्ट और मस्तक पर मोरपंख धारण करते हैं।

शुभ्र वस्त्र के विशेष शौकीन थे(9) राजकर्मचारी की वेश भूषा का उल्लेख हर्ष के भाई को कृष्ण द्वारा बाण के पास भेजे गये दूत के बाल खुले तथा पीछे कपड़े सैं बंधे थे (10) प्रतिहारी तथा महाप्रतिहारी सफेद कंचुक पहने थे और कमर बंध बांधते थे।(11)

रंगाई कला का काफी विकास था वस्त्रों की रंगाई, छपाई, चुन्नट डालना, कुंकुम के थापों की रंगाई का उल्लेख बाण ने किया है(12)। अहिच्छत्रा से इसी प्रकार की मूर्ति प्राप्त हुई है(13)। विवाह मंडप स्तवरक का राजश्री विवाह में बनाया गया था(14) स्पष्ट है कि वस्त्र कला उन्नति के शिखर पर थी।

1-एलन वहीं प्लेट 10 (2) वहीं 16·9

3-उपाध्याय भरत सिंह वही पृ0 229, रघु0 17, 25, कुमार5-67, अग्रवाल वासुदेव शरण। 'हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन' पृ0 73

4-वाजपेयी के0डी0 'उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास' पृ0 18, (5) वही

6- मथुरा संग्रहालय सं0 सी0 2 (7) मथुरा संग्रहालय जे0 63 (8) वही 5, 10

9-भगवती प्रसाद शिलादित्य पृ0 169 (10) वही 41, 49 कादम्बरी पृ0 35

11- हर्ष चरित्र पृ0 49

12- वही 143, 206, 207, अग्रवाल वासुदेव शरण 'हर्ष चरित्र' एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 79-80

13-अहिच्छत्रा संग्रहालय सं0 मूर्ति सं0 80, 302

14- अग्रवाल वासुदेव शरण अहिच्छत्रा से प्राप्त मिट्टी की मूर्तियां पृ0 111, 130

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पीठपर फहराता चीरा पहने दंडवत करते पुरुष की मूर्ति अहिच्छत्रा से प्राप्त हुई है (फलक 10 चित्र सं0 57) पार्श्वचर के हाथ में दण्ड (फलक सं0 10 चित्र सं0 58), देवगढ़ से फेटा बंधी (फलक सं0 10 चित्र सं0 51), तथा अलंकारो से अलंकृत स्त्री चित्र (फलक सं0 10 चित्र सं0 52), अहिच्छत्रा से नृत्य करती लंहगा पहने स्त्री मूर्ति (फलक सं0 10 चित्र सं0 56), अहिच्छत्रा से पिंगा पहने पुरुष की मूर्ति (फलक सं0 10 चित्र सं0 54) एवम् मथुरा से लम्बा चोंगा पहने (फलक सं0 10 चित्र सं0 53), अहिच्छत्रा से पदाता युवक (फलक सं0 3 चित्र सं0 10ब) एवं भुगुरउत्तरीय पहने पुरुष की मूर्ति (फलक 3 चित्र सं0 11अ) प्राप्त हुई है जिससे स्पष्ट होता है कि विवेच्य युग में रुचि कर वेश भूषा थी।

आभूषण:- उत्खनन से प्राप्त अनेक कला कृतियों का अवलोकन कर ज्ञात होता है कि स्त्री पुरुषो को आभूषण पहनने का शौक था। कालिदास को कृतियों से ज्ञात होता है (1) कि भूषण, आभरण, अलंकार, मण्डन, चूणामणि, (फलक सं0 9 चित्र सं43) रत्न जाल, चोटियों मे गूथे रत्न, आदि आभूषण सिर पर धारण किये जाते थे। कानो (2) में कुण्डल कर्णफूल (फलक सं0 8 चित्र सं0 37, 38, 40) तथा गले में निष्क, बहुमूल्य पत्थरयुक्त सोने को जंजीर तथा मुक्तावली का प्रयोग किया जाता था। आलम्बिन तथा माला विशेष आभूषण थे। स्वर्ण के अगद तथा केयूर स्त्री पुरुष दोनो पहनते थे। नर नारी को कलाइयों को वलय सुशोभित करते थे (4)। स्त्रियों के कमर के आभूषण मेखला (फलक सं0 8 चित्र सं0 40), किंकणी आदि थे। मेखला मूक तथा शब्दायमान दोनो होती थी। ग्रीष्म-काल में अलंकृत वस्तुओं का प्रयोग किया जाता था(5) (5) नूपुर (फलक सं0 8 चित्र सं0 39) पाजेब, कड़े पहनते थे जो धनियों के लिये रत्नोसे जड़े बनते थे (6)। गुप्तकाल की देवगढ़ से प्राप्त विष्णु की मूर्ति के आभूषणों में क्रीट, मुकुट, कुण्डल, हार, केयूर, कंकण और बनमाला है। मथुरा से भी इसी प्रकार की मूर्ति प्राप्त हुई है (फलक सं0 9 चित्र सं0 47) धोड़ो को भी विभिन्न आभूषणो से सजाया जाता था (फलक सं0 9 चित्र सं0 46)। शिव के अलंकृत मस्तक अदिव्य है (फलक सं0 9 चित्र सं0 49) जो मथुरा से प्राप्त हुआ है। कुण्डल का प्रयोग भी किया जाता था (फलक सं0 3 चित्र सं0 10)। आभूषण रखने के लिये पेटियों का उपयोग होता था (7)।

1- रघु0 18/45, 19/45, 6/19, मालविका 5/7, पृ0 92, कुमार 1/4,
2- रघु0 10/51, 7/27, ऋतु 3/19, 2/19,
3- कुमार 2/49, विक्रम 122-123, रघु0 13/49 मालवीका पृ0 36, वार्ता वही भाग। पृ0 157
4- रघु0 6/14, 68, 750, 16/56, शकुन्तला 3/10, 6/6, मेघ0 12 ऋतु 6/6
5- मालवीका पृ0 59, ऋतु 1/4, 6/63, 1/6, कुमार 1/37, 8/89, रघु0 13/33
6- उपाध्याय भगवती शरण वही पृ0 231
7- उपाध्याय " इंडिया इन कालिदास पृ0 203-4

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वाण ने भी मालती के करधनी आदि आभूषणों का वर्णन किया है(1)अष्टक मंगलक माला का (फलक सं0 8 चित्र सं0 41,42)विशेष प्रयोग किया जाता था। निश्चय ही इस युग का तनमन इतना पवित्र था कि सम्पूर्ण लालित्य मूर्ति कला में उड़ेल दिया(2)।

केश विन्यास एवम् प्रसाधनः- स्त्री पुरुष दोनो के बड़े बड़े बाल रखने का शौक था यदि पुरुष लम्बे बाल रखते तो उन्हे केश वेष्टन से बांधते थे(3)(फलक सं0 8 चित्र सं0 44) (~~3~~)। कालिदास ने (4) पुरुषो को दाढ़ी बनाने का उल्लेख किया है। स्त्रीयाँ को केशो को पुष्पो से अलंकृत करती तथा सुगन्धित तेल डालती थी कमर तक चोटी लटकाती थी । (5) मूँछे रखने का शौक था समुद्र गुप्त वीणाधारी प्रकार के सिक्को में चन्द्रगुप्त द्वितीय रजत मुद्राओं में मूँछे रखे हूये है ? मथुरा से कीर्तिकेय केश रचना (फलक सं0 13 चित्र सं0 79) से युक्त मूर्ति प्राप्त हुई है । फूलो को करधनी तथा केसर के नवपल्लव धारण करती थी ।(6) मन्दार के फूल पहनती तथा अम्लता के के र्का फूल धारण करती थी । ह्वेनसांग(7)ने अनेक प्रकार के पुष्पो तथा प्रसाधन साधनो का उल्लेख किया है। प्रसाधन साधनो में फूल, गजरे सुगन्धित द्रव्य, पाउडर, एवम् मुख को सुवासित रखने के लिये अनेक प्रकार की वस्तुओ का प्रयोग किया जाता था(8)। स्नान से पूर्व चन्दन के बीजो से बने उबटन का प्रयोग किया जता था(9) कालिदास ने (10)अपने कृतियों में अनेक प्रकार के लेपो का उल्लेख किया है। स्नान के उपरान्त बालो को सुगन्धि में धूप, कस्तुरी और चन्दन का प्रयोग कियाजाता(11) सुरमा सलाका से लगाया जाता था(12)। कालिदास (13) ने सिंगारकला, सिंगार परिचारिका सिंगार मन्जूषिका, का उल्लेखनीय वर्णन किया है।

1- अग्रवाल वासुदेव शरण 'हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 23
2- मजूमदार 'क्लासिकल ऐज' पृ0 578
3- रघु0 2/8
4- वही 2/8, 17/71
5- ऋतु 1/4, 2/1, 5/5, 6/13, 4/16, कुमार0 7/14
6- ~~मथुरा संग्रहालय सं0~~ उपाध्याय भरत सिंह वही पृ0 232, उपाध्याय 'इंडियन
7- कालिदास पृ0 203-4
7- बील वही भाग 1 पृ0 147-148
8- रघु 6/60, कुमार 0 6/69 ऋतु 1/6, 2/21, 3/19, 4/5, 5/5, मेघ0 पृ0 5, वाण कादम्बरी पृ0 245-320
9- ऋतु 5/5, 2/21, विक्रम पृ0 121 शकुन्तला पृ0 84, कुमार0 5/68, 89, रघु0 6/60, 1 27, 14/14, 17/24, उपाध्याय इन्डिया इन कालिदास पृ0 205
10- ऋतु0 4/5, कुमार0 7/9, 15, रघु0 14/12, 6/60
11- रघु0 6/55, 7/8, कुमार, 5/51, ऋतु 4/17
12- मालवीका पृ0 50 कुमार 7 /13, -30, रघु0 17/22

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आमोद प्रमोद के साधनः- विवेच्य युग में अनेक प्रकार के मनोरंजन के साधनो का उपयोग होता था। संगीत कला का मनोरंजन के साधनों में प्रमुख स्थान था। गृह एवं राज्य प्रसाद अनेक प्रकारके बाजो से निनादित होते थे(1)। वीणा विशेष प्रिय वाद्य था(2)। सामाजिक तथा धर्मिक उत्सवों मे नृत्य अभिनय तथा गायन वादन से उपस्थित वृन्दजन ो का मनोरंजन किया जाता ((3) वाण (4) ने रासलीला का भी उल्लेख किया है। मृगया तथा जलक्रीडा का उल्लेख कालिदास(5) ने किया है। इस प्रकार के मनोरंजक साधनो में राजा भी सम्मिलित होता था(6)

वृुब क्रीडा :- आकर्षक खेल था(7) पिचकारी से रंग बिरंगे पानी का छोड़ना प्रमुख मनोरंजन का साधन था(8) धूत क्रीडा से नागरिक भी मनोरंजन करते थे। दौलो का आनन्द विशेष रूप से स्त्रियां लेती थी। आनन्दोध्यान सम्मिलित रूप से झूले का आनन्द लिया जाता था(9)। रोचक कथाओं को बच्चे बड़े आनन्द से सुनते (10)। कुम कुम क्रीडा, देवयात्रा जलूस आदि उत्सवों के अवसरपर खेली जाती। वैशाखी की शुक्ला (11) चतुर्थी को जौ को सुगन्धित बुकनी लेकर होली खेलने की प्रथा थी। कथाकारो का आयोजन राजा राजदरबार में करता इतिहास पुराणो की कहानी सुनी जाती (12) वेश्या भी विवेच्य युग में मनोरंजन का प्रमुख साधन थीं (13)

1- उपाध्याय इंडिया इन कालिदास पृ0 211-12 रघु 05/20
2-माल0 पृ0 2
3-माल0 पृ0 2, मेघ0 33, रघु0 16/64
4- वाण 'हर्ष चरित्र 2/78
5-रघु0 16/64, 9/49, मेघ0 पृ0 33, शाकु0 पृ0 245
6-शाकु0 पृ0 245
7-रघु0 पृ0 6/18 (8) रघु0 16/70
9- माल0 पृ0 2, रघु0ए 16/83, कादम्बरी 1/272
10- मेघ पृ0 30
11 कुमार 1/39
12-वाण कादम्बरी पृ09, 209, कपूर मंजरी पृ0 99
13- मेघ0 पृ0 25 ऋतु 3/19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गणिकायें सार्वजनिक स्त्रियां थी जो विवेच्य युग में धार्मिक तथा सामाजिक पर्वों पर नाचने गाने के लिये बुलायी जाती थी (1)। मेघदूत से (2) विदितहोता है कि ये गणिकायें मन्दिर में चंवर डुलाने का कार्य करती थी उनकी उनकी पायल से पथ गुंजित हो जाते थे (3)प्रणयीजनो से मिलने के अनेक संकेत भी ज्ञात होते है(4)वेश्याओं का अपने गुणो तथा कुशलता के कारण समाज में महत्वपूर्ण स्थान था(5)। हेनसांग ने भी नर्तकियो का उल्लेख किया है जो काम शास्त्र में निपुण थी । वाराणसी कीगणिकाये अत्यधिक प्रसिध्द थी (6) उच्च वर्ग के लोग मनोरंजन हेतु शुक सारिका आदि मृदुल वचनो वाले पशु पक्षी को पालते थे उधार व्यापार विवेच्य युग मे सुख का साधन बन गया था(7)।अतः स्पष्ट है कि विवेच्य युग में अनेक प्रकार के साधन मनोरंजन के थे ।

ललित कलाये

विवेच्य युग में ललित कलाओं का स्वर्ण युग था विविध कलाओ का विकास हुआ

मूर्तिकला :- विवेच्य युग की कला का प्रमुख केन्द्र सारनाथ थ। जिसमे एक नवीनता है तथा स्वाभाविकता है। उसमे न तो शुंग काल के समान चटपटापन है और न कुषाण काल के समान गोभाचारिता अपितु यह कला राधा शैली के समान अंगकार है। मथुरा कला का भडार था यहां से स्त्री(8) पुरुषो(8) की अनेकों मूर्तियां उपलब्ध हुई है। भीतर गांव का ईंटो से बना मन्दिर स्थापत्य किला का अनुपम उदाहरण है(10)। नोहखेडा से एक स्त्री मूर्ति प्राप्त हुई है(11) अहिच्छत्रा के करीगर भाव विन्यास तथा कला अंकन में अप्रीय कलाकार

---

1) रघु0 3/19,
2) पृ0 25
3(वही पृ0 37 रघु0 16/12/17,69, 16/12
4- शकुन्तला 3/23, मालविका 3/14
5- ऋतु 2/5, मेघ0 8, 25, 35
6- पाण्डेय उमावती पृ0 51
7- उपाध्याय इन्डियन इन कालिदास पृ0 217
8- मथुरा सं0 सं0 44·3167, 46·3243, 50·3538, 51·3808, 57·4337,
9- शर्मा रमेश चन्द्र 'मथुरा कला शैली की अनुठी देन वी0एम0 एस0यू0 पी0 भाग 1-12, 197
पृ0 21-29
10 सिंह आर0सी0 'भीतर गांव ग्रीक टैम्पल वी0एम0एस0यू0पी0 भाग 1, 1968 पृ0 10, मजूमदार आर0सी0 क्लासिकल एज भाग 3 पृ0 466,
11- वाजपेयी के0डी0 युगो युगो में उत्तरप्रदेश पृ0 27

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे । यहां से बोधीसत्व ब्रह्मा, विष्णु महेश तथा अनेकों मृण मूर्तियां प्राप्त हुई है(1) बुद्ध की अनेकों मूर्तियां भीटा से प्राप्त हुई है(2) ।कुशीनगर से बुद्ध की कलापूर्ण मूर्ति प्राप्त हुई जिसमें अंगसौष्टव तथा वस्त्रों की सिलवटों को बहुत ही स्वाभाविक ढंग से प्रदर्शित किया गया है(3) कुशीनगर से एक बौनों की मूर्ति प्राप्त हुई है जो कई ईंटों को जोड़ कर बनायी गई है(4) देवगढ़ से स्वास्तिक चिन्ह (फलक सं0 11 चित्र 66)तथा सारनाथ से मकर मुखी टोंटी (फलक 11 चित्र 67)प्राप्त हुई है जो कला का सुन्दर नमूना है।लाखामण्डल (देहरादून) से जयविजय की मूर्तियां प्राप्त हुई है(5)। कन्नौज में हर्ष का एक प्रसिध्द सूर्य मन्दिर था (6)।देव गढ़ के मन्दिरों की कला तो अनूठी ही है(7)। कौसाम्बी चित्रकला का प्रमुख केन्द्र था (8)। अहिच्छत्रा से तथा कुशीनगर से आदमकद मृण मूर्ति प्राप्त हुई है(9)। सारनाथ से गुप्ता कालीन खड़ी बुद्ध मूर्ति,(10) , बोधिसत्व मूर्ति(11) तथा अनेकों धार्मिक मूर्तियां मिली है(12)।उच्चतम कला की प्रतीक मथुरा से अभय मुद्रा में बुद्ध की मूर्ति प्राप्त हुई है(13)। ढालें (फलक 12 चित्र 68) अहिच्छत्रा से मृण मूर्ति (फलक 12 चित्र सं0 69), हाथी से लड़ने वाला पट्‌ठा (फलक सं0 12 चित्र सं070) ,हस्तिनापुर से कटहल के फल जैसी गगरी (फलक 12 चित्र सं071) तथा अहिच्छत्रा से ककरी(फलक सं0 12 चित्र सं0 72) प्राप्त हुई है ।मथुरा से मोरनी से अलंकृत राय छत्र (फलक सं0 3 चित्र सं0 11स) प्राप्त हुआ है जो कला का सुन्दर नमूना है।कन्नौज का बौध्द विहार विविध कलाओं का संगम था। ((14)

1- वाजपेयी के0डी0 'अहिच्छत्र पृ0 15
2- वाजपेयी के0डी0 युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ0 31
3- नागरमदन मोहन कुशीनगर पृ0 5 (4)वही पृ0 10
5- वाजपेयी के0डी0 युगों युगों में उत्तर प्रदेश पृ0 21
6- वही पृष्ठ 24,दीक्षित रामकुमार कन्नौज पृ0 19,
7- अवस्थी वी0एम0एल0 'सम ऑफ आवजर्वेशन्स ओन द ए नोट स्था नारायण एट देवगढ़ वी0एम0ए0यू0पी0 भाग 7, सिंह राजकिशोर प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति पृ062, मजूमदार आर0सी0 द क्लासिकल एज भाग 3 , पृ0 466,गुलाबराय वही पृ248
8- गुलाब राय वही पृ0 243,
9- वही पृ 242
10- सारनाथ संग्रहालय सं0 बी0बी0 1,2,172,173,180
11- सारनाथ संग्रहालय सं0 बी0डी0 L , 8
12- अग्रवाल वासुदेव शरण 'राजघाट के खिलौनो का एक अध्ययन'नागरिक प्रचारिणी पत्रिका 1897,पाण्डेय उमा वाराणसी पृ 77, सारनाथ सं0सं0 एफ041,काला सतीश चन्द्र 'भारतीय मूर्ति कला, पृ0 32
13- मथुरा संग्रहालय सं0 56•4037,42•2957,44•3161,48•3375,54•3811, 56•4105,61•5218
14- दीक्षित रामकुमार कन्नौज पृ0 19

State Museum Library Lucknow 7229

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्रकलाः- भारतीय चित्र कला की सम्पदा में विविधता एवं नवीनता है एवं रंगो तथा भावनाओं का सुन्दर संगम है। मूर्ति कला के उच्चस्तर होने के कारण गुप्त कालीन चित्र कला अपने विकास की प्रारम्भिक मंजिलो की अपेक्षा न करने से अभिजात स्तरीय ही उपलब्ध हुई। अजन्ता तथा बाघ के चित्रकला के बेले ने केवल दक्षिण में लगी वरन भारत के बाहर समुद्र पार लंका चीन मध्य एशिया, में वट वृक्ष की भाँति शाखा प्रशाखा फैलती गई। गुप्तकालीन चित्रकला अपनी प्रेरणा और कार्यता में सर्वथा मौलिक रही । धर्म ने इसे चेरी बनाया इसने अपना कार्य साधा पर इसकी अर्चना न की । नृत्य करती मालविका को देखकर चित्रकार की कुशलता भी फीकी पड़ गई(1)। राजप्रसादों तथा भवनो में ही चित्रशालाओं(2) ,चित्रसदनो(3) तथा चित्र वीथियो का निर्माण हुआ । चित्रों का आलेखन, आचार्यो तथा पेशेवर चितेरो अथवा राज्य आश्रित कलावन्तो को छोड़ राजकुमारियां तथा अभिजात कुमारियां भी चित्रकला सीखती थी । राजप्रासादों (4) नगरो की दीवारो(5) बरामदों की छतो (6) मुख्य द्वार को दोनो ओर शंख , पद्म(7) के चित्रों के बने होने का उल्लेख कालिदास की कृतियों से हुआ है। भवन भीतर बाहर भित्तिचित्रों से चित्रित होते थे (8) (फलक फलका, तूलिका, कूँची, बुशो का उल्लेख हुआ है(10) । आदर्श एवं सौन्दर्य इस युग की विशेषता है(11)ह्वेनसांग ने कन्नौज का वैभव पाटलीपुत्र के समान बताया है(12)।

1- मालविका अग्निमित्र पृ0 5 (2) वही 105
3- रघु0 14/25 (4) वही 14/25
5-मेघदूत 1/17 (6) बाण हर्ष चरित्र पृ0 127
7-मेघदूत 17 रघु 16/16
8- उपाध्याय वही पृ0 189, अग्रवाल वासुदेव शरण 'हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 9।
9-रघु0 18/53,श कु0 पृ0 200-199,280,218,210,मालविका पृ0 12,732,5-6, 73, विक्रम पृ0 42
10- शकु0 पृ0 217, 199,20,210,विक्रम पृ0 42
11-मजुमदार आर0सी0 "इनसियेण्ट इंडिया" अध्या0 20 पृ0 490, बील'बुद्धिस्टिक रिकार्ड आफ दी वेस्टर्न वर्ड खण्ड 1 पृ0 257
12-वाटर्स भाग 1 वी= वही भाग पृ0 35, 340

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य युग मैं सांस्कृतिक एवं धार्मिक केन्द्रों से वास्तुकला के अनूठे भग्नावेश प्राप्त हुये है। कौशाम्बी से इमारती पत्थर प्राप्त हुआ है जो शिल्प कला का सुन्दर उदाहरण है(1) ।अहिच्छत्रा विशेष रूप से इमारत निर्माण में प्रमुख रहा है(2)। कुशीनगर से एक लकड़ी का टुकड़ा प्राप्त हुआ है उससे स्पष्ट है कि काष्ट कला का काफी विकास था(3)

विवेच्य युग में सम्राटोने अपनी विजय स्मृतियों के रूप में अनेक प्रस्तर स्तम्भो की प्रतिष्ठा की थी । महरोली (दिल्ली) का लोह स्तम्भ (4), बिलसड़ से कुमार गुप्त का अभिलेख (5), बुलन्दशहर से स्कन्द गुप्त का ताम्र अभिलेख(6), कुशीनगर से ताम्र लेख तथा ताम्र घट(7), कहावूं से स्कन्द अभिलेख(8), कुशीनगर की बुध्दि मूर्ति पर लेख(9) लोह खेड़ा से लेख(10), मथुरा का चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य अभिलेख(11)एवं सारनाथ शिला पत्र (12) विवेच्य युग की सांस्कृतिक क्षेत्र में अनुठी देन है।

संगीत कला :- संगीत की तीनो विधाओ का प्रचलन था जिसका प्रमाण है प्राप्त संगीतज्ञो की प्रतिमा जो मथुरा संग्रहालय में है(13) । कवि, पति विरहित नारी की जो कल्पना करता है उसमे यक्षणी गाने बजाने से विरत हो जाती है(14) बंशी, बांसुरी, वेणु, मुरली मुँह से बजाये जाते थे तूर्य, शंख, वीणा, घंटा, मृदंग, नगाड़ा आदि वाद्यो का प्रचलन था (15) वीणावादन करते हुये समुद्र गुप्त की मूर्ति सिक्को में मिलती है(16)

1- वाजपेयी के०डी० "युगो युगो में उत्तर प्रदेश" पृ० 31
2-वही अहिच्छत्रा पृ० 14 (3) नागर मदनमोहन कुशीनगर पृ5
4-सुम्र= समुद्रगुप्त महरोली अभिलेख(नागरी प्रचारिणी संस्था काशी प्रचारिणी वर्ष69 अंक3 पृ० 270, 281,) मित्तल प्रभूदयाल ' व्रज का सांस्कृतिक इतिहास' पृ० 379
5- वाजपेयी के०डी० "युगो युगो में उत्तर प्रदेश" पृ 27
6-वही पृ० 32 (7) वही पृ० 41, नागर मदन मोहन ''कुशीनगर '' पृ०5
8- वही पृ० 43 (9) नागर मदनमोहन 'कुशीनगर ' पृ० 5-7, श्रीवास्तव वी०एस० 'बुद्वा प्रडस्टल इंन्सक्रुपशन वी०एम०ए० यू०पी० भा-1, 1968 पृ० 16
10- वाजपेयी के०डी० "युगो युगो में उत्तर प्रदेश" पृ० 26
11-बाजपेयी के०डी० मथुरा भाग2 17(12)सारनाथ संग्रहालय संख्या सी०ए०1, 2, पाण्डेय उमा 'वाराणसी ' पृ० 70 गुलाबराय 'भारतीय संस्कृति पृ० 247
13- मथुरा सं० सं० 56" 30 20, 5477, 53" 3633
14-उपाध्याय 'इंडिया इन कालिदास' पृ० 225
15- वही पृ० 227
16-उपाध्याय गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास' पृ 225

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य युग में रंग मंच का भी उल्लेखनीय स्थान था । अभिनय कला का महत्वपूर्ण स्थान है । विक्रमोर्वशीय में राजा पुरुरवा किस प्रकार स्वर ताल में गाता था (1) । अभिनय कला का अच्छा ज्ञान था(2) गीत, वाद्य, नृत्य और प्रतीक मुद्राओं के संयोग से नाटकीय अभिनय विविध कलाओं के विकास में अभूतपूर्व उन्नति हुई । विवेच्य युग जैसे भावों के निरूपण में विख्यात था अभिनय की आढ्यतामें अनुपम था, वैसे ही नाटकों के असमान प्रणयन में असाधारण था ।

लेखन तथा साहित्य का व्यापी विकास हुआ अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का सृजन हुआ ।

आर्थिक व्यवस्था

कृषि :- विवेच्य युग में कृषि की दशा उन्नत थी । कालिदास ने यव, यवांकुर, धान, ईख, तिल, केसर आदि का वर्णन अपने साहित्य(3) में किया है गेहूँ तथा जौ की उपज अच्छी होती थी । ईख से गुड़ निकाला जाता था(4) बाण ने थानेश्वर इलाके के गेहूँ, ईख, सेम, अंगूर तथा अनार का उल्लेख किया है(5) हेनसांग ने अनेक प्रकार के धानों का उल्लेख किया है(6) । इत्सिंग ने आम, कटहल, केला, इमली, नारियल आदि का बहुतायत का उल्लेख किया है(7) रबी, खरीफ तथा साधारण फसल में अनेक प्रकार के धान्यों का उत्पादन होता था स्कन्दगुप्त ने बांधों की मरम्मत करायी थी । कालिदास ने केसर की खेती का उल्लेख किया है(8) । हेनसांग ने आम केला, कटहल की बहुतायत का उल्लेख किया है। काली मिर्च, एला(इलाइची) लौंग, चन्दन, कपूर का भी उल्लेख कालिदास ने किया है(9) । वर्षा काल की बड़ी तीव्रता से प्रतीक्षा की जाती(10) जीवन में कृषि की प्रधानता

1- उपाध्याय 'इंडिया इन कालिदास' पृ0 226
2- उपाध्याय भगवती शरण गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 146-147
3- रघु 7/27, 16/43, 13/49, कुमार 7/17, ऋतु 3/1, 10/16, 4/1, 7/18, 5/1, रघु 4/20, शकुन्तला पृ0 224
4- ऋतु 5/16 (5) बाण "हर्ष चरित्र" अध्याय 3
6- बील वही भाग 1 पृ0 177, वाटर्स वही भाग 2 पृ0 47
7- बील वृतान्त पृ0 43-44
8- रघु 4/67
9- वही 4/45-48, बील वही भाग 2 पृ0 193, 288
10- मेघदूत पृ0 18

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य युग में भी ऊसर भूमि को जोत में लाने का पुरस्कार भी घोषित करने का भी उल्लेख मिलता है(1)।

उद्योग धन्धे:- वस्त्र व्यवसाय(2) बहुत उन्नत शील था। वस्त्र महीन तैयार किये जाते थे (3), बाण ने राजश्री के विवाहोत्सव में बनाये गये अनेक प्रकार के वस्त्रों का उल्लेख किया है वार्धून की रंगाई, फूल पत्तियों को छपाई आड़ी लहरिया, कुमकुम के थापों की छपाई, चुन्नट डालना, आदि अलंकारिक वस्त्रों का उल्लेख किया है। ह्वेनसांग(4) ने अपनी भारत यात्रा के समय काशी के घरों को बहुमूल्य वस्तुओं से भरा पाया काशी रेशम आदि बहुमूल्य वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध था यहां के निवासी सम्पन्न थे मथुरा, कौशाम्बी, प्रयाग, अयोध्या, काशी, वैशाली आदि बड़े बड़े व्यापारिक केन्द्र थे (5)। रत्न परीक्षा नामक नवीन पद्धति का प्रारम्भ हुआ विवेच्य युग के अलंकारिक आभूषणों का अवलोकन करके सुनार कला का उन्नतशील होने का प्रमाण मिलता है। वाणिज्य, सैन्यक्रम, मत्स्य बुधम, जीवककर्म, ललितकाल, पुरोहित, कर्मव्याव, वृति गृहशिल्प आदि का वर्णन कालिदास ने अपनी कृतियों में किया है(7) खान उद्योग प्रगति पर था(9) कालिदास ने व्रज हीरा, पद्मराग, पुष्पराग, मरकत, महानील, , वैदूर्य स्फटिक, मणि शिला, सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त चांदी, तांबा, लोहा आदि वस्तुओं विवेच्य क्षेत्र को वैभव पूर्ण बनाने में विशेष सहयोग दिया। ह्वेनसांग(10) ने विवेच्य क्षेत्र सोने, चांदी से सम्पन्न बताया है। महरौली के लौह स्तम्भ की अदभुत ढलाई और धातु का पता उसके पन्द्रह सदियों से धूप, पानी में अलग खड़े होने से लगता है।(11)।

1- उपाध्याय भगवती शरण 'गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास' पृ0 247
2- अमर कोश राधा 113-119 (3) रघु0 16/43, 5/41, 49-73
4-बाण हर्ष चरित्र 5/2/120, अग्रवाल वासुदेव शरण ' हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ 74-75
5- पाण्डेय उमा 'वाराणसी पृ0 51-52
6-वाजपेयी के0डी0 'प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध पृ0 100
7- कामसूत्र 1/32, 82-1/10
8-रघुवंश 17/60, 16/38, मालविका अग्नि मित्र 1/17, शाकुन्तल पृ0 183
9- रघु0 6/19, 18/53-59, 13/38, 18/33, 11/28, कुमार 6/38, 1/44, 6/51, मनु 2/13, उपाध्याय इंडिया इन कालिदास पृ0 259
10- बील वही पृ0 7, 178, 239, 286, 501, 290, 298
11-उपाध्याय गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 148

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कालिदास ने गैरिक, शैलेय, सिन्दूर तथा मनःशिला आदि का उल्लेख किया है । (1) मजूमदार(2) ने भी विवेच्य युग की धातु कला को वैभव पूर्ण बताया है ।

व्यापारिक संगठनों का उल्लेख मिलता है । फाह्यान(3) ने व्यापारिक समृद्धि का उल्लेख किया है । उभयाभिसारिका(4) में कुसुम पुर की माल से खचाखच भरी दुकानों तथा माल लेने तथा बेचने वालों का उल्लेख है । नगर सेठ नगर का सबसे बड़ा व्यापारी होता था । व्यापारिक क्रय विक्रय में निगम का महत्वपूर्ण स्थान था(5) कुमार गुप्त के मंदसोर लेख से स्पष्ट होता है कि लाट देश से आये हुए रेशमी वस्त्र बुनकरों की एक श्रेणी थी । स्कन्द गुप्त लेख से तेलियों की श्रेणी का उल्लेख मिलता है । व्यापार के लिए माल (6) सात विभागों में बाँटा गया । जैसे :- गन्ने का व्यवसाय, रेहन बट्टे का काम, पशुओं का व्यापार, माल का झूठा दाम बताना, झूठा तोल रखना तथा विदेशों को माल पहुंचाना । रघुवंश में अयोध्या का जीर्णोद्धार करने वाले भवन निर्माता शिल्पी संघ(7), विक्रमवंशीय में नैगमों का (8), शकुन्तला में श्रेष्ठी(9) का उल्लेख हुआ है ।

व्यवहार मयूक में उद्धृत बृहस्पति ने नैगमों के संघ का उल्लेख किया है(10) नैगम अपने सिक्के भी ढालते थे (11) श्रेणियों के सदस्यों को अपना अपना कर्तव्य पालन करना पड़ता था(12) कौशाम्बी से कुमार गुप्त की तांबे की मुद्रा प्राप्त हुई है जिस पर राजा का सिर अंकित है मूँछे है, मुकुट नहीं लगा है । गरुड़ बेठा हुआ है तथा ब्राह्मी लिपि में 'कुमार गुप्त' लिखा है(13) कुमार गुप्त की कौशाम्बी से एक तांबे की मोहर भी प्राप्त हुई है । कुशीनगर से कुमार गुप्त के 6 चांदी के सिक्के तांबे की मोहर तथा चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य की एक स्वर्ण मोहर प्राप्त हुई है । सामने गरुड़ ध्वज है लक्ष्मी कमल पर आसीन है तथा ''श्री विक्रम'' अंकित है । कुशीनगर से ही रजत मुद्रा कुमारगुप्त की प्राप्त हुई है जिसमें मोर पंख फैलाये हुए है ।(14)

1- ऋतु 1/24, 4/17, कुमार 5/51, 1/55, 1/60, 6/61, रघु 12/80, 6/55/7/8 मालविका 3/5 (2) मजूमदार आर०सी० क्लासिकल एज भाग 3 पृ० 588
3- लेगे 'फाह्यान रिकार्ड्स आफ द बुद्धिस्ट किंगडम' पृ० 113
4- पृ० 182 (5) मोतीचन्द्र सारथवाह पृ० 174 (8x) कनिंघम 'आर क्लाजिकल सर्वे आफ इंडिया एनुएल रिपोर्ट 1903 पृ० 104
6- मोतीचन्द्र सारथवाह पृ० 177 (7) रघु 16/38 (8) 4/13
9- पृ० 219 (10) मुकर्जी 'लोकल सेल्फ गवर्नमेण्ट इन एनशेण्ट इंडिया पृ० 127
11- कनिंघम 'क्वाइन्स आफ एनशेण्ट इंडिया पृ० 63
12- मजूमदार आर० सी० क्लासिकल एज भाग 3 पृ० 604-5
13- बाजपेयी के०डी० 'इंडियन न्यूमेस्टिक स्टडीज' अध्याय 29
14- नागर मदन मोहन कुशी नगर पृ० 5-12

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राम गुप्त की 4 मुद्रायें तांबे की प्राप्त हुई है जिस पर शेर एवं गरुड़ अंकित है। झांसी जिले सेभी तांबे की मुहर प्राप्त हुई है।(1) चन्द्र गुप्त द्वितीय की तांबे की मुद्रा कौशाम्बी से प्राप्त हुई है (2) फर्रुखाबाद से हर्ष की स्वर्ण मोहर प्राप्त हुई है(3) यह मोल है इस पर परम भट्टारिका महाराजधिराज परमेश्वर श्री महाराजा हर्ष देव पाँच पंक्तियाँ अंकित है। मंडावर से सिक्के,(4) भीटा से(5) मिट्टी की मोहर तथा राजघाट(6) की खुदाई से अनेकों मुद्रायें उपलब्ध हुई है जिससे व्यापारिक उन्नत अवस्था का आभास होता है।

आवागमन के साधन उन्नत थे इस युग में व्यापारी मध्य एशिया के सब रास्तों का प्रयोग करते थे। चन्द्र गुप्त द्वितीय ने मथुरा में अपनी विजय को मजबूत किया (7) हूणों ने पंजाब तथा उत्तर प्रदेश से होते हुए पाटीलपुत्र को नष्ट कर दिया था जिसको स्कन्द गुप्त ने पराजित किया(8) फाहियान(9) रेगिस्तान को पार कर राजपथ द्वारा मथुरा-संकाश्य-कान्यकुब्ज,-साकेत-कपिलवस्तु-कुशीनगर-वैशाली-पाटीलपुत्र-राजगृह-गया तथा वाराणसी पहुँचा ह्वेनसांग(10) मथुरा-संकाश्य-स्थानेश्वर-सघाना-मतीपुर-ब्रह्मपुर-गोविषना-पिलुसना-कपित्थ-कान्यकुब्ज-नवदेवकुला-अयोध्या-हयमुख-प्रयाग-कोशाम्बी-श्रावस्ती-कपिलवस्तु-रामग्राम-कुशीनगर-बनारस-वैशाली पहुँचा। बाण ने सड़कों के सुन्दर प्रबन्ध का उल्लेख किया है(11) राजगृह से पाटलिपुत्र को होकर भारत के उत्तर पश्चिमी छोर जाती थी कालिदास ने इसको महापथ के नाम से अभिहित किया(12) राजमार्ग विशेषरूप से सुसज्जित रहता दोनों ओर सुन्दर एवं व्यवस्थित दुकानें थी (13) इन मार्गों से गुप्त सेनायें बराबर आया जाया करती थी। कश्मीरी धर्म मथस बौद्ध भिक्षुक ने मध्य एशिया के रास्ते, कुमार जीव ने चीन की, बुद्ध यशस ने काश्मीर से काशगर की, गौतम प्रज्ञारुचि ने मध्य एशिया के रास्ते से जिन गुप्त ने खोतान की, बुद्ध मुद ने चीन की, गुण वर्मण ने जावा की यात्रा की (14)

1- जे० एन० एस० आई० 18 (1) प्लेट 8, 1
2- बाजपेयी के० डी० 'इंडियन न्युमेस्टिक स्टडीज अध्याय 29
3- बाजपेयी के० डी० वही अध्याय 37 प्लेट 7, 8, बाजपेयी के० डी० कन्नौज का पुरातात्विक वैभव, कन्नौज महोत्सव स्मारिका 7 मई 1978
4- बाजपेयी के० डी० 'युगों युगों में उत्तर प्रदेश' पृ० 33
5- बनर्जी जीतेन्द्र नाथ का "डेवलपमेंट आफ हिन्दू इकनोग्राफी" पृ० 181 सुनर 'एक्सोप्रेशन एट बस राड आर्केलाजी सर्वे आफ इंडिया एनुएल रिपोर्ट 1913-1914
6- बाजपेयी के० डी० "प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध" पृ० 88-92
7- फ्लीट गुप्त इंस्क्रिप्शन 4 पृ० 27 (8) मोतीचन्द्र 'सार्थवाह' पृ० 173
9- लेगे ट्रेवल्स आफ फाहियान पा० 18, मोतीचन्द्र 'सार्थवाह' पृ० 185
10- त्रिपाठी रमाशंकर 'हिस्ट्री आफ कन्नौज' पृ० 87 से 97 कनिंघम आर्केलाजी सर्वे आफ इंडिया भाग 1 1862 पृ० 63-65 प्लेट 2
11- बाण हर्ष चरित्र पृ० 273 लूनिया वही पृ० 218
12- कुमार 7/3 (13) रघुवंश 14/30 (14) मोतीचन्द्र सार्थवाह पृ० 180-182

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिससे स्पष्ट है कि इस समय आवागमन के साधन कितने प्रगतिशील थे ।

जलमार्ग भी विकसित थे । कालिदास (1) ने तेजचलने वाली नौका का उल्लेख किया है। जहाजों के टूटने का भी उल्लेख मिलता है(2)

पूर्व परम्परा के अनुसार अरब ईरान और यूनान के घोड़े भारत आते थे । कालिदास ने (3) 'वनायु' जाति का वर्णन किया है। कंबोज के घोड़े भी विवेच्य युग में उपलब्ध थे (4) यहां से पूर्व देशो को मोती, चमकीले पत्थर, ऊनी सूती कपड़े, सुगन्धित पदार्थ , नील, औषधियां तथा हाथी दांत की वस्तुये प्रमुख थी (5) हाथी गदा, सुपाड़ी ,खालें , चमड़े की ढाले, मोम, चन्दन का भी निर्यात होता था(6) प्रागज्योतिष (आसाम) के शासक हर्ष को उपहार मे बहुत हीसुन्दर छत्र एवं अन्य बहु= बहुमूल्य वस्तुये प्राप्त हुई थी (7)। छत्र के अतिरिक्त विशिष्ट आभूषण, चूणामणि,श्वेतहार, क्षौमवस्तु, मधुपीने के चषक,ढाले, भोज पत्र के समान मुलायम जाति पत्रिकाये नम चित्रपटों के तकिये, बेंत के बुनेआसन, पुस्तको हरी सुपारियो के झुण्ड, चन्दन, कपूर कातेल,कपूर के ढले, उपहार में प्राप्त हुये थे ।जिससे विदित होता है कि विवेच्य युग विविधाओं का युग था(8)कौशाम्बी तथा वैशालोकी मुहरो से (9) स्कन्दगुप्त के इन्दौर ताम्रपत्र(10)तथा साहित्यिक लेखो(11) सेस्पष्ट है कि निगमो सर्थवाहो के माध्यम से व्यापार व्यवस्थित ढंग से चलता था यह वैंको का कार्य भी करते थे । अतः स्पष्ट है कि विवेच्य युग में आर्थिक दशा उन्नत थी ।

1- रघु वंश 16/68 उपाध्याय इंडिया इन कालिदास पृ0 263
2- शकु0 अंक 6, रघु 13/1-17,4/50,6/57
3रघु0 5/7/3 (4) वही 4/69-70
5-बाजपेयी के0डी0 ,प्राचीन भगर का विदेशो से सम्बन्ध पृ0 127
6- मजूमदार आर0सी0 स्वर्ण दीप जिल्द 2 पृ0 34-37
7-बाण हर्ष चरित्र पृ0 216-219
8-अग्रवाल वासुदेव शरण हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 167 से 168
9- कनिंघम आर्किलाजी सर्वे रिपोर्ट 1903,-4, पृ0 107
10- मजूमदार आर0सी0 कारपेरेट लाइफ इन ऐंसियेण्ट इंडिया पृ0 68-73
11- रघु0 16/38, विक्रम4/13, कुमार 5/13,ऋतु 4/21,अलतेकर ए0एस0 ए न्यू हिस्ट्री आफ इंडियन पिपटो भाग 6 पृ0 359-60

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिक्षा और साहित्य

विवेच्य युग साहित्य सृजन का युग था यदि हम साहित्य आकाश के झरोखे से झांक कर देखे तो माँ भारती के भवन को अलंकृत करने हेतु अनेक साहित्यकार नक्षत्रो के समान जगमगाते अवलोकित होगे।

कालिदास ने अध्ययन के विषयो को विद्या कहा है(1) गुप्तकालीन लेख से 14 विधओं की पुष्टि होती है। रघुवंश(2) में श्रुतिग्रन्थ वेदांग तथा स्मृतियो का उल्लेख किया।वादविवाद का उल्लेख मालविका (3) में हुआ है रघुवंश से (4) विदित होता है कि विद्या का प्रारम्भ उपनयन संस्कार से होता था। कालिदास की कृतियों (5) से विदित होता है कि अक्षरज्ञान के साथ ही भाषा का अध्ययन प्रारम्भ होता।विधाध्ययन के साथ ही चरित्रपर भी ध्यान दिया जाता था (6) हर्ष स्वयं ही विद्यानुरागी सम्राट था। हेनसांग ने ब्राह्मण आचार्यों की भूरि भूरि प्रशंसा की है(7) वाण ने 14 वर्ष तक वेदो का अध्ययन किया था(8) रघुवंश (9) के अनुसार राजकुमारो को राजनीति के साथ ही सभी विषयो का ज्ञान होना अनिवार्य था। कालिदास (10) ने गुरु शिष्य के सम्बन्ध को महत्वपूर्ण बताया है। भाषा का ज्ञान वर्ण परिचय से कराया जाता था तथा(11) अक्षर भूमि पर लिखकर याद होते थे (12) प्राप्त हुये अभिलेखो से विदित होता है कि लेखन कला काफी विकसित थी (13)संस्कृत के क्षेत्र में विवेच्य युग कासाहित्य मौलिक सृजन की दिशा में अपना सानी नही रखता धार्मिक भावनाओं का प्रसार करने हेतु संस्कृत के ललित रचना विधान का आश्रय लिया था।रस उसका रक्त प्रवाह बना।

---55

1,- रघु 1/8, 2/88, 3/30, 21; /18, 18/40, (2)2/3, 3/21, 5/2, 5/23, 1/59, 15/33 2/2, 8/41

3- 1/18, (4) 3/29, (5)रघु 3/28,शकु० पृ० 150

6- मजूमदार आर०सी० क्लासिकल एज पृ० 380, (7) वाटर्स वही भाग। पृ०159-160

8- चटर्जी गौरीशंकर हर्ष वर्द्धन पृ० 226 (9)रघु 1/8, 1/9, 4/13, 18/67, 1/17 4/7, 17/68, (10) वही 3/29

11- वही 3/28 शकु० पृ० 150

12- रघु० 18/96

13-विक्रम पृ० 56 मालविका 10, 11, 101, 102 कु० शकु० पृ०67, 87, 124, 150

रघु० 3/28, 18/46

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रबन्ध कथाये कलेवर बनी जिससे यद्यपि परिणाममें गृहत्याग की घोषणा मिली, गृहस्थ का जीवन भरा पूरा और भारती मुखी हुई। अश्वघोष(1) के बुध्द चरित्र तथा "सौन्दरनन्द" अवदान शतक दिव्यवदान, यामातृचेट का शत पंचाशतिक स्त्रोत" आर्यशूर(2)की जातक माला, आर्यदेव की चतुः शान्तिका, शान्तीदेव ने " बोधिचर्यावतार" हरिषेण अभिलेख, कालिदास के कुमार सम्भव, शकुन्तला, रघुवंश , विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्त, ऋतु संहार भारवी का अर्थगौरव, "किरातार्जुनीय , भटिट कोभटिटकाव्य, कुमारदास था जानकी हरण, भास के नाटक, शूद्रक का मृच्छकटिक, विशाखदत्त का मुद्राराक्षस, देवीचन्द्र गुप्तम, सम्राट हर्ष के रत्नावली(3) प्रियदर्शिका , नागानन्द तथा प्रसिध्द कवि वाण का सुबन्धु का वासवदत्ता हर्ष तथा कादम्बरी महत्वपूर्ण संस्कृत साहित्य की कृतियां है।

विवेच्य युग की साहित्यानुवर्ती रचनाओं में दण्डी का काव्यादर्श, भामह का काव्यालंकार सूत्र, वराहमिहिर की वृद्धसंहिता साहित्य की महान ज्योति स्तम्भ है। कोशकारिता के क्षेत्र में अमर का नामालिंगानुशासन, अमरकोष अत्यधिक प्रसिध्द है।विवेच्य युग में विष्णु पुराण, शिव पुराण, भागवतपुराण, मार्कण्डेय पुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण की रचना गुप्तकाल मे ही हुई(4) आयुर्वेद का पंडित वाभटट, गणित तथा ज्योतिष आचार्य आर्यभटट4 बराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, लाट नारद, वृहस्पति, वात्सयायन, याज्ञवल्क्य व्यास, पराशर, स्मृतियों का निर्माण इसी काल में हुआ , वात्सायन का कामशास्त्र, भारद्वाज । न्याय वर्ति था, माणिक्यनन्दी का परीक्षामखसूत्र, प्राकृत तथा अपभ्रंश में कर्मदास तथा सप्पदास ने " वासुदेव हिंडी सिद्ध सेन का सम्मतितर्क सूत्र, वररुचि का प्राकृत प्रकाश, चणका प्राकृत लक्षण, राजाप्रवरसेन का सेतबन्ध का प्रमुख एवं उल्लेख महत्ता थी । तमिल साहित्य में जीवक चिन्तामणि, सिलप्पादिकारम, नीलगिरि, मणीकर काक जैन प्रसंगो से गर्भित और मुखरित है।

स्पष्ट है कि विवेच्य युग संस्कृत के लिये सुइकारो का था। ललित काव्य तो इस समय अनुपम रचा ही गया तथा अन्य भाषा एवं साहित्य ने असाधारण प्रगति की । सर्वसिद्धांत तथा दशमलव का सिध्दांत का भी सर्व प्रधान विवेच्य युग की ही देन है। विवेच्य युग के साहित्य, अभिलेखो ललितकलाओ की प्रगति से शिक्षा की प्रगतिवाद अवस्था का आभास होता है।

1- उपाध्याय, गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 89
2- कीथ - हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर ,
3- सिंहराज किशोर प्राचीन भारतीय कला और संस्कृति 305 से 308, चटर्जी गौरीशंकर हर्ष वर्धन पृ0 106-177
4- रघु0 1/8, 23-88, 3/30, 27/10, 18/40

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धार्मिक अवस्था

विवेच्य युग दक्षिण पर्यन्त एकता का प्रतीक है वहाँ पर भारतीय वर्चस्व और अन्योन्याश्रित अन्तरा वेलवित समन्वित संस्कृति का प्रतीक है। धर्म तथा दर्शन के क्षेत्र में अभूतपूर्व उन्नति हुई।

वैष्णव धर्म:- विवेच्य युग में वैष्णव धर्म का विशेष प्रचार एवं प्रसार हुआ। गुप्त शासक परम भागवत थे । प्रारम्भ में विष्णु के वामन, वराह, नरसिंह और वासुदेव कृष्ण चार अवतारो की गणना की गई। उनमें दशरथ राम तथा परशुराम भी सम्मिलित किये गये। विष्णु की उपासना के साथ लक्ष्मी देवी का भी समावेश हुआ।

विष्णु:- गुप्त परम भागवत थे कारण उनके ध्वज पर अंकित था तथा परम भागवत महाराजाधिराज की पदवी से सुशोभित थे (1)। विष्णु की अनेक मूर्तियां मथुरा संग्रहालय (2) लखनऊ संग्रहालय (3) में है। विवेच्य युग की अनेक मूर्तिया इस बात की प्रमाण है कि वैष्णों धर्म का बोलबाला था(4)। महाकवि कालिदास ने (5) रघुवंश में एक स्थान पर विष्णु के आयुधो को चेतन बताया है। विष्णु के अनेक अवतारो की गणना की गई है।

वराह तथा नरसिंह:- विवेच्य युग में वराह की उपासना को पर्याप्त बल मिला। इस समय की मथुरा की वराह प्रतिमा तथा देवगढ़ की वराह की प्रतिमा विशेष दर्शनीय है। पशुरूपी वराह के समूचे शरीर पर बलकल पहने हुए कमण्डलधारी ऋषि तथा देव प्रतिमाये अंकित है(6)। वराह के यज्ञ वराह तथा पशु वराह रुप मिलते है(7) विष्णु के नरसिंह अवतार का प्रमुख स्थान था देवगढ़ के केवल नरसिंह (8) भारत कला भवन वाराणसी में लेखा अंकित चौमुखे स्तम्भ पर बने नरसिंह (9) , लखनऊ के बनारसी बाग में स्थित नरसिंह प्रतिमा (10) अहिच्छत्रा (11) से खण्डित प्रतिमा से विदित होता है कि विवेच्य युग में विष्णु के वामन तथा नरसिंह औतारो को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया ।

1- मथुरा संग्रहालय सं० 15-984, 59-984, 59-4838, 49-4838, 24-2525
2- मजूमदार आर०सी० क्लासिकल एज भाग 3 पृ० 414
3- लखनऊ संग्रहालय, सं० एच० 11-110 (4)मथुरा सं० 56-4225, 70-151, 58-4181, 56-4057, 42-2854, 44-3134, 56-5105, 54-3011, 40-3375, 81-5218, ... पृ० 78, ठाकुर एस०आर० अग्रवाल वासुदेवशरण "हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन" ... ग्वालियर नं० 2 पृ० 3 कैटालाग आफ स्कल्पचर इन आर्कियोलॉजिकल म्यूजियम ग्वालियर नं० 2 पृ० 3
5- रघु० 10/12, मजूमदार आर०सी० एनसियेन्ट इंडिया पृ० 50
6- मथुरा सं० बी० 13, शिवराम मूर्ति का लेख "एनसियेन्ट इंडिया जनवरी 1950, प्लेट 14सी
(7) मथुरा सं 70, 58, 52-4839, (8)बनर्जी जितेन्द्र नाथ द डेवलपमेंट आफ हिन्दू एकोनोग्राफी प्लेट 23 फिग 3(9) जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ० 100 (10)
(10) वही (11) वही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विश्वरूप तथा राम :- मथुरा से विश्वरूप की अनेकों प्रतिमायें प्राप्त हुई है (1) विवेच्य युग में राम की कोई स्वतंत्र मूर्ति प्राप्त नहीं हुई है रामकथा के चित्र देवगढ़(2) में राम मन्दिर में अहल्योद्धार, सीताहरण, सेतुबन्ध एवं मृतसंजीवनी के दृश्य इलाहाबाद संग्रहालय की शिला पर अंकित राम लक्ष्मण की धनुर्धारी मूर्ति(3) सारनाथ से प्राप्त राम लक्ष्मण की प्रतिमा(4) श्रावस्ती से प्राप्त सुग्रीव की मूर्ति(5) से स्पष्ट है कि विवेच्ययुग में राम का महत्वपूर्ण स्थान था।

कृष्ण :- विवेच्युग में मुरलीधर कृष्ण के रूप की अपेक्षा गोवरधन धारी कृष्ण का रूप बहुत प्रिय था (6) वासुदेव सम्प्रदाय का काफी बोलबाला था। कालिदास(7) ने कृष्ण के मोर पंख, भाई बलराम तथा कृष्ण पत्नी रुक्मणी का तथा कौस्तुभ मणी का उल्लेख किया है। बाण ने भागवतों तथा पंचरात्रियों का अलग अलग वर्णन किया है। गढ़वा से प्राप्त भीम जरासन्ध युद्ध का दृश्य(8) देवगढ़ से प्राप्त खण्डित शिला पर कृष्ण और अर्जुन दृश्य(9) भारत कला भवन वाराणसी की विशाल गोवरधन धारी प्रतिमा(10) तथा देवगढ़ से(11) कृष्ण यशोदा प्रतिमा, भीतरगांव की कृष्ण लीलाओं के दृश्य(12) सहतमहट से कृष्ण यशोदा फलक(13), चन्दौसी का प्रलम्ब बलराम फलक(14) तथा मथुरा से कालिया दमन का दृश्य (15) से स्पष्ट है कि वासुदेव सम्प्रदाय का काफी प्रचार था। विवेच्ययुग में हयग्रीव (16) तथा सिंह वराह विष्णु का रूप अत्यधिक प्रिय था(17)। देवगढ़ का नर नारायण का अंकन उल्लेखनीय है।(18)

1- मथुरा संग्रहालय सं० 44-42, 2989, 54.3836, 61, 5219, 61.5310, 54.3837
2- कुमार स्वामी हिस्ट्री आफ इंडिया एण्ट इंडोनिजयम आर्ट फिगर 167 मिश्र प्रभाकर नाथ देवगढ़ और एलोरा के रामायण सम्बन्धी दृश्य, राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त अभिनन्दन ग्रंथ कलकत्ता पृ० 806-813
3- संग्रहालय सख्या 261 (4) संग्रहालय संख्या सी० 33/135
5- कनिंघम आर्कलाजी सर्वे आफ इंडिया ऐनुअल रिपोर्ट 1907-8 फिगर 2 पृ० 29
6- अग्रवाल आर०सी० 'कृष्ण लीला' प्लेक्स प्रेम सेन्टर इंडिया के०आई०ए० रास०ओ० न्यू सीरीज भाग 2 1967 पृ० 69
7- पूर्व मेघ० पृ० 15, 49, मालविका अग्निमित्र 5/2, रघु० 6/49
8- लखनऊ संग्रहालय संख्या एच० 88 (9) ल्यटेस्टल इंडीस्चे कपच्छ। वर्ली न 1960 पृ० 33-35 (10) जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम वही पृ० 104, वाराणसी संग्रहालय सं० 180
11- वार्ट गुप्ता टेम्पिल एट देवगढ़ (12) सिंग आर०सी० भीतरगांव ब्रीक टेम्पिल' बुलेटिन आफ म्यूजियम एंड आर्कलाजी यू०पी० न० 2, 1968, पृ० 35
13- लखनऊ संग्रहालय सं० 67, 124 ए०एस०आई० न० 7, 1952 पृ० 28-29
14- अग्रवाल आर०सी० वही 91 फिगर 2(15) मथुरा संग्रहालय संख्या 44-3374
16- मथुरा संग्रहालय संख्या 36.2864
17- मथुरा संग्रहालय संख्या 34.2525, 34.2480, 54.3836 डी०एच०आई० पृ० 401
18- जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम जोशी वही पृ० 208

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनन्त :- विवेच्य क्षेत्र में अनन्त पूजा का भी काफी प्रचार था । कुटारी इलाहाबाद से प्राप्त चौमुखी मूर्ति (1) तथा देवगढ़ झांसी से प्राप्त खण्डित मूर्ति (2), देवगढ़ के दशावतार मंदिर के मुख्य द्वार तोरण पर बनी आसनस्थ मूर्ति (3) तथा भीतरगांव के एक मृत फलक पर बनी द्विभुज प्रतिमा का उल्लेखनीय स्थान है । स्पष्ट है कि विवेच्य युग में वैष्णव धर्म का काफी प्रचार था ।

शैव धर्म :- विवेच्य युग में शैव धर्म का काफी विकास हो चुका था । वैशाली(4) से एक अर्ध नारीश्वर अंकित शैव मोहर तथा भीटा(5) से प्राप्त मोहर, राजघाट(6) से प्राप्त मोहर पर देव स्वामी के नाम से द्विभुज शिव खड़े हैं । प्राप्त हुई है जिससे स्पष्ट है कि विवेच्य युग में शैव धर्म चिन्हों को अपनी मोहरों पर भी अंकित करया । अहिच्छत्रा (7) के शिव फलक, भीतरगांव (8) के इष्ट के मंदिर पर शिव पार्वती तथा मथुरा(9) से भी फलक प्राप्त हुए हैं जिस पर जटाधारी शिव, नेवल उन्नाव (10) के शिव फलक प्राप्त हुए हैं । कालिदास ने शिव भक्ति को अपनी कृतियों में व्यक्त किया है । कुमार सम्भव को शिव महिमा से ही प्रारम्भ है । योगी शिव की ही उपासना करते हैं (11) पशुपत्र अस्त्र के लिए अर्जुन ने घोर तपस्या की थी ।(12) बाण ने भी प्रस्थान से पूर्व शिव बन्दना की थी ।(13) सरस्वती प्रतिदिन शिवलिंग बनाकर उनके पंच ब्रह्म रूप की पूजा करती थी । स्थानेश्वर में शिव विशेष पूजित थे ।(14) बनारस में दस सहस्र शिव भक्त थे । तथा ऊंची धातु की शिव मूर्ति थी (15) ह्वेनसांग ने अहिच्छत्रा आदि स्थानों पर पशुपत सम्प्रदाय का वर्णन किया है (16) हर्ष शिव का अनन्य उपासक था(17) फर्रुखाबाद से प्राप्त हर्ष के स्वर्ण सिक्के पर नन्दी के साथ शिव पार्वती का अंकन शिव उपासना का प्रतीक है । कौशाम्बी से शिव पार्वती (फलक 13 चित्र 76) मथुरा से जटाधारी शिव मुख (फलक 13 चित्र 78) (18) तथा कैलाश दोहन (फलक 13 चित्र सं० 77) प्राप्त हुई है । भीटा से शिवलिंग (फलक 15 चित्र 88), अहिच्छत्रा से महाभैरव (फलक 15 चित्र 87) प्राप्त हुआ है

1- इलाहाबाद संग्रहालय सं० 292 (2) मिलाअपराजिता पृच्छा सं० 219, 3-8 पृ० 559

3- वही 110 पृ० 40 ~~(4) डी० एच० आई० पृ० 184~~

4- डी० एच० आई० पृ० 181 (5) वही पृ० 182

6- वही पृ० 188 (7) अग्रवाल वी० एस० टेरीकोटा फिगर आफ अहिच्छत्रा ऐनीसिएंट इंडिया भाग 4 1948 प्लेट एल 11

8- सिंह रामचन्द्र भीतर गांव ब्रीक टैम्पल बुलेटिनआफ म्युजियम एण्ड आर्कलाजी इन यू० पी० लखनऊ संग्रहालय भाग 2 1968 नं 12 पृ० 34

9- आर्कलाजी म्युजियम मथुरा नं 27-23, 1629

10- अग्रवाल आर० सी० अनपब्लिश्ड टेरीकोटा एण्ड स्कल्पचर इन द नेशनल म्युजियम नई दिल्ली एण्ड सम एलाइड प्राब्लम ईस्ट एण्ड वेस्ट भाग 17 पृ० 277-78

11- उपाध्याय इंडिया इन कालिदास पृ० 313 (12) वही पृ० 314

13- बाण हर्ष चरित्र पृ० 38 (14) वही पृ० 19

15- वही पृ० 151 (16) वाटर्स जिल्द 2 पृ० 87, 242

17- बाण हर्ष चरित्र पृ० 150

18- मथुरा संग्रहालय संख्या 54-3827, एस० एम० एस० जे० 883 सी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार्वती का अहिच्छत्रा से (फलक। 5 चित्र 89) प्राप्त हुआ है। शमशान में निवास करने के कारण ही शिव का नाम भूतनाथ पड़ गया (1) अहिच्छत्रा (2) से शिव पार्वती तथा महाभैरव एवं दक्षिणामूर्ति, मथुरा(3) से एकाकी शिव, शिव की खण्डित प्रतिमा मस्तक, मूसानगर(4) की शिव प्रतिमा, मथुरा तथा कौशाम्बी से शिवपार्वती पार्वती की प्रतिमा(5) सारनाथ की अर्धनारीश्वर प्रतिमा(6), मथुरा(7) की लकुनीश मूर्ति, मथुरा का (8) चन्द्रगुप्त द्वितीय का अभिलिखीत स्तम्भ, मथुरा (9) की रावण अनुग्रह मूर्ति भिक्षाटन मूर्ति (10) हरिहर प्रतिमा प्रयाग संग्रहालय(11) कौशाम्बी से शिवलिंग(12), मथुरा के मूर्ति लिंग से विदित होता है कि विवेच्य क्षेत्र में शिव पूजा का बाहुल्य था। कन्नौज मे हर्ष काबनवायाहुआ शिव मंदिर का उल्लेखनीय स्थान था(13)।

शक्ति पूजाः- शक्ति पूजा का विशेष प्रचार था। गुप्त कालीन सिक्कों पर लक्ष्मी की प्रचुरता से दर्शन होते है। वाराणसीसे(14) प्राप्त कमल धारनीय लक्ष्मी तथा भीतरी प्रदक्षिणा मार्ग से मिली सुन्दर गज लक्ष्मी उल्लेखनीय है। लक्ष्मी बरदान स्वरूप प्राप्त हुई है(15)वाण ने सरस्वती का भी उल्लेख किया है(16) मथुरा से वसुधरा की मूर्ति भी प्राप्त हुई है(17) एकनशा देवी के दर्शन, कौमदी महोत्सव(18) नाटक में होते है तथा वृहत संहिता(19) में चतुर्भुज अष्टभुज के दर्शन होते है।मथुरा से पार्वती प्रतिमा प्राप्त हुई है(20) वाण ने चामुण्डा देवी का भी उल्लेख किया है।(म्२1) वैशाली से जहाज पर लक्ष्मी की मूर्ति भी प्राप्त हुई है। (फलक सं0 7 चित्र सं0 33द) दुर्गा पूजा का भी काफी प्रचार था। दुर्गा की मूर्ति मथुरा संग्रहालय से सरक्षित है(22)

1- उपाध्याय "इंडिया इन कालिदास" पृ0 311-12, (2) संग्रहालय सं0 20-382
3- संग्रहालय सं0 56-331, एल668,54-3827, जे0 683
4- जोशी एम0 पी0 प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ0 35
5- मथुरा सं0 सं0 11-2108, 34-2495, टी0 एच0 आई0 न0 2 पृ0 469, इंडियन म्युजियम कलकत्ता सं0 25040, (6) सारनाथ सं0 वीथिका 2 मूर्ति सं0 624
7- मथुरा सं0 सं0 45-3211, (8) वही 29-1931
9- आर्कलाजिकल म्युजियम मथुरा 35-2577 (10) लखनऊ सं0 सं0 एच0 104
11- प्रयाग सं0 सं0 292 (12) इलाहाबाद सं0 सं0 636
13- ~~जी- मथुरा सं0 सं0 159~~ (13) बाजपेयी के0 डी0 युगों युगो में उत्तरप्रदेश पृ0 124, दीक्षित रामकुमार कन्नौज पृ0 19 (14) लखनऊ सं0 सं0 55-201
15- अग्रवाल वासुदेव शरण "हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन" पृ0 61-62
16- वही पृ0 15-18 (17) मथुरा सं0 सं0 50-3547
18- कौमदी महोत्सव सम्पादक कवि रामकृष्ण तथा रामनाथ शास्त्री अंक2 1929, पृ0 38
19- 57-3739 (20) मथुरा सं0 सं0 53, 3843, 58-4734
21- अग्रवाल वासुदेव शरण "हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 179
22- मथुरा संग्रहालय संख्या 88-4, 60-4935

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ह्वेनसांग को भी यात्रा के समय ठगो ने दुर्गा देवी मे बलि चढ़ाने हेतु डाल दिया था परन्तु संयोग से वह बच गया था(1) कादम्बरी से (2) विदित होता है कि मातंग नामक सरदार रक्त से भीगा हुआ त्रिशूल रखता था। कादम्बरीमेंही (3) दुर्गा को खीर पुये तथा सुगन्धित पदार्थ चढ़ाते हुये पाते है।

महिष मर्दिनी एवं सिंह वाहिनीः- मथुरा (4) तथा अहिच्छत्रा (5) से चर्तुभुज महिर्ष मर्दनी की मूर्ति प्राप्त हुई है। चन्द्रगुप्त की मुद्राओं पर सिंह वाहिनी के दर्शन होता है इस अस प्रकार की मूर्ति वाराणसी के कामाक्षा मंदिर में स्थापित है(6)। भारतीय कला भवन वाराणसी (7)में इंद्राणी की एक मात्र मुर्ति प्राप्त हुई है। स्पष्ट है कि देवियो की महत्ता थी।

विवेच्य युग मे गंगा यमुना का अत्यधिक महत्व था ये दोनो देवियां बहुधा मंदिरो के द्वार स्तम्भों को अलंकृत करने लगी। कालिदास ((8) ने गंगा यमुना का वर्णन किया है। हर्ष ने गंगा के तट पर ही अपना महामोक्ष परिषद का दानयज्ञ सम्पन्न किया था। बाण ने गंगा का वर्णन किया है(9) ह्वेनसांग के अनुसार गंगा के प्रति विशेष श्रद्धा थी (10) कालिदास ने गंगा की शिव की चमुर कारिणी के रूप में उल्लेख किया है(11) भारवा मंडल से भी गंगा प्रतिमायें प्राप्त हुई है(12)

मातृकायें :- विवेच्य युग में सप्त मातृकाओं का महत्व निहित थी परन्तु मूर्तियों का निर्माण प्रारम्भ हो गया था। ब्राह्मणी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, बराही, इन्द्राणी तथा यमी। उनका परिगणन गुप्त कालीन कोषकार अमरसिंह ने अमरकोषमें किया है। कालिदास ने संयुक्त रूप से मातरः कहा है। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में मातृकाओं का महत्वपूर्ण था।

1- वील वही भाग। पृ0 87
2- पृ0 748 (3) वही
4- मथुरा सं0 सं0 15.600, 42.2947
5- अग्रवाल वी0एस0 टेरीकोटा फिगर फ्रेम अहिच्छत्रा, एंशिएंट इंडिया न0 4, 1948 पृ0 145-182
6- कुलेश्वर नाथ0 द0 भगवती दुर्गा आज वाराणसी 38.8, 1957
7- संग्रहालय सं0 20.362 (8) कुमार सम्भव 7/42, रघु0 13,54 वार्टर्स जिल्द पृ0 309, 328 (9) हर्ष चरित्र 257
10- वार्टर्स ह्वेनसांग ट्रेवल्स इन इंडिया पृ0 भाग। पृ0 319, 384
11- कुमार 6/7, कुमार सम्भव 7/38
12- बाजपेयी के0डी0 युगो-युगो मे उत्तर प्रदेश पृ0 21

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्तिकेय:- विवेच्य युग में मथुरा (1) वाराणसी (2) तथा इलाहाबाद संग्रहालय(3) में कार्तिकेय की सुन्दर प्रतिमा उपलब्ध है जिसे स्पष्ट होता है कि विवेच्य युग में कार्तिकेय की पूजा का प्रसार था। कुमार गुप्त ने कार्तिकेय के वाहन मयूर अपने ध्वज पर अंकित कराया। इन्द्र एवं ब्रह्मा द्वारा कुमार का अभिषेक किये जाने वाली मूर्ति से (4) विदित होता है कि कुमार की पूजा का प्रसार था। स्कन्द के छै मस्तक थे (5)। स्कन्द के लिये जटी तथा शिखण्डी शब्दों का प्रयोग हुआ है(6)। कार्तिकेय का वाहन मयूर है(7)देवगढ़ से (फलक।। चित्र संख्या 59,60,61,)ब्रह्मा कार्तिकेय की मूर्ति प्राप्त हुई है।स्पष्ट है कि काफी रस की धारा प्रवहित थी।

सूर्य:- इस समय सूर्योपासक सम्प्रदाय का नाम सौर सम्प्रदाय था। शिव,विष्णु, और शाक्त के साथ सूर्य गणपति को भी सम्मान मिला(8)। सूर्योपासना का प्रतीक है। मंडल और मूर्ति तथा कमल (9), गुप्तकाल में स्वतंत्र रूप से बनाई गई सूर्य प्रतिमायें अधिकतर दण्ड पिंगल के साथ है(10)। हर्ष के पिता सूर्य के परम उपासक थे (11)। कन्नौज मे हर्ष का बनवाया हुआ सूर्य मंदिर था एक हजार व्यक्ति देव पूजा के लिए नियुक्त थे (12) कालिदास (13)ने विक्रमवंशीय में सूर्य के उपस्थान का उल्लेख किया है। मन्दसौर अभिलेख में कुमार गुप्त का सूर्य मंदिर के जीर्णोद्धार का उल्लेख है। कालिदास (14) ने सूर्य के 7 अश्वों का उल्लेख किया है। हर्ष ने बौद्ध सम्मेलन मेंबुध्द के साथ सूर्य और शिव की मूर्ति थी।

1- मथुरा सं० सं० 38• 2794, 32• 2270
2- अग्रवाल पी०वी० स्कन्द कार्तिकेय प्लेट सत्तरह
3-इलाहाबाद संग्रहालय सं० 948,150
4-मथुरा संग्रहालय सं० 14• 480
5- जोशी एन०पी० प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान पृ० 153
6- स्कन्द पुराण माहेश्वर खंड 31• 128 पृ० 352
7- इलाहाबाद संग्रहालय सं० 948,150
8• काण पी०वी० हिस्ट्री आफ धर्म शास्त्र भंडारकर ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट भाग-2 पृ० नृ० 717
9-टी०एस०आई० भाग। प्लेट 2301, (एलीमेंट आफ हिन्दू इकनोग्राफी टी०ए० गोपीनाथ राओ)
10- एच०डी० एस० पृ० 138 (11) वाण 'हर्ष चरित्र पृ० 178, 184, 273
12- वाजपेयी के०डी० 'युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ० 24, दीक्षित रामकुमार कन्नौज पृ० 19
13- 5/4

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मथुरा के विविध स्थानो से सूर्य की अनेको प्रतिमायें प्राप्त हुई है(1) स्थापित करवाई थी। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में सूर्य की पूजा विशेष प्रचार था।

ब्रम्हा :- इस समय प्रजापति शब्द केवल ब्रम्हा का ही द्योतक हो गया। कालिदास(2) ने ब्रम्हा की स्तुति भी की है। वह स्वयं अजन्मा, कारणहीन तथा स्वयं सबके स्वामी है(3) तथा अपनी ही प्रकृति के पुरुष है(4) कलकत्ता संग्रहालय तथा वाराणसी में अनेको ब्रम्हा की मूर्तिया है(5) जो मथुरा के विविध स्थानो से प्राप्त हुई है। स्पष्ट है कि ब्रम्हा पूजा का विशेष प्रसार नही था। देवगढ़ से ब्रम्हा की मूर्ति प्राप्त हुई है।

इन्द्र:- ऋग्वेद के शक्तिशाली देवता की महिमा घट गई थी । अति प्राचीन आख्यानो में ही इन्द्र का वर्णन मिलता है(6) । परन्तु अब भी वह यज्ञो का प्रधान देवता था(7) इन्द्र धनुष की पूजा का उल्लेख कालिदास ने किया है(8)। बौद्ध कथाओं के अंकित दृश्य में हीइन्द्र के दर्शन होते है(9)। गुप्त सम्राट अपने वैभव की तुलना मे इन्द्र के वैभव से करते है(10)। स्पष्ट है कि विवेच्य युग में इन्द्र की महत्ता थी ।

कुबेर :- विवेच्य युग में प्रतिमाओं की संख्या का अवलोकन करस्पष्ट होता है कि लोकप्रियता में कमी आ गई थी पर फिर भी एकाकी प्रतिमा (11) जो प्राप्त हुई है उसका मूल स्रोत कुषाण कालीन कला में ही निहित है। यक्षो का भी महत्वपूर्ण स्थान था। मथुरा से अनेको यक्ष की प्रतिमायें प्राप्त हुई है जो मथुरा संग्रहालय में है(12) । प्रणय के क्षेत्र में यक्षो ने अपना स्थान बना लिया था जिससे कालिदास का अपने मेघदूत का नामक यक्ष को बनाना स्वाभाविक हो गया।

विधाधर किन्नर सिद्ध तथा गण:- धार्मिक जन विश्वास तब कुछ अंश तक ऐसी योनियों में भी थाजो मनुष्य तथा देव से पृथक थी ।

1- मथुरा सं0 सं0 56-4010, 46-3884, 37378, 67-44, 54, 3013, 56-4015 शर्मा रमेश चन्द्र मथुरा कला शैली की अनूठी देन बी0एम0स0 यू0पी0 भाग 11-12 पृ0 21-29, (2) रघुवंश 5 /36, 219-10 कुमार 2/5 5/36

3- कुमार 1/3 (4) कुमार सम्भव 1/4/13

5-कलकत्ता इंडियन म्यूजियम संग्रहालय सं0 25109 (6) रघु0 7/45

7- रघु0 3/28-44, 8/23 (8) वही 4/3

9-वही 3/23; 6/78 (10) प्रयाग प्रशस्ति लेख पार्ट 26

11-मथुरा सं0 सं0 15-991, 15-11 लिखनऊ संग्रहालय सं0 जी0 56

12- मथुरा सं0 सं0 41-3119, 42, 2970, 4513, 3008, 58-4567, 61-5378

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर देवोत्तर थी। इन्ही योनियों का उल्लेख साहित्यकारो ने किया, कलाकारो ने मूर्ति बनाई तथा चित्रकारो ने चित्र खींचे है(1) हर्ष ने अपने नाटकनाग्यनन्द था एक विद्याधर को ही नायक बनाया है। इन्हीं की दूसरी योनि अश्वमुखी कहलाती थी (2)किन्नरो का भी गन्धर्वों की भांति स्वर्गीय नायक माना है(3) इन्ही का दूसरा नाम किंपुरुष था क्यों कि इन्हे देखकर ही नर या पुरुष को धोखा हो जाया करता था। सप्त ऋषि एक प्रकार से पितर ही थे जो सभी सर्गों में प्रतिपादित कर लिये थे कालिदास(4) ने उनकी संख्या 7 बताई है। कालिदास ने उनका उपयोग शिव के विवाहारार्थ हिमालय से उनकी कन्या उमा को मंगवा कर दिया(5)। किन्नर तथा गन्धर्वों की अमानवी शक्ति पर विश्वास था। गेरू द्वारा भोजपत्र पर प्रेम पत्र लिखने का उल्लेख मिलता है(6)। मथुरा संग्रहालय (7) में प्रतिष्ठित मूर्ति उनके अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण है।

विवेच्य क्षेत्र में देव मंदिरो की संख्या अनन्त थी उनमें पधरायी देव मूर्तियो की संख्या असंख्य थी उपासको की भीड़ लगी रहती थी । पूजा की अनेक विधियां थी जिनका उल्लेख सम कालीन साहित्य में सपर्या(8) विधिक्रिया(9) अर्चना(10) बलिकर्म(11) आदि शब्दो द्वारा व्यक्त किया गया है। सूर्य , शिव, विष्णु, आदि विविध देवताओं की अर्चना भिन्न भिन्न प्रकार से भिन्न भिन्न द्रव्यों से पुष्पो, पत्रों, हबियां आदि द्वारा होती थी। पूजा में पुष्प, पत्र, दूध, कुश, अक्षत, तथा विविध मिठाइयों पकवान, मधु,घृत, आदि के द्वारा प्रातः तथा सायं की जाती थी ।(12) श्राध्द में तिल का भी प्रयोग पिण्डदान सभी गृहस्थों के लिये आवश्यक था। अनेक प्रकार के व्रतों(13) तथा गो सेवा का व्रत किया जाता था(14

---

1) कुमार 1/7 (2) वही 11 (3) वही 8 (4) रघु0 10

(5) कुमार 1/16,7/40 (6) कुमार 1/7 (7) मथुरा सं0 सं0 11

8- रघु 5/22 (9) वही 1/56,5/7,76,8/76 कुमार 8/47,50

10- शकुन्तला पृ0 117 (11) विक्रम 3/2

12- उपाध्याय गुप्तकाल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 344, रघु 1/66,67,71,5/8 शकुन्तला पृ0 6/25

13- उपाध्याय गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास पृ 345

14-रघुवंश सर्ग 2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यज्ञः- प्राचीन परम्परा का प्रचलन था अनेक प्रकार के यज्ञ सम्पन्न होते जिसमें पशुवध भी होता था(1)। रघुवंश से विदित होता है कि पशुवध से पहले पशु को यज्ञ स्तम्भ यूप से बांध दिया जाता था(2)। यह बांधने का क्रम मंत्रों के सहित होता था(3) विवेच्य युग के विविध क्षेत्र की दसों दिशायें यज्ञो की सहस्त्रों ज्वालाओं से दीप्तमान रहती थी । उस समय ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सतयुग अंकुरित होने लगा एवं कलयुग भाग रहा हो(4)। यज्ञो में ब्राह्मणों को यथा योग्य दान दिया जाता था(5)।यजमान पहले यज्ञ की दीक्षा लेता था(6)। यजमान यज्ञ समाप्त होने तक वहीं रहता था तथा यज्ञ की राख को नदी मे प्रवाहित किया जाता था। रघुवंश में विश्वजीत नामक यज्ञ का उल्लेख मिलता है(7)। समुद्रगुप्त ने अनी विजयोंके उपलक्ष में अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया (8)। हर्ष ने त्रिवेणी के संगम पर महामोक्ष परिषद् का आयोजन कर अपना परिधान तक दान में दे दिया था। अब लोगो का ध्यान विशेषतः ईश्वर, आत्मा, जीव, संसार, आदि की ओर आकृष्ट हुआ परिणाम स्वरुप दार्शनिक दृष्टिकोण उपनिषदों के रूप में उद्भूत हुये । वैदिक धर्म की पृष्ठभूमि में वैष्णव, शैव, तथा शाक्त आदि धर्म प्रकाश में आये।

बौद्ध धर्मः- विवेच्य युग में बौद्ध धर्म का काफी प्रचार हुआ । हर्ष प्रवृति उत्तरकालीन जीवन में बौद्ध धर्म की ओर हो गई थी । इस समय अनेको विहारो, मठो तथा बौद्ध मूर्तियो का निर्माण हुआ। मथुरा(9) तथा लखनऊ(10) संग्रहालय में विवेच्य क्षेत्र के विविध स्थानो से एकत्र की गई प्रतिमाओं का संगम है। फाह्यान (11) तथा ह्वेनसांग(12) ने जेतवन विहार के समीप एक बुद्ध मूर्ति देखी थी यह प्रतिमा सौन्दर्यमय कला का उत्कृष्ट नमूना था। अयोध्या में ह्वेनसांग(13) ने बौद्ध स्तूप देखा। फाह्यान ए(14) ने भी इस स्तूप का वर्णन किया है।ह्वेनसांग (15) ने गया पर्वत पर यात्रा की ।

1- शाकु 6/1 (2) रघु 1/44,6/38,9/30,13/61,11/37,1/44 16/15
3- वही 11/37 (4) बाण हर्ष चरित्र पृ 72,165
5- वही पृ 91 (6) रघु 8/75,11/24,9/21,5/25,1/6
7- 5/15 (8) लूनियां प्राचीन भारत का इतिहास पृ 173
9- म्यू० 1/5 (10) ओ 70
11- गाइल्स वही पृ 33-34,वार्टर्स वही भाग । पृ 33-34
12- वार्टर्स भाग । , वही पृ 355
13-उ वही
14-उ ,गाइल्स वही पृ 29-30,लेगे वही पृ 54-55
15- वार्टर्स वही भाग । पृ 111

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वहाँ पर बुध्द जी ने रत्नमेक का उपदेश दिया था। फाइयान (1) ने श्रावस्ती में उस स्थान को देखा जहाँ देवदत्त ने जहर के नाखूनो से बुध्द को घायल करने का प्रयास किया तथा कपिलवस्तु(2) के बौध्द स्थान का भी अवलोकन किया। हेनसांग(3) ने एक संघाराम का मथुरा में वर्णन किया है जिसमें 2000 भिक्षुक निवास करते थे। केशवदेव के पासबौध्द विहार का नाम यश विहार था जिसे जयाभट्ट नामक महिला ने दान में दिया था। यह मूर्ति सम्पूर्ण है तथा विवेच्य युग की कला का सर्वोत्तम उदाहरण है(4)।संकिसा(5) को बौध्द धर्म का केन्द्र बताते हुये हेनसांग ने उल्लेख किया है कि यहाँ शैव मत के साथ साथ बौध्द धर्म का काफी प्रचार था। सबसे प्रमुख घटना हर्ष द्वारा आयोजित बौध्द परिषद थी (6)। इस परिषद में भाष्कर वर्मा तथा दूसरे शासकों के साथ इस परिषद में सम्मिलित हुआ। 100 फुट उची मीनार पर सोने की आदम कद बौध्द मूर्ति की स्थापना की गई। बुध्द जी की एक छोटी प्रतिमा को हाथी पर बैठा कर प्रतिदिन भव्य जलूस निकाला जाता जिसमें विभिन्न स्थानो से पधारे हुये बौध्द धर्मावलम्बियों की अनगिनित भीड़ होती।जलूस में बुध्द मूर्ति के बायीं तरफ इन्द्र की पोशाक में हर्ष तथा दायी तरफ ब्राह्मण पोशाक में सफेद चमर हिलाते भाष्कर वर्मा चलते। मूर्ति बंदना के उपरान्त बौध्द सभा आयोजित होती। सायंकाल तक विभिन्न विध्दानो का बौध्द धर्म के विकास के सम्बन्ध में विचार विमर्श होता। यह कार्य 21 दिन चला।(7)। परिषद के सदस्यों का चुनाव हर्ष स्वयं करता था। परिषद में राजाओं के अलावा 200 मंत्री, 1000 बौध्द, पुरोहित,500 ब्राह्मण, तथा दूसरे धर्मों के पुरोहित सम्मिलित होकर सभा की शोभा बढ़ाते।हेनसांग ने इस परिषद में अपनी विद्वता का विशेष परिचय दिया(8)

1- गाइल्स वही पृ0 30-36 (2) वही पृ0 38
3- वाटर्स वही भाग 1 पृ0 301-13
4- दत्त नलिनाक्ष तथा वाजपेयी के0डी0 वही पृ0 286
5- वही पृ0 255, बील वही भाग 1 पृ0 35-43
6-वाटर्स भाग वही पृ0 218, लूनियां वही पृ0 220
7-मजूमदार आर0 सी0 क्लासिकल एज भाग 3 पृ0 118
8-मुखर्जी राधा कुमुद श्री हर्ष पृ0 143, स्मिथ अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया पृ0 307

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कन्नौज परिषद का आयोजन भारतीय इतिहास का स्वर्णमय पृष्ठ है। इस परिषद से देव बौद्ध धर्म की स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ(1)। मथुरा(2) से अनेको बौद्ध मूर्तियां प्राप्त हुई है। सारनाथ(3) में बोधिसत्व की पूजा का प्रसार था तथा यहाँ पर बौद्ध मूर्तियो का भण्डार है। बुद्ध जी के जीवन से सम्बन्धित अनेको शिलापट्ट भी प्राप्त हुये है(4)। भीटा (5) की कलापूर्ण बुद्ध मूर्ति तथा अहिच्छत्रा (6) से बुद्ध जीवन से सम्बन्धित शिलापट्ट तथा बुद्ध मूर्तियाँ एवं कुशीनगर(7) से बुद्ध मूर्ति, धर्मचक्र मुद्रा में मूर्ति, चूने मिट्टी की मूर्ति एवं उकेरी ईंटो पर अंकित बुद्ध चित्र प्राप्त हुये हैं। कन्नौज हर्ष के समय में बौद्ध धर्म का प्रमुख केन्द्र था। फाइयान ने हीनयान सम्प्रदाय के दो विहार देखे थे। हेनसांग ने विवेच्य क्षेत्र में 100 बौद्ध विहारो का अवलोकन किया था। जिसमें 10 सहस्त्र भिक्षुक निवास करते थे। यहाँ के भद्र विहार में हेनसांग ने तीन मास रहकर पिटका चार्य वीरसेन से शिक्षा ग्रहण की थी (8)। बुद्ध जी तथा बोधिसत्व की मूर्तियों से नगर तथा जनपद भर गये(9)। कश्मीर से हर्ष ने बुद्ध का दांत बल पूर्वक मंगा कर कन्नोज की संघाराम मे सुरक्षित किया(10)। प्रतिवर्ष कथोपकथन आदि के लिये बौद्ध भिक्षुओ का आमंत्रण(10), पशुवध, एवं मांस भक्षण के विरुद्ध कठोर दंड विधान आदि सार्वजनिक हित के कार्य बौद्ध धर्म से ही प्रभावित थे(11)। बाण(12) ने बोधिसत्व के गुणो से युक्त दिवाकर भिक्षु का वर्णन किया है। इस युग की सबसे महत्व पूर्ण घटना महायान शाखा की उदय थी। स्वयं ब्राह्मण वैष्णव आदि भक्ति परम्परा से प्रभावित इसकी नैतिक भाव सम्पदा ने ब्राह्मण धर्म को प्रभूत रूप से प्रभावित किया। मूर्तियों का उदय और अनन्त प्रसार बौद्ध तथा ब्राह्मण धर्मों में समान वेग और बाहुल्य के साथ हुआ। हर्ष ने बौद्ध धर्म से प्रभावित होकर औषधालय, धर्मशालाये स्थापित करायी(13)। बौद्ध धर्म की सेवा के लिये अपना तन मन धन अशोक के समान अर्पण कर दिया। निश्चय ही यह युग बौद्ध धर्म के विकास के लिये श्रेयष्कर था।

1- वाटर्स जिल्द। पृ0 34-44, स्मिथ अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया पृ0 360, बनर्जी राखलदास द ऐज आफ इम्पीरियल यूनिटी पृ0 69
2- मथुरा सं0 सं0 40-3234, 61-5344, 59-4821, 47-3290, 42-2968, 44-3171, 3110, 3159, 3132, 59-4749, 58-4011, 61-5380, 54-3795, 49-3310, 41-2908, 49-3478, 47-3282, 43-3097, 71-101, 57-4380, 44-3159, 44-3107, 43-3089, 3074, 47-3283, 3267, 4381, 57-4378, 67-468
7-नागर मदनमोहन कुशीनगर पृ0 8से10 (8) दीक्षित रामकुमार म कन्नौज पृ0 19-20
10- उपाध्याय गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास पृ0 385,
9- बील वही पृ 181-183 (8) वाटर्स वही भाग। पृ0 344, बील भाग। पृ0 214
11- मुखर्जी राधा कुमुद मेन एण्ड थाट इन एन्सियेन्ट इंडिया पृ0 187,
12- अग्रवाल वासुदेव शरण हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पृ0 193
13- मुखर्जी राधा कुमुद मेन एण्ड थाट इनएन्सियेन्ट इंडिया पृ0 17, बील भाग।वहीपृ214
3- सारनाथ संग्रहालय सं0सं0 1, 2, 6172, 173, 180, सं0सं0 1, 2, पाण्डेय उमा वही पृ 77-78, मुखर्जी राधाकुमुद मेन एण्ड थाट इन एन्सियेन्ट इंडिया पृ560
4- सी0 सं0 1, 2, सी0बी0 (5) बाजपेयी कृ0डी0 युगो युगो में उत्तर प्रदेश पृ0 31
6-बाजपेयी कृ0डी0 तथा एम0सं0 विद्यालंकार अहिच्छत्रा पृ0 22

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैन धर्म :- विवेच्य युग में जैन धर्म ने भी काफी प्रगति की, गुप्तकाल के अनेकों अभिलेखों में जैन धर्म में लोगों की आस्था के प्रमाण मिलते है। इनमें 2 कुमार गुप्त प्रथम के शासन काल के है। जिसमें मथुरा की एक महिला द्वाराजिस मूर्ति की स्थापना का उल्लेख हुआ है। स्कन्द गुप्त के कहोम के अभिलेख में 5 तीर्थंकर मूर्तियों के वहाँ प्रतिष्ठित करने का उल्लेख है। कम्पिल जैनधर्म का प्रमुख केन्द्र थी यह तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथ की जन्मभूमि है (1)। ह्वेनसांग श्वेताम्बर तथा दिगम्बर सम्प्रदाय का वर्णन करता है। वाण ने हर्ष के दर्शकों में क्षपणकों (साधुओं) तथा दिवाकर मित्र के आश्रम में जैन भिक्षुओं का उल्लेख किया है(2)। इस समय जैन साहित्य का प्रचुर विकास हुआ। दिगम्बर तथा श्वेताम्बर सम्प्रदायों में बंटा हुआ था (3) धीरे धीरे जैन धर्मावलम्बी बौद्ध धर्म से अलग हो गये(4)। विवेच्य युग की मथुरा(5)से प्राप्त अनेक जैन मूर्तियों का उल्लेख मिलता है। हर्ष के समय की एक जैन मूर्ति मथुरा संग्रहालय में है(6)। हर्षवर्धन के समय की ही तीर्थंकर की मूर्तियां मथुरा के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुई है(7)। यद्यपि विवेच्य युग के सम्राट जैन धर्मावलम्बी नही थे परन्तु अपनी सहिष्णुता की नीति के कारण सभी धर्मों को फलने फूलने का उचित अवसर मिला।

वाण ने बैताल साधना करने वाले भैरवाचार्य का भी उल्लेख किया है(8)। वैताल साधक कई प्रकार के थे। आसुर विवर

1- जैन जे०सी० लाइफ इन ऐंशियेन्ट इंडिया पृ० 293, जैन ज्योति प्रसाद जैन उत्तर प्रदेश और जैन धर्म पृ० 4।
2- पाण्डेय राजबली, 'प्राचीन भारत 'पृ० 33।
3- ओझा गौरी शंकर हरीशचन्द्र ' मध्यकालीन भारतीय संस्कृति पृ० 12
4- वाटर्स जि०द । वही पृ० 252
5- मथुरा संग्रहालय संख्या 67, 189
6- वही 44• 3122
7- वही 57• 4338, 71• 17, 67• 157, 44• 3178 वर्मा रमेश चन्द्र मथुरा कला शैली की अनूठी देन, बी०एम०एस०यू०पी० अंक 11-12, 1973, पृ० 21-28
8- वाण हर्षचरित्र पृ० 101-104, अग्रवाल वी०एस० 'हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन' पृ० 57-62

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोक जीवन तथा दर्शनः-

विवेच्य युग में दर्शन के क्षेत्र में नया युग लेकर उपस्थित हुआ। नये देवता, नया विश्वास उनके संबन्ध का नया जीवन रोमांचक धार्मिक साहित्य इस नवयुग की देन है। जनता की प्रवृति भागवत धर्म की ओर उन्मुख हो रही थी और इस भागवत धर्म की पृष्ठभूमि में वैदिक इन्द्र विष्णु आदि देवों की भावना थी। वैदिक देवता वाद से अनुप्राणित भागवत धर्म ने हिन्दू देवी देवताओ की असंख्य प्रतिमाओं के निर्माण का सुअवसर प्रदान किया दूसरी तरफ बौध्द जैन धर्म से सम्बन्धित भी प्रतिमाओ का निर्माण हो रहा था(1)।

सृष्टि एवं प्रलयः- धर्म और जन विश्वास में सृष्टि तथा प्रलय का प्रमुख स्थान था। संसार जगत आदि नामों से, जन्म मरण केसाधन से इस लोक में निरन्तर परिवर्तन होते रहते है। पौ फटते ही सृष्टि के सृजन का कार्य प्रारम्भ हो जाता है और नयी कला का प्रारम्भ होता है। वही सृष्टि तथा प्रलय का सिध्दान्त सर्वमान्य था।

मृत्यु और परलोक :- जन्म मरण से आत्मा बंधी रहती है जिससे मोक्ष का प्रयत्न किया जाता है। विवेच्य युग मेंमोक्ष का साधन त्रिवेणी के संगम पर स्नान करना माना जाता था। मृत्यु के उपरान्त लोकान्तर अथवा परलोक का जीवन प्रेत जीता है स्वर्ग तथा नरक उसके दो स्वरुप हैं जो पाप तथा पुण्य के अनुसार मृतक को प्राप्त होते है इसी भावना से प्रेरित विवेच्य युग के सम्राटो ने धर्म की एक ऐसी शान्ती वाहिनी धारा प्रवाहित की सम्पूर्ण जनता रस विभोर होकर आनन्दमग्न हो गई।

जन विश्वासः- गुप्त कालीन जन विश्वासखर्व साधारण के जीवन का संमोहक अंग था। दाहिनी आंख फड़कना नारी के लिये अशुभ का सूचक है। अनेक शुभ अशुभ लक्षणो पर विचार किया जाता। बौध्द सम्प्रदायों ने विविध रक्षा तावीजों का उदय हो चुका था जो न केवल इस देशमें लोक प्रिय हुये बल्कि अन्य देशो में भी काफी प्रचार हुआ (2)। मृच्छकटिक (3)में भी गोपाल केराजा होने की भविष्य वाणी सत्य हुई। हर्ष चरित्र(4) में रानी यशोमती का स्वपन 2 पुत्रों तथा एक पुत्री का सत्य हुआ। इसी प्रकार रानी को अपने पति की मृत्यु का आभास भी स्वपन में ही हो गया था। हर्ष के प्रयाण के समय अशुभ संकेतो ने पराजय का संकेत दे दिया था(5)

1- सिंह राजकिशोर ''प्राचीन भारतीय संस्कृति और कथा'' पृ 137
2- विटरेनित्ज हिस्ट्री आफ इण्डियन लिटरेचर 2 पृ 380-87
3- अंक 9
4- अध्याय 4
5- वाण '' हर्ष चरित्र '' अध्याय 6

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नक्षत्रो की दूरी एवं निकटता भाग्य को प्रभावित करती है ऐसा लोगों का विश्वास था(1)। बच्चो की रक्षा के लिये तावीज बनवाया जाता था(2), सांप काटे का मंत्रों द्वारा उपचार विधा का ज्ञान था(3)। भूत प्रेतो का भय था(4)। अद्भुद शक्तियों को प्राप्त करने हेतु अनेक प्रकार की सिध्दीयों का प्रयोग किया जाता था (5)। योग के प्रभाव से किवाड़ो मे भी प्रवेश किया जा सकता है(6)। कपिल मुनि द्वारा सागर की सेना का विध्वंस (7) अगस्त मुनि का कलश जन्म (8) विष्णु के अगूँठे से गंगा का उद्भव(9)।भागीरथ द्वारा गंगा का अवतरण(10) पक्षधर पर्वतो का आकाश गमन तथा देवताओ का आकाश गमन(11), बलि का वामन द्वारा छलना(12)महावराह द्वारा पृथ्वी का उध्दार(13), शमी वृक्ष में अग्नि का प्रवेश (14)में पूर्ण लोगो का विश्वास था। हेनसांग के अनुसार कन्नौज के निवर्ती निवासी चमत्कार पूर्वक थे (मायाजाल)मान्यता देते थे (14)।

जन जीवनमेंधर्म का महत्वपूर्ण स्थान था जन्म मरण, के द्वारा आत्मा बन्धन मे बंधी रहती है मरण अवश्य भावी है(15) जीव को बंधन में बांधने वाली डोरी अवश्य टूटती है (16) आयु को नापने वाली कड़ियां हर घर में लगी हुई है(17)। इस समय अनेकसम्प्रदाय थे जिसमें विरोध चलता था। ब्राह्मण धर्म के मुख्य अन्यायी पंचतंत्र और भागवत का दृष्टिकोण भागवत था जिसमें वासुदेव विष्णु की भक्ति ही जीवन के एक प्रेरणा का प्रमुख श्रोत थी। धीरे धीरे पंचतंत्र और भागवत दो ही सम्प्रदाय रह गये। शेष सम्प्रदाय इन्ही दो सम्प्रदाय में मिल गये। आगे चलकर भागवत के नाम से पुकारे जानेलगे।शाख्य, वैशेषिक,नेयायिक, और वेदान्त यह चारो प्रकार के दर्शन अपने अपने विचार पुरुष तथा प्रकृति के मध्य वता रहे थे।मीमांसक तथा व्याकरण दोनो कन्धे से कंधा मिला कर चलने का प्रयास कररहे थे।दर्शन के क्षेत्र में नये दृष्टिकोणो तथा विचारो का समावेश हो चला था।

1- शकु0 6/28 (2) वही पृ0 249
3- रघु0 2/32, मालविका पृ0 69 (4) रघु0 3/241
5- शकु0 पृ0 263 (6) रघु0 16/7 (7) वही 3/50 (8) वही 4/51
9- कुमार 6/70 (10) वही 4/32 (11) रघु0 6/1
12- वही 7/35 (13) वही 5/6 (14) वही 7/35
15- बाण "हर्ष चरित्र" पृ0 254
16- अग्रवाल वासुदेव शरण "हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन" पृ0 299
17-बाण " हर्ष चरित्र" पृ0 254

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धार्मिक सहिष्णुता:- ब्राह्मण धर्म, बौध्द धर्म तथा शैव धर्म आदि के प्रति विवेच्य युग के सम्राटों की नीति सहिष्णु थी । सभी धर्मों के विद्वानो को राजाश्रय प्राप्त था। गुप्त सम्राट विष्णु के समर्थक थे । विवेच्य युग धार्मिक संकीर्णता का युग न था। इतिहास के पृष्ठों का अध्ययन इस सत्य को घोषित करता है कि प्रायः एक धर्मानुयायी दूसरे धर्मानुयायी के प्रति असहिष्णु हुआ करते थे परन्तु विवेच्य युग के सम्राट इस नीति के अनुगामी न थे । उनके समय में विभिन्न धर्मों की विभिन्न शाखायें फलती फूलती रही। स्वच्छन्तापूर्वक अपने विचारों का प्रचार करते रहे । सम्राट चन्द्र गुप्त विक्रमादित्य वैष्णव धर्मानुयायी था। किन्तुउसने राजकुमारों की शिक्षा के लिये बौध्द विद्वान वसुबन्धु को नियुक्त किया था। सम्राट का मंत्री वीरसेनी शिव भक्त था। स्पष्ट है कि धार्मिक संकीर्णता के कारण दूसरे धर्मों को पददलितन करके उनको आगे बढ़ने का अवसर दिया जाता था। अक्रमादेव नामक बौध्द धर्मावलम्बी सम्राट के यहाउच्च सैनिक पद पर था। कुमार गुप्त प्रथम भी वैष्णव था। उसका ज्येष्ट लड़का पुरगुप्त बौध्द था। कनिष्ट लड़का परम भागवत था। सम्राट का सामन्त वन्धुवर्मा सूर्य का उपासक था। स्कन्दगुप्त भी वैष्णव धर्मानुयायी था। परन्तु जैन धर्म के प्रति भी उसकी आस्था थी । मन्दसौर लेख से स्पष्ट होता है कि कुमार गुप्त द्वितीय ने सूर्य मंदिर का जीर्णोद्धार कराया था। हर्ष भी सभी धर्मों का आश्रयदाता था। सरस्वती के तट पर अक्षपटलिक(आय व्यय विवरण अधिकारी) ने हर्ष को बैल चिन्ह से युक्त सोने की मोहर दी थी। स्पष्ट है कि हर्ष परम महेश्वर था(1)। हर्ष की सहिष्णता का ज्वलन्त उदाहरण है त्रिवेणी के संगम पर महामोक्ष परिषद' का आयोजन प्रति पांचवे वर्ष करता। एक दिन में ही अपनी समस्त धन सम्पत्ति का दान ब्राह्मणो को कर देता था(2) ईश्वर का चमत्कार था कि दसवें दिन भी राजाओं के उपहारो से खजाना भर जाता था। इसमें देश के विभिन्न धर्मावलम्बीसम्मिलित होते।(3) प्रतिदिन 1000 बौध्द भिक्षु तथा 500 ब्राह्मण उसके यहां भोजन करते थे (4)प्रयाग की महामोक्ष परिषद में उसने शिव तथा सूर्य की पूजा की थी(5) । सरस्वती नदी के किनारे हर्ष ने ब्राह्मणो को 200 ग्राम दान में दिये थे ।(6)

1- मुखर्जी राधा कुमुद 'मेन एण्ड थाट इन एनसियेण्ट इंडिया पृ 165

2- वाटर्स भाग । पृ 344 (3) मुखर्जी राधा कुमुदमेन एण्ड थाट इन एनसियेण्ट इंडिया पृ 168

4- वार्टर्स वही भाग । पृ 344

5- वही पृ 344

6- अग्रवाल वासुदेव शरण 'हर्ष चरित्रएक सांस्कृतिक अध्ययन पृ 138

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्पष्ट है कि सभी धर्मावलम्बियों को स्वतंत्रता पूर्वक रहने की सुविधा प्राप्त थी । वाण ने 27 धार्मिक सम्प्रदायो का उल्लेख किया है(1)। इनके कुछ हर्ष के साथ सम्वेदना प्रगट करने के लिये आये थे । विन्ध्यावली के जंगल में दिवाकर मित्र के आश्रम में विभिन्न धर्मावलम्बियों विद्वानो का एकीकरण विवेच्य युग स्वर्ण युग का जीता जागता उदाहरण है(2)।

निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि विवेच्य युग स्वर्ण युग था। जहां समाज शिक्षा, साहित्य, ललित कलायें, धर्म तथा विविध विधाओं का अभूतपूर्व विकास हुआ। यह युग एक दीप स्तम्भ के समान है। तथा भारतीय इतिहास का स्वर्णमय पृष्ठ था जिसके प्रकाश में नवीन मार्ग का अवलोकन कर सत्यम शिवं सुन्दरम की मंगलमय बन्दनवार मां भारती के भव्य मंदिर के चारों ओर बांध सकने में सफल हो सका।

1- वाण ' हर्ष चरित्र' पृ0 203

2- अग्रवाल वासुदेव शरण ' हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन 'पृ0 175

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उप-संहार

अध्याय-9 ब

भारतीय समाज एवं धर्म को विकास की दृष्टि से विवेच्य क्षेत्र का असाधारण महत्व है। विवेच्य क्षेत्र में ही संस्कृति, धर्म दर्शन, लिपि, भाषा, साहित्य तथा ललित कला की अनेक विधायें प्रतिष्ठापित हुई। इन विधाओं की पृष्ठ भूमि भारतीय चिन्तन की प्रमुख धारा वैदिक संस्कृति से अनुप्राणित थी। जैन बौद्ध धर्म आदि विचार परम्पराओं ने भी परवर्ती जीवन दर्शन को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इतिहास एवं परातत्व की दृष्टि से उत्तर प्रदेश का भारत में प्रमुख स्थान है। यहाँ की प्रचुर एवं वैविध्यपूर्ण कलाविधि विश्व के आकर्षण का केन्द्र रही है।

भौगोलिक दृष्टि से विवेच्य युग का असाधारण महत्व रहा है। उत्तर तथा उत्तर पूर्व में हिमालय, तिब्बत तथा नेपाल, पूरब में बिहार तथा दक्षिण में मध्य प्रदेश स्थित है। विवेच्य क्षेत्र को चार प्रमुख भागों में बाँटा गया है। 1उत्तर पर्वतीय प्रदेश (2) हिमालय या तराई 3- भाँवर प्रदेश 3- गंगा यमुना का मैदान एवं 4- दक्षिण का पठारी भाग। गगन चुम्बी हिमालय अठखेलियाँ करती नदियों तथा विविध वन उपवन आदि अनेक प्रकार को अध्यात्मपूरित पार्थिव सम्पदाओ के इस युग में वैभवशाली बनाया है। भारतीय सभ्यता बहुत समय तक गंगा यमुना की अंतर्वेदी में इसकी सहायक नदियो के अंक में फूलती फलती रही। विवेच्य क्षेत्र की उपयुक्त जलवायु, श्रेष्ट एवं विविध प्रकार के खनिज पदार्थ गंगा यमुना दोआब की उर्वरता भौगोलिक देन ही है। इसलिये विवेच्य क्षेत्र भारतीय संस्कृति के विकास का प्रारम्भिक क्षेत्र रहा है।

विवेच्य युग के प्रारम्भ में मूलरूप से राजनैतिक इकाई कुलया परिवार थीं। उनके नेता को भी राजा कहा जाता था बाद में यह पद कुलागत होने लगा। दशराज युध्द ऋग्वेदिक काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी । पंचनद प्रदेश(पंजाब) से आगे बढ़ने के बाद आर्यों ने अहिच्छत्रा, कम्पिल मथुरा आदि स्थानो का अपना केन्द्र बनाया। ये केन्द्र धीरे धीरे बड़े नगरो का रूप धारण करते गये जिनमें राजनीति, दर्शन, धर्म, कला और साहित्य का प्रचुर विकास हुआ। इन नगरो के इतिहास में भारतीयधर्म, दर्शनकला तथा लोकजीवन की बहुमुखी गाथा संजोई हुई है। नगरो से ही जनपदों को निर्माण हुआ। कुरु जनपद(आधुनिक मेरठ, मुजफ्फर-नगर, बुलन्दशहर, दिल्ली) के प्रदेश)पंचाल जनपद (आधुनिक बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद, रुहेलखंड, मध्यवर्ती दोआब के भाग), काशी जनपद, कोशल जनपद(आधुनिक अवध भूमि), शूरसेन जनपद(मथुरा), वेदि जनपद(चतुर्दिक यमुना का क्षेत्र)) वत्स जनपद विवेच्य क्षेत्र के अन्तर्गत आते है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाजनपदों का उत्थानकाल अब समाप्त हो गया था। छोटे छोटे जनपद नष्ट होकर एक बड़े होकर एक बड़े जनपद मगध में सम्मिलित हो गये। काशी का पतन सर्व प्रथम हुआ। शिशुनाग ने वत्स तथा अवंती को मगध साम्राज्य में मिला लिया। इस विस्तृत साम्राज्य का अन्त कर महापद्मनाग ने विस्तृत सार्म्राज्य की स्थापना की। नये युग का सूत्रपात चन्द्र गुप्त मौर्य ने चाणक्य की कूटिनीतिज्ञ बुध्दि के सहयोग से महापद्म नाग का अन्त कर प्रारम्भ किया। इस वंश की उज्ज्वल गाथा से आज भी दिशाये गुँजित हो रही है। चन्द्र गुप्त मौर्य के दरबार में आये हुए यूनानी राजदूत मेगस्थनीज ने तत्कालीन सामाजिक एवं धार्मिक अवस्था की काफी प्रशंसा की है। मौर्य शासक वहद्रथ को मारकर उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने शुंग वंश की स्थापना की। यवनों को पराजय के बाद अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया। शुग वंश का अन्तिम शासक देवभूति भी अपने मंत्री के षड़यन्त्रों से मारा गया। आंध्रवंशी सोमुक ने शुंगो की बची शक्ति को समाप्त कर आंध्र वंश की स्थापना की। उत्तरी भारत मेंशुंगो के उपरान्त शको ने अपना राज्य स्थापित किया। शको के उपरान्त कुषाण वंश सबसे प्रभावशाली युग वंश प्रारम्भ हुआ। यह युग भारतीय संस्कृति का सबसे प्रभावशाली युग था। कुषाणो के उपरान्त स्वर्णिम पृष्ट गुप्त था/ वर्ष काल की उज्ज्वल गाथाओ अंकित है। विवेच्य युग में मथुरा, श्रावस्ती, काशी, कौशल, अयोध्या हस्तिनापुर, कन्नौज, कौशाम्बी, अहिच्छत्रा एवं सारनाथ महत्वपूर्ण राजनैतिक केन्द्र थे। ये नगर राजनैतिक ही नही अपितु सांस्कृतिक विचार धाराओ के प्रमुख केन्द्र थे।

वैदिक तथा महाकाव्य काल में सामाजिक तथा धार्मिक विचारधारा को नवीनतक रुप में गठित किया गया। उनको नवीन मान्यताओ से अभिषिक्त किया गया। समाज से विभिन्न वर्गों में हुए पारस्परिक संघर्षों का अध्यन सामाजिक इतिहास के लिए उतना ही आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है जितना राजनैतिक क्षेत्र में सिंहासनो के निमित्त राजवंशो का युध्द, न्यनोमिलन काल में मानव मात्र आर्य तथा अनार्य दो भागो में विभक्त था। उनमें रोटी बेटी का निकटतम सम्बन्ध था पूर्ण व्यवसायिक स्वतन्त्रता थी। गुण कर्म ही जाति व्यवस्था का आधार था। सामाजिक संरचना में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रो ने महान योगदान किा। अनुलोम प्रतिलोम विवाहो से अनेक प्रकार की वर्ण शंकर जातियो का प्रादुर्भाव हुआ जो सामाजिक वर्ण व्यवस्था को विश्रृंखलित न कर सकी। बोध्द तथा जैन धर्म के समय में जाति व्यवस्था में कुछ शिथिलता का अनुभव हुआ इन्होने जाति पाति का विरोध किया परन्तु वास्तव में जातिव्यवस्था पर्ववत ही रही। आवश्यकता पड़ने पर अपनेही पूर्व वर्ण का पेशा अपनाने की अनुमति प्राप्त हुई। चन्द्र गुप्त मौर्य के दरबार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में आये हुए युनानी राजदूत मेगस्थनीज ने दार्शनिक, कृषक, पशुपालक, योध्दा,परामर्शदाता, निरीक्षक तथा दस्तकार सात सामाजिक वर्गो का उल्लेख किया है। विदेशी जातियो के आगमन के फलस्वरुप भारतीय समाज में उच्छ्रृंखल मच गई तथा अनेक झंझावतो के बाद भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी नीति तथा उसकी विशाल हृदयता ने सभी विदेशी संस्कृतियो को अपने अन्दर समाहित कर लिया। शक, कुषाण, आदि विदेशी जातियाँ भारतीय संस्कृति के रंग में रंग गई। यह इतिहास का एक आश्चर्यजनक तथ्य है। गुप्तकाल तथा हर्षकाल में चारो वर्गो के अलग अलग मुहल्ले थे तथा अपने अपने वर्णाश्रम धर्म का पालन करने में ही अपना हित समझते थे। ब्रह्मचर्य गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ तथा सन्यासआश्रममेंका जीवन को विभाजित किया गया था। संयुक्त कुटुम्ब की भावना ही सर्वतोमुखी थी । सत्य, दया, परोपकारिता उदारता एवं सहृदयता रुपी मधुमय पुष्प संयुक्त कुटुम्ब रुपी उद्यान की शोभा बढ़ाते थे । कुटुम्ब का ज्येष्ठ व्यक्ति ही परिवार की सम्पत्ति का मालिक था। परिवार के सभी सदस्य वृध्दजन के प्रति अपना विश्वास एवं श्रध्दा व्यक्त करते थे । इसी भावना में समाज एवं परिवार का हित निहित था। प्रारम्भ काल से ही ब्राह्मण को सर्वोपरि स्थान दिया गया। क्षत्रिय, प्रजारक्षक, वैश्य देश की आर्थिक व्यवस्था को सँभालने वाला तथा शूद्र द्विजातीयो द्विजाति की सेवा करने वाला था। ब्राह्मणों को समाज के मूर्धन्य स्थान पर स्थापित कर संसार की समस्त सम्पत्ति का मालिक तथा पृथ्वी का देवता माना गया शूद्र बेचारा निरीह मूक प्राणी बनकर द्विजाति की सेवा करता रहा। गृहस्थाश्रम, को विशेष महत्व दिया गया। ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ तथा सन्यास आश्रम गृहस्थाश्रम की कृपा पर ही आधारित थे। बौध्द तथा जैन धर्म में गृहस्थाश्रम पर बल नही दिया गया परन्तु बाद में सर्वभूतहित के दृष्टिकोण से गृहस्थाश्रम को मान्यता देनी पड़ी। संस्कारो का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव था। गर्भाधारण, पुंसवन, जातकर्म, नामकरण, उपनयन तथा विवाह आदि सभी संस्कार जनमानस के हृदय को प्रभावित किये हुए थे। श्रध्दा एवं विश्वास के साथ भारतीय समाज इन संस्कारो को पूर्ण करना अपना कर्तव्य समझता था। पैतृक ऋण तथा पुत्र की अनिवार्यता के कारण विवाह संस्कार को अनिवार्य मान्यता दी गई है। ब्राह्मण, आर्ष, प्राजापत्य, दैव, पिशाच, आसुर, गन्धर्व तथा राक्षस इन आठ प्रकार के विवाहो का उल्लेख विवेच्य साहित्य में उपलब्ध है। ब्राह्मण विवाह को पाणिनी, मनु, पतंजलि तथा कौटिल्य जैसे विद्वानो तथा आर्थिक विचारको ने सर्व प्रमुख स्थान दिया है। सपिण्ड तथा सगोत्र विवाह को वर्जित किया है। अनुलोम, प्रतिलोम विवाहो को प्रतिरोध होने पर भी समाज में प्रचलित रहे। एक पत्नी विवाह की प्रतिष्ठा थी परन्तु राजवंशो में बहु विवाह होते रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विवेच्य युग में नारी का महत्वपूर्ण एवं सम्मानीय स्थान था। कन्या, पत्नी एवं माता एवं के रूप में वह आदरणीया थी। शिक्षा की व्यवस्था पुत्रों के समान ही थी। धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में पति के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर नवीन पथ पर अग्रसर होती। कर्तव्य परायणता, सहृदयता, परोपकारिता, ममता, स्नेह एवं करुणा की प्रतिमूर्ति भारतीय नारी आज भी ज्योति स्तम्भ के समान अंधकार मय पथ को नवीन ज्योति से दीप्त कर रही है एवं करती रहेगी। विधवा विवाह का प्रचलन था परन्तु कौटिल्य जैसे विचारकों ने विधवा को आमरण ब्रह्मचर्य जीवन व्यतीत करने की अनुमति दी है। पुत्र की अनिवार्यता को दृष्टि में रखकर नियोग प्रथा को मान्यता दी गई। बाल विवाह नहीं होते थे अपनी कला कुशलता तथा निपुणता के कारण समाज में वेश्याओं का महत्वपूर्ण स्थान था परिवार के धार्मिक तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को अपने कन्धों पर वहन करती हुई भारतीय नारी ने एक नवीन आदर्श उपस्थित किया।

आर्थिक सम्पन्नता का युग था। विविध प्रकार के सुस्वादु व्यंजनों तथा अनेकों प्रकार के फल भोजन में प्रयोग किये जाते थे। लौंग, इलायची, मिर्च मसालों से युक्त चटपटा भोजन प्रिय था। माँस, मदिरा का समाज में प्रयोग किया जाता था। गुप्त सम्राटों ने दृढ़ साम्राज्य की एकता के साथ ही आर्थिक समृद्धि की ओर भी विशेष ध्यान दिया। दृढ़ राजनैतिक सत्ता तथा आर्थिक समृद्धि के फलस्वरूप संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों की उन्नति में सहायता मिली। देश में अनेक व्यवसायों की उन्नति हुई। आन्तरिक तथा वाह्य व्यापार में असाधारण उन्नति हुई। उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों में किये उत्खननों तथा विभिन्न स्थलों में प्राप्त स्मारकों एवं कलाकृतियों से यह बात सिद्ध है कि शासक वर्ग के साथ साथ व्यवसायियों के निगमों तथा जन-साधारण ने देश की सर्वांगीण सांस्कृतिक उन्नति के लिए कार्य किये।

साहित्यिक विवरणों से विवेच्य युग की पोशाक के सन्दर्भ में प्रचुर ज्ञान प्राप्त होता है। मौसम के अनुसार ऊनी, सूती, रेशमी वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था। वेशभूषा में वसन, अधो-वस्त्र तथा नीचे कंचुक, पगड़ियों, कोट आदि विभिन्न प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था। सौन्दर्य प्रसाधनों का उल्लेखनीय स्थान था। चूड़ामणि, निष्क, हार, कर्णफूल, मुक्तावलि, कड़े आदि अलंकार सोने चाँदी तथा बहुमूल्य हीरे जवाहरात के पहने जाते थे। हाथी दांत के आभूषणों का उल्लेख मिलता है। विवेच्य युग की मथुरा, कौशाम्बी, अयोध्या, अहिच्छत्र, कुशीनगर, सारनाथ, श्रावस्ती, देवगढ़, कम्पिल, कन्नौज एवं संकीसा से प्राप्त अनेक प्रकार की मूर्तियों का उल्लेख तथा अवलोकन करने से विदित होता है कि वेशभूषा अत्यधिक सुन्दर सुरुचिमय एवं वैभवपूर्ण थी। गर्मी के दिनों में अलंकृत वस्त्रों को प्रयोग करने का उल्लेख मिलता है। मथुरा की डोरियाँ, काशी के वस्त्र तथा आसाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के रेशमी वस्त्र प्रसिध्द थे । वस्त्रो की रंगाई छपाई, चुन्नट डालना, कुमकुम के छापो की रंगाई की कला विकसित अवस्था में थी। तन मन इतना पवित्र था कि उस युग में सम्पूर्ण लालित्य विविध कलाओं में उड़ेल दिया। मूर्तिकला स्थापत्यकला साहित्य तथा लेखनकला, वास्तुकला, चित्रकला का न्यनोन्मिलन काल से क्रमशः विकास होता हुआ गुप्तकाल तथा हर्ष काल में मूर्धन्य स्थान पर पहुँच गया। परिणाम स्वरुप भारतीय इतिहास के रंगबिरंगे पृष्ठ स्वर्णमय हो गये, मथुरा, अहिच्छत्र, सारनाथ, काशी, कपिल, संकीसा, कसिया, अयोध्या, अतरंजीखेड़ा, बिठूर, मूसानगर, भीतरगाँव, भीटा, गढ़वा, अतरंजीखेड़ा, लुम्बनी, गूँसी, काशीपुर बैशाली, गया आदि विविध स्थानो से प्रचुर संख्या में मूर्ति, सिक्के, ताम्रपट, शिलालेख, वेदिका स्तम्भ प्राप्त हये हैनाये नयेनगर तथा उपनिवेशो का विकास हुआ आवागमन के साधनविकसित थे, विविध प्रकार के वस्त्र, चंदन, सुगन्धित पदार्थ, औषधियाँ, हाथी दाँत की वस्तुये मोती चमकीले पत्थर तथा मसाले आदि विभिन्न प्रकार वस्तुयें विदेशो को निर्यात होती थी यह युग साहित्य सृजन का युग था। यदि साहित्याकाश की झरोखो से झाँक कर देखे तो माँ भारती का भव्य भवन अवलोकित होगा। जिसकी दीवारो पर मूँक तूलिका से रंग बिरंगे चित्र बनाये है। अनेक शिल्पियों ने फर्श को अनोखे ढंग से सजाया है। वेद वेदागं, ब्रह्मण, उपनिषद, अरण्यक, महाभारत, गीता, रामायण जैसे तत्व चिंतक ग्रन्थ बौध्द तथा जैन जैसे धार्मिक ग्रन्थ अष्टाध्यायी, अर्थशास्त्र, महाभाष्य जैसे कूटिनीतिज्ञ तथा बुध्दि विचारक ग्रन्थ, रघुवंश, शाकुन्तला, हर्ष कादम्बरी जैसे ~~कूटिनीतिज्ञ तथा बुध्दि~~ सुन्दर और सुरुचिमय ग्रन्थो का सृजन हुआ। जीवन के ऊँचे मापदण्ड तथा ऊँचे आदर्श थे। सामाजिक मान्यता सम्बन्धी धर्मरुपी माला में गुँथे हुए माँ भारती के गले की मनोहारी मणिमाला का रुप धारण किये हुऐ थी जिनसे आज भी जनमास का हृदय सुवासित होरहा है। विवेच्य युग का साहित्य शाश्वत होने पर भी बाहरी परिधान ऐतिहासीक है जो धर्म का मूलं स्तम्भ तथा प्रेरणा श्रोत है।

धर्म की इतनी विशद एवं व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की गई कि भारतीय जीवन का प्रत्येक क्षेत्र उसके आंचल में समाविष्ट हो गया। वेद सत्य है और सत्यकाल से परे है अतः वेद शाश्वत है चिंतन दर्शन और साक्षात कार्य के क्षेत्र में जो ज्ञान रश्मियो के अन्तःपटल पर अवतरित हुई वह दिव्य ज्ञान सामयिक परिभाषा और परिकल्पनाओं में ग्रथित होकर एक विशेष सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में प्रस्फुटित हुआ। धर्म का अर्थ पवित्र आत्मशुध्दि, शिष्टाचार तथा कर्तव्य का पालन विशालतम प्राणीहित भावना से ओतप्रोत था। मानव का सरल हृदय प्रकृति के अनन्त शक्तियो के समक्ष नतमस्तक हो गया। विवेच्य युग के प्रारम्भ काल में देवताओ को पार्थिव देवता (अग्नि, सोम, पृथ्वी) अन्तरिक्ष देवता (इन्द्र, वायु, मारुत, पर्जन्य) तथा स्वर्ग के देवता (द्योम वरुण सूर्य, मित्र सवितापूषन और विष्णु) तीन कोटियो में विभाजित किया गया। कालान्तर में मनुष्य ने देखा कि जिस प्रकार संसार की बाह्य शक्तियाँ जीवन को संचालित एवं प्रभावित करती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसी प्रकार अन्तः शक्तियाँ क्रोध बुद्धि एवं शक्ति भी जीवन को प्रचुर मात्रा में प्रभावित करती है। संसार के सभी परिवर्तनो में एक तत्व व्याप्त है। धीरे धीरे देवताओं की संख्या बढ़ने लगी। उनकी संख्या 33 करोड़ होगई। शिव, ब्रह्मा, कार्तिकेय, पृथ्वी, सविता, दुर्गा, आदि विभिन्न देवी देवता पूजित थे। वैदिक धर्मों में यज्ञो का बाहुल्य था। दैनिक यज्ञ (देवयज्ञ, पितृयज्ञ अतिथि यज्ञ, ब्राह्म यज्ञ तथा भूत यज्ञ) अग्निहोत्र (सन्ध्या तथा प्रातः) माह में दोबार यज्ञ (प्रतिपदा एवं पूर्णिमा) राजसूय यज्ञ, उक्थयज्ञ, सोमयज्ञ, अश्वमेध यज्ञ तथा वर्षों तक चलने वाले यज्ञो का आयोजन किया जाता जिसमें असंख्य पुरोहित, विपुल धनराशि तथा अनेक पशुओं का वध किया जाता उपनिषदों को वेदरुपी समुद्र का मथा हुआ अमृत कहा जाता है इनमें वैदिक चिंतन का सार संग्रहित है। धर्म एवं ज्ञान को प्रमुख स्थान दिया। विश्व की पहेली समझने तथा आत्म चिंतन का निरुपण करने में वैदिक ऋषियों का महत्वपूर्ण स्थान है। देश, समाज तथा परिवार के कल्याण हेतु आत्म बलिदान ही महाकाव्यो का ध्येय है। संसार एक कर्मभूमि है जहाँ शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। सत्य बोलना सबसे बड़ा धर्म है।

यज्ञो के जटिल कर्मकाण्डों के विरुद्ध जो प्रतिक्रिया तथा चिंतक मुनियो द्वारा प्रारम्भ हुई उसका महत्वपूर्ण परिणाम भागवत धर्म का प्रारम्भ था। भक्ति एवं कर्तव्यो के सामंजस्य से ही मनुष्य का कल्याण सम्भव है। यज्ञों की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए उसमें एक सर्वोपरी शक्ति की सत्ता, आत्मा की अमरता, कर्म मार्ग की उत्कृष्टता तथा हरिभक्ति को प्रतिपादित किया गया जिसका उद्देश्य वैदिक मर्यादा, प्राचीन परम्पराओं और याज्ञिक अनुष्ठानो को स्थिर रखते हुए धर्म के एक ऐसे स्वरुप का प्रतिपादन करना था जो नये चिंतन के अनुरुप था। तपोयज्ञ, स्वाध्याय यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, वास्तविक यज्ञ है इसके अनुष्ठान के लिए विधि विधानो की आवश्यकता नही। ज्ञान प्राप्ति, स्वाध्याय चित्त शुध्दि और संयम द्वारा इस यज्ञ का अनुष्ठान होता है उसी में समाज का कल्याण निहित है।

उपनिषदों के कर्मकाण्ड, अनुष्ठानो और कृतिम यज्ञो का विरोध कर बुद्धिवादियों, आध्यात्मिक विद्या तथा मोक्ष प्रवृत्ति पर बल बौध्द तथा जैन धर्म में दिया गया। जटिल एवं अन्ध विश्वास की कटुशिता ने जीवन की रंगीन दुनियाँ में विष घोल दिया था। जाति पाँति तथा वर्णाश्रम के नियम कठोर हो गये थे परिणाम स्वरुप धार्मिक सुधारण प्रारम्भित हुए। निर्वाण इसी जन्म में सम्भव है। मोक्ष विरस्थायी अर्धगामिनी है। ईश्वर को सृष्टिकर्ता के रुप में स्वीकार नही किया गया। संसार, जीव, पुद्‌गल, धर्म, अधर्म, आकाश और पाताल का समुदाय है। ये पदार्थ शाश्वत नित्य और अनश्वर है। गौतम बुध्द जी ने बौध्द धर्म का प्रचार विविध स्थानो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मे भ्रमण कर सरल भाषा में दिया इसी उद्देश्य से वह सारनाथ, श्रावस्ती, ऋषिपत्तन, कपिलवस्तु गया, वैशाली, कौशाम्बी, वाराणसी, संकिसा, कन्नौज, कुशीनगर, प्रयाग, मथुरा आदि स्थानो की तीर्थ यात्रा की तथा समाज इनके उपदेशो से काफी प्रभावित हुआ। यश (काशी का धनाढ्य श्रेष्ठी पुत्र) राजा बिम्बसार, सारिपुत्र, मौदगलायन, (ब्राह्मण) महाकश्यप, राजा शुध्दोधन, राहुल यशोधरा (पत्नी), आनन्द (शुध्दोधन के भाई का लड़का), अनुरुध्द (चाचा का लड़का), भद्रिय (शाक्य का पुत्र) नन्द (शुध्दोधन तथा महा प्रजापति का पुत्र), देवदत्त (बुध्द के मामा), उपालि (नाई) छंदक (सारथी), अनाथ पिंडिक, कौशल (सेठ), राजा प्रसेनजित आदि प्रसिध्द विध्दानो सेठो ने बुध्द का शिष्य बनकर अपने जीवन को धन्य बनाया। जैन धर्म के प्रमुख केन्द्र मथुरा, अहिच्छत्रा, कम्पिल, आदि स्थान थे। जैन तथा बोध्द धर्मों ने कठिन साधना तथा अहिंसा पर विशेष बल दिया गया। भागवत धर्म का वेग पूर्ववत ही रहा। इन्द्र, शिव, यक्ष, नाग, सर्प की महत्ता के साथ ही यज्ञो का काफी प्रचलन था। भक्ति का वेग विपुल मात्रा में प्रवाहित हो चला था। बोध्द तथा जैन धर्म के समय की प्रमुख विशेषता थी कि मनुष्यको चेतना गवेषणा के कोड में उन्मुक्त विहार कर रही थी। सम्पूर्ण सृष्टि जिज्ञासा का विषय बन गई। मनुष्य की उत्सुकता जिज्ञासा और तर्कशीलता ने सम्पूर्ण वातावरण को सस्वर कर दिया था। अन्ध विश्वासो से अपने दामन छुड़ा कर तर्क की सहचरी बन गई थी।2 जीवन के विविध विषयो का मूल्यांकन हुआ विचारो के ठहरावट आये। सिध्दान्तो के संघर्ष हुए। विभिन्न दर्शन आपस में टकराये। इसके विपरीत भारतीय ग्रामीण सम्प्रदाय रुढ़िवादी एवं परम्परानुगामी ही रहे। मनोविज्ञान का प्रथम पुष्प भारतीय दर्शन उधान में ही खिला। भारतीय इतिहास के रंगमंच पर अशोक सूर्य के समान उदित हुआ। आज भी प्रियदर्शी अशोक का धर्म भारतीय तिरंगे झंडे के मध्य सत्यं शिवं सुन्दरम् का जयघोष गुंजित कर रहा है। यद्यपि अशोक बोध्द धर्म का अनन्य उपासक था पर साथ ही शैव, वैष्णव, भागवत, सभी धर्म की सफलता की उंचाइयों को स्पर्श कर रहे थे। अशोक ने पाटिलीपुत्र में बौध्द समिति का आयोजन किया। धर्म महामात्रो की नियुक्ति की तथा बौध्द उपदेशो को शिलालेखो, त्रिपटको तथा चट्टानो पर अंकित कराये। मथुरा, सारनाथ, लुम्बिनी संकीसा, कुशीनगर, कौशाम्बी श्रावस्ती बोध्द धर्म के महान केन्द्र थे। बोध्द मूर्तियो का निर्माण प्रचुर मात्रा में हुआ।

निश्चय ही अशोक स्वर्ग से अवतीर्ण देवदूत था जिसने अपनी सहिष्णुता एवं जनहित के कार्यों से विवेच्य क्षेत्र की काया ही पलट दी।

मौर्य शासन समाप्ति के उपरान्त भारतीय राजनैतिक, सांस्कृतिक जीवन में नया मोड़ आया। अशोक द्वारा बौध्द धर्म को सार्वदेशिक धर्म बनाने का उत्कृष्ट प्रयास सफल न हो सका। उसकी मृत्यु के कुछ समय बाद ही बौध्द धर्म के प्रतिआस्था कम होने लगी। भारतीय प्रबुध्द

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्ग ने इस बात को भली प्रकार समझा कि राष्ट्रीय उन्नयन में वैदिक विचार धारा ही सर्वाधिक महत्व की है। इस विचार से विछिन्न होने देश की बहुमुखी/उन्नति पर कुठाराघात होना वैदिक धर्म में धीरे धीरे हिंसा की प्रवृति आध्यात्मिक चिंतन के विकास के साथ साथ कम होती गई। कालान्तर में भक्ति का महत्व बढ़ा और उसके फलस्वरूप मन्दिरो तथा मूर्तियो का निर्माण तथा उसकी पूजा अर्चना में वृद्धि हुई। ई०पू० दूसरी सती में वैदिक धर्म के अन्तर्गत भगवत, शैव तथा शाक्त आदि धर्मों का प्रभाव बढने लगा । इसके साथ ही बौध्द तथा जैन धर्मों ने भी भक्ति के मार्ग को विशेष रुप से अपनाना प्रारम्भ किया शुंगो तथा वाहनो के समय में धर्म तथा दर्शन के क्षेत्र में सहिष्णुता के सिध्दान्त का विशेष रुप से उन्नयन हुआ इसका चर्मोत्कर्ष गुप्तकाल में देखने को मिलता है। गुप्त तथा हर्षकाल में सहिष्णुता तथा समन्वय की विचार धाराये प्रबल हुई। विदेशी संस्कृति को भारतीय संस्कृति ने अपने अंक में उदारता से समाहित कर लिया। शुंग तथा सातवाहन शासको ने बोध्द तथा जैन धर्म का कुठाराघात से आहत हुए वैदिक धर्म की बागडोर अपने हाथो में लेकर उसका उनरुध्दार किया। वैदिक यज्ञो तथा अन्य कर्मकाण्डो का तीव्र गति से प्रचलन प्रारम्भ हुआ जिसका प्रभाव अशोक के शासन काल में अवरुध्द हो गया था। वैदिक यज्ञो तथा अन्य कर्मकाण्डो का प्रचलन हुआ। इन शासको के समय में बोध्द स्मारको तथ मूर्तियो का प्रचुर मात्रा में निर्माण हुआ । अन्य सभी धर्मों का प्रचार वैदित धर्म के साथ साथ हुआ। गुप्तकाल तथा हर्षकाल भारतीय संस्कृति जाज्वल्यमान नक्षत्र है। यह युग धार्मिक संकीर्णता का न था। इतिहास के पृष्ठो का अध्ययन इस सत्य को घोषित करता है कि प्रायः एक धर्मानुयायी दूसरे धर्मानुयायी के प्रति असहिष्णु हुआ करते थे परन्तु विवेच्य युग के सम्राट इसनीति के अनुगामी न थे विभिन्न धर्मो को शाखाये फलती फूलती रही। तथा स्वच्छन्दता पूर्वक अपने विचारो का प्रसार एवं प्रचार करती रही। गुप्त सम्राट स्वयं वैष्णव धर्मानुयायी थे परन्तु उंचे उंचे पदो पर विभिन्न धर्मानुयायी व्यक्तियो को नियुक्त किया । हर्ष स्वयं बोध्द था। परन्तु कन्नौज की सभा में बुध्द प्रतिमा के साथ ही सूर्य तथा शिव प्रतिमा भी स्थापित करायी। बोध्दो के साथ ब्राहमणो को भी प्रचुर मात्रा में दान दिए । दिवाकर मित्र की बोध्द संस्था में विभिन्न धर्मावलम्बी तत्वचिंतन हेतु एकत्र थे ।

उत्तर प्रदेश के क्षेत्रमें प्राप्त गुप्त , हर्ष कालीन अवशेषो की संख्या बहुत बड़ी है। उनसे भारतीय इतिहास के स्वर्णयुग को समझने की दिशा में पर्याप्त सहायता मिली है। उत्तर और दक्षिण के बीच उत्तर प्रदेश का भूभाग एक कड़ी के रुप में रहा है। इसका ध्यान भी उन अवशेषों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से होता है । संस्कृति के अनेक रूप इस क्षेत्र से होकर उत्तर और दक्षिण की ओर गये अनेक तत्वों ने देश के बाहर विशेषकर दक्षिण पूर्व एशिया के देशो में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया जो परम्परायें गुप्त स्वर्णकाल तक इस क्षेत्र में निर्मित हो चुकी थी उनका विकास परवर्ती काल में भी जारी रहा। भारतीय संस्कृति के निर्माण और विकास में उत्तर प्रदेश क्षेत्र को निसंदेह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह प्रदेश संस्कृति की दृष्टि से समग्र भारत के सांस्कृतिक गौरव का आदि योजक उपादान तथा धर्म की दृष्टि अध्यात्म और व्यवहार दर्शन का विन्दु केन्द्र रहा है और ऐसा अतीत मे ही नही उसकी ये सर्वांगीण गौरव परम्परायें आधुनिक इतिहास मे भी सुरक्षित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धार्मिक साहित्य

वेद:-	ऋग्वेद	-	श्री राम शर्मा बरेली 1962
	अथर्व वेद	-	सातवलेकर दामोदर(स्वाध्याय मंडल पारडी) (जि० सूरत, गुजरात) तुलसीराम सोनी
	सामवेद	-	सातवलेकर श्री पाद दामोदर
	यजुर्वेद	-	यजुर्वेद का सुबोध भाष्य
ब्राह्मण:-	ऐतरेय ब्राह्मण	-	सन 1996 हरनारायण आप्टे आनन्द आश्रम प्रेस, पूना
	शतपथ ब्राह्मण	-	प्रथम भाग(चन्द्रधर शर्मा, अच्युत ग्रन्थमाला-काशी)
	पंचविंश ब्राह्मण	-	षडविंश ब्राह्मण(सायणाचार्य कृत वेदार्थ प्रकाश सहित (चौखम्बा संस्कृत सिरीज,वाराणसी
	गोपथ ब्राह्मण	-	नारायण प्रेस, कलकत्ता सं॰ राजेन्द्र लाल मित्र प्र॰ चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
आरण्यक:-	ऐतरेय आरण्यक	-	आनन्दाश्रम प्रेस, पूना
	शाखायन आरण्यक	-	शाखायन आरण्यक चौखम्बा संस्कृत सिरीज, वाराणसी
	मैत्रायणी आरण्यक	-	जीवानन्द विद्यासागर- अरण्य संहिता सरस्वती प्रेस-कलकत्ता।
	तैत्तिरीय आरण्यक	-	अरण्य संहिता (सरस्वती प्रेस)
उपनिषद:-	केनोपनिषद		(शंकर भाष्य, गीता प्रेस, गोरखपुर
	मुण्डक		(माण्डूक्योपनिषद आनन्दगिरि व्याख्यायुक्त(चौखम्बा सं॰ सिरीज, वाराणसी
	छन्दोग्य-	-	आनन्दाश्रम संस्कृत सीरीज, पूना 1902
	बृहदारण्यक-	-	गीता प्रेस, गोरखपुर- आनन्दाश्रम प्रेस, पूना
	स्मृति पुराण	-	अग्नि पुराण - कलकत्ता सं॰ 2014
	गरुण पुराण	-	पं॰ पुस्तकालय , काशी सन् 1963
	पद्म पुराण	-	आनन्दाश्रम- पूना 1894
	भागवत पुराण	-	गीता प्रेस, सं॰ 2113
	मत्स्य पुराण	-	आनन्दाश्रम , पूना
	मार्कण्डेय	-	वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
	वाराह पुराण	-	श्री हृषीकेश शास्त्री, कलकत्ता, 1893
	विष्णु पुराण	-	गीता प्रेस, गोरखपुर सं॰ 2009

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मनुस्मृति - गोयल ब्रदर्स देहली, (सम्पादित पं० तुलसी राम स्वामी) कृष्णा प्रेस, बम्बई।

बृहस्पति स्मृति - सम्पादक पापूहर 1879

कात्यायन स्मृति - सम्पादक एन०सी० बन्धोपाध्याय, कलकत्ता 1927

महाकाव्य - महाभारत - गीता प्रेस, गोरखपुर

रामायण - गीता प्रेस, गोरखपुर

भागवत गीता - ,, ,,

धर्मसूत्र

आपस्तम्ब - स० बूलर तृतीय संस्करण बंबई 1932

गृह्य खंड I - आक्सफोर्ड 1886 खंड II 1892

बौधायन धर्मसूत्र - गवर्नमेन्ट ओरियेन्टल लाइब्रेरी सीरीज, मैसूर 1901

वैदिक साहित्य का इतिहास - आ० बलदेव उपाध्याय, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

भारतीय धर्म और दर्शन - आचार्य बलदेव उपाध्याय (चौखम्बा संस्कृत, सिरीज, वाराणसी)

भारतीय संस्कृत और साधना - गोपीनाथ कविराज, चौखम्बा सं सि० वाराणसी

बौद्ध साहित्य

त्रिपिटक - नालन्दा भिक्षु जगदीश कश्यप

परिनिर्वाण सूत्र - सारनाथ भिक्षु कितिमा

अवदान शतक - 2 भाग - सेन्ट पीटर्स, स्पेयर ऊंची कावल तथा आर०ए० नील द्वारा

दिव्यावदान - सम्पादित - 1886

सौन्दर नन्द (अश्वघोष) कठोतिया सूर्य नारायण चौधरी)

बुद्ध चरित्र (अश्व घोष)

दीर्घ निकाय की अट्ठ कथा - सुमंगल विलासिनी पालिटेक्स्ट सोसाइटी संस्करण 3 जिल्द

मझिम निकाय की अट्ठ कथा - पपंचसूदनी - अलुविहार सिंहली संस्करण

संयुक्त निकाय की अट्ठ कथा - पालिटेक्स्ट सोसाइटी संस्करण, 3 जिल्द

अंगुत्तर निकाय की अट्ठ कथा - मनोरथ पुरणी - सिंहली संस्करण

थेरी गाथा - पालिटेक्स्ट सोसाइटी संस्करण

महावंश टीका - ,, ,,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिलिन्द पनोह - आर० डी० बडेकर द्वारा

जातक - रोमन लिपि में वी० फासबोल द्वारा सम्पादित 6 जिल्दें लन्दन 1877-96

अभिधर्म कोष - राहुल द्वारा सम्पादित काशी विद्यापीठ बनारस सं० 1988

महावस्तु - ई० सेन द्वारा सम्पादित 3 जिल्दें पेरिस 1882-97

जैन साहित्य

उत्तराध्ययन सूत्र और कृतांग सूत्र - एच० जेकोबी द्वारा हिन्दी में अनुवाद 1895

आचारांग सूत्र

नायाधम्म सूत्र कहा

उवासंग दसाओ सूत्र

अन्तगड दसाओं सूत्र

चूर्णि

सामयिक ग्रन्थ

अष्टाध्यायी - पाणिनी

महाभाष्य पतंजली

अर्थशास्त्र - कौटिल्य

धर्मशास्त्र - वात्सायन- डी० एल साहित्याचार्य , बनारस 1929

हर्ष - वाण- ए फ्यूहरर बाम्बे 1909

कादम्बरी - वाण के० पी० पर्व बाम्बे 1896

मेघदूत रघुवंश - कालिदास

मालविकाग्नि मित्र - ,,

विक्रम वंशीय - ,,

शकुन्तला - ,, एम० विलियम II संस्करण आक्सफोर्ड 1876

कुमार सम्भव - कालिदास चौखम्बा काशी

काव्य मीमांसा - राजशेखर - बड़ौदा सी० डी० दलाल द्वारा, सम्पादित 1924

विदेशी यात्रा विवरण

वाटर्स - ट्रेवल्स आफ हेनसांग इन इंडिया

सैमुअल बील - लाइफ आफ हेनसांग लंदन 1911

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बील - बुद्धिस्ट रिकार्ड आफ वेस्टर्न वर्ड लंदन 1884

गाइल्स - ट्रैवेल्स आफ फाहियान- लंदन 1923

लेगे - ट्रैवेल्स आफ फाहियान - आक्सफोर्ड 1886

मेक्क्रिंडल - ऐंशियेन्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड

,, - इनक्लासिकल लिटरेचर कलकत्ता 1904

,, - ऐंशियेन्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड वाई मेगस्थनीज एंड ऐरियन कलकत्ता

,, -

,, - ऐंशियंन्ट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड वाई टालमी कलकत्ता 1927

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स न्द र्भ - ग्र न्थ

1- अवस्थी अवध विहारी लाल : "प्राचीन भारतीय भूगोल" प्रथम संस्करण 1972 कैलाश प्रकाशन लखनऊ

2- ,, ,, ,, ,, : प्राचीन भारत का भौगोलिक स्वरूप 196 प्रथम संस्करण

3- ए० बी० लाल : स्टडीज इन स्कन्द पुराण भाग। लखनऊ 1966

4- अग्रवाल वासुदेव शरण : प्राचीन भारतीय अभिलेखों का अध्ययन 1961

5- ,, ,, ,, : हर्ष चरित्र एक सांस्कृतिक अध्ययन पटना 1967

6- ,, ,, ,, : पाणिनी कालीन भारत जुलाई 1969 वाराणसी

7- ,, ,, ,, : "प्राचीन भारतीय लोक धर्म" वाराणसी 1964

8- ,, ,, ,, : "भारतीय कला" वाराणसी 1969

9- अग्रवाल पी० के० : "स्कन्द कीर्तिक" 1967

10- ,, ,, : "मथुरा टेरी कोटा" 1936

11- आचार्य दीपकर : "कौटिल्य कालीन भारत" 1969

12- उपाध्याय : "प्राचीन भारत का इतिहास,

13- ,, : "ईंडिया इन कालिदास" इलाहाबाद 194

14- ,, वासुदेव : "अ स्टडी आफ एंशियेन्ट इंसक्रिपशन देहली 1961

15 ,, ,, : "प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान,

16- ,, भरत सिंह : "बौध्दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन सं० 2011 प्रथम संस्करण कलकत्ता

17- ,, भगवत शरण : "गुप्त काल का सांस्कृतिक इतिहास" लखनऊ 1969

18- ,, ,, : "बुध्द कालीन भारतीय भूगोल" सं० 2018 प्रयाग

19- ,, ए० एन० : "जैनिज्म एंड वैदिज्म"

20- एडवर्ड एम० : "ए हिस्ट्री आफ ईडिया फ्राम अरलियस्ट टाइम टू प्रजेंट डे 1961

21- एलन जे० : केटालाग आफ कायंस आफ एंशियेन्ट ईंडिया" लंदन 1936

22- ओम प्रकाश : प्राचीन भारत का इतिहास "(प्राचीन भारत जी०पी० मेहता)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

23- ओझा गौरी शंकर हरिश्चन्द्र : "मध्यकालीन भारतीय संस्कृति (मध्य)
24- ओ० एच० के० स्पेड : "इंडिया एंड पाकिस्तान" 1957
~~25-~~ द्वितीय संस्करण
25- कनिंघम ए० : "एंशियेन्ट ज्योग्राफी आफ इंडिया कलकत्ता" 1936
26- काणे० पी० वी० : "हिस्ट्री आफ धर्म शास्त्र"
27- ,, ,, : "जिल्द 1, 2, 3, पूना 1940-53
28- कौशाम्बी धर्मानन्द : "भगवान बुद्ध" 1956, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, इलाहाबाद
29- कुमार स्वामी : "हिस्ट्री आफ इंडियन एंड इंडोनेशियन आर्ट" 1927
30- कीथ : "हिस्ट्री आफ संस्कृत लिटरेचर"
31- क्रुक डब्लू : "पोपुलर रिलिजन एंड फोक्क पेयर आफ नार्दन इंडिया भग 1 1896
32- गुप्त परमेश्वरी लाल : "गुप्त साम्राज्य" 4 वाराणसी 1970
33- गुलाब राय : "भारतीय संस्कृति" 1974-75
34- गैरोला वाचस्पति : "भारतीय संस्कृति और कला" लखनऊ 1973
35- ,, ,, : "भारतीय दर्शन तृतीय संस्करण" 1972
36- गेटिऐलिस : "गणेश" आक्सफोर्ड
37- घोष अमलानन्द : "जैन आर्ट ऐड आर्किटेक्चर जिल्द 1- दिल्ली 1975
38- चन्दा : "दि बिगनिंग्स आफ आर्ट इन ईस्टर्न इंडियन म्यूजियम विद स्पेशल रिफ. रैंस टू स्कल्पचर इन इंडियन म्यूजियम" कलकत्ता 1927
39- चटर्जी नन्द लाल : "ग्लोरिज आफ उत्तर प्रदेश" लखनऊ 1957
40- चटर्जी गौरीशंकर : "हर्षवर्धन प्रथम संस्करण 1938 इलाहाबाद
41- जायसवाल काशीप्रसाद : "हिस्ट्री आफ इंडिया", लाहौर 1933
42- ,, ,, : "द ऐज आफ इम्पीरियल यूनिटी" बम्बई 1951
43- जैन ज्योति प्रसाद : "भगवान महावीर स्वामी स्मृति ग्रन्थ" 3, 11-75
44- ,, ,, : "उत्तर प्रदेश और जैन धर्म" लखनऊ 1976
45- ,, ,, : "भारत के प्राचीन तीर्थ" 1952
46- जैन बलभद्र : "भारत के दिगम्बर जैन तीर्थ" भाग 1 1974 नवम्बर
47- जैन कामता प्रसाद : "कम्पल कीर्ति,
48- जोशी एन० पी० : "कुषाण कालीन विष्णु प्रतिमायें 1968

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

49- जोशी एन0पी0 : 'प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान प्रथम संस्करण' 2000

50- ,, ,, : ,, ,,, 1977

51- जयचन्द्र : 'भारत भूमि और उसके निवासी ' द्वितीय संस्करण सं0 1987

52- जार्ज वार्ट : 'इंडियन आर्ट ए देहली' 1903

53- जोली : हिन्दू लॉ कस्टम'

54- जानसन इलियट : 'हिस्ट्री आफ इंडिया भाग 3

55- दत्त रमेश चन्द्र : 'प्राचीन भारत की सभ्यता का इतिहास' इलाहाबाद 1963

56- द्विवेदी हजारी प्रसाद : 'प्राचीन भारत के कलात्मक विनोअ' बम्बई 1955

57- दत्त नलिनाक्ष और बाजपेई के0डी0 : 'उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास, लखनऊ 1956

58- दे0 नन्द लाल : 'ज्योग्राफी डिक्शनरी आफ एंशियेन्ट एंड मिडिवल इंडिया' लंदन 1924

59- पाण्डेय राजबली : 'प्राचीन भारत वाराणसी ' 1968

60- पाण्डेये विमल चन्द्र : 'प्रचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास, इलाहाबाद 1957

61- ,, ,, : 'भारतीय सामाजिक चिन्तन :

62- पार्जिटर : 'एंशियेण्ट इंडियन हिस्टारिकल ट्रेडीशन 1922

63- पाण्डुरंग : 'धर्म शास्त्र का इतिहास' ~~1958=प्रथम=संस्करण~~ भाग1 1600 लखनऊ

64- पाण्डेय श्रीनेत्र : 'भारत का वृहत इतिहास' 1950 प्रथम संस्करण

65- पाण्डेय उमा : 'भारत के सांस्कृतिक केन्द्र' वाराणसी 1960 प्रथम संस्करण

66- ,, :: : वाराणसी

67- वार्मिंगटन : 'कामर्स बिटवीन दी रोमन एम्पायर एंड इंडिया'

68- वाशम एल0एम0 : 'वंडर दैट वाज इंडिया 1967

69- वाट : 'इंडियन आर्ट एट देहली एक्जीबिशन'

70- ,, : 'डिक्शनरी आफ एकोनामिक प्रोडेक्ट आफ इंडिया'

71- बाजपेई के0डी0 : 'युगो- युगों में उत्तर प्रदेश ' 1954

72- ,, ,, : 'इंडियन न्यूमैस्टिक स्टडीज, अभिनव प्रकाशन' नई दिल्ली 1976

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

73- बाजपेई के०डी० : "प्राचीन भारत में संगठित जीवन"
74- ,, ,, : "प्राचीन भारत का विदेशों से सम्बन्ध" 1973 इन्दौर
75- ,, ,, : "ब्रज साहित्य का इतिहास प्रथम एवं द्वितीय भाग 2011 संवत् 2015
76- ,, ,, : "मथुरा परिचय" सं० 2010
77- ,, ,, : "मथुरा भारत के सांस्कृतिक केन्द्र" 1980 प्रथम संस्करण
78- ,, ,, : "उत्तर प्रदेश का सांस्कृतिक इतिहास द्वितीय संस्करण 1962
79- ,, ,, : "प्राचीन भारत का इतिहास"
80- बनर्जी आर० डी० : "गुप्ता", वाराणसी 1933 इण्डिया इंपीरियल 1908
81- ,, ,, : "दि एज आफ दि इम्पीरियल"
82- बनर्जी जे० एन० : "डेवलपमेन्ट आफ हिन्दू आइकिनोग्राफी कलकत्ता 1941
83- विन्टरनिज : "प्राचीन भारतीय इतिहास" पटना 1907
84- ब्राउन पर्सी : "इंडियन आरचीटेकटर, बम्बई 1948
85- ,, ,, : "हिन्दू एण्ड बुध्दिस्ट आर्कीटेक्टर"
86- वेदालंकार हरिदत्त : "हिन्दू विवाह का संक्षिप्त इतिहास
87- ,, ,, : "प्राचीन भारत का राजनैतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास"
88- बुद्ध ए० पी० महाथेर : "काइज पालि इंगलिश डिक्शनरी"
89- वियोगी मोहन लाल : "जातक कालीन संस्कृति" 1958
90- बाण : "हर्ष चरित्र"
91- विद्यालंकार सत्यकेतु : "प्राचीन भारतीय इतिहास का वैदिक युग" प्रथम संस्करण 1977 मसूरी
92अ वैद्य चिन्तामणि विनायक : "ऐपिक इंडिया" भाग 1
ब विद्यावन्धु : उत्तर प्रदेश का भूगोल। मार्च 1967
93- भगवती प्रसाद : "हर्षवर्धन शिलादित्य" 1953
94- भटनागर कालीशंकर : "भारतीय संस्कृति का इतिहास,
95- भट्टाचार्या सुखमय : "महाभारत कालीन समाज" 1966
96- मजूमदार आर० सी० : "क्लासिकल ऐज भाग-3" जनवरी 1954
97- ,, ,, : "ऐन्शियण्ट इंडिया" 1952
98- मजूमदार आर० सी० : "कारपोरेट लाइफ इन एंशियेन्ट इंडिया"
100- ,, ,, : "जबलपुर 1966

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

101- मजूमदार आर० एस० : "मथुरा" 1966

102- मुखर्जी राधा कुमुद : "हिन्दू सभ्यता 1956

103- मुखर्जी राधा कुमुद : "अशोक

104- मुखर्जी राधा कुमुद : "चन्द्र गुप्त और उसका काल " 1962

105- ,, ,, : "हर्ष 1959 कलकत्ता

106- ,, ,, : "लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट आफ ऐन्शियेण्ट इंडिया,

107- ,, ,, : "मैन एण्ड थाट इन एश्यिेण्ट इंडिया"

108- मोतीचन्द्र : "सार्थवाह" 1966 पटना

109- मोतीचन्द्र : "काशी का इतिहास

110- मोती चन्द्र : . "प्राचीन भारतीय वेषभूषा" प्रयाग वि॰ सं॰ 2006

111- मिश्र सुदामा : "प्राचीन भारत में जनपद स्टेप" वाराणसी1972

112- मिश्रा एस० डी० : "रिवर्स आफ इंडिया "देहली 1970

113- मैकडानल ए०ए० एंडकीथ : "वैदिक इंडैक्स" वाराणसी 1967

114- ,, ,, : "वैदिक माइथालजी, वैदिक पुराण कथा शास्त्र" वाराणसी 1961

115- प्रभुदयाल : "प्राचीन ब्रज मंडल में वैभव का विकास" भाग। 1977

116- मित्तल प्रभुदयाल : "ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास" 1966, दिल्ली

117- माथुर : "ऐतिहासिक स्थानावली " दिल्ली 1969

118- मामोरिया चतुर्भुज : " भारत का भूगोल" 1973

119- मिश्रा इन्दुमती : " प्रतिमा विज्ञान ", इन्दौर 1972

120- मल्लीश्वर : " डक्शनरी आफ पाली प्रापरनेस"

121- राय चोधरी : " पलिटिकल हिस्ट्री आफ एंशियेन्ट इंडियाचतुर्थ संस्करण, कलकत्ता 1938

122- राय चौधरी : " सातवां संस्करण 1972 कलकत्ता

123- राय चौधरी : , छटा संस्करण 1953 कलकत्ता

124- राजेन्द्र प्रसाद : " संस्कृत और संस्कृति " 1962 प्रकाशक सुन्दर लाल जैन तृतीय संस्करण

125- रोमा रोला : " विवेकानन्द, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण 1978

126- राधा कृष्णनन : " भारतीय दर्शन 1929

127- राधा कृष्णनन : " हमारी संस्कृति दिल्ली" 1978 तृतीय संस्करण

128- रेपसन : "कैम्ब्रिज हिस्ट्री आफ इंडिया"-प्रथम भाग।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

129- राम शरण शर्मा : "सम एकोनामी एस्पेक्ट आफ दी कास्ट सिस्टम इन एंशियेन्ट इंडिया पटना 1952

130- रिज डेविड्स : "बुध्दिस्ट इंडिया" कलकत्ता 1950

131- राय मन्थन : "प्राचीन भारतीय मनोरंजन" इलाहाबाद 1953

132- राय कृष्ण दास : "भारतीय मूर्तिकला" वाराणसी वि०सं० 2019

133- लाहा विमलचन्द्र : " ज्योग्राफी आफ अर्ली बुध्दिज्म लंदन 1932

134- लाहा विमल चन्द्र : "प्राचीन भारत का इतिहासिक भूगोल" 1972 प्रथम संस्करण

135- लाला विमल चन्द्र : "इन्डोलाजिकल स्टडीज" कलकत्ता 1952

136- लाहा विमल चन्द्र : "सम क्षेत्रीय ट्राइब्स आफ एंशियेन्ट इंडिया"

137- लाहा विमल चन्द्र : "टेक्ट आफ बुध्दिज्म जैनिज्म लंदन" 1941

138- शास्त्री नील कंठ के०ए० : "नंद मौर्य युगीन भारत" 1969 प्रथम संस्करण

139- शास्त्री गणपति : " अर्थशास्त्र

140- शाह उमाकान्त : "स्टडीज इन जैन आर्ट"

141- शिव रमा मूर्ति : "ज्योग्राफिकल एंड क्रोनोलोजिकल एंशियेन्ट इंडि 7 जनवरी 1950

142- शान्ती कुमार नानूराम व्यास : " रामायण कालीन संस्कृति " 1929

143- शुक्ल रामचन्द्र : " हिन्दी साहित्य का इतिहास काशी सं 2005

144- शुक्ल डी० एन० : " वस्तु शास्त्र" भागर 2 1958 गोरखपुर

145- शर्मा मथुरा लाल : "भारत का सांस्कृतिक विकास" आगरा 1957

146- श्याम शास्त्र : अर्थ शास्त्र

147- सिंह शिव-बहादुर : " आर्कलाजी आफ पन्चाल रीजन" आगरा 1978

148- स्मिथ : " फाइन आर्ट इंडिया एंड सिलोन" 1930 आक्सफोर्ड

149- स्मिथ : " जैन स्तूप आफ मथुरा

150- स्मिथ : "दि जैन स्तूप एंड अदर ऐन्टीक्विटीस आफ मथुरा 1901, इलाहाबाद

151 - स्मिथ : " दि कुषाण" 1903

152 स्मिथ : अशोक 1920

153- स्मिथ : "अर्ली हिस्ट्री आफ इंडिया"

154- स्मिथ : "क्वायन्स आफ एंशियेन्ट इंडिया इन ब्रिटिश म्यूजियम,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

155- सरकार डी० सी० : 'स्टडीस इन इंडियन क्वॉयस देहली' 1968

156- ,, ,, : ' सलेक्ट इंसक्रिप्शन' 1942

157- सरकार जदुनाथ : 'युग युगीन भारत' 1958 आगरा

158- सूर्यवंशी भगवान सिंह : 'भारत में कम्पिल'

159- सक्सेना मदन मोहन : ' भारतीय समाजिक व्यवस्था'

160- हुल्श : 'इंसक्रिप्शन आफ अशोक आक्सफोर्ड 1925

161- त्रिपाठी रामनरेश : ' कविता कौमुदी' भाग-15, 1946

162- त्रिपाठी रमाशंकर : 'हिस्ट्री आफ एंशियेण्ट इंडिया' बनारस 1942

163- ,, ,, : ' हिस्ट्री आफ कन्नौज ' बाम्बे 1937

~~164- विद्याबन्धु~~ : ~~' उत्तर प्रदेश का भूगोल' गर्ग 1967~~

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शोध पत्रिकायें

अग्रवाल वी० सी० : 'एपिक एंड पुराण'
भाग 6 नं० 2 जुलाई 1964, पी०यू०आर०
पृ० 333-46

अग्रवाल वी० एस० : ए० स्टूडी आफ सिम्बोलिज्म आफ अग्नि
बी०एच०ए० फर्स्ट स्कूल आफ ऋग्वेद
वाल्यूम 6 भाग प्रथम 1962-63, पृ० 21-42

अग्रवाल बी० एस० : 'प्रीप्रपरेशन आफ राजेश्वरी मैरिज'
जे० ए० आर० एस०, वाल्यूम 17, 1963
1966 में प्रकाशित, पृ० 25-38

अग्रवाल बी० एस० : ए० स्टडी आफ ऋग्वेद
वी०आई०जे०, वाल्यूम प्रथम नं० 1, मार्च 1963
पृ० 40-49

अग्रवाल आर० सी० : सम कुषाण स्कल्पचर इन्टरनेशनल म्यूजियम दिल्ली
बी० एम० ए० यू० पी० अंक 3, 1969 पृ० 23-24

अवस्थी बी० एम० एल० : सम ओबसरवेशन आन द ए नोट सत्यनारायण एट
देवगढ़
बी०एम०ए०यू०आर० भाग 7, 1971

अजकर एन० : कालिदास दर्शन, के०,एस०वी०पी०, वाल्यूम प्रथम
जनवरी 1963, पृ० 16-24

अग्रवाल वासुदेव शरण : प्राचीन भारत के सांस्कृतिक विश्व कोष महाभारत का
सिंहावलोकन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान 6 दिसम्बर 1953

अग्नेलाल : संस्कृत बौद्ध साहित्य में उत्तर प्रदेश
श्री चन्द्रभानु गुप्त अभिनन्दन ग्रन्थ, 14 जुलाई
दिल्ली 1966 पृ० 166-67

अग्रवाल वी० एस० : ट्रेड एंड कामर्स फ्रेम पाणिनीज अष्टध्यायी जे० यू० पी०
एच० एस०, वाल्यूम xiv, भाग 2
दिसम्बर 1941 पृ० 11एफ एफ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अग्रवाल वी० एस० : वैदिक स्टडीज 1962-63 पृ० 21-42

अग्रवाल वासुदेव शरण : राजघाट के खिलौनों का एक अध्ययन नागरी प्रचारणी पत्रिका 19

अग्रवाल आर० सी० : कृष्ण लीला प्लेटस प्रोम सेन्टर इंडिया जे० आई० ए० एस० ओ० न्यूज सीरिज भाग 2 1967

अग्रवाल आर० सी० : अनपब्लिश्ड टैरीकोटा एंड स्कपचर इन नेशनल म्युजियम नई दिल्ली संग्रहालय एलाइड प्रोबलम भाग 17

गांगुल बी० सी० : समुन्द्र इन ऋग्वेद जी० यू० पी० वाल्यूम XXXII भाग 2 सितम्बर १९५३ पृष्ठ ३६-४६

जोशी एन० पी० : कुषाण कालीन प्रतिमायें बी० एम० ए० यू० पी० अंक 1, 1968 पृ० 24-29

जोशी लालमणि : दू बुद्धिज्म एम० बी० यू० वाल्यूम lxxiv। नं० 1-2 जनवरी फरवरी 1966, पृ० 1-9 अध्याय 8

जोशी एन० पी० : ए यूनिक फिगर आफ शिव मूसानगर कानपुर बी० एम० ए० यू० पी० भाग 3 1969 जून पृ० 38

जोशी एन० पी० : कुछ अप्रकाशित कला कृतियाँ बी० एम० ए० यू० पी० भाग 4 पृ० 9-18

जोशी एन० पी० : देवी एकनशा कुषाण कालीन बी० एम० ए० यू० पी० भाग 1 1968 पृ० 24-29

जोशी एन० पी० : प्रारम्भिक मूर्तियों का अध्ययन, भाग 2 पृ० 6-26 बी० एम० ए० यू० पी० 1968

जोशी एल० एम० : दूथ ए० बुद्धिस्ट प्रोस्पेकटिव जे० जी० जे० के० एस० वी० आई० - xvii पार्टस 3-4, 1971 पृ० 389-302

जैन नीरज : जैन पुरातत्व में गंगा यमुना गंगा यमुना इन जैन आर्कलाजी ए० एन० डी० वर्ष 16, नं० 5 अप्रैल 1963

जोशी एल० एम० : बुद्धिस्ट प्रिंसपल आफ नान एन० ओ० टी० एम० बी० ओ० भाग एल xxIV नं० 11-12-1966

जास्टन डी० एच० : ए - टैरीकोटा फिगर एट आक्सफोर्ड जे० आई० एस० ओ० ए० 1942

जोशी नीलकंठ पुरुषोत्तम : प्रारम्भिक विष्णु मूर्तियों का अध्ययन बी० एम० ए० यू० पी० भाग 2 1968 पृ० 8 से 10

जोशी एन० पी० : यूज आफ आसपीयस सिम्बाइल इन कुषाण आर्ट एट मथुरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ठाकुर एस० आर०	- केटलाग आफ इसकेपचर इन आर्कीटिक्टर म्यूजियम ग्वालियर
धर्मानन्द	-बुध्द-म इन न्यू प्रोसपेक्टिव जे० आर० जे० आई० एस० वी० × VI II
घोष एण्ड के० सी० पनिग्रह	डिस्ट्रिक्ट आफ नार्दन पोलिश्डवेअर एंशियेन्ट इन इंडिया बुलेटिन आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इंडिया, भाग-(1) जनवरी 1956
च्यान्दोकर आर० एम०	- हिन्दूइज्म एण्ड द भागवत गीता ए फ्रेश अप्रोच जे० ओ० आई० वी० भाग 12, संख्या 3, 1963 पृ० 232-37
नागर मदन मोहन	- उत्तर प्रदेश के प्रसिध्द बोध्द तीर्थ, कुशीनगर 1956
नारायण के० बी०	- एक्सकेवेशन एट मथान, बी० एम० ए० यू० पी०, वाल्यूम मार्च-1968 पृ० 30-33
पाठक एम० डी०	- उपनिषदों मैनारी वी० जे० V० × II, न० 1-2, 1963 पृ० 85-88
बाजपेयी के० डी०	- इन्द्र इन अर्ली लिटरेचर एंडआर्ट आर० एम० न० 1, 1969, पृ० 27- 30,
बाजपेयी के० डी०	- हस्तिनापुर लखनऊ 1956 -उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक केन्द्र (2) अहिच्छत्रा 1956 प्रथम संस्करण मथुरा (1) 1955 प्रथम संस्करण
बाजपेयी के० डी०	- कल्पिल कल्प 1978, 2अक्टूबर
बाजपेयी के० डी०	- एन्सुम्भ० 3-स्काउ/यक्षा 9 इमेज फ्राम अहिच्छत्रा, जर्नल आफ यू० पी० हिस्टारिकल सोसाईटी 1950
ब्रेथवेट आर० सी०	- एन इम्प्रिरिकट न्यू आफ द नेचर रिलीजियस बिलीफ 1955 विश्वभारती पत्रिका खण्ड 14, अंक 3, 1973
भण्डारकर डी० आर०	- डेकन आफ सातवाहन पीरियट इंडियन एन्टीक्वरी जिल्द 47,- 1918
बसाक	- आर० जी० कन्ट्रीब्यूशन आफ बुध्दिज्म टू इंडियन आर्ट बी० आर० एम० आई० सी० वाल्यूम 15 न० 9 सितम्बर 1963 पृ० 333-34
मुखर्जी बी० एन०	- ए नोट ओन द एट्रीब्यूशन आफ सम कुषाण कायंस, भाग -4 बी० एम० ए० यू० पी० भाग -4, पृ० 1-3
मुन्शी के० एम०	- क्लासिकल ऐज आफ गुप्ता उत्तरीय भारती, वाल्यूम जून 1954, न० 1 पृ० 1 सम्पादक राधाकमलमुखर्जी
मुखर्जी बी० एन०	- नोट ओन द रिसेन्टली डिस्कवर्ड कुषाण रिकार्ड ए० एम० एम० बी० भाग-5, न० 5 मई, 1976 पृ० 6
मिश्रनन्दन	- गुप्त कालीन अभिलेखों से तत्कालीन सामाजिक एवं आर्थिक दशा सी० टी० टी०, भाग 3
मिश्र भास्कर नन्द	- देवगढ़ और एलोरा के रामायण सम्बन्धी दृश्य मैथलीशरण अभिनन्दन ग्रन्थ, कलकत्ता, 1959
मार्शल	- एसक्केवेशन आफ भीटा, ए० आर० ए० एस० आई० 1911-12

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दीक्षित के0 एम0 - ऐक्सैवेशन आफ कसेरी एण्ड अल्लाहपुर बी0एम0ए0यू0पी0 भाग7, पृ0 55-59

दीक्षित राम कुमार - उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक केन्द्र, कन्नौज 1955, प्रथम संस्करण

दीक्षित राम कुमार - कुशीनगर लखनऊ 1958

रखेल - द ऐक्जिसटेंस आफ गोड (सी0) सप्ताहिक जानहिक, लंदन मैकमिलन 1964

राय टी0एन0 - साइट्स एंड मोन्यूमेन्ट आफ यू0पी0 बुलेटिन आफ यू0पी0 हिस्टारिकल सोसाइटी 1965

रिचार्ड जेफरी - ए बोकाबुलरी आफ फारेन वर्ड्स इन कुरान गायकवाड़ ओरियेन्टल सीरीज 1938

राम चन्द्रन - बुध्दिष्ट स्कल्पचर्स फ्राम ए स्तूप नियरगोली विलेन मद्रास 1929

श्री सी0 एम0 - कुषाण होर्ड आफ ट्रेजर ट्रोब कायंस इन यू0पी0 -भाग3 बी0एम0ए0यू0पी0 1941-42, से 1969-70

श्री ए0के0 - ए0 होर्ड आफ कायंस फ्रोम जौनपुर भाग-4 बी0एम0ए0 यू0पी0 पृ0 27-30

श्री ए0 के0 - कुषाण गोल्डन कायंस आफ उन्नाव, भाग 5-6 बी0एम0ए0 यू0पी0

श्री ए0 के0 - फांइड स्पोट आफ कुषाण कायंस इन यू0पी0, बी0एम0ए0यू0 पी0भाग- 8, पृ0 36-43

वही - मथुरा एस नोन न्यू कायंस, बी0एम0ए0यू0पी0 भाग 11-1 पृ0 30-36

सन विक्रमान व्रात्य एंड वैदिक सोसाइटी जे0ओ0 आर्क0 आई0 बी0 भाग 12, नं0 3, 1963

स्मार्ट जे0जे0 सी0 - दि एक्जिस्टेंस आफ गाड यू ऐसेज इन फिलासफीकल थीयोलाजी विश्व-भारती पत्रिका, खंड 14, 1973

शाह यू0पी0 - इक्नोग्राफी चक्रेश्वरी- जनरल आफ ओरियन्टल इंस्टीट्यूट 1971 संख्या 3 पृ0 280-313

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिंह आर० सी० - भीतर गांव ब्रिक मन्दिर, भाग-1 बी०एम०ए०यू०पी० मई मार्च 1968 पृ० 9-14

शर्मा आर० सी० और शिवदर मिश्रा - कुषाण इकोलिग्राम इन मथुरा संग्रहालय ड्यूरिंग द लास्ट डिकेट बी०एम०ए० यू०पी० भाग 4

श्री० श्रीमती रानी - कुषाण कालीन शिल्प कला में नृत्य मुद्रायें पृ० 38-48 भाग 14 बी०एम०ए०यू०पी० 1974

श्री० बी० एन० - बुद्धा पेडस्टल इंसक्रिपशन आफ कुमार गुप्त, बी०एम०ए०यू०पी० 1968, भाग 1 पृ० 15-17

शर्मा आर० सी० - शुंग इंसक्रिपशन फ्रोम संकिसा, बी०एम०ए०यू०पी० भाग 2 1967 -68, पृ० 51-52

शर्मा आर० सी० - न्यू इंसक्रिपशन आफ मथुरा बी०एम०ए०यू०पी० भाग 8 1961 पृ० 24-29

श्री० एच० पी० - प्लेस आफ पिलीग्रिमी एज, उत्तर प्रदेश वाल्यूम 19, 1967 मई अक्टूबर वाल्यूम XIXI न० 3, सम्पादक जे०एन० पृ० 13

शर्मा रमेश चन्द्र - मथुरा कला शैली की अनूठी देन, बी०एम०ए०यू०पी० अंक 11-12, 1973, पृ० 21-29

शर्मा सत्यनारायण - मानस का भक्ति पक्ष जन जीवन पर उसका प्रभाव विश्व-भारती पत्रिका खंड 15, अंक 1-2, 1974 पृ० 35

स्वामी सर्वेशानन्द - बुद्धिज्म एंड वेदान्त बी०डब्लू० 180, 1966 पृ० 7-16

सिंह आर० सी० - ऐंटी क्यूटीज फ्रोम मूसानगर, बी०एम०ए०यू०पी० भाग 5-6 1970, पृ० 89,94

शर्मा आर० सी० - प्री कनिष्क बुद्धिस्ट इकनोग्राफी भाग 5-6, 1970 पृ० 5-15

सिंह ब्रजमोहन - गंगा रामगंगा दोआब के कुछ पुरातात्विक स्थल भाग 16, संख्या 4 अक्टूबर 1964 पृ० 316-18

शर्मा आर० सी० - संकिसा और मथुरा से शुंग कालीन अभिलेख बी०एम०ए०यू०पी० भाग 3, 1969, पृ० 51-52

सुर ए० के० - सेक्स एण्ड मैरिज इन द ऐज आफ द महाभारत एम० आई० वाल्यूम 43, न० 1 जनवरी -मार्च 1963, पृ० 40-49

श्री वीरेन्द्र - मथुरा कालीन अभिलिखित बुद्ध मूर्ति भाग 4, बी०एम०ए०यू०पी० पृ० 19-21

सिंह आर० सी० - भीतरगांव का मंदिर, बी०एम०ए० यू०पी० भाग -2, नवम्बर 1968 पृ० 30-35

~~श्री एच० पी० - प्लेस आफ पिलीग्रिमी ऐज उत्तर प्रदेश, वाल्यूम 19, 1967 मई अक्टूबर वाल्यूम 18 न० 3, सम्पादक जे०एन० कौल पृ० 13~~

State Museum Lucknow

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एच हर्टल - एस्कैवेशन आफ मथुरा भाग- 1, 1968 मार्च बी०एम०ए० यू०पी० पृ० 3-8

हर्बर्ट हर्टल बर्लिन वही - भाग 2 दिसम्बर 1968 पृ० 3-5

वही - भाग 3 दिसम्बर 1968 पृ० 1-4

वही - भाग 5-6 1970 पृ० 1-4

हीरानन्द शास्त्री एस्कवेशन आफ संकिसा, भाग2,पृ० 99-110, भाग-2 1968

हर्बर्ट हर्टल - ए कुषाण नाग टैम्पिल एट सोंख बी०एम०ए०यू०पी० वाल्यूम 11-12 जून- दिसम्बर 1973 पृ० 1-3

हर्टल इंडीस्चेक स्कल्प्चरा बर्लिन 1960

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

:- अन्य पत्रिकाएं :-

1- कनिंघम - आरकोलाजी सर्वे रिपोर्ट

2- जनरल आफ बिहार उड़ीसा रिसर्चसोसाइटी

3- हिन्दुस्तानी पत्रिका 1938

4- जनरल आफ ओरियन्टर इन्स्टीट्यूट बड़ौदा

5- विश्व ज्योति होशियारपुर हिन्दी

6- भारतीय बनारस्स

7- रतन जनरल आफ अखिल भारतीय संस्कृत परिषद

8- पुराण बनारस

9- जनरल आफ यूनिवर्सिटी आफ पूना

10- मैन इन इण्डिया रांची

11- जनरल रायल ऐसियाटिक सोसाइटी

12- जनरल इण्डियन सोसाइटी आफ ओरियन्ट आर्टस 1840

13- जनरल आफ यू0पी0 हिस्टोरिकल सोसाइटी

14- आरकोलाजी सर्वे आफ इण्डिया एन्वल रिपोर्टस

15- हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र

16- अक्रान्त देहली

17- जनरल आफ न्यूमिस्टिक सोसाइटी आफ इण्डिया बनारस (अंग्रेजी)

18- जनरल आफ गंगानाथ झा विद्यापीठ इलाहाबाद

19- विश्वेश्वरानन्द इण्डोलजिकल जनरल होशियारपुर (अंग्रेजी)

20- बुलेटिन आफ यू पी0 हिस्टोरिकल सोसाइटी

21- इण्डियन एन्टीक्वरी

22- डेवलपमेन्ट आफ हिन्दू इकोनोग्राफी

23- डायनास्टिक आर्ट आफ दा गुप्तस, कैलीफोर्निया 1967

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

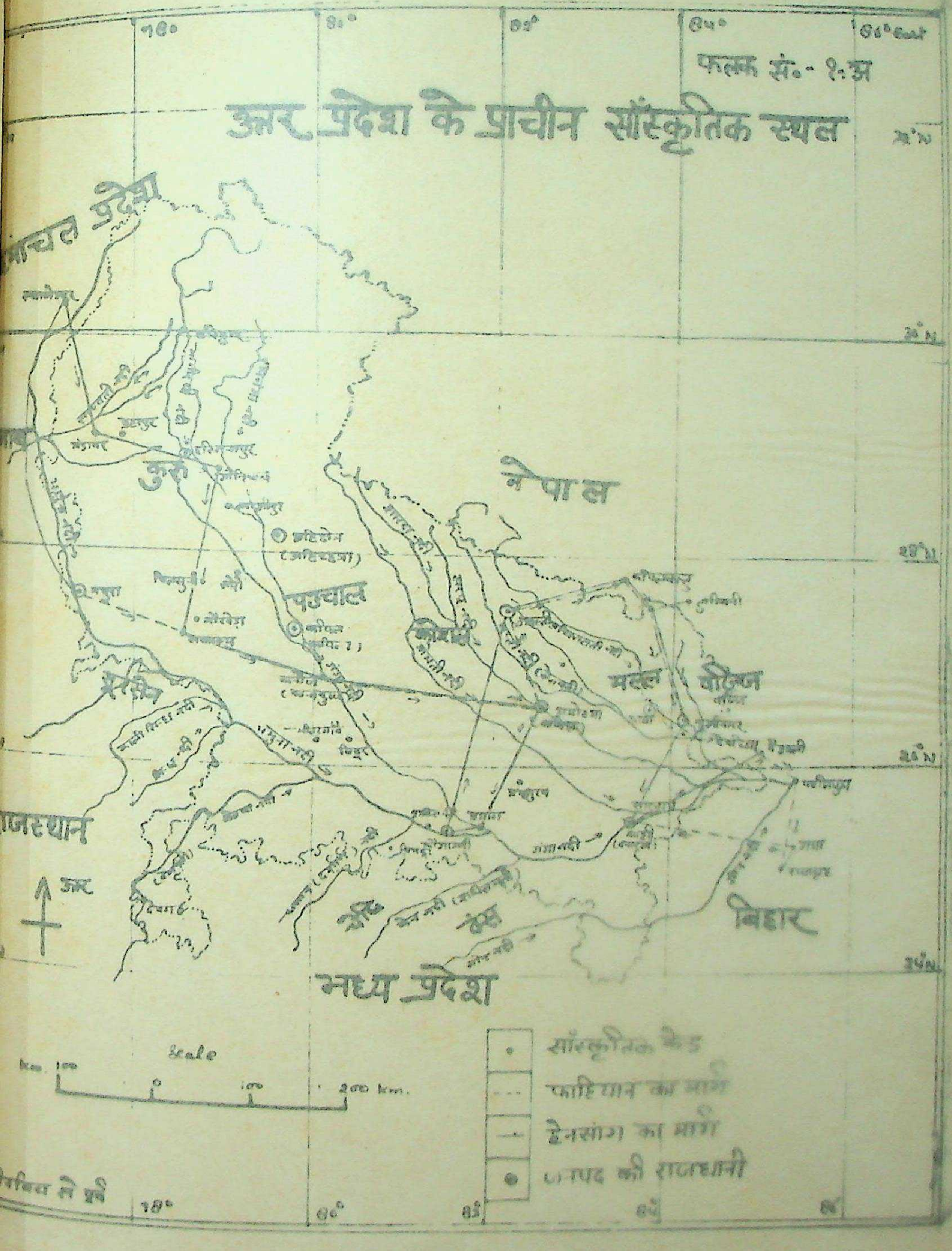

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

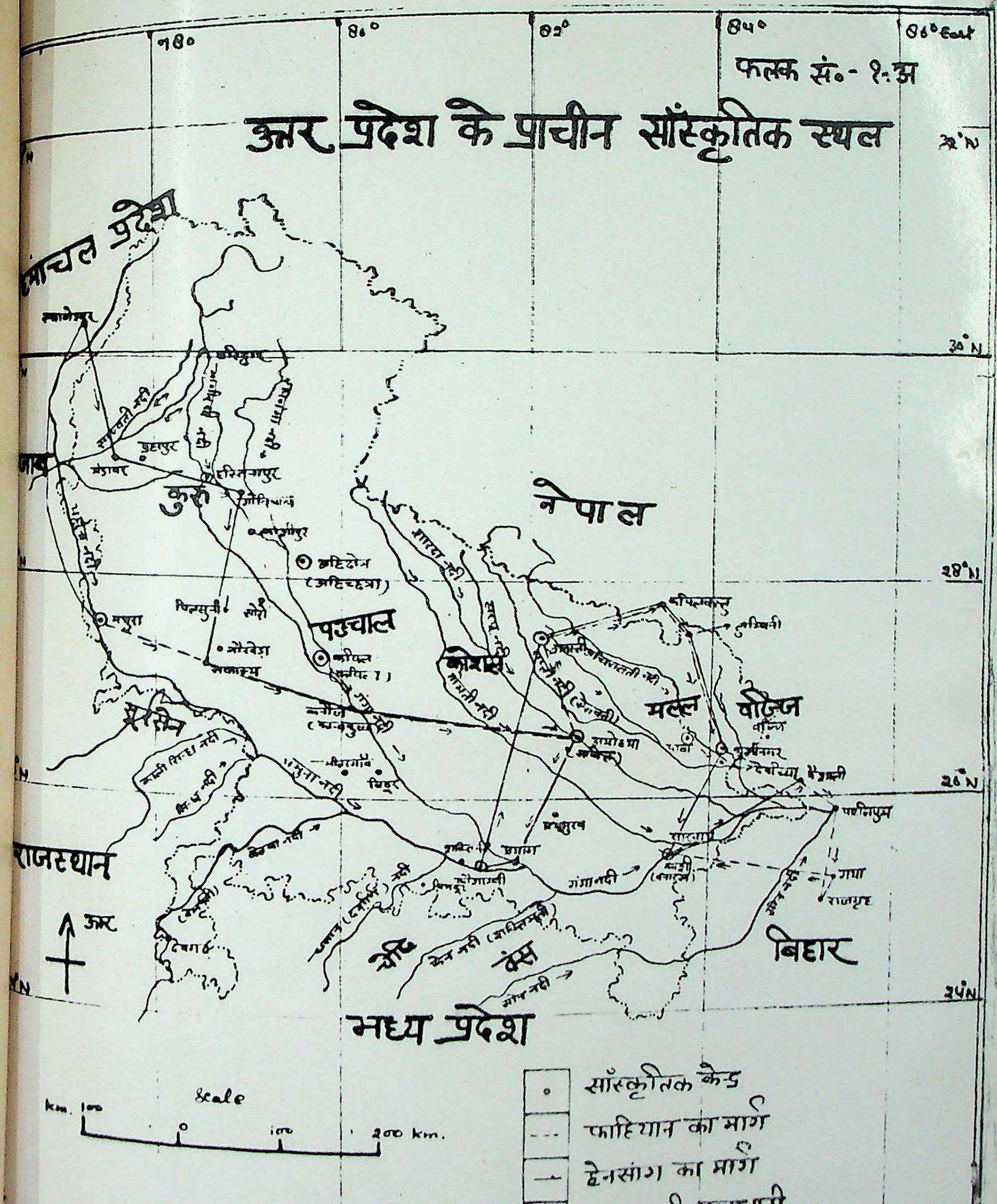

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुंग काल वेशभूषा

चि०-१
(मीटा) मनुष्य मूर्ति

चि०-2 अलंकार
यक्षिणी चन्द्रा

चि० ३
साधु स्त्री

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुंग काल वेशभूषा

चि०-१
(मीटा) मनुष्य मूर्ति

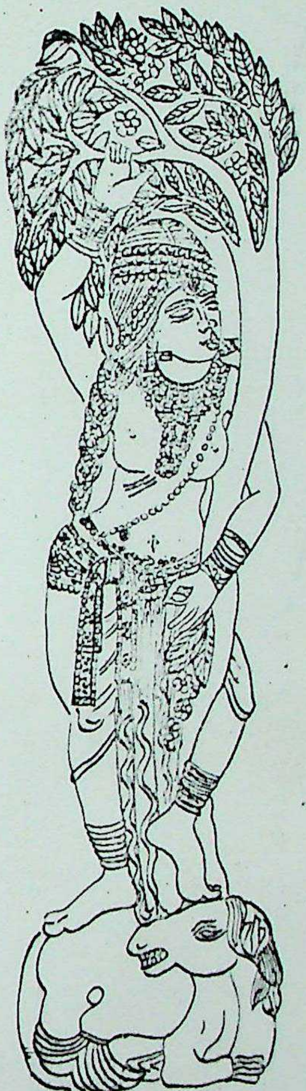

चि०-२ अलंकार
यक्षिणी चन्दा

चि० ३
साधु स्त्री

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुषाण युग वेशभूषा

चि०-४ (मथुरा)

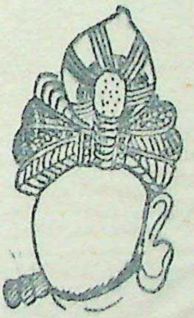

चि०-५ (मथुरा)

चि० ६ (मथुरा)

चि०- ७ (मथुरा)

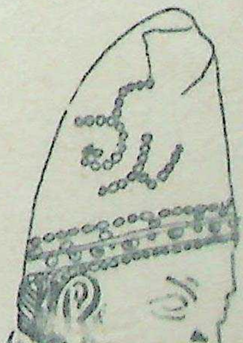

चि०- ८ मथुरा विदेशी प्रभाव

चि०- ९ मथुरा बिल्ली, वाल पगड़ीनुमा टोपी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुषाण युग वेशभूषा

चि०-४ (मथुरा)

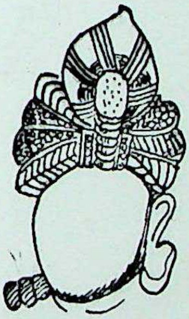

चि०-५
(मथुरा)

चि० ६. (मथुरा)

चि०- ७
(मथुरा)

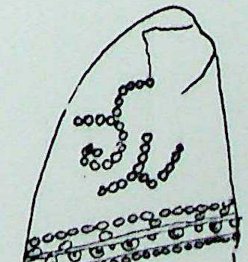

चि०- ८
मथुरा
विदेशी प्रभाव

चि०- ९
मथुरा
दिल्ली वाल पगड़ीनुमा
टोपी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्त कालीन

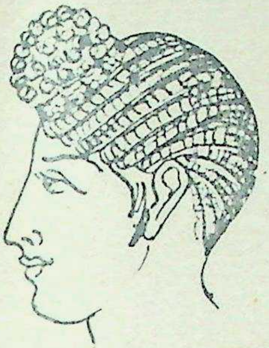

चित्र - १० अ (मथुरा)
जूड़े सहित मस्तक

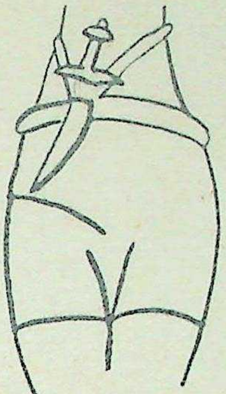

चित्र - १० ब (अहिच्छत्रा)
पदाति युवक

चित्र - १० स कहुला

चित्र - १० द मकरमुखी टोंटी (भारत कला भवन)

चित्र - ११ अ भंगुर उत्तरीय
(अहिच्छत्रा)

चित्र - ११ ब विष्णु
(मथुरा)

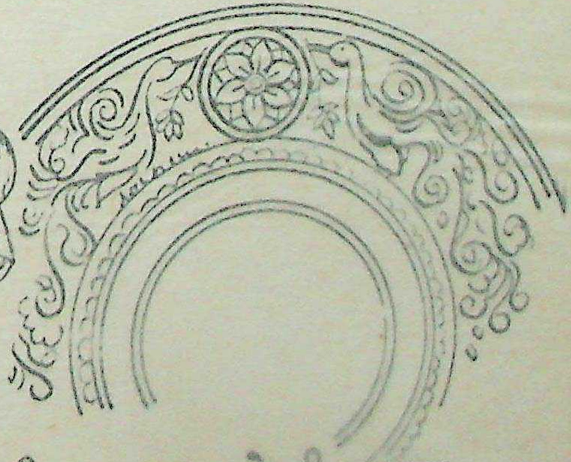

चित्र - ११ स - मोरनी राजछत्र
(मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चित्र-१०अ (मथुरा)
जूड़े सहित मस्तक

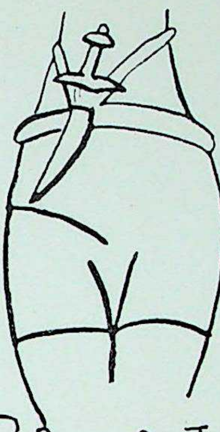

चित्र-१०ब (अहिच्छत्रा)
पदाति युवक

चित्र-१०स कठुला

चित्र-१०द मकरमुखी
टोंटी (भारत कला
भवन)

चित्र-११अ भंगुर उत्तरीय
(अहिच्छत्रा)

चित्र-११ब विष्णु
(मथुरा)

चित्र-११स - मोरनी राजछत्र
(मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैल गाड़ी - शुंग काल (मथुरा) फलक-४

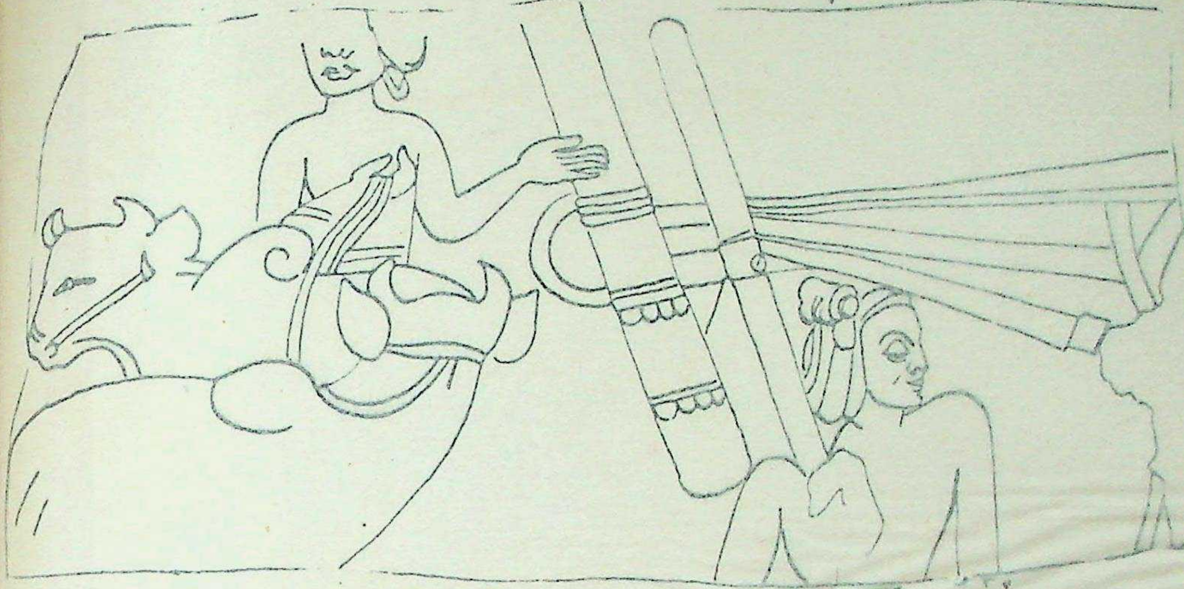

चित्र- १२

कुषाण युग

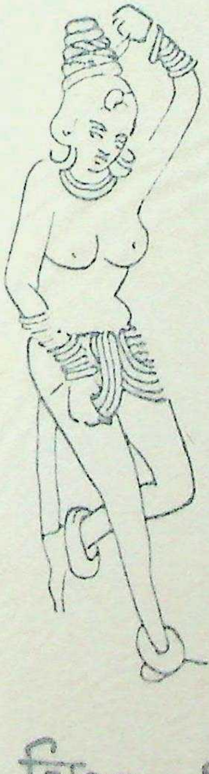

चि०- १४

अलंकार (मथुरा)

चि०- १३

कमर बंद

मथुरा

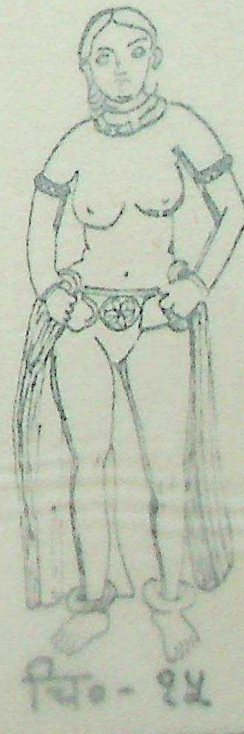

चि०- १५

पटका (मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैल गाड़ी - शुंग काल (मथुरा) फलक-४

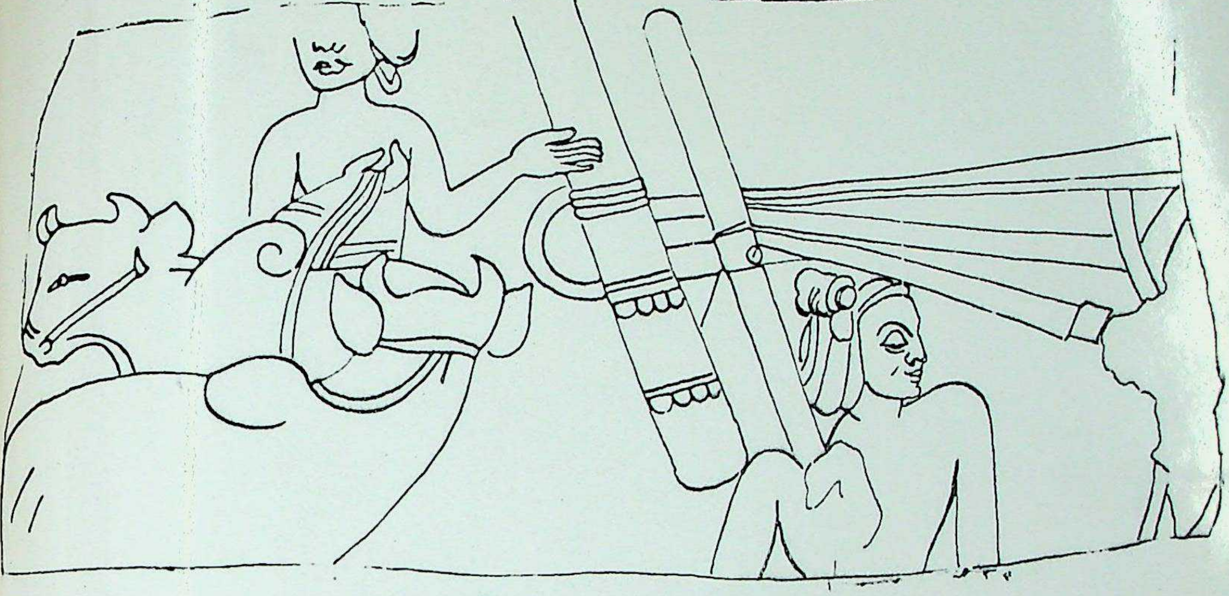

चित्र- १२
कुषाण युग

चि०- १४
अलंकार (मथुरा)

चि०- १३
कमर बंद
मथुरा

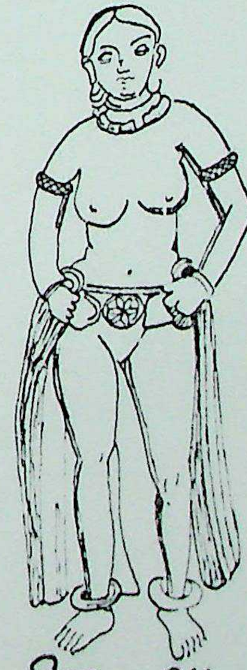

चि०- १५
पटका (मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुषाण युग (मथुरा)

चि० - १६

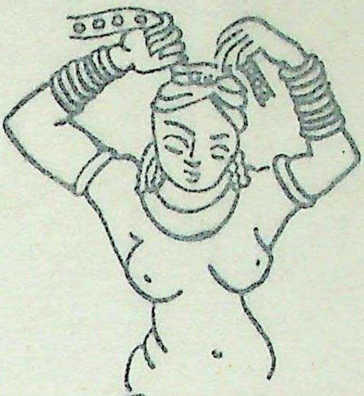

चि० - १७

चि० - १८

चि० - १९

चि० - 20

चि० - २१

चि० - २२

चि० - २३

नृत्यों की हस्त मुद्रायें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुषाण युग (मथुरा)

चि०-१६

चि०-१७

चि०-१८

चि०- १९

चि०- २०

चि०- २१

चि०- २२

चि०- २३

नृत्यों की हस्त मुद्रायें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुषाण युग

नृत्यों की पाद मुद्रायें (मथुरा)

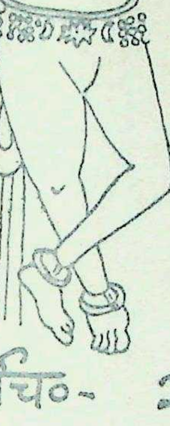

चि०- २४

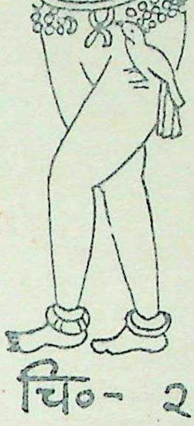

चि०- २५

चि०- २६

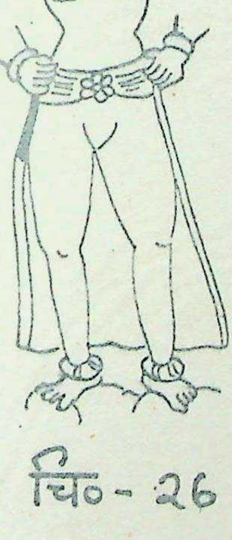

चि०- २७

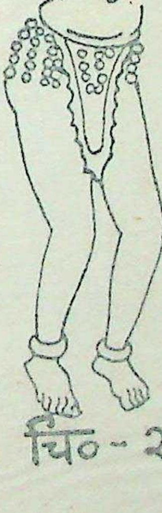

चि०- २८अ

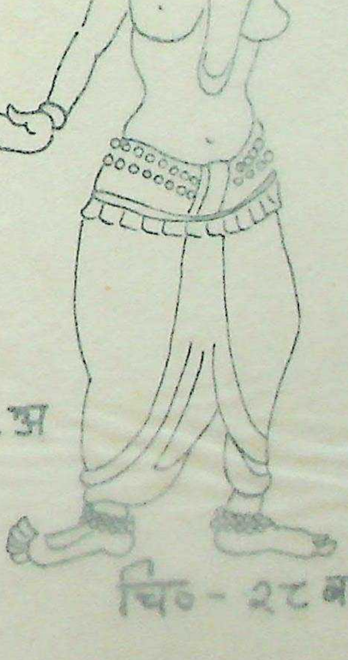

चि०- २८ब

नृत्यों की हस्त मुद्रायें

चि०-२९

चि०-३०

चि०- ३१

चि०-३२अ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुषाण युग

नृत्यों की पाद मुद्रायें (मथुरा)

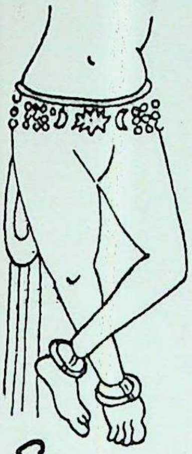

चि०- २४

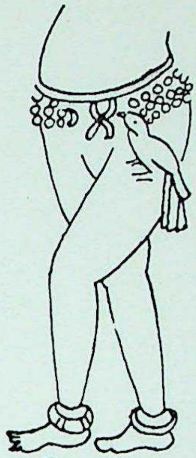

चि०- २५

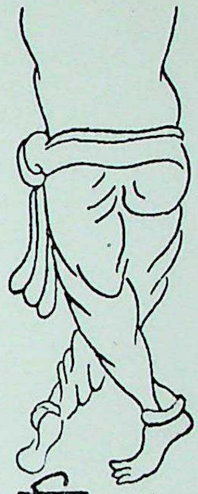

चि०- २६

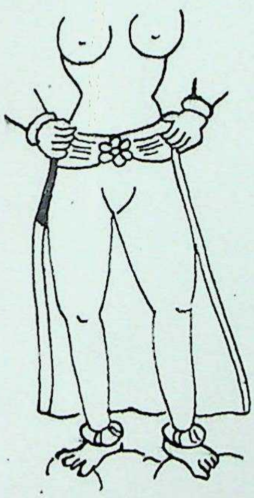

चि०- २७

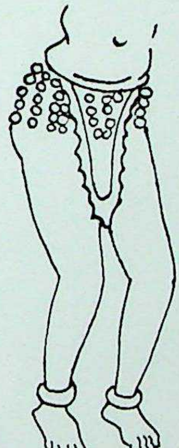

चि०- २८अ

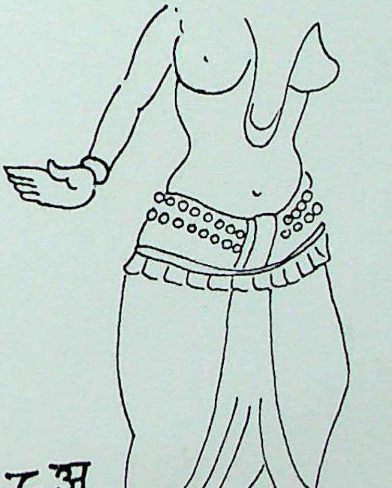

चि०- २८ब

नृत्यों की हस्त मुद्रायें

चि०- २९

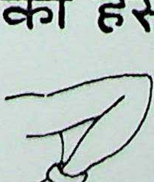

चि०- ३०

चि०- ३१

चि०- ३२अ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्त- काल- वेशभूषा फलक - ८

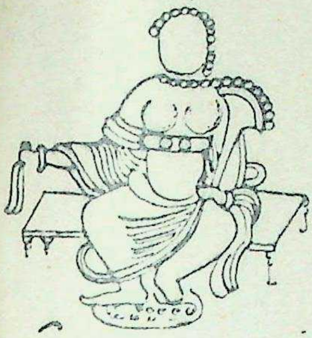

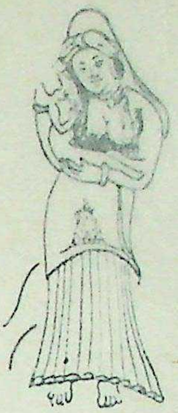
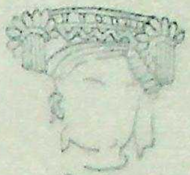

चि०-२९

चि० - ३२ ब लक्ष्मी चि० - ३३ अ चि० - ३३ब चि० - ३३स

एड़ी तक साड़ी कूपासर्क पहने लक्ष्मी यशोदा (टेकारी) टोपी

(मौसम)

चि० - ३३द

गुप्त युग (जहाज पर लक्ष्मी) वैशाली

चि०-३४ घोड़ा गाड़ी चि०-३५ चि०- ३६

शुंग काल (मथुरा) शिकरम गाड़ी बैलगाड़ी दूसरी सदी

शुंग काल (मथुरा) शुंग काल (मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्त-काल-वेशभूषा

फलक-८

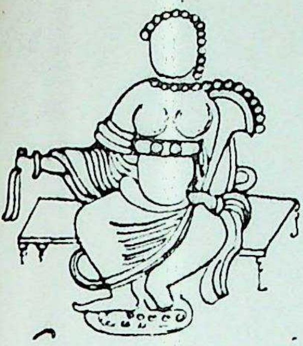
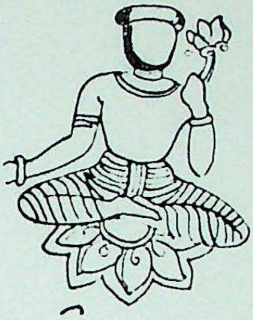

चि०-२९

चि०-३२ ब लक्ष्मी एड़ी तक साड़ी

चि०-३३ अ कूपासर्क पहने लक्ष्मी

चि०-३३ब यशोदा (देवगढ़)

चि०-३३स टोपी (कौसम)

चि०-३३द

गुप्त युग (जहाज पर लक्ष्मी) वैशाली

चि०-३४ घोड़ा गाड़ी शुंग काल (मथुरा)

चि०-३५ शिकरम गाड़ी शुंग काल (मथुरा)

चि०-३६ बैल गाड़ी दूसरी सदी शुंग काल (मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्ष काल (अलंकार)

फलक-८

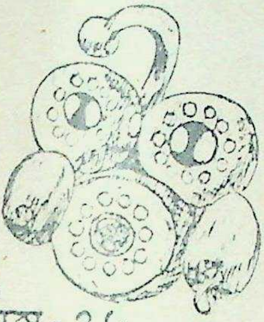

चित्र-३७

चि० ३८ हार
अहिच्छत्रा

चि-३९ (मथुरा)

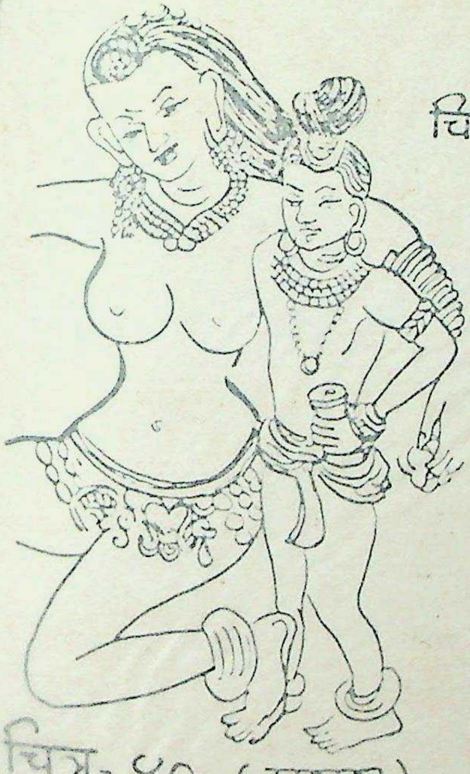

चित्र-४० (मथुरा)

चि०-४१

मथुरा अष्ट मंगलक माला

चि० ४२

मथुरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्ष काल (अलंकार)

फलक- ८

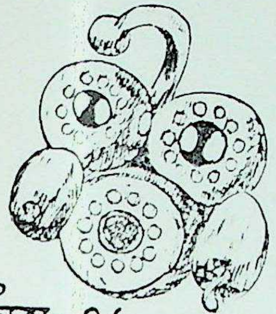

चित्र - ३७

चि० ३८ हार
अहिच्छत्रा

चि- ३९ (मथुरा)

चित्र- ४० (मथुरा)

चि० - ४१

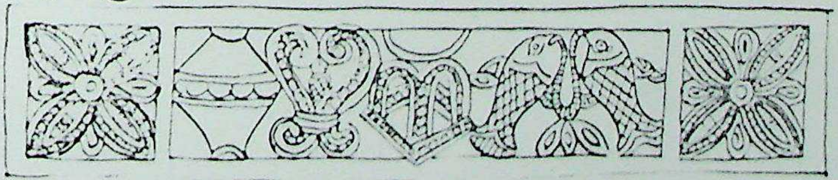

मथुरा अष्ट मंगलक माला

चि० ४२

मथुरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षकाल (वेशभूषा) फलक-९

चि०- ४३ (मथुरा)

चि०- ४४ अहिच्छत्रा

चि०- ४५ अहिच्छत्रा

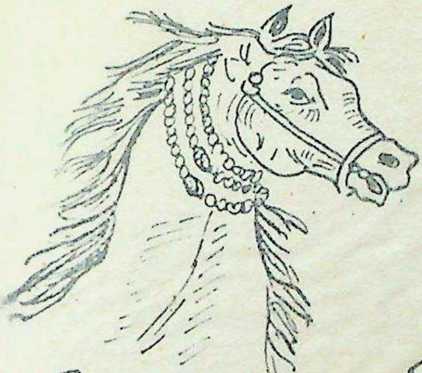
चि०- ४६ अहिच्छत्रा

चि०-४७ मथुरा विष्णु

चि०- ४८ देवगढ़

चि०-४९ (मथुरा) हरिहर मस्तक

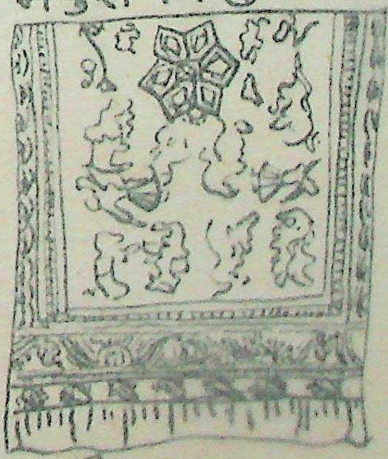
चि०- ५० चुनड़ी कलाभवन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षकाल (वेशभूषा) फलक- ९

चि०- ४३ (मथुरा)

चि०- ४४
अहिच्छत्रा

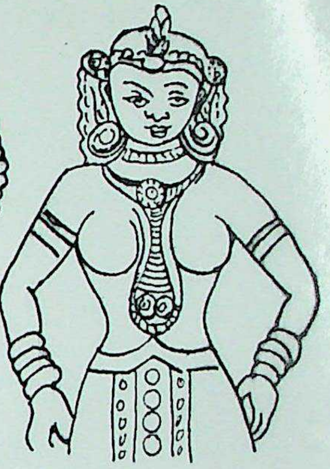

चि०- ४५
अहिच्छत्रा

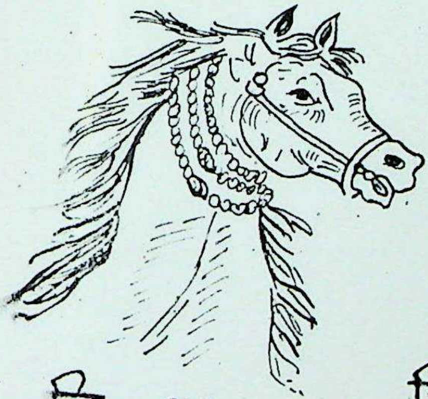

चि०- ४६
अहिच्छत्रा

चि०-४७
मथुरा विष्णु

चि०- ४८
देवगढ़

चि०-४९ (मथुरा)
हरिहर मस्तक

चि०- ५०
चुनड़ी कलाभवन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षकाल (वेशभूषा) फलक १०

चि० - ५१ देवगढ़

चि० - ५२ देवगढ़

चि०-५३ मथुरा

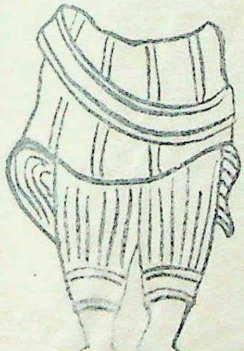

चि०- ५४ अहिच्छत्रा

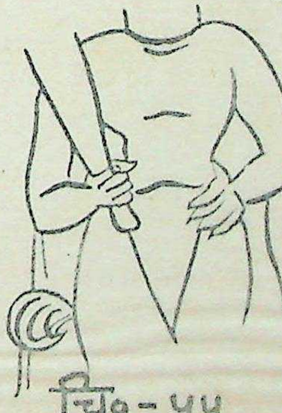

चि० - ५५ अहिच्छत्रा

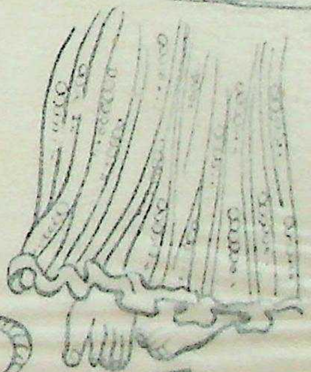

चि०-५६ नृत्य अहिच्छत्रा

चि०- ५७ अहिच्छत्रा

चित्र- ५८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षकाल (वेशभूषा) फलक १०

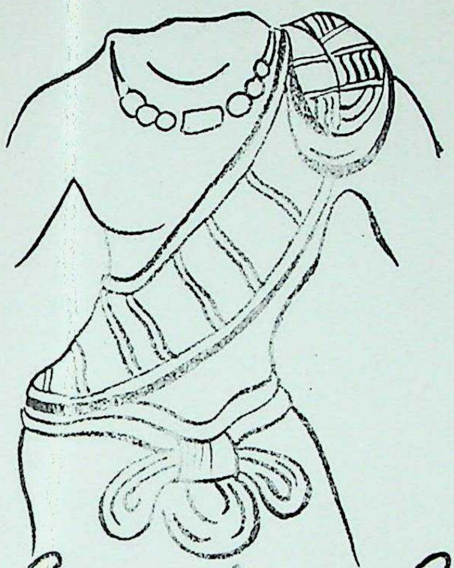

चि० - ५१ देवगढ़

चि० - ५२ देवगढ़

चि० - ५३ मथुरा

चि० - ५४ अहिच्छत्रा

चि० - ५५ अहिच्छत्रा

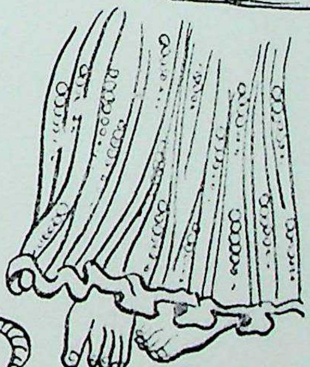

चि० - ५६ नृत्य अहिच्छत्रा

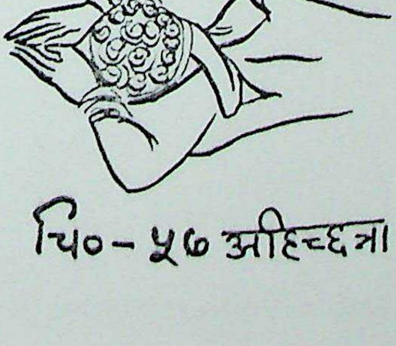

चि० - ५७ अहिच्छत्रा

चित्र - ५८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्ष काल

फलक-११

चि०- ५९ देवगढ़

चि०-६० ब्रह्मा

चि०- ६१

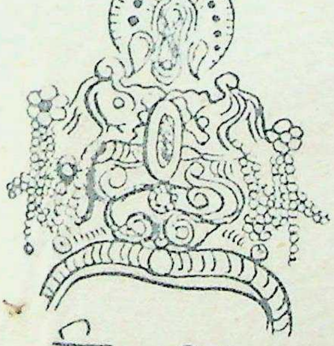

चि०- ६२
केश आभूषण
(मथुरा)

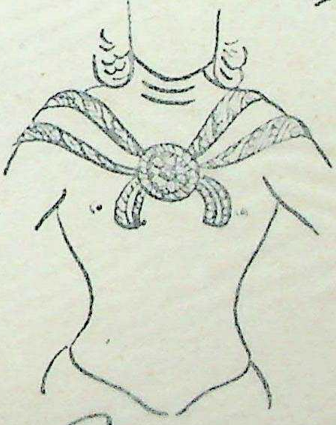

चि०- ६३
(मथुरा)

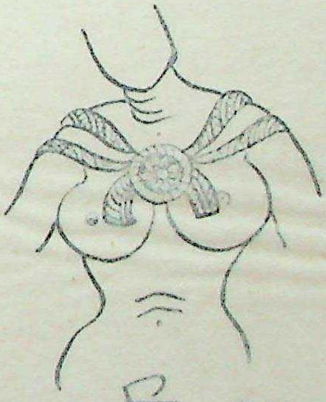

चि०- ६४
योगपट्ट (मथुरा)

चि०- ६५
देवगढ़

चि०- ६६
देवगढ़

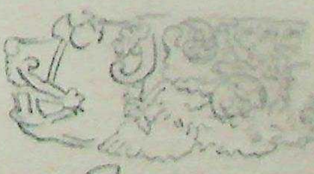

चि०- ६७
सारनाथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हर्षकाल

चि० - ५९ देवगढ़

चि० - ६० ब्रह्मा

चि० - ६१

चि० - ६२
केश आभूषण
(मथुरा)

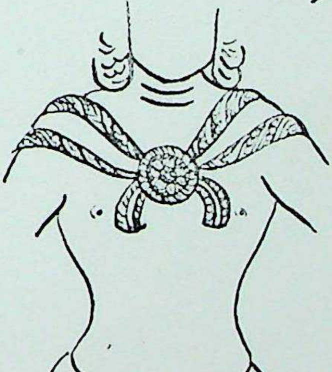

चि० - ६३
(मथुरा)

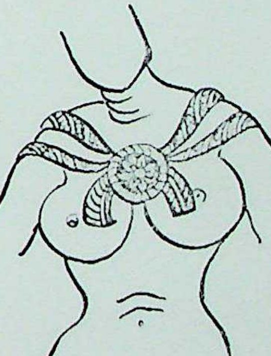

चि० - ६४
योगपट्ट (मथुरा)

चि० - ६५
देवगढ़

चि० - ६६
देवगढ़

चि० - ६७
सारनाथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चि०- ६८ काटि रंग की ढाले

चि०- ६९
मृणमूर्ति
अहिच्छत्रा

चि०- ७०
हाथी से लड़ने वाला
पट्ठा

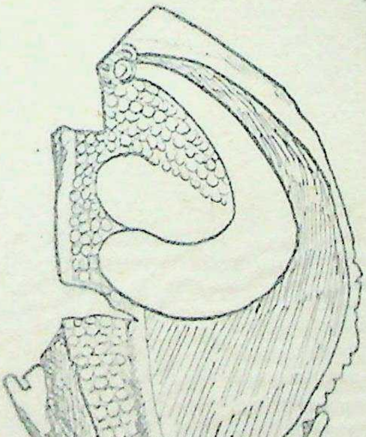

चि०-७१
कटहल के फल जैसी गगरी
हस्तिनापुर

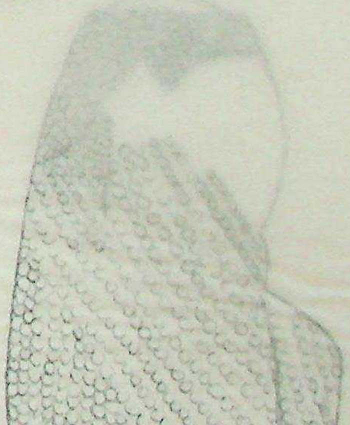

चि०-७२
कर्करी अहिच्छत्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चि०- ६८ कादि रंग की ढ़ालें

चि०- ६९
मृणमूर्ति
अहिच्छत्रा

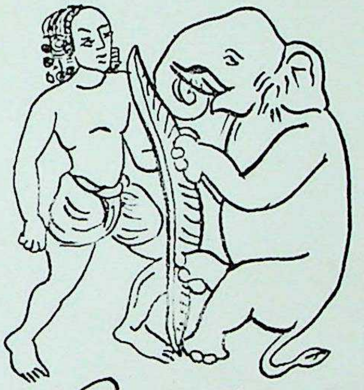

चि०- ७०
हाथी से लड़ने वाला
पट्ठा

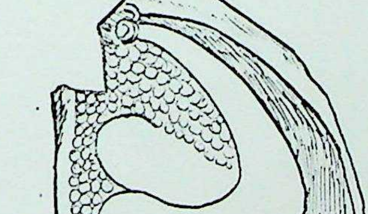

चि०- ७१
कटहल के फल जैसी गगरी
हस्तिनापुर

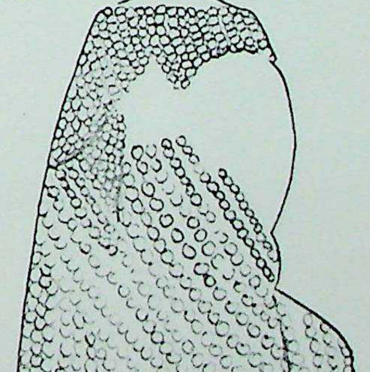

चि०- ७२
कर्करी अहिच्छत्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चि०-६३

चतुर्भुज शिव

चि०-६४

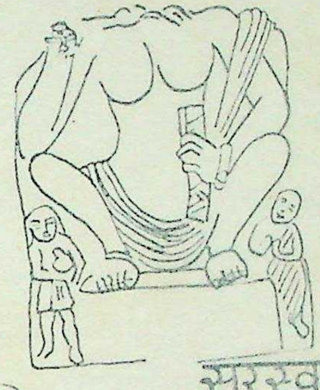

सरस्वती
गुप्त काल

चि०-६५

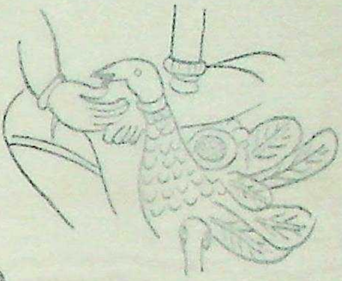

(गुप्त काल)
स्कन्द

चि०- ६६ शिव पार्वती (कौशाम्बी)
गुप्त काल

चि०-६७ गुप्तकाल

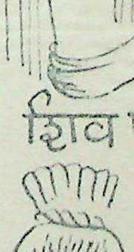

चि०- ६८
गुप्त काल
(मथुरा)

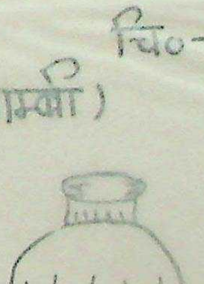

चि०- ६९
कार्तिकेय (केशरचना)
कुषाण-काल (मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुषाण काल फलक-१३

चि०-६३

चतुर्भुज शिव

चि०-६४

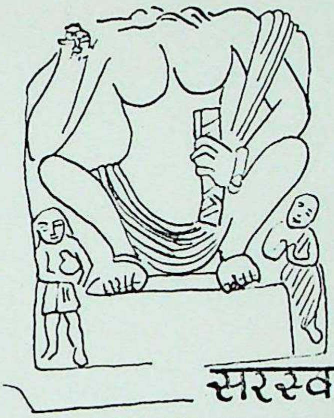

सरस्वती
गुप्त काल

चि०-६५

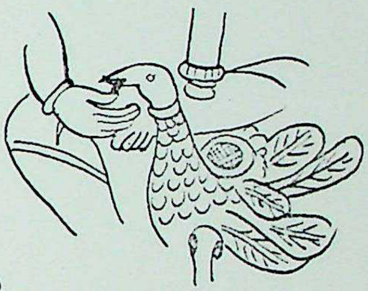

(गुप्त काल)
स्कन्द

चि०- ६६ शिव पार्वती (कौशाम्बी)
गुप्त काल

चि०-६७ गुप्तकाल

चि०- ६८
गुप्त काल
(मथुरा)

चि०- ६९
कार्तिकेय (केशरचना)
कुषाण-काल (मथुरा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौर्य काल

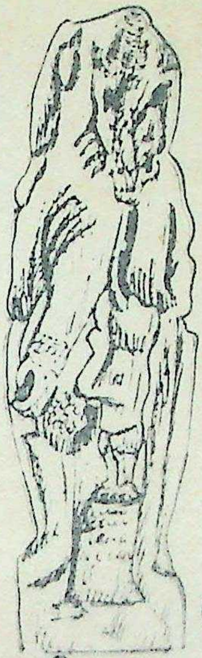

चि०- ८०
चतुर्भुज यक्ष

चि०- ८१

कुषाण काल

चि०- ८२
(कौशाम्बी) चतुर्मुखी शिव

चि०- ८३
अघोर मुख

चि०- ८४
गदाधारी
शिव

चि०- ८५ शिव मूसानगर

चि०- ८६
शिव त्रिमूर्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौर्य काल

फलक- १४

चि०- ८०

चतुर्भुज यक्ष

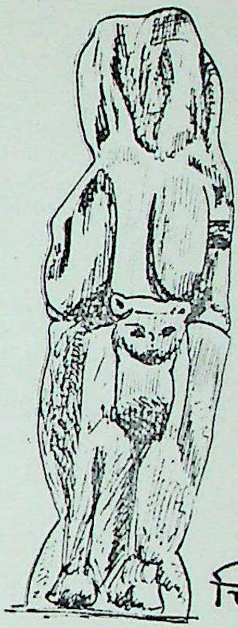

चि०- ८१

कुषाण काल

चि०- ८२

(कौशाम्बी) चतुर्मुखी शिव

चि०- ८३

अघोर मुख

चि०- ८४

गदाधारी शिव

चि०- ८५ शिव मूसानगर

चि०- ८६

शिव त्रिमूर्ति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

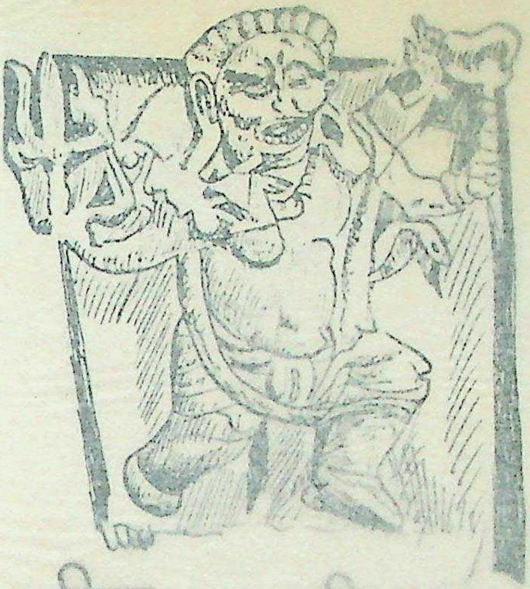

चि०- ८७ अहिच्छत्रा
महा भैरव

चि०- ८८ शिवलिंग
(भीटा)

चि०- ८९ पार्वती अहिच्छत्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चि०-८७ अहिच्छत्रा
महाभैरव

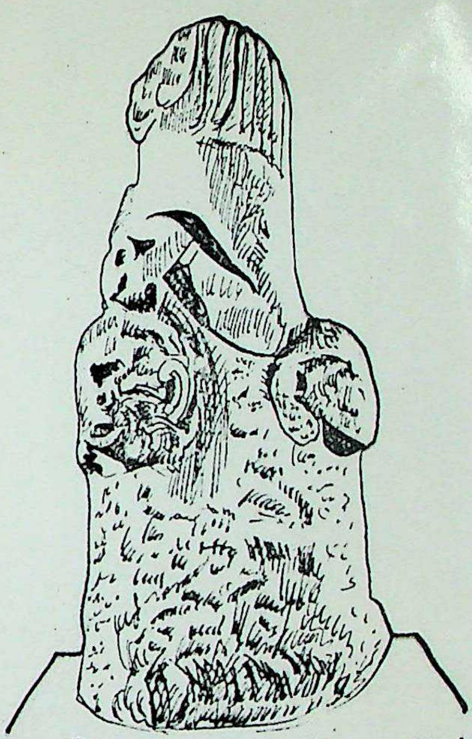

चि०-८८ शिवलिंग
(भीटा)

चि०-८९ पार्वती अहिच्छत्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

State Museum Library Lucknow
1227

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh